वित्तीय लेखांकन

टिप्पणी

बी.बी.ए.

१. मूलभूत जानकारी

वर्ष	शिक्षाक्रम सां.	शिक्षाक्रम का नाम	प्रकार
१		वित्तीय लेखांकन	TH

२. शिक्षण क्रम के उद्‌देश्य

शिक्षण क्रम के उद्‌देश्यः– इस शिक्षाक्रम का उद्‌देश्य विद्यार्थियों को वित्तीय लेखांकन विषय के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी बतलाना है।

३. इकाई

इकाई	इकाई का नाम
१	लेखांकन
३	प्रविष्टियां एवं तलपट
४	शाख एवं विभागीय खाते, साझेदारी खाते
५	साझेदारी खाते, साझेदारी फर्म का विलयन

४. पाठ्यक्रम

इकाई	इकाई की विस्तृत जानकारी
१	**लेखांकनः** अर्थ, असवश्यकता, विकास, बहीखाता एवं लेखांकन, लेखांकन की अवधारणा, लेखांकन के सिद्धान्त, जर्नल प्रविष्टियां एवं दोहरा लेखा पद्धति, खाता बही एवं खाता बही में खतौनी (Ledger and Ledger Report)
२	**प्रविष्टियाँ एवं तलपटः** सहायक पुस्तकों में प्रविष्टियां, समायोजन प्रविष्टियां, तलपट तैयार करना, अंतिम खाते तैयार करना
३	**शाखा एवं विभागीय खातेः** स्वतंत्र एवं निर्भर (Independent and Dependent) शोखओं के खाते (विदेशी शाखा सहित) **साझेदारी खातेः–** समायोजन, साझेदारी फर्म का पुर्नगठन, साझेउारी का प्रवेश, साझेदार की सेवानिवृत, साझेदार की मृत्यु
४	**सोझेदारी खातेः** साझेदारी फर्म का समापन, फर्म के समापन की विधियां, साझेदारों का दिवालिया होना

टिप्पणी

	सोझेदारी फर्म का विलयनः फर्म का कंपनी को विक्रय, सम्पत्तियों का क्रमशः वसूलीकरण (Realization) एवं नकद का खण्डशः (Picemeal)

Financial Accounting BBA Unit 1-4

इकाई – 1 शिक्षण के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपको ज्ञात होगा कि –

- लेखांकन क्या है और एक व्यावसायी के लिए लेखांकन करना क्यों आवश्यक है ?
- लेखांकन किस क्रम से विकसित होकर वर्तमान स्थिति में पहुंचा है।
- बहीखाता क्या है तथा यह लेखांकन से किस प्रकार भिन्न है ?
- लेखांकन के सिद्धान्तों, अवधारणाओ एवं परम्पराओं का पालन करना लेखांकन कार्य में क्यों आवश्यक माना गया है ?
- दोहरा लेखा पद्धति क्या है, यह व्यापारी के लिए किस प्रकार उपयोगी है तथा इसके अन्तर्गत व्यवहारों का लेखांकन करने से पूर्व किन किन शब्दों की जानकारी होना आवश्यक है।
- दोहरा लेखा पद्धति के अन्तर्गत प्रभावित होने वाले खाते कितने प्रकार के होते है तथा इनके सम्बंध में जर्नल में प्रविष्टियां करने के नियम कौन कौन से हैं।
- खाताबही क्या है तथा जर्नल से खाताबही में खतौनी किस प्रकार की जाती है ?

संरचना (Structure)

1.1 लेखांकन का परिचय

1.1.1 लेखांकन का अर्थ

1.1.2 लेखांकन की आवश्यकता

1.1.3 लेखांकन का विकास

1.1.4 बहीखाता एवं लेखांकन

1.1.5 लेखांकन के सिद्धान्त

1.1.5.1 लेखांकन की अवधारणाऐं

1.1.5.2 लेखांकन की परम्पराऐं

1.1.6 दोहरा लेखा पद्धति

1.1.7 जर्नल

1.1.8 खाताबही

1.1 लेखांकन का परिचय (Introduction to Accounting)

लेखांकन की कला अत्यन्त प्राचीन काल से चली आ रही है किन्तु उस समय यह इतने विकसित रूप में नहीं थी जितनी कि आधुनिक युग में है। लेखांकन के पुराने स्वरूप का विकास मुख्य रूप से व्यावसायिक इकाईयों का बाह्य पक्षों के साथ सम्बन्ध दर्शाने, अपनी सम्पत्तियों को सूचीबद्ध करने तथा व्यवसाय के संचालन से सम्बन्धित विभिन्न पक्षकारों से बकाया राशियों के सही निर्धारण की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर हुआ था। पिछले कुछ वर्षों में बड़े पैमाने पर उत्पादन, तीव्र प्रतिस्पर्धा, बाजारों के विस्तार एवं तकनीकी परिवर्तनों ने लेखांकन के क्षेत्र में उल्लेखनीय परिवर्तन किया है। व्यक्ति के लिए सभी लेनदेनों एवं घटनाओं को याद रखना सम्भव नहीं है इसलिए वह इनका लेखा करता है ताकि आवश्यकता पड़ने पर सभी आवश्यक सूचनाऐं प्राप्त कर सके और उनके आधार पर निर्णय ले सके। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए लेखाशास्त्र का विकास किया गया। आज लेखांकन व्यावसायिक संगठन की आर्थिक क्रियाओं के इतिहास को न केवल व्यवस्थित रूप से मुद्रा रूपी पैमाने में लिखता है अपितु व्यावसायिक व्यवहारों एवं घटनाओं के मौद्रिक प्रभावों के परिणामों को विभिन्न सम्बन्धित पक्षकारों के लिए सारांशित एवं निर्वचित करने के लिए लेखांकित एवं वर्गीकृत भी किया जाता है।

लेखांकन विज्ञान भी है और कला भी। किसी भी ज्ञान के सुव्यवस्थित, क्रमबद्ध एवं नियमबद्ध अध्ययन को विज्ञान कहते है। इस रूप में लेखांकन के भी निश्चित नियम हैं। वर्तमान में लेखांकन अपने सर्वमान्य सिद्धान्तों एवं अवधारणाओं पर आधारित है, अतः यह विज्ञान है। दूसरी तरफ किसी कार्य को सर्वोत्तम तरीके से करने की विधि को कला कहा जाता है। कला, विज्ञान द्वारा प्रतिपादित नियमों को क्रियान्वित करती है। लेखांकन में भी लेखापाल लेखांकन के सिद्धान्तों का उपयोग उचित योग्यता एवं निपुणता से करता है ताकि लेखांकन के उद्देश्य को प्राप्त किया जा सके। अतः, लेखांकन कला भी है।

1.1.1 लेखांकन का अर्थ (Meaning of Accounting)

लेखांकन को विभिन्न विद्वानों एवं लेखा संस्थानों ने भिन्न–भिन्न रूप से परिभाषित किया है। विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई कुछ परिभाषाएँ इस प्रकार हैं :

''लेखांकन प्रणाली व्यवसाय से सम्बन्धित सूचनाओं को मौद्रिक शब्दों में एकत्रित करने, सारांशित करने, विश्लेषण करने और सूचित करने का एक साधन है।''

आर.एन. एन्थोनी

''लेखांकन को – वित्तीय सूचनाओं को पहचानना, मापना, लिखना और संवहन करना कहा जा सकता है।''

हेरोल्ड बायरमेन एवं एलन आर. ड्रेबिन

उपर्युक्त दोनों परिभाषाएँ लेखांकन के कार्यक्षेत्र पर प्रकाश डालती हैं।

''लेखांकन प्रधान रूप में व्यावसायिक व्यवहारों और घटनाओं के लिखने का विज्ञान है और वित्तीय व्यवहारों एवं घटनाओं का महत्त्वपूर्ण सारांश बनाने, विश्लेषण करने, उनकी व्याख्या और परिणामों को उन व्यक्तियों तक पहुँचाने की कला है, जिन्हें उनके आधार पर निर्णय लेने हैं।''

स्मिथ और एशबर्न

इस परिभाषा में लेखांकन को कला एवं विज्ञान दोनों बतलाते हुए इसके क्षेत्र को अधिक स्पष्ट एवं व्यापक बना दिया गया है।

''लेखांकन व्यवसाय के लेखे एवं घटनाओं को जो पूर्णतः या आंशिक रूप में वित्तीय प्रकृति के होते हैं, मुद्रा में प्रभावपूर्ण विधि से लिखने, वर्गीकृत करने, सारांश में व्यक्त करने एवं उनके परिणामों की आलोचनात्मक विधि से व्याख्या करने की कला है।'' **अमेरिकन इन्स्टीट्यूट ऑफ सर्टिफाइड पब्लिक अकाउन्टेन्ट्स**

उपर्युक्त परिभाषाओं का अध्ययन करने पर लेखांकन के सम्बन्ध में निम्नलिखित विशेषताएं उभर कर सामने आती हैं :

1. लेखांकन एक सेवा सम्बन्धी क्रिया–कलाप है।
2. यह व्यावसायिक लेनदेनों एवं घटनाओं को लिखने एवं वर्गीकृत करने की कला एवं विज्ञान है।
3. लेखांकन में उन्हीं लेनदेनों का लेखा किया जा सकता है, जो वित्तीय प्रकृति के होते हैं तथा जिन्हें प्रायः मुद्रा में व्यक्त किया जा सकता है।
4. लेखांकन सारांश लिखने, विश्लेषण और निर्वचन करने की भी कला है।
5. लेखांकन द्वारा सम्बन्धित पक्षकारों को परिमाणात्मक वित्तीय सूचनाऐं प्रदान की जाती है।
6. इसकी सहायता से व्यक्ति उपलब्ध विभिन्न विकल्पों में से तर्क–सम्मत विकल्प का चुनाव करने में सक्षम होता है व उसके लिए अभिसूचित निर्णय करना सम्भव होता है।
7. प्रारम्भिक लेखा, वर्गीकरण व सारांश लेखन के माध्यम से विभिन्न सूचनाओं की सभी मदों को उचित ढंग से एकत्रित करके सम्बन्धित व्यक्तियों को प्रतिवेदन दिया जा सकता है।
8. एक सूचना प्रणाली के रूप में निर्णयन प्रक्रिया के लिए यह एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है।
9. यह ज्ञान की एक विशिष्ट शाखा है जिसके माध्यम से आर्थिक क्रियाकलापों को प्रतिरूपित किया जा सकता है।

1.1.2 लेखांकन की आवश्यकता (Need for Accounting)

एक व्यापारी या व्यावसायिक संस्था को लेखांकन की आवश्यकता इसलिए होती है जिससे यह ज्ञात हो सके कि जिन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए लेखांकन किया गया है उनकी पूर्ति हो रही है या नहीं। लेखांकन का मुख्य उद्देश्य आर्थिक व्यवहारों को लेखा पुस्तकों में दर्ज कर इनकी सहायता से निर्णयन हेतु सूचनाएँ उपलब्ध करवाना होता है। संक्षेप में, लेखांकन की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से होती है –

(1) समस्त आर्थिक व्यवहारों का लेखा (Recording of all Economic Transactions) : व्यावसायिक व्यवहारों एवं घटनाओं का उचित वर्गीकरण कर उनका उचित पुस्तकों में लेखा करना तथा सम्पत्ति, दायित्व, पूंजी, आय एवं व्यय के रूप में उन्हें प्रदर्शित करना, आवश्यक होता है।

(2) लाभ–हानि का निर्धारण (Determination of Profit or Loss) : व्यावसायिक क्रियाऐं मुख्यतः लाभ कमाने के उद्देश्य से की जाती हैं। प्रत्येक व्यवसायी एक निश्चित अवधि में किये गये व्यवहारों का परिणाम जानना चाहता है। इसके लिए वह लेखा पुस्तकों में अंकित व्यवहारों के आधार पर आय विवरण अर्थात् लाभ हानि खाता तैयार करता है। यदि सम्बन्धित अवधि की आय, व्ययों से

टिप्पणी

अधिक है तो व्यवसायी को लाभ होता है और यदि व्यय, आय से अधिक है तो हानि होती है और परिणाम प्रतिकूल माने जाते हैं।

(3) वित्तीय स्थिति का चित्रण (Depiction of Financial Position) : प्रत्येक व्यवसायी समय–समय पर अपनी वित्तीय स्थिति की जानकारी प्राप्त करना चाहता है। वह जानना चाहता है कि एक निश्चित तिथि को व्यवसाय में उसका कितना हित है? व्यवसाय में विनियोजित धन किस स्वरूप में है, अर्थात् व्यवसाय के पास कौन–कौन सी सम्पत्तियाँ हैं? व्यवसाय पर देयतायें कितनी हैं? इन सब बातों की जानकारी एक विवरण पत्र की सहायता से प्राप्त की जाती है जिसे स्थिति विवरण या चिट्ठा कहते हैं। यह स्थिति विवरण वास्तव में एक दर्पण है, जो कि किसी तिथि विशेष को सम्पत्तियों एवं दायित्वों की स्थिति प्रदर्शित करता है।

(4) व्यवसाय पर प्रभावी नियन्त्रण (Effective Control over the Business) : लेखांकन के माध्यम से व्यवसाय के उत्पादन, विक्रय, लाभ, हानि, उत्पादन लागत आदि के वास्तविक समंको (आंकड़ों) की जानकारी प्राप्त होती है। वास्तविक समंको की बजटेड समंको से तथा अन्य प्रतियोगी फर्मों के समंको से तुलना की जा सकती है। इससे व्यापार से सम्बंधित क्रिया कलापों के अनुकूल व प्रतिकूल विचरणों का पता चलता है। विचरणों को दूर करने के लिए सुधारात्मक कार्यवाही की जा सकती है। इस प्रकार व्यवसाय पर लेखांकन द्वारा प्रभावी नियन्त्रण किया जाता है।

(5) व्यवसाय में हित रखने वाले पक्षों को सूचनाएँ उपलब्ध कराना (Providing information to Parties having interest in Business) : व्यवसाय में स्वामी के अतिरिक्त अनेक पक्षों, जैसे प्रबन्धकों, लेनदारों, कर्मचारीगण, समाज, वर्तमान एवं भावी विनियोग करने वाले शोधकर्ताओं सरकार आदि का भी हित होता है। इन सबको वांछित सूचनाऐं उपलब्ध करवाने के लिए लेखांकन आवश्यक है। व्यवसाय के स्वामी की रूचि लाभ में होती है। ऋणदाता एवं विनियोगकर्त्ता की रूचि अपनी विनियोजित राशियों की सुरक्षा में एवं ब्याज तथा लाभांश की प्राप्ति में होती है। कर्मचारियों का हित अपनी मजदूरी, बोनस तथा स्थायित्व में होता है। लेखांकन के द्वारा इन सबको वाँछित सूचनाएँ उपलब्ध करवायी जाती है।

(6) कर सम्बन्धी सूचनायें तैयार करना (Preparation of Details Regarding Tax) : वर्तमान व्यावसायिक जगत पर सरकार द्वारा अनेक प्रकार से करारोपण किया जाता है जैसे, आयकर, धनकर, वैट, विक्रय कर आदि। लेखांकन की सहायता से इन सब करों से सम्बन्धित विवरण तैयार किया जाता है। कर योग्य आय व धनकर का निर्धारण क्रमशः लाभ हानि खाते एवं स्थिति विवरण के आधार पर किया जाता है।

(7) वित्तीय संस्थाओं को आवश्यक सूचनाएँ उपलब्ध करवाना (Providing Necessary Information to Financial Institutions) : विभिन्न वित्तीय संस्थाओं से धन की व्यवस्था करवाने के लिए व्यापारी को व्यवसाय से सम्बन्धित अनेक सूचनाएँ इन संस्थाओं को प्रदान करनी पड़ती है। जैसे गत वर्षों की बिक्री, स्टॉक की स्थिति, व्यवसाय की लाभदायकता, आर्थिक स्थिति आदि। इन सब सूचनाओं का विवरण प्रस्तुत करना लेखांकन के कारण ही संभव हो पाता है।

1.1.3 लेखांकन का विकास (Development of Accounting) :

लेखांकन उतना ही प्राचीन है जितनी मुद्रा। लिपिबद्ध इतिहास काल से पूर्व भी भारत में आय–व्यय के लेखांकन के संकेत मिलते हैं। वैदिक काल में लेखा–जोखा रखने की परम्परा विद्यमान

टिप्पणी

थी। लेखांकन तथा लाभ सम्बन्धी अवधारणा का मनु संहिता में भी स्पष्ट उल्लेख मिलता है। इतिहासकारों को वेदों, रामायण एवं महाभारत में भी लेखांकन अभिलेखों का उल्लेख मिला है। परन्तु तत्कालीन लेखांकन सीमित स्मरण–शक्ति के कारण सौदों को दर्ज करने का माध्यम मात्र रह गया था। लेखांकन विषय आज ज्ञान की एक विशिष्ट शाखा बन गया है। प्राचीन समय में मात्र अपने स्वामी के प्रति उत्तरदायी समझा जाने वाला लेखांकन वर्तमान युग में सम्पूर्ण समाज के लिए उत्तरदायी माना जाने लगा है। आज की अवस्था तक पहुंचने में लेखांकन का विकास क्रम इस प्रकार रहा –

(i) **कारिन्दा लेखांकन (Stewardship Accounting) :** सभ्यता के प्रारम्भिक युग में लेखांकन कारिन्दों या प्रबन्धकों (Stewards) को उनके कर्त्तव्य निर्वाह में सहायता प्रदान करता था। यही कारिन्दा लेखांकन वित्तीय लेखांकन प्रणाली की जड़ है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि लेखांकन प्रणाली की उत्पत्ति ईसा से भी 4500 वर्ष पुरानी है। वर्तमान में प्रचलित दोहरा लेखा पद्दति केवल 15वीं शताब्दी के अन्त में विकसित हुई है। इटली के वेनिस नगर के गणितज्ञ लुकास पैसियोली ने 1494 ई. में दोहरा लेखा प्रणाली के सिद्धान्तों को सर्वप्रथम प्रतिपादित किया। लेखांकन की बहीखाता शाखा का विकास इसी चरण में हुआ।

(ii) **वित्तीय लेखांकन (Financial Accounting) :** लेखांकन का यह कदम संयुक्त स्कन्ध कम्पनियों की उत्पति से जुड़ा हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप स्वामित्व एवं प्रबन्ध अलग–अलग हो गये। औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप व्यवसाय के आकार एवं स्वामित्व का विस्तार हो जाने के कारण व्यवसाय के संचालक एवं स्वामियों का उत्तरदायित्व बहुत बढ़ गया। संयुक्त पूंजी वाली कम्पनियों के रूप में स्थापित वृहद् उद्योगों ने लोगों का जीवन–स्तर तीव्र गति से विकसित किया है। परिवर्तित सामाजिक–आर्थिक विकास एवं कल्याणकारी राज्य की विचारधारा ने व्यावसायिक जगत में राज्य एवं लोगों की आशाओं को बहुत बढ़ा दिया है। परिणामस्वरूप, व्यवसाय के बारे में सभी पक्षकारों, जैसे – विनियोगकर्त्ता, प्रबन्धक–वर्ग, समाज, सरकार, श्रमिक–वर्ग आदि को सन्तुष्टि प्रदान करने के लिए लेखांकन ने भी अपने स्वरूप में परिवर्तन कर समाज के साथ कदम–से–कदम मिलाया और सौदों को दर्ज करने की क्रिया मात्र कहलाने वाला यह विषय एक सूचना प्रणाली के रूप में उभर कर सामने आया।

(iii) **प्रबन्धकीय लेखांकन (Management Accounting) :** इसका विकास 20वीं शताब्दी में हुआ है। अब लेखा सूचनाओं का प्रबन्धकीय निर्णयों हेतु उपयोग किया जाने लगा। इस प्रकार लेखांकन के क्षेत्र में 1950 ई. के बाद से प्रबन्धकीय कार्यों में सहायता पहुंचाने के लिए प्रबन्धकीय लेखांकन के रूप में एक नई दिशा का विकास हुआ है। अब लेखांकन एक पेशा बन गया है। लेखांकन के अपने निश्चित सिद्धान्त एवं मान्यतायें हैं जो देश व काल की विभिन्नता के बावजूद भी एक ही तरह से अपनाये जाते हैं। यद्यपि ये सिद्धान्त विशुद्ध विज्ञान की तरह अकाट्य नहीं हैं और इसलिए इसे विज्ञान की एक अन्य शाखा–सामाजिक विज्ञान के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

(iv) **सामाजिक उत्तरदायित्व लेखांकन (Social Responsibility Accounting) :** लेखांकन के विकास का सबसे नया क्षेत्र सामाजिक उत्तरदायित्व लेखांकन है जो व्यवसाय द्वारा समाज को प्रदान की जा रही सेवाओं एवं समाज से प्राप्त की जा रही सुविधाओं की लागतों का लेखा रखता है। इससे समाज की व्यवसाय के प्रति जागरूकता बढ़ती है। लेखांकन समाज के भले के लिए है, सामाजिक उद्देश्य को पूरा करता है, सामाजिक प्रगति में योगदान देता है एवं समाज की प्रगति के साथ जुड़ा हुआ है। अतः, इसे सामाजिक विज्ञान के रूप में जाना जाता है।

टिप्पणी

1.1.4 बहीखाता एवं लेखांकन (Book-keeping & Accounting)

बहीखाता लेखांकन का ही एक अंग है। बहीखाता लेखांकन का वह हिस्सा है जिसमें प्रारम्भिक लेखा पुस्तकों में प्रविष्टि करना, वर्गीकरण, खतौनी, तलपट तैयार करना आदि कार्य किये जाते है। आधुनिक समय में लेखांकन का जो विकास हुआ है, उसकी प्रारम्भिक सीढ़ी बहीखाता है। लेखांकन सर्वप्रथम बहीखाता से ही प्रारम्भ हुआ था।

बहीखाता का अर्थ (Meaning of Book-keeping) : बहीखाता अंग्रेजी के दो शब्दों बुक तथा कीपिंग से मिलकर बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है – पुस्तकें रखना। पुस्तकें रखने से अभिप्राय निश्चित नियम एवं विधि के अनुसार आर्थिक व्यवहारों का पूर्ण लेखा करने के लिए लेखा पुस्तकों को रखना है। यहां लेखा करने का तात्पर्य नियमानुसार लेन–देनों को पुस्तकों में लिखने से है।

बहीखाता किसी व्यक्ति अथवा व्यावसायिक संगठन द्वारा व्यापार के समस्त लेन–देनों को लेखा पुस्तकों में निश्चित विधि तथा सिद्धान्तों के आधार पर शुद्धतापूर्वक लिखने का एक विज्ञान एवं कला है जिससे किसी भी निश्चित अवधि में व्यापार में होने वाले लाभ अथवा हानि को जाना जा सके तथा व्यापार की आर्थिक स्थिति का भी ज्ञान हो सके।

बहीखाता व लेखांकन में अन्तर (Difference between Book-keeping and Accounting)

अन्तर का आधार	बहीखाता (Book keeping)	लेखांकन (Accounting)
1. क्षेत्र	इसका क्षेत्र केवल व्यापारिक व्यवहारों का लेखा करने तक ही सीमित होता है। यह वास्तव में लेखांकन का प्रारम्भिक स्वरूप है।	इसका क्षेत्र बहीखाता की तुलना में विस्तृत होता है। बहीखाता इसमें सम्मिलित होता है।
2. उद्देश्य	बहीखाता का उद्देश्य प्रारम्भिक मौलिक पुस्तकें (जर्नल व खाताबही) तैयार करना है।	लेखांकन का उद्देश्य व्यावसायिक व्यवहारों का लेखांकन (Accounting), विश्लेषण (Analysis) एवं निर्वचन (Interpretation) करना है।
3. कार्य का स्तर	इसका कार्य निचले स्तर पर होता है और मुख्यतया लिपिक द्वारा किया जाता है।	इसका कार्य निचले, मध्यम एवं उच्च तीनों स्तरों पर होता है। निम्न स्तर पर लिपिक खातों को तैयार करते हैं, मध्यवर्ती स्तर पर लेखाकार इसकी रिपोर्ट तैयार करते हैं और उच्च स्तर पर प्रबन्धकीय लेखाकार इसका विश्लेषण एवं निर्वचन करते हैं।
4. पारस्परिक	बहीखाता केवल लेखा करने	लेखांकन, बहीखाता पर निर्भर करता है।

अन्तर का आधार	बहीखाता (Book keeping)	लेखांकन (Accounting)
निर्भरता	की कला है। लेखांकन इससे अर्थपूर्ण एवं उद्देश्यपूर्ण बनाता है।	बहीखाता इसका प्रमुख आधारभूत अंग है।
5. वित्तीय व्यवहारों का परिणाम	इससे व्यापार के वित्तीय व्यवहारों का परिणाम मालूम नहीं हो पाता है।	लेखांकन व्यवसाय के परिणाम को प्रदर्शित करता है। यह व्यवसाय के लाभ/हानि, सम्पत्तियों एवं दायित्वों को प्रकट करता है।
6. लेखांकन के सिद्धान्त	बहीखाता में लेखांकन के सिद्धान्तों को सभी व्यवसाय समान रूप से अपनाते हैं।	लेखांकन के तथ्यों की रिपोर्ट, विश्लेषण एवं निर्वचन के तरीकों में विभिन्न व्यवसायों में थोड़ी बहुत भिन्नता हो सकती है।

1.1.5 लेखांकन के सिद्धान्त (Principles of Accounting)

लेखांकन, व्यवसाय से सम्बन्धित सूचनाओं के सम्प्रेषण का आधार है। इनके द्वारा दी गई सूचनाऐं सभी सम्बन्धित पक्षों के लिए एकरूप होना आवश्यक है। इसके लिए विश्वभर के लेखाकारों ने कुछ ऐसे सिद्धान्त, अवधारणाएँ और परम्पराएँ विकसित की है जो लेखांकन से सम्बन्धित संस्थाओं एवं पेशेवरों के सर्वमान्य विचारों का प्रतिनिधित्व करती हैं, उन्हें 'लेखांकन सिद्धान्तों' या 'लेखांकन के सामान्यतः स्वीकृत सिद्धान्तों'' के नाम से जाना जाता है। लेखांकन सूचनाओं से विश्वसनीय एवं सर्वमान्य परिणाम उसी दशा में दिये जा सकते हैं जबकि लेखांकन के लिए सामान्यतः स्वीकृत सिद्धान्तों तथा प्रथाओं का पालन किया गया हो तथा अपेक्षित परिणाम एवं निष्कर्ष ऐसे सिद्धान्तों एवं प्रथाओं के अनुसार निकाले गये हों।

सिद्धान्त का अर्थ (Meaning of Principle) : सिद्धान्त से तात्पर्य ऐसे मूलभूत सत्य से है जिसे सर्वत्र एक समान स्वीकार किया जाता है।

''सिद्धान्त से अभिप्राय किसी कार्य के मार्ग–दर्शन हेतु प्रतिपादित या स्वीकृत सामान्य नियम से लिया जाता है।''

अमेरिकन इन्स्टीट्यूट ऑफ सर्टिफाइड पब्लिक अकाउन्टेन्ट्स

''किसी व्यवस्था या कार्य के नियन्त्रण हेतु प्रतिपादित कोई विचार, जिसे समाज के योग्य समझे जाने वाले व्यावसायिक वर्ग के सदस्यों द्वारा स्वीकार कर लिया जाय, सिद्धान्त कहलाता है।''

ई. एल. कोहलर

लेखांकन विज्ञान विकास की अन्तिम स्थिति में न होकर अभी विकास प्रक्रिया के दौर में ही है, परिणामस्वरूप लेखांकन सिद्धान्तों का तेजी से विकास हो रहा है। अतः, यह सिद्धान्त व्यवहार में होने वाले विभिन्न परिवर्तनों एवं सरकारी नीतियों आदि से प्रभावित होते रहते हैं।

लेखांकन सिद्धान्तों की विशेषताएँ (Characteristics of Accounting Principles) : लेखांकन सिद्धान्तों में निम्नलिखित विशेषताएँ पायी जाती हैं :–

1. लेखांकन सिद्धान्त मानव द्वारा निर्मित होते हैं, अतः वे भौतिक विज्ञान के प्राकृतिक नियमों की तरह स्वयंसिद्ध नहीं होते हैं।

टिप्पणी

2. लेखांकन सिद्धान्त लेखा–व्यवहार (Accounting Practice) में एकरूपता लाने के लिए और उनको बोधगम्य बनाने के लिए विकसित किये जाते हैं।

3. सिद्धान्त लेखाकारों के लेखांकन कार्य में दिशा निर्देशन करते है तथा विवेकपूर्ण निर्णय लेने में सहायता करते हैं।

4. ये सिद्धान्त अभी विकास की प्रक्रिया में हैं।

5. ये सिद्धान्त लोचपूर्ण (Flexible) होते हैं न कि कठोर अर्थात् लेखाशास्त्र से सम्बन्धित सिद्धान्तों (Theories) में परिवर्तन के साथ–साथ इनमें संशोधन आवश्यक हो जाता है। इस प्रकार का संशोधन राष्ट्रीय व अन्तर्रराष्ट्रीय स्तर पर अनेक मानकों (Standards) में किया जा चुका हैं।

लेखाकंन सिद्धान्तों के नियम (Rules governing Accounting Principles) : लेखांकन सिद्धान्त अथवा मानक निम्नलिखित नियमों से शासित होते हैं :

(अ) सम्बद्धता (Relevance) : लेखांकन सिद्धान्त लेखांकन सम्बन्धी विभिन्न विवरण पत्रों को तैयार करने में सहायक और उपयोगी होने चाहिए। ये सिद्धान्त उन व्यक्तियों के लिए अर्थपूर्ण भी होने चाहिए जो इन विवरण पत्रों का उपयोग करने वाले हैं।

(ब) वस्तुपरकता (Objectivity) : लेखांकन सिद्धान्त ऐसे होने चाहिए कि उनका उपयोग करने वाले विभिन्न व्यक्ति उनका एक ही अर्थ लगावें तथा वे व्यक्तिगत पक्षपात से पूर्णतः अप्रभावित रहे।

(क) व्यावहारिकता (Feasibility) : लेखांकन सिद्धान्त व्यावहारिक होने चाहिए अर्थात् वे ऐसे होने चाहिए कि व्यवहार में उन्हें लागू किया जा सके। सिद्धान्त आसानी से समझ में आने वाले होने चाहिए।

लेखांकन के सिद्धान्त कुछ आधारभूत अवधारणाओं, परम्पराओं एवं मान्यताओं के आधार पर विकसित हुए हैं। लेखांकन के इन सिद्धान्तों को निम्नलिखित दो मुख्य भागों में बांटा गया है –

(अ) लेखांकन की अवधारणायें या संकल्पनाएँ (Accounting Concepts or Postulates); तथा

(ब) लेखांकन की परम्परायें या प्रथाएँ (Accounting Conventions)

१.१.५.१ लेखांकन की अवधारणाएँ (Accounting Concepts)

अवधारणाओं का तात्पर्य उन मूलभूत विचारों से है जिन पर किसी भी विषय का सम्पूर्ण ढांचा टिका हुआ होता है तथा जिन्हें प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं रहती। लेखांकन अवधारणाऐं वे स्वयंसिद्ध आवश्यक मान्यताऐं हैं जिनके आधार पर लेखांकन सिद्धान्तों का निर्माण हुआ है। दूसरे शब्दों में वे सिद्धान्त जो बिना किसी प्रमाण के स्वीकार कर लिए जाते है, अवधारणाऐं कहलाती हैं। अवधारणाओं को जब जाँच, तर्क, अनुभव व युक्ति के आधार पर उपयोगी प्रमाणित कर लिया जाता है तथा उनको सर्वमान्य रूप से स्वीकार कर लिया जाता है तो वे लेखांकन के सिद्धान्तों के रूप में प्रयोग में आने लगती है।

(1) पृथक अस्तित्व की अवधारणा (Separate Entity Concept) : लेखांकन में हम व्यवसाय के अस्तित्व को उसके स्वामियों से पृथक मानते है। लेखांकन के दृष्टिकोण से व्यवसाय को एक अलग इकाई माना जाता है। लेखांकन का सम्बन्ध व्यवसायी से न होकर व्यवसाय से होता है। लेखांकन का उद्देश्य व्यवसाय के क्रियाकलापों का परिणाम एवं व्यवसाय की स्थिति जानना है अतः लेखा व्यावसायिक इकाई, फर्म, दुकान, कम्पनी, कारखाने आदि की पुस्तकों में किया जाता है न कि व्यवसाय के स्वामी, साझेदार, अंशधारियों आदि की पुस्तकों में। पृथक अस्तित्व की अवधारणा के

टिप्पणी

आधार पर ही व्यवसाय में उसके मालिकों द्वारा लगाई गई पूँजी को व्यवसाय की दृष्टि से दायित्व मानते हैं। इसी कारण से पूँजी पर ब्याज दिया जाता है। इसी प्रकार जब व्यवसायी अपने निजी प्रयोग हेतु राशि व्यापार से निकालता है तो उसे आहरण के रूप में दिखाते हैं। यदि लेखांकन में इस अवधारणा का पालन नहीं किया जाता है तो व्यवसाय के स्वामियों के निजी आय–व्यय व्यवसाय के आय–व्ययों में सम्मिलित हो जाएंगे और इसके परिणामस्वरूप व्यापार की सही लाभ–हानि का निर्धारण नहीं किया जा सकेगा। इसी प्रकार, व्यवसाय की सम्पत्तियों में निजी सम्पत्तियाँ तथा व्यवसाय के दायित्वों में निजी दायित्वों को मिला दिया जाए तो व्यवसाय की सही आर्थिक स्थिति का निर्धारण नहीं हो सकेगा।

(2) मुद्रा माप सम्बन्धी अवधारणा (Money Measurement Concept) : लेखांकन में हम केवल उन्हीं व्यवहारों का लेखा करते हैं जिनका मुद्रा रूपी पैमाने में मापन किया जा सके। जिन घटनाओं एवं व्यवहारों को मुद्रा में व्यक्त नहीं किया जा सकता है उनका लेखांकन भी नहीं किया जा सकता है चाहे वे व्यवसाय के लिए अत्यन्त उपयोगी ही क्यों न हो। जैसे – व्यवसाय में विश्वसनीय, कर्त्तव्यनिष्ठ, अच्छे कर्मचारियों की टीम का होना व्यवसाय की एक सम्पत्ति है परन्तु इसे मुद्रा में नहीं मापा जा सकता है अतः उसका लेखा पुस्तकों में लेखांकन नहीं किया जा सकता है। स्पष्टतः, उन घटनाओं एवं तथ्यों का लेखांकन नहीं किया जा सकता जिनका मौद्रिक रूप में मापन न हो सके जैसे, सभी पक्षों का पारस्परिक सहयोग अथवा मन–मुटाव, कर्मचारियों का अनुभव एवं योग्यता, व्यापारिक एकाधिकार एवं गलाकाट प्रतियोगिता, अच्छी या बुरी व्यापारिक परिस्थितियाँ, सरकारी नीतियां एवं ग्राहकों की रूचि में परिवर्तन आदि। ये घटनाऐं आपके व्यवसाय को प्रभावित करती हैं परन्तु इनका मुद्रा में मापन नहीं होने से इसका व्यवसाय में कोई लेखा नहीं हो सकता है।

(3) निरन्तरता की अवधारणा (Going Concern Concept) : लेखांकन इस मान्यता के आधार पर किया जाता है कि व्यवसाय दीर्घकाल तक चलता रहेगा जब तक कि कोई ऐसे कारण उपस्थित न हो जो कि विपरीत परिस्थितियाँ उत्पन्न करे। इसी मान्यता के आधार पर ही हम दीर्घकाल में उपयोग के लिए भूमि, भवन, प्लान्ट, मशीन आदि स्थायी सम्पत्तियाँ खरीदते हैं। यदि व्यवसाय दीर्घकाल तक जारी रखने का उद्देश्य न होता तो हम इन स्थायी सम्पत्तियों को खरीदने के बजाय किराये पर लेते। चालू व्यापार की अवधारणा के आधार पर ही सम्पत्तियों का चालू एवं स्थायी में वर्गीकरण किया जाता है तथा स्थायी सम्पत्तियों का लेखा हम लागत मूल्य पर करते हैं। स्थायी सम्पत्तियों के भावी उपयोगी जीवन काल की गणना भी इसी मान्यता पर आधारित है कि व्यवसाय भविष्य में निरन्तर चलता रहेगा तथा इसी वजह से हम प्रति वर्ष वार्षिक ह्रास का लेखा करते हैं।

(4) द्विपक्षीय अवधारणा (Dual Aspect Concept) : लेखांकन में प्रत्येक व्यवहार अथवा घटना दो या दो से अधिक खातों को प्रभावित करती है। एक खाते का 'नाम' पक्ष तथा दूसरे खाते का 'जमा' पक्ष प्रभावित होता है। यही द्विपक्षीय सिद्धान्त दोहरा लेखा प्रणाली का आधार है। कोई भी व्यवहार एक पक्षीय नहीं होता है। अतः, नाम व जमा पक्ष पर प्रभाव हमेशा बराबर रहता है। यदि सम्पत्तियों में वृद्धि होगी तो लेनदार अथवा पूंजी किसी में वृद्धि अवश्य होगी जो चिट्ठे तथा तलपट के योग को बराबर कर देगी। उदाहरणार्थ – किसी व्यावसायिक संस्था के मालिक ने 1,00,000 रु. की अतिरिक्त पूंजी लगाई तो इससे पूंजी खाता तथा बैंक शेष अथवा रोकड़ शेष प्रभावित होगा। इस तरह पूंजी खाते का जमा शेष 1,00,000 रु. से तथा बैंक अथवा रोकड़ का नाम शेष 1,00,000 रु. से बढ़ जायेगा।यह द्विपक्षीय सिद्धान्त ही दोहरा लेखा प्रणाली का आधार है। अतः, किसी लेनदेन से एक सम्पत्ति में वृद्धि होने पर दूसरी सम्पत्ति में कमी या दायित्व में वृद्धि हो सकती है। इसी प्रकार एक

टिप्पणी

सम्पत्ति में कमी होने पर किसी दूसरी सम्पत्ति में वृद्धि या किसी दायित्व में कमी भी हो सकती है। इसके विपरीत एक दायित्व में वृद्धि होने पर किसी दूसरे दायित्व में कमी या किसी सम्पत्ति में वृद्धि हो सकती है। इसी प्रकार एक दायित्व में कमी होने पर किसी दूसरे दायित्व में वृद्धि या किसी सम्पत्ति में कमी हो सकती है।

(5) लागत अवधारणा (Cost Concept) : इस मान्यता के आधार पर विभिन्न व्यावसायिक लेनदेनों का लेखांकन उनकी लागत पर ही किया जाता है। लेखा पुस्तकों में चल व अचल सम्पत्तियों का लेखांकन उनकी लागत पर ही किया जाता है। अगर किसी वस्तु अथवा सेवा को प्राप्त करने में कोई लागत न लगे तो उसका पुस्तकों में लेखांकन ही नहीं किया जायेगा। यह अवधारणा व्यवसाय की निरन्तरता की अवधारणा पर ही आधारित होने से स्थायी सम्पत्तियों को उनके लागत मूल्य पर ही पुस्तकों में दर्ज किया जाता है। इस प्रकार लागत अवधारणा के आधार पर सम्पत्ति को चिट्ठे में उसके प्रतिस्थापन या विक्रय मूल्य पर नहीं दर्शाते हैं। लागत अवधारणा का आशय यह नहीं है कि सम्पत्तिया हमेशा अपनी मूल लागत (ऐतिहासिक लागत) पर ही चिट्ठे में दर्शायी जायेंगी। ह्रास योग्य सम्पत्तियों पर प्रतिवर्ष मूल्य ह्रास लगाया जाता है तथा उनकी लागत में से मूल्य ह्रास घटाकर उन्हें चिट्ठे में अपलिखित मूल्यों पर दर्शाया जायेगा। चालू सम्पत्तियाँ – जैसे रोकड़, देनदार आदि के पुस्तक मूल्य व बाजार मूल्य में कोई अन्तर नहीं होता है।

(6) वसूली या आगम अवधारणा (Concept of Realisation or Revenue Recognition) : आय के मापने का महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। लेखांकन करते समय एक समस्या यह होती है कि किसी आय विशेष को कब अर्जित मान लेना चाहिए। इस सिद्धान्त के अनुसार आय उस तिथि को अर्जित मानी जाती है जिस तिथि को उसे वसूल कर लिया जाता है। यहाँ पर वसूली का तात्पर्य रोकड़ में मूल्य प्राप्त करने की तिथि से न होकर उस तिथि से है जिस तिथि को माल या सेवाऐं किसी ग्राहक को दे दी जाती है। इसे विक्रय के आधार पर आगम निर्धारण कहते है।

नकद बिक्री की स्थिति में यह समस्या उत्पन्न नहीं होती है क्योंकि उसमें माल की सुपुर्दगी एवं भुगतान में अन्तर नहीं होता लेकिन उधार बिक्री में ऐसी समस्या उत्पन्न होती है तब हम आगम निर्धारण की इसी अवधारणा को आधार बनाते हैं। आगम निर्धारण की इस परम्परा के आधार पर आगम उस अवधि में प्राप्त मानी जाती है जब ग्राहक को मूल्य के बदले माल या सेवायें दी जाती हैं।

(i) रोकड़ के आधार पर (Cash Basis) : इस आधार का प्रयोग उस समय करना उचित रहता है जब आगम की प्राप्ति अनिश्चित एवं सन्देहास्पद हो। उदाहरणार्थ किराया किस्त पद्धति, किस्त भुगतान पद्धति आदि के आधार पर विक्रय आदि की दशा में वास्तव में किस्त की राशि प्राप्त होने पर ही आय को अर्जित माना जाता है। इस प्रकार रोकड़ के आधार पर आगम निर्धारण में आय को अर्जित तभी मानते हैं जब वास्तव में भुगतान प्राप्त हो जाए।

(ii) उत्पादन के आधार पर (Production Basis) : इस सिद्धान्त के आधार पर काम के पूर्ण हुए भाग की आगम को अर्जित मान लिया जाता है। इसमें माल के विक्रय या भुगतान प्राप्ति की कोई शर्त नहीं होती है। निर्माण कार्यों में विशेष कर बड़ी एवं बहुमंजिली इमारतों के निर्माण के ठेकों में इस आधार का प्रयोग किया जाता है। यदि इन बड़े ठेकों की स्थिति में आगम की प्राप्ति को ठेका पूरा होने की अवधि तक स्थगित किया जाता है तो यह काफी बड़ी राशि हो जाती है। अतः, वर्ष के अन्त तक ठेके का जितना भाग पूरा हो जाता है उसके आधार पर आय का आनुपातिक भाग अर्जित आगम मान लिया जाता है।

टिप्पणी

(7) आय व व्ययों के मिलान की अवधारणा (Matching Concept) : इस अवधारणा के आधार पर जो व्यय जिस लेखा वर्ष से सम्बन्ध रखते हों उन्हें उसी लेखा वर्ष से सम्बन्धित आय में से चार्ज किया जाना चाहिये। लाभ या हानि के सही निर्धारण के लिए आय व व्ययों का ठीक प्रकार से मिलान किया जाना आवश्यक है। इस सिद्धान्त के आधार पर पहले लेखावधि की आगम का निर्धारण करना चाहिए तत्पश्चात् उस आगम को प्राप्त करने में हुए खर्चों को लाभ–हानि खाते में से चार्ज करना चाहिए। इसी अवधारणा के आधार पर ही बकाया खर्चों को लाभ–हानि खाते में लिखा जाता है। आय व व्ययों का मिलान करते समय निम्नलिखित बिन्दुओं का ध्यान रखा जाता है :–

(i) जब आगम के किसी मद को लाभ–हानि खाते में लिखा जाता है तो उससे सम्बन्धित सभी व्ययों को लाभ–हानि खाते में लिखना आवश्यक है चाहे उनका भुगतान किया गया हो अथवा बकाया हो।

(ii) जब कोई व्यय जैसे बीमा प्रीमियम आदि अंशतः अगले वर्ष के लिए भी चुका दिया जाता है तो उसका वह भाग जो अगले वर्ष से सम्बन्धित है उसे अगले वर्ष के लाभ–हानि खाते में दिखाया जायेगा। इस प्रकार बीमा प्रीमियम का वह भाग जिसका लाभ अगले वर्ष में प्राप्त होगा, स्थिति विवरण में पूर्वदत्त व्यय के रूप में दर्शाया जायेगा तथा केवल चालू वर्ष से सम्बन्धित भाग को ही चालू वर्ष का व्यय माना जायेगा और लाभ हानि खाते में दिखाया जायेगा।

(iii) इसी आधार पर ऐसी आयें जो चालू वर्ष में अर्जित कर ली गई हैं जैसे ब्याज आदि परन्तु प्राप्त नहीं हुई है तो उन्हें इसी वर्ष की आय माना जाएगा तथा ऐसी भावी आयें जिनका अर्जन अगले वर्ष में होना है परन्तु अग्रिम प्राप्त हो गई है तो जो भाग अगले वर्ष से सम्बन्धित है उसे अनार्जित आय के रूप में अगले वर्ष में हस्तान्तरित किया जायेगा।

(iv) वर्ष के अन्त में जो बिना बिका माल बच जाता है उसकी लागत व उसकी प्राप्ति के खर्चों को अगली लेखावधि के लिए हस्तान्तरित कर देते हैं। उस पर इस वर्ष कोई लाभ अर्जित नहीं दिखाते हैं क्योंकि उसे अगले वर्ष बेचा जायेगा। इस प्रकार चालू वर्ष का अन्तिम स्टॉक अगले वर्ष के लिए प्रारम्भिक स्टॉक के रूप में आगे ले जाया जाता है।

(8) उपार्जन अवधारणा (Accrual Concept) : लेखांकन के दो प्रमुख आधार हैं – रोकड़ आधार और उपार्जन आधार। रोकड़ आधार में आय रोकड़ में प्राप्त होने पर उसे आय के रूप में तथा व्ययों का रोकड़ में भुगतान होने पर ही उन्हें व्यय के रूप में लेखांकित करते है। परन्तु व्यवसाय के लिए यह आधार उपयुक्त नहीं है। व्यवसाय निरन्तरता की अवधारणा के आधार पर चलता है जिसमें हम लाभ–हानि ज्ञात करने के लिए लेखा वर्ष के आधार पर आयगत मदों का लेखा करते है परन्तु व्यापारिक क्रियाऐं सतत् चलती रहती हैं उसमें लेखावधि की समाप्ति रूकावट नहीं डालती है। अतः, व्यवसाय के लिए यह उपार्जन अवधारणा विशेष महत्व रखती है। इस अवधारणा के आधार पर आय व व्यय की मदों को लेखा पुस्तकों में उस समय लिखते हैं जबकि वे देय (due) हो जाती हैं। यदि कोई व्यय–चालू वर्ष से सम्बन्धित है तो चाहे वह इस वर्ष चुकाया गया हो अथवा नहीं उसे इस वर्ष के लाभ–हानि खाते में लिखा जायेगा। इसी तरह से आयों के सम्बन्ध में भी जो आय चालू वर्ष से सम्बन्धित है तथा चालू वर्ष में प्राप्त हो गई, वे आयें जो चालू वर्ष से सम्बन्धित है परन्तु अभी तक प्राप्त नहीं हुई है तथा ऐसी आयें जो चालू वर्ष से सम्बन्धित है परन्तु गत वर्ष में ही अग्रिम रूप से प्राप्त कर ली गई थी तो इन सब आयों को चालू वर्ष के लाभ–हानि खाते में क्रेडिट किया जायेगा।

(9) लेखा–अवधि अवधारणा (Accounting Period Concept) : व्यवसाय की निरन्तरता की अवधारणा के अनुसार व्यवसाय दीर्घकाल तक चलता रहता है। अगर व्यवसाय के समापन के समय ही

टिप्पणी

उसके परिणाम अर्थात् लाभ–हानि आदि ज्ञात किये जाय तो वह किसी भी तरह से ठीक नहीं होगा। व्यवसाय की स्थिति की जानकारी तो समय–समय पर उसमें हित रखने वाले सभी पक्षकारों को होनी ही चाहिए। अतः, प्रत्येक व्यवसाय द्वारा एक लेखा–अवधि का चुनाव किया जाता है जो सामान्यतः एक वर्ष की होती है। यह लेखा अवधि व्यवसाय का लेखा वर्ष कहलाती है। वर्तमान में आयकर प्रावधानों के अनुसार लेखावर्ष सरकारी वित्तीय वर्ष के अनुरूप अर्थात् 1 अप्रेल से अगले वर्ष के 31 मार्च तक रखना अनिवार्य कर दिया गया है। इस लेखा अवधि की अवधारणा पर ही आयगत और पूंजीगत का भेद सम्भव होता है। ऐसे मद जो एक लेखा वर्ष से सम्बन्धित हों उन्हें आयगत तथा जो एक से अधिक लेखावधियों तक उपयोगी हों उन्हें पूंजीगत में विभक्त किया जाता है।

उदाहरण (Illustration) १

बताइये कि निम्नलिखित वाक्य 'सत्य' है या 'असत्य'। (State whether the following sentences are "True" or "False").

(i) लागत अवधारणा के आधार पर बनाये गये चिट्ठे का एक विनियोजक के लिये कोई उपयोग नहीं है।

(The Balance sheet prepared on the basis of cost concept is of no use to an investor).

(ii) सम्पत्तियाँ चिट्ठे में उस मूल्य पर दिखायी जाती है जो मूल्य समापन पर वसूली योग्य हो।

(Assets are shown in the Balance sheet at the value realizable on liquidation).

(iii) एक लेखाकार का व्यक्तिगत निर्णय लेखा अभिलेखों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है।

(Personal judgement of the accountant greatly affects the accounting records).

(iv) मुद्रा माप सम्बंधी अवधारणा मुद्रा की इकाई में होने वाले परिवर्तनों पर विचार करती है।

(Money measurement concept consider the changes in the value of monetary unit)

(v) लेखांकन सेवा कार्य तथा सामाजिक विज्ञान है।

(Accounting is a service function and a social science)

(vi) पृथक अस्तित्व अवधारणा के अनुसार व्यक्तिगत व्यवहार व्यापारिक व्यवहारों से अलग किये जाते है।

(Personal transactions are separated from business transactions according to entity concept).

हल (Solution) :

(i) सत्य है (ii) असत्य है (iii) सत्य है (iv) असत्य है (v) सत्य है (vi) सत्य है।

टिप्पणी

उदाहरण (Illustration) 2

बताइये कि निम्नलिखित वाक्य 'सत्य' है या 'असत्य'। (State whether the following sentences are "True" or "False").

(i) लेखांकन मात्रात्मक सूचनाओं से सम्बन्ध रखता है। (Accounting deals with quantifiable information).

(ii) लेखांकन का उद्देश्य वित्तीय सूचनाओं का सम्प्रेषण केवल विनियोजकों को ही करना है। (Accounting aims to communicate financial information to investors only).

(iii) वित्तीय लेखांकन प्रबन्ध के लिये सूचनाऐं उपलब्ध करवाता है। (Financial Accounting provides information for management).

(iv) पुस्तपालन और लेखांकन शब्द का प्रयोग एक दूसरे के स्थान पर किया जा सकता है। (The term book-keeping and accounting can be used interchangeably).

टिप्पणी

(v) लेखांकन का दृष्टिकोण एक ऐसी सूचना प्रणाली से हो सकता है जिसकी स्वयं की निवेश प्रक्रिया विधि तथा उत्पादन विधि हों। (Accounting can be viewed as an information system which has its input processing method and output).

(vi) मानव संसाधन का मूल्य सामान्यतया चिट्ठे में सम्पत्ति के रूप में दर्शाया जाता है। (The value of human resources is generally shown as assets in the balance sheet.)

(vii) लेखांकन में केवल ऐसे व्यवहारों तथा घटनाओं को लिखा जाता है जो वित्तीय प्रकृति के हो। (Accounting records only those transactions and events which are of financial nature).

(viii) एकरूपता की मान्यता तभी उपयोगी है जबकि अन्य लेखांकन विधियां समान रूप से स्वीकृत हो। (The consistency convention is valuable when other accounting methods are equally acceptable).

हल (Solution) :

(i) सत्य है (ii) असत्य है (iii) असत्य है (iv) असत्य है (v) सत्य है (vi) असत्य है। (vii) सत्य है (viii) सत्य है।

उदाहरण (Illustration) – 3

उन लेखांकन सिद्धान्तों के नाम बताइये जिन पर निम्नलिखित टिप्पणियां निर्भर हैं। (Write the name of the accounting principles on which following comments are based).

(i) चिट्ठा मूल्यांकन का विवरण पत्र नहीं है।

(Balance sheet is not a valuation statement).

(ii) देनदार से प्राप्त अग्रिम को आय या विक्रय नहीं माना जाता है।

(Advance received from debtors are not taken as income or sale).

(iii) कर्मचारी को लागत पर किये गये माल के विक्रय को क्रय में समयोजित किया गया।

(Goods sold to an employee at cost is adjusted to purchase account).

(iv) स्थायी सम्पत्तियों के मूल्यों में न वसूल हुई वृद्धि को लाभांश के भुगतान में प्रयुक्त नहीं किया जा सकता।

(Unrealised appreciation in the value of fixed assets cannot be used for the payment of dividend).

(v) योग्यता या प्रबन्धकीय दल की विशेषता को प्रत्यक्ष रूप से चिट्ठे में प्रकट नहीं किया जाता।

(Skill or quality of management team is not directly disclosed in the balance sheet).

(vi) आगम की सामान्यतया उस समय पहचान की जाती है जबकि विक्रय होता है। (Revenue is usually recognized as earned at the point of time when sale is made).

हल (Solution) :

(i) निरन्तरता एवं लागत अवधारणा। (Going concern concept and cost concept)
(ii) लेखा अवधि अवधारणा। (Accounting period concept),
(iii) लागत अवधारणा। (Cost concept)
(iv) वसूली अवधारणा। (Realisation concept),
(v) लागत अवधारणा। (Cost concept)
(vi) वसूली अवधारणा। (Realisation concept)

उदाहरण (Illustration) 4

उन लेखांकन अवधारणाओं एवं परम्पराओं के नाम बताइये जिन पर निम्नलिखित टिप्पणियां आधारित है –(Explain the name of concepts and conventions on which following comments are based) :

(i) लाभों का पूर्वानुमान नहीं किया जाता तथा सभी संभव हानियों का प्रबन्ध किया जाता है। (Profits are not anticipated and all possible losses are provided for).

(ii) चालू सम्पत्तियों का मूल्यांकन लागत या बाजार मूल्य जो दोनों में से कम हो उस पर होता है। (Current assets are valued at lower of the cost or market value).

(iii) समान विशेषताओं वाली घटनाओं को समान लेखा विधि से व्यवहारित किया जाता है जब तक कि विधि परिवर्तन के लिये समुचित कारण न हो। (Events of same character should be treated by the same accounting method, unless there are adequate reasons for changing the method).

(iv) संदिग्ध दायित्व जिन्हें चिट्ठे में प्रदर्शित किया जाता है। (Contingent liability is shown in the Balance Sheet).

(v) लेखा नीतियां एक से दूसरी लेखावधि में परिवर्तित नहीं होती है। (Accounting policies should not be changed from one period to another).

हल (Solution) :

(i) रूढिवादिता की परम्परा। (Conservation convention)
(ii) रूढिवादिता की परम्परा (Conservation convention)
(iii) एकरूपता की परम्परा (Consistency concept)

टिप्पणी

(iv) पूर्ण प्रकटिकरण की परम्परा (Disclosure convention)
(v) एकरूपता की परम्परा। (Consistency concept)

उदाहरण (Illustration) 5

बताइये कि निम्नलिखित वाक्य 'सत्य' है या 'असत्य'। (State whether the following sentences are 'True' of 'False'):

(i) लागत तथा खर्चे एक समान है। (Cost and expenses are same).

(ii) लेखांकन के अन्तर्गत सभी व्यापारिक व्यवहारों को द्विपक्षीय अवधारणा के आधार पर लिखा जाता है।

(In accounting all business transactions are recorded as having dual aspect concept).

(iii) उपार्जन अवधारणा में रोकड़ आधार पर लेखांकन अन्तर्निहित है। (Accrual concept implies accounting on cash basis).

(iv) निरन्तरता की अवधारणा के लिये आवश्यक है कि सभी व्यवसायिक उपक्रम समान विधि को अपनाये।

(The consistency concept requires that all business enterprises should follow the same method).

(v) बुद्धिमानी की अवधारणा है कि अनुपार्जित लाभ को पहचाने तथा हानियों को नहीं। (Prudence is a concept to recognize unrealized profits and not losses).

(vi) निरन्तरता अवधारणा का आशय है कि व्यवसाय समापन की प्रक्रिया में प्रवेश कर चुका है। (Going concern means that business has entered into a process of liquidation).

(vii) लेखांकन के सिद्धान्त सामान्यतया स्वीकार्य है। (Accounting principles are generally acceptable).

(viii) मिलान सिद्धान्त के अनुसार आगम का खर्चों से मिलान हो। (Revenue are matched with expenses in accordance with the matching principle).

(ix) व्यवहार तथा घटनाऐं देश के नियमों के अधीन सामान्यतया स्वीकृत लेखांकन सिद्धान्तों से निर्देशित होती है।

(Transactions and events are guided by generally accepted accounting principles subject to laws of Land).

(x) वित्तीय विवरणों द्वारा सभी सम्बंधित एवं विश्वसनीय सूचनाऐं पूर्ण प्रकटीकरण के सिद्धान्त के अनुसार प्रकट की जानी चाहिये। (The financial statements must disclose all the relevant and reliable information in accordance with full disclosure principle).

(xi) लेखांकन नीतियां एक अवधि से दूसरी अवधि में परिवर्तित नहीं होती है। यहां किस सिद्धान्त का वर्णन किया गया है। (Accounting policies should not be changed from one period to another. What principle is described herein?)

(xii)आगम की सामान्यतया पहचान तब होती है जब आगम प्रक्रिया शुद्धता से पूर्ण हुई है तथा सार्थक जोखिम एवं प्रतिफल का आदान प्रदान हुआ है। यहां कौनसे सिद्धान्त का वर्णन किया गया है ?

Revenue is generally recognized when the earning process is virtually completed and significant risk and rewards has been exchanged. What principle is described herein?

हल (Solution) :

(i) असत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) असत्य (v) असत्य (vi) असत्य (vii) सत्य (viii) सत्य (ix) सत्य (x) सत्य (xi) संगति या एकरूपता का सिद्धान्त (Consistency concept) (xii) वसूली या आगम अवधारणा (Realisation concept)

१.१.५.२ लेखांकन की परम्पराएँ (Accounting Conventions) :

कुछ व्यवहार उपयोगिता और महत्व के अनुसार अधिकाधिक प्रचलन में आ जाते हैं तथा धीरे–धीरे जीवन का आवश्यक अंग बन जाते हैं तो इन्हें बाद में परम्पराओं अथवा प्रथाओं के नाम से जाना जाता है। ये परम्परायें जब सर्वमान्य हो जाती हैं तो नियम, सिद्धान्त या अवधारणाओं का रूप ले लेती हैं।

''परम्परा आम सहमति पर आधारित व्यवहार अथवा रस्म है।'' – ऑक्सफोर्ड एडवान्स्ड लर्नर्स शब्द कोष

अन्तर्रराष्ट्रीय लेखा मानकों में परम्पराओं को लेखांकन नीतियों के नाम से वर्णित किया गया है। व्यवहार में जो सामान्य सहमति पाई जाती है उसे ही परम्परा कहते हैं। लेखांकन में बहुत–सी ऐसी परम्परायें हैं जिन्हें एक रस्म के रूप में लेखापाल दीर्घकाल से अपनाते आ रहे हैं। इन परम्पराओं का अनुसरण न करने पर कभी कभी कोई अशुद्धि नहीं भी होती हो लेकिन इनका पालन करने से लेखों की उपयोगिता अवश्य बढ़ जाती है। वर्तमान में लेखांकन में पालन की जा रही प्रमुख परम्परायें निम्नलिखित है :–

(1) रूढ़िवादिता की परम्परा (Convention of Conservatism) : रूढ़िवादिता को 'सुरक्षा की नीति' के रूप में जाना जाता है। इसके अनुसार सभी सम्भावित हानियों का प्रावधान लेखांकन में कर दिया जाना चाहिए चाहे उनकी वास्तविक राशियों का स्पष्ट ज्ञान न भी हो, परन्तु लाभों की वसूली की पहले से आशा नहीं करनी चाहिए। लेखांकन में इस परम्परा के उपयोग के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं जिसका अधिकांशतः लेखाकार पालन करते हैं :–

(i) स्टॉक का मूल्यांकन लागत मूल्य या बाजार मूल्य जो दोनों में से कम हो उस पर करना,

(ii) डूबत एवं संदिग्ध ऋणों तथा बट्टे के लिए देनदारों पर आयोजन का निर्माण करना,

(iii) विनियोगों के मूल्य में होने वाले उतार–चढ़ावों के लिए आयोजन करना,

(iv)अनिश्चित जीवनकाल वाली अमूर्त सम्पत्तियों जैसे ख्याति को अपलिखित करना,

टिप्पणी

(2) पूर्ण प्रकटीकरण की परम्परा (Convention of Full Disclosure) : इस परम्परा के अनुसार व्यवसाय से सम्बन्धित सभी महत्वपूर्ण सूचनाओं का पूर्ण रूपेण प्रदर्शन होना चाहिए। वर्ष भर में किये गये व्यवहारों का सारांश अन्तिम खातों के रूप में अभिव्यक्त किया जाता है। लाभ–हानि खाता अथवा आय–विवरण वर्ष भर की क्रियाओं का परिणाम प्रदर्शित करता है जबकि स्थिति विवरण वर्ष के अन्त में आर्थिक स्थिति की तस्वीर प्रस्तुत करता है। इन अन्तिम लेखा–विवरणों में अनेक व्यक्तियों की रूचि तथा हित होता है जैसे – व्यवसाय के स्वामी, कर्मचारी, ऋणदाता, विनियोजक, लेनदार, बैंक, सरकार, उपभोक्ता आदि। अतः यह आवश्यक है कि इन विवरण पत्रों में अभिव्यक्त सूचनायें निष्पक्ष रूप से ईमानदारी व निष्ठा के साथ प्रकट की जानी चाहिए। इसी परम्परा के आधार पर ऐसी मदें जिन्हें इन वार्षिक विवरणों में स्थान नहीं मिलता है परन्तु वे महत्वपूर्ण हैं तो उन्हें चिट्ठे के नीचे टिप्पणी के रूप में दर्शाया जाना चाहिए। व्यवसाय के विरूद्ध उत्पन्न हो सकने वाले संदिग्ध दायित्वों को जिनका प्रावधान नहीं किया गया है, जैसे न्यायालय में संस्था के विरूद्ध चल रहे दावों की बड़ी राशियों को अवश्य ही टिप्पणी के रूप में वित्तीय विवरण में दर्शाया जाना चाहिये अन्यथा ये विवरण भविष्य में भ्रामक सिद्ध हो सकते हैं। विनियोगों का बाजार मूल्य टिप्पणी के रूप में दर्शाना चाहिये। पिछली लेखावधि से वर्तमान लेखावधि में अगर कोई लेखांकन नीतियों में परिवर्तन किये गये हैं तो उन्हें स्पष्ट रूप से बताया जाना चाहिए, जैसे स्टॉक के मूल्यांकन की विधि में परिवर्तन, मूल्य ह्रास की विधि में परिवर्तन अथवा संदिग्ध ऋणों के प्रावधान करने की विधि में परिवर्तन आदि।

(3) महत्वता की परम्परा (Convention of Materiality) : इस परम्परा के अनुसार तथ्यों एवं घटनाओं की व्यवसाय में तुलनात्मक महत्ता के आधार पर उनका लेखा करना चाहिये। अगर प्रत्येक मद का लेखांकन लेखा सिद्धान्तों के आधार पर कर, प्रत्येक सूचना अन्तिम वित्तीय विवरणों में प्रकट की जाय तो वे अनावश्यक रूप से बड़े हो जायेंगे तथा महत्वपूर्ण सूचनाओं का महत्व भी गौण हो जायेगा। अतः, व्यावसायिक दृष्टि से कम महत्वपूर्ण एवं सारहीन बातों की उपेक्षा करनी चाहिये। कौन सी घटनाऐं एवं तथ्य महत्वपूर्ण हैं यह व्यवसाय के आकार, प्रकृति, स्वामित्व एवं प्रबन्ध को देखते हुए लेखापाल के स्वविवेक पर निर्भर करती है। कोई एक सूचना किसी एक व्यवसाय में निरर्थक हो सकती है तो वही सूचना दूसरे व्यवसाय में अति महत्वपूर्ण हो सकती है। जैसे छोटे औजारों की लागत एक छोटे मरम्मत करने वाले गैराज के लिए महत्वपूर्ण है परन्तु एक ओटोमोबाइल कम्पनी के लिए यही राशि नगण्य सिद्ध होगी। इसी प्रकार व्यवहारों की प्रकृति भी महत्वपूर्णता को प्रभावित करती है। स्टॉक के मूल्यांकन में 1,000 रु. का अन्तर इतना महत्वपूर्ण नहीं हो सकता है परन्तु रोकड़ शेष में 1,000 रु. का अन्तर एक महत्वपूर्ण तथ्य है। इसी प्रकार छोटे–छोटे सभी व्ययों के अलग अलग शीर्षक से खाते लिखने के बजाय उन सबको मिलाकर विविध व्ययों के नाम से एक खाता खोल कर समय एवं श्रम का अपव्यय रोका जा सकता है।

(4) संगति या एकरूपता की परम्परा (Convention of Consistency) : इस परम्परा के अनुसार विभिन्न वर्षों में समान लेखा–नीतियों एवं सिद्धान्तों को अपनाना चाहिये। व्यवसाय का जीवनकाल दीर्घकालीन एवं सतत् होता है। चालू वर्ष की उपलब्धियों की पिछले वर्षों की उपलब्धियों से तुलना करके भविष्य के लिए नीतियाँ बनाई जाती हैं और प्रबन्धकों द्वारा महत्वपूर्ण निर्णय लिये जाते हैं। यह कार्य तभी सम्भव हो सकता है जबकि प्रत्येक वर्ष की लेखांकन की नीतियों में एकरूपता अथवा संगति हो।

अतः, लेखापाल को यह चाहिये कि जिन लेखा नीतियों एवं परम्पराओं को एक बार अपना लिया जाय उनमें यथा सम्भव परिवर्तन न करें और अगर परिवर्तन करना उचित एवं आवश्यक हो तो इस प्रकार के परिवर्तन के कारणों का स्पष्ट उल्लेख करते हुए उसके अन्तिम खातों पर पड़ने वाले प्रभाव को टिप्पणी के रूप में अवश्य दिखाया जाना चाहिये। इस प्रकार इस परम्परा का उद्देश्य यही है

टिप्पणी

कि अपनायी जाने वाली विभिन्न नीतियों में स्थिरता व एकरूपता होनी चाहिए जिससे लेखों में संगति एवं तुलनात्मकता बनी रहे तथा लेखा नीतियों में परिवर्तन के कारण अन्तिम खातों पर पड़ने वाले प्रभावों का स्पष्ट उल्लेख हो। अगर स्टॉक का मूल्यांकन ''लागत अथवा बाजार मूल्य में से कम'' के आधार पर करने की नीति के अन्तर्गत किसी वर्ष लागत मूल्य कम है तो मूल्यांकन लागत मूल्य पर व अन्य वर्ष में बाजार मूल्य कम होने पर बाजार मूल्य पर मूल्यांकन हो सकता है।

(5) कानून के पालन की परम्परा (Convention of Observance of Law) : इस परम्परा के अनुसार लेखांकन करते समय वर्तमान कानूनी आवश्यकताओं की पूर्ति करना आवश्यक है। विभिन्न व्यावसायिक कानूनों जैसे – कम्पनी अधिनियम, साझेदारी अधिनियम, आयकर एवं बिक्रीकर अधिनियम आदि कई अधिनियमों का पालन करना होता है। लेखापाल को लेखांकन करते समय इन सभी कानूनों को ध्यान में रखते हुए अन्तिम खाते वैधानिक आवश्यकता के अनुरूप तैयार करने चाहिये। कभी–कभी ऐसा भी होता है कि वैधानिक आवश्यकताऐं लेखांकन सिद्धान्तों के अनुरूप न भी हो तो भी हमें वैधानिक प्रावधानों का पालन करना होगा।

१.१.६ दोहरा लेखा पद्धति (Double Entry Method) :

लेखांकन करने की यह पूर्ण वैज्ञानिक एवम् सर्वोपयुक्त पद्धति है जिसके अपने नियम है। इस पद्धति की यह विशेषता है कि इसमें प्रत्येक व्यापारिक व्यवहार के दो पक्ष होते है जिसमें से एक पक्ष को 'नाम' (Debit) किया जाता है तथा दूसरे पक्ष को 'जमा' (Credit) किया जाता है। इस विधि का प्रयोग सम्पूर्ण विश्व में होता है तथा इसके अन्तर्गत किया गया लेखांकन न्यायालय में भी प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत किया जा सकता है। भारत में यह प्रणाली अंग्रेजों के शासनकाल से प्रचलन में आयी। इससे पूर्व भारत में महाजनी बहीखात पद्धति चलन में थी तथा आज भी एकल व्यापार एवं साझेदारी फर्मों के लेखांकन में यह पद्धति चलन में है परन्तु कम्पनियों में लेखांकन कम्पनी अधिनियम के प्रावधानों के अन्तर्गत दोहरा लेखा पद्धति से ही किया जाता है।

इस पद्धति में प्रत्येक व्यवहार में दो पक्ष होते है। एक पक्ष प्राप्त करने वाला है और दूसरा पक्ष देने वाला है। एक विक्रेता है तो दूसरा क्रेता होगा। अर्थात प्रत्येक व्यवहार में दो खाते प्रभावित होंगे। अतः, प्रत्येक व्यवहार को दो पक्षों (जमा एवं नाम) या दो खातों (एक खाते के जमा पक्ष में तथा दूसरे खाते के नाम पक्ष में) में लिखने की इस विधि को दोहरा लेखा विधि कहते है। इस विवेचना से दोहरा लेखा पद्धति की निम्नलिखित विशेषताऐं प्रकट होती है –

१. प्रत्येक व्यवहार के दो पक्ष होते है।

२. प्रत्येक व्यवहार का लेखा दो खातों में होता है।

३. व्यवहार से प्रत्येक पक्ष पर समान राशि का प्रभाव पड़ता है।

टिप्पणी

दोहरा लेखा पद्धति के लाभ (Advantages of Double Entry Method)

१. नियमानुसार लेखांकन होने से यह पूर्ण वैज्ञानिक पद्धति है।

२. प्रत्येक पक्ष पर समान प्रभाव पड़ने से त्रुटि होने पर आसानी से ज्ञात की जा सकती है।

३. व्यवसाय से सम्बंधित प्रत्येक सूचना कम समय में तथा आसानी से प्राप्त की जा सकती है।

४. व्यवसाय के लाभ या हानि की जानकारी सुगमता से प्राप्त की जा सकती है।

५. व्यवसाय की आर्थिक स्थिति आसानी से ज्ञात की जा सकती है।

६. विभिन्न विभागों तथा व्यवसायों की तुलनात्मक जानकारी प्राप्त करनें में आसानी।

दोहरा लेखा पद्धति के दोष (Diadvantages of Double Entry Method)

१. इसमें लेखांकन करने के लिए प्रशिक्षित व्यक्ति की आवश्यकता होती है।

२. यह पद्धति खर्चीली है।

३. इस पद्धति को व्यवसाय में लागू करना कठिन होता है।

४. कोई व्यवहार लिखने से छूट जाय तो पता लगाना कठिन होता है।

५. लेखांकन करते समय गलत रकम लिख दी जाय तो पता लगाना कठिन होगा।

दोहरा लेखा प्रणाली की अवस्थाऐं (Stages of Double Entry System)

दोहरा लेखा पद्धति की क्रमानुसार निम्नलिखित तीन अवस्थाऐं है –

१. प्रारंभिक लेखा (Original Entries) : व्यवसाय में होने वाले व्यवहारों को सबसे पहले लिखा जाता है, यह लिखने की प्रक्रिया ही प्रारंभिक लेखा कहलाती है। जिन पुस्तकों में लेखांकन किया जाता है उन्हें प्रारंभिक लेखे की पुस्तकें कहते है।

२. वर्गीकरण एवं संग्रहण (Classification and Collection): व्यवहारों का प्रारंभिक लेखा हो जाने के पश्चात एक अन्य पुस्तक जिसे खाताबही कहते है उसमें इन व्यवहारों की प्रकृति के अनुसार अलग अलग छांटकर खाते खोल दिये जाते है। इसे वर्गीकरण कहते है। भिन्न भिन्न अवधियों में हुए एक ही तरह के विभिन्न व्यवहारों को एक वर्ग के अन्तर्गत लिख दिया जाता है इसे संग्रहण या खतौनी (Posting) कहते है।

३. सारांश (Summary) :

व्यवहारों का वर्गीकरण एवं संग्रहण कर लेने के पश्चात प्रत्येक खातों का योग करके शेष निकाला जाता है। इसके पश्चात अंतिम खाते बनाये जाते है ताकि संस्था की लाभ–हानि एवं आर्थिक स्थिति की जानकारी प्राप्त की जा सके।

दोहरा लेखा पद्धति के अन्तर्गत प्रयुक्त होने वाली आधारभूत शब्दावली (Basic Accounting Terminology used in Double Accounting System)

१. पूंजी (Capital) : व्यापार के मालिकों द्वारा अपने पास विद्यमान धन में से जितनी राशि व्यापार में विनियोजित की जाती है उसे व्यापार की पूंजी कहा जाता है।

२. क्रय (Purchases) : जो वस्तु व्यापार में लाभ कमाने के उद्देश्य से बेचने के लिए रोकड़ तथा उधार में खरीदी जाती है उसे क्रय कहते है।

३. विक्रय (Sales) : खरीदी गई या उत्पादित की गई वस्तु किसी प्रतिफल के बदले रोकड़ या उधार आधार पर हस्तांतरित की जाती है तो उसे विक्रय कहते है।

टिप्पणी

४. **क्रय वापसी (Purchase Return) :** खरीदे हुए माल का वह भाग जो उसके पूर्तिकर्ता को व्यापारी द्वारा वापस लौटा दिया जाता है उसे क्रय वापसी कहते है।

५. **विक्रय वापसी (Sales Return) :** विक्रय किये गये माल का वह भाग जो ग्राहक द्वारा व्यापारी को वापस भेज दिया जाता है विक्रय वापसी कहलाता है।

६. **रहतिया (Stock) :** व्यापारी के पास जो माल किसी निश्चित तिथि को उपलब्ध रहता है उसे रहितया कहते है। वर्ष के शुरू में विद्यमान माल को प्रारंभिक रहतिया तथा लेखा वर्ष के अन्त में विद्यमान माल को अंतिम रहतिया कहते है।

७. **व्यवहार (Transaction) :** दो पक्षकारों के मध्य नकद / माल / सेवा या सम्पत्ति का हस्तांतरण हो और यदि उसे मुद्रा रूपी पैमाने में मापा जा सकता है तो उसे व्यवहार या सौदा या लेनदेन कहते है।

८. **माल (Goods) :** व्यापारी लाभ कमाने के उद्देश्य से जिन वस्तुओं का उत्पादन करता है या क्रय करता है उन वस्तुओं को माल कहते है।

९. **व्यय (Expenses) :** लाभ कमाने के लिए जिन व्यापारिक गतिविधियों को संचालित किया जाता है उनकी लागत व्यय कहलाती है।

१०. **प्रत्यक्ष व्यय (Direct Expenses) :** ऐसे व्यय जो विक्रय करने के लिए उत्पादित किये जाने वाले माल या क्रय किये जाने वाले माल से सम्बन्धित होते है प्रत्यक्ष व्यय कहलाते है।

११. **आयगत व्यय (Revenue Expenses) :** ऐसे व्यय जो व्यवसाय को संचालित करने के लिए किये जाते है तथा जिनका लाभ चालू लेखा वर्ष में ही प्राप्त हो जाता है उन्हें आयगत व्यय कहते है।

१२. **पूंजीगत व्यय (Capital Expenses) :** ऐसे व्यय जिनका लाभ दीर्धकाल (एक से अधिक वर्षों) तक मिलता है पूंजीगत व्यय कहलाते है।

१३. **सकल लाभ (Gross Profit) :** शुद्ध विक्रय (विक्रय में से विक्रय वापसी घटाकर) में से विक्रय किये गये माल की लागत घटाने पर जो राशि प्राप्त होती है उसे सकल लाभ कहते है।

१४. **शुद्ध लाभ (Net Profit):** एक लेखा वर्ष की आयों का व्ययों पर आधिक्य शुद्ध लाभ कहलाता हैं

१५. **आय (Income) :** एक व्यवसाय की संचालन क्रियाओं के अन्तर्गत माल बेचने, सेवाऐं प्रदान करने आदि से प्राप्त राशि आय कहलाती है।

१६. **आहरण (Drawings) :** व्यवसाय के मालिक द्वारा अपने निजी प्रयोग के लिए व्यापार से माल या नकद राशि या सेवाऐं प्राप्त करना आहरण कहलाता है।

१७. **सम्पत्तियां (Assets) :** ऐसी वस्तुऐं जिनकी सहायता से व्यापार संचालित किया जाता है, जो भविष्य में लाभ प्रदान करती है तथा व्यापार की लाभार्जन क्षमता बढ़ाती है या बनाये रखती है उन्हें व्यापार की सम्पत्तियां कहते है। इन पर व्यापारिक संस्था का ही स्वामित्व होता है।

१८. **दायित्व (Liabilities) :** व्यापार के मालिकों के धन को छोड़कर शेष सभी व्यापार की देय राशियां दायित्व कहलाती है।

टिप्पणी

१९. **देयताऐं (Equities) :** व्यापार की सम्पत्तियों के अधिकार के विरूद्ध सभी दावे देयताऐं कहलाती है। बाह्मय पक्षों को चुकायी जाने वाली राशि को लेनदारों की देयताऐं कहते है तथा व्यापार के स्वामियों को चुकायी जाने वाली राशि को स्वामियों की देयताऐं कहते है।

२०. **लेनदार (Creditors) :** वे पक्षकार जो व्यापार से धन राशि मांगते है उन्हें लेनदार कहते है। यदि उधार खरीदे गये माल का भुगतान बकाया है तो उन्हें व्यापारिक लेनदार कहते है।

२१. **विविध देनदार (Sundry Debtors) :** वे पक्षकार जिन्हें व्यापारी द्वारा उधार माल बेचा गया है और उनसे राशि प्राप्त नहीं हुई है उन्हें विविध देनदार कहते है।

२२. **चिट्ठा (Balance Sheet) :** ऐसा विवरण पत्र जो एक निश्चित तिथि को व्यक्ति या संस्था की वित्तीय स्थिति को प्रदर्शित करता है, चिट्ठा कहलाता है।

२३. **प्रविष्टि (Entry) :** किसी व्यवहार का नियमानुसार लेखांकन करना प्रविष्टि कहलाता है।

२४. **नाम एवं जमा (Debit and Credit) :** प्रत्यके खाते के बायी ओर का पक्ष नाम एवम् दांयी ओर का पक्ष जमा कहलाता है।

२५. **खाता (Account):** व्यक्ति, वस्ुत, आय तथा व्यय से सम्बंधित व्यवहारों का सामूहिक लेखा (उस घटना से सम्बंधित समस्त व्यवहारों का लेखा) जिस स्थान पर किया जाता है उसे खाता कहते है।

२६. **विनियोग (Investments) :** यदि व्यापार में आवश्यकता से अधिक रोकड़ विद्यमान हो तो उसे व्यापार के बाहर सरकारी प्रतिभूतियां खरीदने, बैंक में स्थायी जमा कराने या कम्पनियों के अंश या ऋणपत्र खरीदने में प्रयोग किया जा सकता है तो इस प्रकार प्रयुक्त राशि को विनियोग कहते है।

२७. **अदृश्य सम्पत्तियां (Intangible Assets) :** ऐसी सम्पत्तियाँ जिन्हें न तो देखा जा सकता है और न छुआ व पहचाना जा सकता है उन्हें अदृष्य सम्पत्तियां कहते है। इनमें व्यापारिक चिन्ह, एकस्व अधिकार, प्रकाशन अधिकार एवं ख्याति आदि को शामिल करते है।

२८. **नकद बट्टा (Cash Discount) :** किसी वस्तु के विक्रय मूल्य में की जाने वाली कमी को बट्टा कहते है। जब व्यापारी उधार माल बेचता है तो ग्राहकों को निर्धारित तिथि तक भुगतान करने के लिए प्रेरित करने हेतु देय राशि में जो कटौती की जाती है उसे नकद बट्टा कहते है। देय तिथि के पश्चात भुगतान करने पर नकद बट्टा नहीं दिया जाता। उधार माल की खरीद पर पूर्तिकर्ता को समय पर भुगतान करके नकद बट्टा प्राप्त भी किया जाता है।

२९. **व्यापारिक बट्टा (Trade Discount) :** व्यापारी द्वारा विक्रय बढ़ाने के उद्देश्य से माल का विक्रय करते समय विक्रय मूल्य में कुछ प्रतिशत की कमी कर दी जाती है तो उसे व्यापारिक बट्टा कहते है। माल का बीजक बनाते समय इस बट्टे की राशि को कम करके ही बीजक बनाया जाता है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि व्यापारिक बट्टे का लेखा पुस्तकों में नहीं होता क्योंकि विक्रय मूल्य कम करने के बाद ही बीजक बनाया है।

जर्नल तैयार करने की विधि समझने से पूर्व इसमें लेखांकित होने वाले खातों की प्रकृति की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है।

खातों के प्रकार (Types of Accounts)

१. व्यक्तिगत खाते (Personal Accounts)
२. अव्यक्तिगत खाते (Impresonal Accounts)

टिप्पणी

(i) वास्तविक खाते (Real Accounts)

(ii) अवास्तविक खाते (Nominal Accounts)

१. **व्यक्तिगत खाते :** व्यक्तिगत खातों से आशय उन खातों से है जिनके द्वारा किसी व्यक्ति, फर्म एवं संस्था के नाम का आभास हो। व्यक्तिगत खातों को भी पुनः तीन भागों में बांटा जाता है – प्राकृतिक व्यक्तिगत खाते, कृत्रिम व्यक्तिगत खाते तथा प्रतिनिधि खाते। प्राकृतिक व्यक्तिगत खातों में उन खातों को शामिल किया जाता हैं जिन्हें प्रकृति ने बनाया है जैसे – रमेश, हेमन्त आदि। कृत्रिम व्यक्गित खातों में उनको शामिल किया जाता है जिन्हें व्यापारिक व्यवहार करने के लिए किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह ने अधिकृत किया है। जैसे – फर्म, कम्पनी, बैंक आदि। प्रतिनिधि खातों में उन खातों को शामिल किया जाता है जो किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह से सम्बंधित हो जैसे पूंजी खाता, आहरण खाता, बकाया वेतन, उपार्जित आय, पूर्वदत्त व्यय आदि।

नियम – पाने वाले को नाम करो तथा देने वाले को जमा करो (Debit the receiver and credit the giver)

२. **अव्यक्तिगत खाते :** व्यक्तिगत खातों के अतिरिक्त सभी खाते अव्यक्तिगत खाते होते है। ये दो प्रकार के होते है –

(i) **वास्तविक खाते :** जिन वस्तुओं का व्यापारी व्यापार करता है उनसे सम्बन्धित खातों तथा उन सम्पत्तियों से सम्बन्धित खातों को वास्तविक खातों में शामिल किया जाता है जो सम्पत्तियां व्यापार की लाभार्जन क्षमता बढ़ाने एवं व्यवसाय के संचालन में प्रयुक्त होती है। जैसे रोकड़, प्राप्य बिल, माल, भूमि, भवन, कार, फर्निचर, ख्याति, पेटेन्ट, ट्रेडमार्क आदि। अर्थात् वे मूर्त सम्पत्तियां जिन्हें देखा जा सकता हो, छुआ जा सकता हो एवं महसूस किया जा सकता हो।

नियम – जो वस्तु व्यापार में आती है उसे नाम करो तथा जो वस्तु व्यापार से जाती है उसे जमा करो। (Debit what comes in to the business and credit what goes out from the business.)

(ii) **अवास्तविक खाते :** ऐसे खाते जो व्यापार की आय, व्यय, लाभ तथा हानि से सम्बंधित होते है उन्हें अवास्तविक खाते कहते है। जैसे – मजदूरी, भाड़ा, वेतन, पोस्टेज व टेलीफोन, मुद्रण एवं स्टेशनरी, ह्रास, चोरी, प्राप्त ब्याज, किराया, कमीशन, क्षतिपूर्ति, इनाम, सम्पत्ति विक्रय पर लाभ आदि।

नियम – समस्त व्यय एवं हानियों को नाम करो तथा समस्त आयों तथा लाभों को जमा करो। (Debit all the expenses and losses and credit all the incomes and gains)

१.१.७ **जर्नल (Journal) :** यह दोहरा लेखा पद्धति की प्रथम अवस्था है। व्यापारी द्वारा व्यवहारों को सर्वप्रथम तिथिवार जर्नल में लिखा जाता है। व्यापारी अपनी आवश्यकता अनुसार जर्नल की संख्या निर्धारित करता है। यदि व्यापार छोटा हो, बहुत अधिक व्यवहार (Transactions) न हो तो एक जर्नल में ही सभी प्रकार के व्यवहारों का लेखा कर दिया जाता है। जर्नल में लेखा करते समय यह निर्धारित करना होता है कि व्यवहार में कौन कौन से खाते प्रभावित हो रहे है, फिर उन खातों के नियमों के अनुसार कौन सा खाता नाम (Debit) किया जायेगा और कौन सा खाता जमा (Credit) किया जायेगा। इसके पश्चात उस व्यवहार का संक्षिप्त विवरण भी दिया जाता है। जर्नल का प्रारूप इस प्रकार है –

टिप्पणी

Journal of M/s. ....

Date	Particulars	L.F.	Amount	
			Debit	**Credit**
			Rs.	Rs.

उदाहरण (Illustration) – 6

निम्नलिखित व्यवहारों की जर्नल प्रविष्टियां दीजिये। (Enter the following transactions in the journal).

2009		**Rs.**
April	रमेश ने व्यापार प्रारंभ किया (Ramesh started business)	1,30,000
" 6	रोकड़ में माल खरीदा (Purchased goods for cash)	75,000
" 10	बक्सा राम को माल बेचा (Sold goods to Baksha Ram)	1,16,000
" 16	हेमन्त से माल खरीदा (Purchased goods from Hemant)	64,000
" 18	फर्निचर खरीदा (Purchased furniture)	13,000
" 22	पूर्ण भुगतान में बक्सा राम से प्राप्त रोकड़ (Received cash from Baksha Ram in full settlement)	1,12,000
" 24	किशोर से माल रोकड़ खरीदा (Purchased goods from Kishore for cash)	70,000
" 26	रमा को दुकान का किराया चुकाया (Paid shop rent to Rama)	5,000
" 28	मनीष से कमीशन प्राप्त हुआ (Received commission from Manish)	20,000
" 30	रोकड़ विक्रय (Cash Sales)	98,000
" 3o	व्यक्तिगत प्रयोग के लिए नकद निकाले (Cash withdrew for personal use)	12,000

हल (Solution) :

व्यवहारों का जर्नल में लेखांकन करने से पूर्व व्यवहारों के सम्बन्ध में निम्नलिखित सूचनाऐं ज्ञात करनी होगी –

(i) इस व्यवहार में कौन कौन से खाते प्रभावित हो रहे है।

(ii) इस व्यवहार में प्रभावित होने वाले खातों की प्रकृति कैसी है।

(iii) खाते की प्रकृति के अनुसार उनका नियम लागू करके यह पता लगाया जायेगा कि कौन सा खाता नाम होगा तथा कौन सा खाता जमा हो। यह विवरण निम्नलिखित सारणी से ज्ञात करने के बाद जर्नल प्रविष्टियां की जायेगी –

Date of Transactions	Affected Account	Type of Account	Dr. Cr.	Related Rules of Account
April 2009				
1	Cash Ac	Real	Dr.	Debit what comes into the business
	Capital A/c	Personal	Cr.	Credit the giver.
" 6	Goods A/c	Real	Dr.	Debit what comes in to the business
	Cash A/c	Real	Cr.	Credit what goes out from the business
"10	Baksha Ram's A/c	Personal	Dr.	Debit the receiver
	Sales A/c	Nominal	Cr.	Credit all gains and incomes
"16	Goods A/c	Real	Dr.	Debit what comes in to the business
	Hemant's A/c	Personal	Cr.	Credit the Giver
" 18	Furniture A/c	Real	Dr.	Debit what comes in to the business
	Cash A/c	Real	Cr.	Credit what goes out from the business
" 22	Cash A/c	Real	Dr.	Debit what comes in to the business
	Discount A/c	Nominal	Dr.	Debit all the losses and expenses
	Baksha Ram's A/c	Personal	Cr.	Credit the giver
" 24	Goods A/c	Real	Dr.	Debit what comes in to the business
	Cash A/c	Real	Cr.	Credit what goes out from the business
" 26	Rent A/c	Nominal	Dr.	Debit all losses and Expenses
	Cash A/c	Real	Cr.	Credit what goes out from the business
" 28	Cash A/c	Real	Dr.	Debit what comes into the business
	Commission A/c	Nominal	Cr.	Credit all gains and incomes
" 30	Cash A/c	Real	Dr.	Debit what comes in to the business
	Sales A/c	Nominal	Cr.	Credit all gains and incomes
" 30	Drawings A/c	Personal	Dr.	Debit the receiver
	Cash A/c	Real	Cr.	Credit what goes out from the business

टिप्पणी

टिप्पणी

Journal of Ramesh

Date	Particulars		L.F.	Amount (Rs.)	
				Debit	Credit
2009 April 1	Cash A/c To Capital A/c (Being started a business with cash)	Dr.		1,30,000	1,30,000
" 6	Purchases A/c To Cash A/c (Being goods purchased for cash)	Dr.		75,000	75,000
" 10	Baksha Ram To Sales A/c (Being goods sold to Baksha Ram)	Dr.		1,16,000	1,16,000
" 16	Purchases A/c To Hemant (Being goods purchased from Hemant)	Dr.		64,000	64,000
" 18	Furniture A/c To Cash A/c (Being furniture purchased for cash)	Dr.		13,000	13,000

Date	Particulars		L.F.	Amount (Rs.)	
				Debit	Credit
2009					
April 22	Cash A/c	Dr.		1,12,000	
	Discount A/c	Dr.		4,000	
	To Baksha Ram				1,16,000
	(Being cash received from Baksha Ram)				
" 24	Purchases A/c	Dr.		70,000	
	To Cash A/c				70,000
	(Being goods purchased for cash)				
" 26	Rent A/c	Dr.		5,000	
	To Cash A/c				5,000
	(Being shop rent paid)				
April 28	Cash A/c	Dr.		20,000	
	To Commission A/c				20,000
	(Being received commission)				
" 30	Cash A/c	Dr.		98,000	
	To Sales A/c				98,000
	(Being goods sold)				
" 30	Drawings A/c	Dr.		12,000	
	To Cash A/c				12,000
	(Being cash withdrew for personal use)				
	Grand Total			7,19,000	7,19,000

नोट : उपरोक्त उदाहरण में खातों को नाम और जमा करने की विस्तृत जानकारी इस प्रकार है –

१ अप्रैल इस व्यवहार में दो खाते प्रभावित हुए है जिसमें से एक तो व्यापारी पूंजी खाता है तथा दूसरा रोकड़ खाता है। पूंजी खाता व्यक्तिगत प्रकृति का खाता है तथा रोकड़ खाता वास्तविक खाता है। व्यक्तिगत खाते के नियमानुसार देने वाले को जमा किया जाता है और इसमें रमेश व्यापार को पूंजी दे रहा है इसलिए रमेश के पूंजी खाते को जमा किया

टिप्पणी

गया है। वास्तविक खाते के नियमानुसार जो वस्तु व्यापार में आती है उसे नाम किया जाता है। यहां रोकड़ आ रही है इसलिए रोकड़ खाता नाम हुआ है।

६ अप्रैल इस व्यवहार में माल खाता तथा रोकड़ खाता प्रभावित हुआ है और दोनों ही वास्तविक खाते है। वास्तविक खाते के नियमानुसार जो वस्तु व्यापार में आती है उसे नाम करो और जो वस्तु व्यापार से जाती है उसे जमा करो। इस व्यवहार में माल प्राप्त हुआ है। अतः माल खाता (Purchases or Goods A/c) नाम हुआ है और रोकड़ गई है अतः रोकड़ खाता जमा हुआ है।

१० अप्रैल इसमें बक्सा राम का खाता तथा माल खाता प्रभावित हुआ है। बक्साराम व्यक्तिगत खाता है और इसके नियमानुसार पाने वाले को नाम करते है। यहां बक्सा राम ने माल प्राप्त किया है। अतः बक्साराम को नाम किया गया है। माल खाता वास्तविक खाता होने से इसके नियमानुसार जो वस्तु व्यापार से जाती है उसे जमा करो। माल बेचने पर माल व्यापार से गया है अतः माल खाता (Sales A/c) जमा किया जायेगा। चूंकि बिक्री में लाभ भी शामिल है और इसे अवास्तविक खाता माने तो उसके नियमानुसार सभी आये जमा करते है ओर यहां विक्रय के रूप में आय हुई है अतः विक्रय खाते को जमा किया गया है।

१६ अप्रैल इस व्यवहार में हेमन्त का खाता तथा माल खाता प्रभावित हुआ है। हेमन्त का खाता व्यक्तिगत खाता है जिसके नियमानुसार देने वाले को जमा करते है। यहां हेमन्त माल दे रहा है अतः उसे जमा किया गया है। माल खाता वास्तविक खाता है। नियमानुसार जो वस्तु व्यापार में आ रही है उसे नाम करो। यहां माल आ रहा है अतः माल खाते को नाम किया जायेगा।

१८ अप्रैल यहां फर्नीचर खाता और रोकड़ खाता प्रभावित हुआ है और ये दोनों ही खाते वास्तविक खाते है। इनकें नियमानुसार जो वस्तु व्यापार में आती है उसे नाम करो तथा जो वस्तु व्यापार से जाती है उसे जमा करो। फर्नीचर व्यापार में आ रहा है अतः उसे नाम किया है और रोकड़ जा रही है इसलिए उसे जमा किया गया है।

२२ अप्रैल इसमें बक्साराम, रोकड़, तथा बट्टा खाता प्रभावित हुआ है जो क्रमशः व्यक्तिगत, वास्तविक तथा अवास्तविक प्रकृति के खाते है। बक्सा राम ने राशि चुकाई है अतः उसे जमा किया गया है। रोकड़ आयी है अतः उसे नाम किया गया है। बट्टा हानि है और अवास्तविक खातों के नियमानुसार समस्त खर्चों एवं हानियां को नाम किया जाता है। अतः बट्टे खाते को नाम किया गया है।

२४ अप्रैल इसका प्रभाव 06 अप्रैल जैसा ही होगा। माल रोकड़ खरीदा है अतः किशोर का खाता प्रभावित नहीं होगा।

२६ अप्रैल इसमें रोकड़ खाता तथा किराया खाता प्रभावित हुआ है जो क्रमशः वास्तविक एवं अवास्तविक प्रकृति के खाते है। वास्तविक खाते के नियमानुसार जो वस्तु जाती है उसे जमा करते है और अवास्तविक खातों के नियमानुसार समस्त व्यय व हानियां नाम करते हैं। चूंकि रोकड़ जा रहा है अतः उसे जमा किया गया है। किराया व्यापार के लिए व्यय है अतः उसे नाम किया गया है।

टिप्पणी

२८ अप्रैल इसमें भी रोकड़ खाता और कमीशन खाता प्रभावित हुआ है जो क्रमशः वास्तविक एवं अवास्तविक प्रकृति के है। वास्तविक खाते के नियमानुसार जो वस्तु आती है उसे नाम करो और यहां रोकड़ आ रही है अतः उसे नाम किया गया है। अवास्तविक खाते के नियमानुसार आयों एवं लाभों को जमा करो और यहां कमीशन आया है इसलिए उसे जमा किया गया है।

३० अप्रैल इसमें रोकड़ खाता और माल खाता प्रभावित हुआ है और ये दोनों ही वास्तविक प्रकृति के खाते है। रोकड़ आ रही है इसलिए रोकड़ खाते को नाम किया गया है और माल जा रहा है अतः विक्रय खाते को जमा किया गया है।

३० अप्रैल इसमें आहरण खाता तथा रोकड़ खाता प्रभावित हुआ है। आहरण खाता व्यक्तिगत खाता है जिसके नियमानुसार पाने वाले को नाम करते है अतः व्यापारी के आहरण खाते को नाम करेंगे क्योंकि व्यापारी पाने वाला है। रोकड़ खाता वास्तविक खाता होने से इसके नियमानुसार जो वस्तु व्यापार से जाती है उसे जमा करते है और यहां रोकड़ जा रही है, अतः उसे जमा किया गया है।

उदाहरण (Illustration) – 7

निम्नलिखित व्यवहारों का जर्नल में लेखा कीजिये। (Enter the following transactions in the Journal)

2009		Rs.
August 1	राम ने रोकड़ से व्यापार प्रारम्भ किया (Ram started business with cash)	1,00,000
" 2	रोकड़ में माल खरीदा (Goods purchased for cash)	24,000
" 8	महेन्द्र से माल खरीदा (Purchased goods from Mahindra)	33,000
" 9	स्कूटर खरीदा (Scooter purchased)	35,000
" 10	बैंक में जमा करवाये (Deposited in to Bank)	10,000
" 13	रोकड़ में माल बेचा (Goods sold for cash)	17,000
" 16	सुरेश को माल बेचा (Sold goods to Suresh)	54,000
" 18	महेन्द्र को माल लौटाया (Goods returned to Mahindra)	2,500
" 19	सुरेश ने माल लौटाया (Goods returned by Suresh)	3,000
" 20	निजी प्रयोग हेतु माल का आहरण (Goods withdrew for personal use)	4,000
" 21	स्टेशनरी खरीदी (Purchased stationery)	2,000
" 24	रामू से रोकड़ माल खरीदा (Purchased goods from Ramu for cash)	15,000
" 27	सुरेश से नकद प्राप्त (Cash received from Suresh)	43,700
" 28	महेन्द्र को चुकाया (Paid to Mahindra)	30,000

Journal of RAM

Date	Particulars		L.F.	Amount (Rs.) Dr.	Amount (Rs.) Cr.
2009					
Aug. 1	Cash A/c	Dr.		1,00,000	
	To Capital A/c				1,00,000
	(Being started business with cash)				
Aug. 2	Purchases A/c	Dr.		24,000	
	To Cash A/c				24,000
	(Being goods purchased for cash)				
" 8	Purchases A/c	Dr.		33,000	
	To Mahindra				33,000
	(Being goods purchased from Mahindra)				
" 9	Scooter A/c	Dr.		35,000	
	To Cash A/c				35,000
	(Being Scooter purchased)				
" 10	Bank A/c	Dr.		10,000	
	To Cash A/c				10,000
	(Being cash deposited into bank)				
Feb 13	Cash A/c	Dr.		17,000	
	To Sales A/c				17,000
	(Being goods sold)				
" 16	Suresh	Dr.		54,000	
	To Sales A/c				54,000
	(Being goods sold to Suresh)				
" 18	Mahindra	Dr.		2,500	
	To Purchases Return A/c				2,500
	(Being goods returned to Mahindra)				
" 19	Sales Return A/c	Dr.		3,000	
	To Suresh				3,000
	(Being goods returned by Suresh)				
" 20	Drawing A/c	Dr.		4,000	
	To purchases A/c				4,000
	(Being goods withdrew for personal use)				

Date	Particulars		L.F.	Amount (Rs.)	
				Dr.	Cr.
2009					
" 21	Stationery A/c	Dr.		2,000	
	To Cash A/c				2,000
	(Being stationery purchased)				
" 24	Purchases A/c	Dr.		15,000	
	To Cash A/c				15,000
	(Being goods purchased for cash)				
„27	Cash A/c	Dr.		43,700	
	To Suresh				43,700
	(Being cash received from Suresh)				
„28	Mahindra	Dr.		30,000	
	To Cash A/c				30,000
	(Being cash paid to Mahindra)				
„28	Salary A/c	Dr.		5,000	
	To Cash A/c				5,000
	(Being Salary paid)				
	Grand Total			3,78,200	3,78,200

उदाहरण (Illustration) – 8

जगदीश की जर्नल में निम्नलिखित व्यवहारों को लेखांकित कीजिये। (Enter the following transactions in the Journal of Jagdish) :

2009

April 1 जगदीश ने 1,25,000 रु. रोकड़, 90,000 रु. का माल तथा 15,000 रु. के फर्निचर से व्यापार प्रारंभ किया। (Jagdish started business with cash Rs. 1,25,000, goods Rs. 90,000 and furniture Rs. 15,000)

" 3 हेमन्त से 40,000 रु. का मुकेश से 13,000 रु. का माल खरीदा 5 प्रतिशत व्यापारिक बट्टा दिया। (Purchased goods from Hemant Rs. 40,000 and Mukesh Rs. 13,000, allowed 5% trade discount)

" 6 मोती को 25,000 रु. का तथा विवके को 21,000 रु. का माल बेचा (Sold goods to Moti Rs. 25,000 and to Vivek Rs. 21,000).

" 9 व्यक्तिगत प्रयोग के लिए 1,500 रु. का माल तथा 3,000 रु. का रोकड़ में आहरण किया। (Withdrew for personal use from business goods Rs. 1,500 and Cash Rs. 3,000)

टिप्पणी

2009

" 11 हेमन्त को 5,000 रु. का माल लौटाया तथा शेष राशि का भुगतान किया। (Goods returned to Hemant Rs. 5,000 and balance amount paid)

" 13 विवके ने क्षतिग्रस्त माल लौटाया। (Vivek returned defective goods Rs. 1,300)

" 17 10 प्रतिशत बट्टा काटकर मुकेश को चुकाया। (Paid to Mukesh after deducting 10% cash discount)

" 20 मोती दिवालिया हो गया और अपनी देय राशि का 80 प्रतिशत ही चुका सका। (Moti became insolvent and he could pay 80% from his due)

" 23 आग से 1,800 रु. का माल नष्ट हो गया तथा बीमा कम्पनी ने 800 रु. का दावा स्वीकार किया। (Goods destroyed by fire Rs 1,800 and Insurance Co. accepted claim Rs. 800)

" 26 विवके से पूर्ण भुगतान में 19,000 रु. प्राप्त हुए। (Received from Vivek Rs. 19,000 in Full settlement)

" 27 महेश से 15,000 रु. का माल खरीदा तथा 5 प्रतिशत बिक्री कर अतिरिक्त लगाया। (Purchased goods from Mahesh Rs. 15,000 and charged 5% Sales Tax extra)

" 28 राकेश को 16,000 रु. का माल बेचा 5 प्रतिशत व्यापारिक बट्टा दिया तथा 10 प्रतिशत बिक्री कर अतिरिक्त। (Sold goods to Rakesh Rs. 16,000 allowed 5% trade discount and chargd 10% Sales Tax extra)

" 30 निम्नलिखित व्ययों का भुगतान किया – वेतन 3,000 रु., मजदूरी 2,000 रु., स्टेशनरी 1,500 रु.।(Paid following expenses : Salary Rs. 3,000 Wages Rs. 2,000, Stationery Rs. 1,500)

हल (Solution) :

Journal of Jagdish

Date	Particulars		L.F	Amount (Rs.	
				Dr.	Cr.
2007					
April 1	Cash A/c	Dr.		1,25,000	
	Stock A/c	Dr.		90,000	
	Furniture A/c	Dr.		15,000	
	To Capital A/c				2,30,000
	(Being started business with cash, goods and Furniture)				
" 3	Purchases A/c	Dr.		50,350	
	To Hemant				38,000
	To Mukesh				12,350
	(Being purchased goods from Hemant and Mukesh with 5% trade discount)				
" 6	Moti	Dr.		25,000	
	Vivek	Dr.		21,000	
	To Sales A/c				46,000
	(Being goods sold to Moti & Vivek)				
" 9	Drawing A/c	Dr.		4,500	
	To Purchase A/c				1,500
	To Cash A/c				3,000
	(Being withdrew for personal use)				
" 11	Hemant	Dr.		38,000	
	To Purchases Return A/c				5,000
	To Cash A/c				33,000
	(Being goods returned to Hemant and Balance paid)				
" 13	Sales Return A/c	Dr.		1,300	
	To Vivek				1,300
	(Being defective goods returned)				
" 17	Mukesh	Dr.		12,350	
	To Cash A/c				11,115
	To Discount A/c				1,235
	(Being paid to Mukesh after deducting 10% cash discount)				
April 20	Cash A/c	Dr.		20,000	
	Bad-debts A/c	Dr.		5,000	
	To Moti				25,000
	(Being Moti became insolvent and received only 80% from him)				

टिप्पणी

Journal of Jagdish Contd. ......

Date	Particulars		L.F.	Amount (Rs.)	
				Dr.	Cr.
2009					
April 23	Loss by Fire A/c	Dr.		1,000	
	Insurance Co.			800	
	To purchases A/c				1,800
	(Being goods lost by Fire and partly claim accepted by Insurance Co.)				
" 26	Cash A/c	Dr.		19,000	
	Discount A/c	Dr.		700	
	To Vivek				19,700
	(Being received from Vivek Rs. 19,000 in full settlement)				
" 27	Purchases A/c	Dr.		15,750	
	To Mahesh				15,750
	(Being goods purchased from Mahesh)				
" 28	Rakesh A/c	Dr.		16,720	
	To Sales A/c				15,200
	To Sales Tax A/c				1,520
	(Being Sold goods to Rakesh)				
" 30	Salary A/c	Dr.		3,000	
	Wages A/c	Dr.		2,000	
	Stationery A/c	Dr.		1,500	
	To Cash A/c				6,500
	(Being paid for Salary, Wages & Stationery)				
	Grand Total			4,67,970	4,67,970

१.१.८ खाताबही (Ledger) :

यह दोहरा लेखा प्रणाली की वर्गीकरण अवस्था है। खाताबही एक ऐसी पुस्तक है जिसमें व्यक्तिगत, वास्तविक तथा अवास्तविक प्रकृति के सभी खाते खोलकर उनमें सम्बंधित व्यवहारों का लेखा किया जाता है। अर्थात् एक ऐसी बही जिसमें वर्गीकरण के आधार पर लेखांकन किया जाता है उसे खाताबही कहते है।

टिप्पणी

खाताबही एक ऐसी पुस्तक है जिसमें सभी व्यापारिक व्यवहार अंतिम रूप से सम्बंधित खातों में श्रेणी विभाजन करके उचित विधि से लेखांकित किये जाते है।

जे. आर. बाटलीबॉय

एक व्यापारी के लिए खाताबही महत्वपूर्ण सूचनाऐं उपलब्ध करवाती है जिससे समय और श्रम की बचत होती है। खाताबही की तुलना एक ऐसे मकान से की जा सकती है जिसकी नींव प्रारंभिक लेखे की पुस्तकें होती है। ये पुस्तकें सही तरीके से लेखांकित होगी तो खाताबही से प्राप्त होने वाली सूचनाऐं भी प्रामाणिक होगी। जिस तरह सुदृढ़ नींव वाला मकान भी अधिक मजबूत माना जाता है। खाताबही में खोले जाने वाले खाते का प्रारूप निम्नलिखित है –

Dr.	………….. Account						Cr.
Date	**Particulars**	**J.F.**	**Amount**	**Date**	**Particulars**	**J.F.**	**Amount**

खतौनी (Posting) :

नाम पक्ष के व्यवहारों की खतौनी करते समय सबसे पहले खाताबही की अनुक्रमणिका (Index) की सहायता से सम्बंधित खाते की पृष्ठ संख्या ज्ञात करके खाता निकाला जाता है। तिथि के खाने में व्यवहार की तिथि लिखी जाती है और जर्नल में जो खाता नाम हुआ है उस खाते के नाम पक्ष में ज्व शब्द लिखकर दूसरे प्रभावित खाते का नाम लिख देते है। जर्नल के जिस पृष्ठ संख्या से यह खतौनी कर रहे है वह संख्या खाते के खाने में लिख दी जाती है और जर्नल के खाने में वह पृष्ठ संख्या लिख दी जाती है जहां खाताबही में वह खाता खुला हुआ है। राशि के खाने में वह रकम लिखी जाती है जिससे वह खाता जर्नल में नाम किया गया है।

जमा पक्ष के व्यवहारों की खतौनी करते समय भी अनुक्रमणिका की सहायता से खाता निकालकर तिथि के खाने में व्यवहार की तिथि को लिख दिया जाता है। जो खाता जर्नल में जमा किया गया है उसकी खतौनी करते समय खाते के विवरण के खाने में ठल शब्द लिखते हुए दूसरे प्रभावित खाते का नाम लिख देते है। खाते के JF खाने में जर्नल की वह पृष्ठ संख्या लिख दी जाती है जिस पृष्ठ पर खतौनी वाले व्यवहार की जर्नल प्रविष्टि की गई है तथा जर्नल के LF में खाने में वह पृष्ठ संख्या लिख दी जाती है जिस पर खाताबही में वह खाता खुला हुआ है। राशि के खाने में वह रकम लिखी जाती है जिससे वह खाता जर्नल में जमा किया गया है।

उदाहरण (Illustration) १

हेमन्त ट्रेडर्स की जर्नल बनाइये तथा उसकी खतौनी खाताबही में कीजिये। (Prepare journal of Hemant Traders and post them in to Ledger) :

2008

Jan. 1 1,50,000 रु. रोकड़, 50,000 रु. के रहतिये तथा 4,00,000 रु. के भवन से व्यापार शुरू

2008

किया। (Started a business with cash Rs. 1,50,000, Stock Rs. 50,000 and Building Rs. 4,00,000).

3 पंकज से 40,000 रु. का माल 5 प्रतिशत व्यापारिक बट्टे पर खरीदा। (Purchased goods from Pankaj Rs. 40,000 at 5% trade discount).

4 रोकड़ विक्रय 30,000 रु. (Cash Sales Rs. 30,000).

5 25,000 रु. का माल गणपत को बेचा। (Goods sold to Ganpat Rs. 25,000).

7 1,000 रु. टेलीफोन व्यय के चुकाये। (Telephone expenses paid Rs. 1,000).

9 पंकज को 4,750 रु. का माल लौटाया। (Goods returned to Pankaj Rs. 4,750).

10 शिव से 32,000 रु. का माल खरीदा तथा 1,000 रु. गाड़ी भाड़ा चुकाया। (Goods purchased from Shiv Rs. 32,000 and carriage paid Rs. 1,000).

12 ठेला भाड़ा 500 रु. चुकाया। (Cartage paid Rs. 500).

15 गणपत से पूर्ण भुगतान में 23,500 रु. प्राप्त। (Received from Ganpat in full settlement Rs. 23,500).

18 पंकज को पूर्ण भुगतान में 33,000 रु. चुकाये। (Paid to Pankaj in full settlement Rs. 33,000).

22 कमीशन प्राप्त किया 4,000 रु. (Commission received Rs. 4,000).

23 2,000 रु. का माल शिव को लौटाया। (Goods returned to Shiv Rs. 2,000).

24 मोहन से 12,000 रु. के माल की आपूर्ति का आदेश प्राप्त हुआ। (Received an order for supply of goods from Mohan Rs. 12,000).

26 आग से 10,000 रु. का माल नष्ट हुआ परन्तु बीमा कम्पनी ने 8,000 रु. का दावा स्वीकार किया। (Goods destroyed by fire Rs. 10,000 but insurance company accepted claim Rs. 8,000).

27 1,000 रु. का माल तथा 500 रु. रोकड़ धर्मादा दिया। (Goods and cash given as charity Rs. 1,000 and Rs. 500 respectively).

28 आनन्द को 8,000 रु. का माल नकद में तथा 10,000 रु. का माल उधार बेचा। (Goods sold to Anand Rs. 8,000 for cash and Rs. 12,000 on credit).

29 नगरपालिका कर 800 रु. चुकाया। (Municipal tax paid Rs. 800).

30 कर्मचारियों को वेतन के 5,000 रु. चुकाये। (Salary paid to staff Rs. 5,000).

31 भवन की मरम्मत तथा अनुरक्षण के 3,000 रु. चुकाये। (Paid for Repair and Maintenance of building Rs. 3,000).

31 आनन्द दिवालिया हो गया तथा उससे केवल 9,000 रु. प्राप्त हुए। (Anand became

2008

insolvent and only Rs. 9,000 received from him).

31 रहतिये का बीमा प्रीमियम 2,500 रु. चुकाया। (Insurance premium of stock paid Rs. 2,500).

Journal of Hemant Traders

				Rs.	Rs.
2008					
Jan 1	Cash A/c	Dr.		1,50,000	
	Stock A/c	Dr.		50,000	
	Building A/c	Dr.		4,00,000	
	To Capital A/c				6,00,000
	(Being started a business with cash, stock and building)				
" 3	Purchases A/c	Dr.		38,000	
	To Pankaj				38,000
	(Being goods purchased from Pankaj)				
" 4	Cash A/c	Dr.		30,000	
	To Sales A/c				30,000
	(Being goods sold for cash)				
" 5	Ganpat	Dr.		25,000	
	To Sales A/c				25,000
	(Being goods sold to Ganpat)				
" 7	Telephone Expenses A/c	Dr.		1,000	
	To Cash A/c				1,000
	(Being telephone expenses paid)				
" 9	Pankaj	Dr.		4,750	
	To Purchase Return A/c				4,750
	(Being goods return to Pankaj)				
" 10	Purchases A/c	Dr.		32,000	
	To Shiv				32,000
	(Being goods purchased from Shiv)				
" 10	Carriage A/c	Dr.		1,000	
	To Cash A/c				1,000
	(Being carriage on purchase paid)				
Jan 12	Cartage A/c	Dr.		500	500
	To Cash A/c				
	(Being cartage paid)				
" 15	Cash A/c	Dr.		23,500	
	Discount A/c	Dr.		1,500	
	To Ganpat				25,000

टिप्पणी

2008			Rs.	Rs.
	(Being received from Ganpath in full settlement)			
" 18	Pankaj Dr.		33,250	
	To Cash A/c			33,000
	To Discount A/c			250
	(Being paid to Pankaj in full settlement)			
" 22	Cash A/c Dr.		4,000	
	To Commission A/c			4,000
	(Being commission received)			
" 23	Shiv Dr.		2,000	
	To Purchases Return A/c			2,000
	(Being goods returned to Shiv)			
" 24	No Entry			
" 26	Loss by Fire A/c Dr.		2,000	
	Insurance Company Dr.		8,000	
	To Purchases A/c			10,000
	(Being goods destroyed by fire and partly claim accepted by the insurance company)			
" 27	Charity A/c Dr.		1,500	
	To Purchases A/c			1,000
	To Cash A/c			500
	(Being cash and goods given as charity)			
" 28	Anand Dr.		12,000	
	Cash A/c Dr.		8,000	
	To Sales A/c			20,000
	(Being goods sold to Anand for cash and credit)			
" 29	Municipal Tax A/c Dr.		800	
	To Cash A/c			800
	(Being municipal tax paid)			
Jan 30	Salaries A/c Dr.		5,000	
	To Cash A/c			5,000
	(Being salaries paid)			
" 31	Repairs & Maintenance of Building A/c Dr.		3,000	
	To Cash A/c			3,000
	(Being repairing charges paid)			

2008			Rs.	Rs.
2008			Rs.	Rs.
" 31	Cash A/c Dr.		9,000	
	Bad debts A/c Dr.		3,000	
	To Anand			12,000
	(Being partly claim received from Anand due to his insolvency)			
" 31	Insurance premium A/c Dr.		2,500	
	To Cash A/c			2,500
	(Being insurance premium paid)			
	Grand Total		8,51,300	8,51,300

Cash Account

Dr. Cr.

Date	Particulars	J.F.	Amount Rs.	Date	Particulars	J.F.	Amount Rs.
2008				2008			
Jan.1	To Capital A/c		1,50,000	Jan. 7	By Telephone Exp. A/c		1,000
" 4	To Sales A/c		30,000	" 10	By Carriage A/c		1,000
" 15	To Ganpat		23,500	" 12	By Cartage A/c		500
" 22	To Commission A/c		4,000	" 18	By Pankaj		33,000
" 28	To Sales A/c		8,000	" 27	By Charitg A/c		500
" 30	To Anand		9,000	" 29	By Municipal Tax A/c		800
				" 30	By Salaries A/c		5,000
				" 31	By Repair & Maintenance A/c		3,000
				" 31	By Insurance Premium A/c		2,500

Stock Account

			Rs.				Rs.
2008							
Jan.1	To Capital A/c		50,000				

Building Account

			Rs.				Rs.
2008							
Jan.1	To Capital A/c		4,00,000				

Capital Account

			Rs.	2008			Rs.
				Jan. 1	By Cash A/c		1,50,000
				"	By Stock A/c		50,000
				"	By Building A/c		4,00,000

Purchases Account

2008			Rs.	2008			Rs.
Jan. 3	To Pankaj		38,000	Jan. 26	By Loss by Fire A/c		2,000
" 10	To Shiv		32,000	" 26	By Insurance Co.		8,000
				" 27	By Charity A/c		1,000

Pankaj Account

2008			Rs.	2008			Rs.
Jan. 9	To Purchases Return A/c		4,750	Jan. 3	By Purchases A/c		38,000
" 18	To Cash A/c		33,000				
"	To Discount A/c		250				

Sales Account

			Rs.	2008			Rs.
				Jan. 4	By Cash A/c		30,000
				" 5	By Ganpat		25,000
				" 28	By Anand		12,000
				" 28	By Cash A/c		8,000

Ganpat's Account

2008			Rs.	2008			Rs.
Jan. 5	To Sales A/c		25,000	Jan. 15	By Cash A/c		23,500
				"	By Discount A/c		1,500

Telephone Expenses Account

2008			Rs.				Rs.
Jan. 7	To Cash A/c		1,000				

Purchases Return Account

			Rs.	2008			Rs.
				Jan. 9	By Pankaj		4,750
				" 23	By Shiv		2,000

Shiv's Account

2008			Rs.	2008			Rs.
Jan. 23	To Purchases Return A/c		2,000	Jan. 10	By Purchases A/c		32,000

Carriage Account

2008			Rs.				Rs.
Jan. 10	To Cash A/c		1,000				

Cartage Account

2008			Rs.				Rs.
Jan. 12	To Cash A/c		500				

Discount Account

2008			Rs.	2008			Rs.
Jan. 15	To Ganpat		1,500	Jan. 18	By Pankaj		250

Commission Account

			Rs.	2008			Rs.
				Jan. 22	By Cash A/c		4,000

Loss by Fire Account

2008			Rs.				Rs.
Jan. 26	To Purchases A/c		2,000				

Insurance Company Account

2008			Rs.				Rs.
Jan. 26	To Purchases A/c		8,000				

Charity Account

2008			Rs.				Rs.
Jan.27	To Purchases A/c		1,000				
"	To Cash A/c		500				

Anand's Account

2008			Rs.	2008			Rs.
Jan. 28	To Sales A/c		12,000	Jan. 31	By Cash A/c		9,000
				"	By Bed Debts A/c		3,000

Municipal Tax Account

2008			Rs.				Rs.
Jan. 29	To Cash A/c		800				

Salaries Account

2008			Rs.				Rs.
Jan. 30	To Cash A/c		5,000				

Repairs and Maintenance Account

2008			Rs.				Rs.
Jan. 31	To Cash A/c		3,000				

टिप्पणी

Bad Debs Account

2008			Rs.				Rs.
Jan.31	To Anand		3,000				

Insurance Premium Account

2008			Rs.				Rs.
Jan. 31	To Cash A/c		2,500				

स्व मूल्यांकन परीक्षण (Self Assesment Test) :

परीक्षा के प्रश्न (Examination Question) :

१. बहीखाता एवं लेखाशास्त्र से आप क्या समझते हैं? दोनों में अन्तर को स्पष्ट कीजिये। (What do you understand by Book Keeping and Accounting? Discuss fully the difference between both of them).

२. आधुनिक लेखांकन की वृहद् परिभाषा उनमें निहित अवधारणाओं को समझाते हुए लिखिये। (Give a comprehensive definition of Modern accounting, explaining the concepts inherent therein).

३. ''लेखांकन विधि आर्थिक घटनाओं को मापने तथा उन्हें व्यक्त करने का साधन है'' इस कथन की समीक्षा कीजिये तथा लेखांकन की आवश्यकता को समझाइये। ("Accounting is the means of measuring and reporting the results of the economic activities". Comment on the above statement and explain the need for accounting).

४. ''लेखांकन का विकास विभिन्न स्तरों से होकर गुजरा है'' इस कथन की विस्तृत व्याख्या कीजिए। (The development of Accounting has passed through various stages? Explain this statement in detail).

५. बताइये कि निम्नलिखित वाक्य 'सत्य' है या 'असत्य'। (State whether the following sentences are 'True' or 'False').

(i) मिलान अवधारणा के अनुसार आगम का व्यय से मिलान हो। (Revenues are matched with expenses according to the matching concept).

(ii) लेखा मानक–1 के अनुसार आधारभूत लेखांकन मान्यताऐं व्यवसाय की निरन्तरता, अनुदारवादिता या रूढिवादिता तथा उपार्जन है। (As per AS-1 the fundamental accounting assumptions are going concern, conservatism and accrual).

(iii) उपार्जन अवधारणा के अनुसार हम आगम की पहचान उसके अर्जित होने से तथा लागत की उसके भुगतान करने से करते है। (By accrual concept, we mean recognition of revenue when it is earned and of cost when they are paid).

(iv) लागत अवधारणा स्फीतिकारी परिस्थिति में बहुत सारे संदेह उत्पन्न करती है। (Cost concept creates a lot of confusion in an inflationary situation).

(v) लेखांकन एक क्षेत्र का सही माप है। (Accounting is an exact measurement discipline).

(vi) पूर्ण प्रकटीकरण के सिद्धान्त के लिये महत्वता की परम्परा एक अपवाद है। (Materiality convention is an exception to the full disclosure principle).

(vii) लाभों से पूंजी में वृद्धि होती है तथा हानि एवं आहरणों में कमी। (Capital is increased by profits and reduced by losses and drawings).

Ans. : (i) सत्य (ii) असत्य (iii) असत्य (iv) सत्य (v) असत्य (vi) सत्य (vii) सत्य

६. निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि को विवरण का प्रयोग करते हुए पूरा कीजिये। (Fill up the following entry by using narration).

.... Dr.

To Cash A/c 500

To ....

(The proprietor took goods worth Rs. 500 and cash Rs. 1,500 for his personal use)

७. निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि को विवरण का प्रयोग करते हुए पूरा कीजिये। (Fill up the following entry by using narration).

.... 2,000

To Cash A/c 1,500

To 500

(The Goods worth Rs. 500 and Cash Rs. 1,500 stolen from shop)

टिप्पणी

८. निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि के आधार पर विवरण लिखिये। (On the basis of the following journal entry, write the narration)

Krishna Kumar	Dr.	2,000	
To Bank A/c			1,800
To Discount A/c		200	

(..)

९. निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि को विवरण का प्रयोग करते हुए पूरा कीजिये। (Fill up the following journal entry by using narration).

Ashok	Dr.	440
To Sales A/c		400
To .... A/c		40

(Being goods sold and charged sales tax)

१०. एक व्यापारी की जर्नल में निम्नलिखित व्यवहारों को लिखिये तथा खाताबही में खतौनी कीजिये। (Enter the following transactions of a merchant in the Journal & post them into Ledger) :

2009

Jan 1 रोकड़ का विनियोग करते हुए व्यापार शुरू किया (Started business by investing cash) Rs. 35,000

२ भूमि खरीदी (Purchased land) Rs. 10,000

२ रोकड़ में माल खरीदी (Purchased goods for cash) Rs. 15,000

३ अजीत सेन से उधार माल खरीदा (Purchased goods from Ajit sen on credit) Rs. 5,000

४ रोकड़ में माल बेचा (Sold goods for cash) Rs. 1,000

५ सत्यजीत को उधार माल बेचा (Sold goods on credit to Satya Jeet) Rs. 3,000

६ भाड़ा चुकाया (Paid freight) Rs. 150

८ दान दिया (Donated) Rs. 500

११ रमेश को वेतन चुकाया (Paid salary to Ramesh) Rs. 600

१३ बैंक से कार्यालय प्रयोग हेतु निकाले (Withdrew from bank for

टिप्पणी

office use) Rs. 2,000

१४ बैंक से घरेलू प्रयोग हेतु निकाले (Withdrew from bank for private use) Rs. 3,000

१५ पूंजी पर ब्याज लगाया। (Charged interest on capital) Rs. 500

१५ किराया प्राप्त (Rent received) Rs. 1,000

१५ जिला सहकारी बैंक से ऋण (Loan from District Co-operative Bank) Rs. 10,000

[Ans. : Total of Journal Rs. 86,750]

अभ्यासार्थ प्रश्न (Assignment) :

1. लेखांकन अवधारणाओं तथा परम्पराओं से आप क्या समझते हैं? संक्षेप में लेखांकन की महत्त्वपूर्ण अवधारणाओं का वर्णन कीजिए। (What do you understand by concepts and conventions of Accounting? Describe the important concepts of Accounting in short).
2. लेखा विज्ञान अभी पूर्णावस्था को प्राप्त नहीं हुआ हैं। यह विकास के क्रम में है। इस दौरान कई अवधारणाओं का विकास किया गया है। इसमें से किन्हीं तीन को उपयुक्त उदाहरण देकर समझाइये। (The science of accounting is not yet in a finished form. It is in the process of evolution. It has, in the course of time, developed a number of concepts. Explain any three of these with the help of proper examples).
3. निम्नलिखित स्थितियों में कौन–कौन सी लेखांकन परम्पराओं का अनुसरण हुआ है या उल्लंघन हुआ है। (What accounting conventions are followed or violated in the following cases).
   (i) एक कम्पनी ह्रास की दर 20% से घटाकर 15% करना चाहती है, चूंकि चालू वर्ष में लाभ कम है। ;A company wants to reduce the rate of depreciation from 20% to 15% since there is less profit in the current year).
   (ii) एक कम्पनी ने 5 लाख रु. विज्ञापन पर खर्च किये और इस व्यय को पांच वर्षों में फैलाना या विस्तार करना चाहती है। (A company spends Rs. 5,00,000 in advertisement and wants to spread over the expenditure in five years).
   (ii) कम्पनी ने एक ऐसी विशिष्ट मशीन बनाने की अनुमति प्रदान की जिसकी उपयोगिता कई वर्षों तक रहेगी। चूंकि मशीन विशिष्ट प्रकृति की है तथा समापन पर उसका कोई पुनः विक्रय मूल्य नहीं है अतः, कम्पनी चालू वर्ष में 100% ह्रास अपलिखित करना चाहती है। (A company gives permission for making special machine whose usefulness spreds over several years. Since the machine is of special nature and has no resale value on liquidation, the company wants to provide 100% depreciation in the current year).
   (iv) एक कम्पनी जिसकी बिक्री अधिक होती है, ने एक अनुलिपि मशीन 5,000 रु. में खरीदी जिसकी आयु 5 वर्ष है तथा जिस पर चालू वर्ष में 1,000 रु. ह्रास लगाना चाहती है। ;A company with high turnover buys a duplicating machine for Rs. 5,000 having life of 5 years and wants to depreciate Rs. 1,000 in the current year).

Ans.: (i) संगति तथा रूढिवादिता दोनों परम्पराओं का उल्लंघन हुआ है।, (ii) मिलान

अवधारणा का उल्लंघन बशर्ते पांच वर्षों तक इसका लाभ न मिले।, (iii) निरन्तरता की अवधारणा का उल्लंघन हुआ है।, (iv) महत्वता की परम्परा का उल्लंघन हुआ है।

4. खाताबही क्या है। इसके महत्व को बताइये। (What is Ledger? Throw light on its importance).

5. खाताबही में खतौनी किसी प्रकार की जाती है, समझाइये। (How posting is done in the Ledger? Explain)

6. निम्नलिखित की जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिये। (Journalise the following)

2009 March 1	जयपुर के रामप्रसाद ने पुस्तक विक्रेता के रूप में 3,000 रु. से व्यापार शुरू किया। (M/s Ram Prasad of Jaipur Commenced business as book seller with a Capital of Rs. 3,000)
3	दुकान के लिए नया फर्नीचर खरीदा (Bought New furniture for the shop) Rs. 200
4	1,000 रु. की पुस्तकें व 500 रु. के कागज रोकड़ में खरीदे।(Bought books Rs. 1,000 and papers Rs. 500 for cash)
5	रोकड़ में पुस्तकें तथा कागज बेचे। (Sold books and papers for cash) Rs. 700
8	मैकमिलन एण्ड कम्पनी, मुम्बई से पुस्तकें खरीदी (Purchased books from Macmillan & Co. Mumbai) Rs. 1,200
13	विश्वविद्यालय पुस्तकालय को पुस्तकें रोकड़ बेची (Sold books to the university library for cash) Rs. 500
15	मजदूरी के 5 रु तथा स्टेशनरी के 10 रु. चुकाये। (Paid for wages Rs. 5 and stationery) Rs. 10
17	मैकमिलन एण्ड कम्पनी को रोकड़ चुकाये 1,190 रु. तथा बट्टा प्राप्त 10 रु. (Paid cash to Macmillan & Co. Rs. 1,190 and received discount Rs. 10)
20	दुकान का एक हिस्सा किराये पर दिया उसका किराया प्राप्त किया (Received rent for a portion of the shop letout) Rs. 15
22	के पी ब्रदर्स को पुस्तकें तथा स्टेशनरी 200 रु. की रोकड़ तथा 300 रु. की उधार बेचीं (Sold books and stationery to K.P. Bros for credit Rs. 300 and for cash Rs. 200 respectively)
25	के पी ब्रदर्स से पूर्ण भुगतान में 295 रु. रोकड़ प्राप्त किये (Received cash from K.P. Bros Rs. 295 in full settlement)
31	माह का किराया 45 रु. व वेतन 100 रु. चुकाया। (Paid rent Rs. 45 and salaries for

टिप्पणी

the month Rs. 100)

[Ans : Total of Journal 9,275]

7. निम्नलिखित व्यवहारों को श्री मुकेश की सहायक बहियों में लिखिये। (Record the following transactions in subsidiary books of Shri Mukesh) :

(i) उसने कैलिको मिल्स से 500 मीटर कपड़ा 60 रु. प्रति मीटर की दर से खरीदा, 10 प्रतिशत व्यापारिक बट्टा। पटेल को लागत से दुगने मूल्य बेचा। (He purchased from calico mills 500 meters of cloth at Rs. 60 per metre at 10% trade discount and sold to Patel at double the price than cost).

(ii) पटेल ने 100 मीटर कपड़ा लौटाया तथा मुकेश ने उस माल को कैलिको मिल्स को लौटा दिया। (Patel returned 100 meters of cloth and Mukesh returned these goods to calico mills).

(iii) अम्बिका मिल्स से 500 साडियां 200 रु. प्रति साडी की दर से खरीदी। इसमें से 250 साडियां उसने आनन्द को 20 प्रतिशत लाभ जोड़कर 10 प्रतिशत व्यापारिक बट्टे पर बेची। (Purchased from Ambica mills 500 Sarees at Rs. 200 per saree and out of it he sold to Anand 250 sarees by adding 20% profit on it at 10% trade discount).

(iv) सूर्या से 100 धोतियों का आदेश 19 प्रति धोती की दर से प्राप्त हुआ। (An order for 100 Dhoties at Rs. 19 per Dhoti is received from Surya).

(v) सन्याजी मिल्स से 1000 मीटर कपड़ा 5 प्रति मीटर की दर से 10 प्रतिशत व्यापारिक बट्टे पर खरीदा। (Purchased from Sanyaji Mills 1,000 meters cloth at Rs. 5 per meter at 10% trade discount).

(vi) उसने सन्याजी मिल्स को 100 मीटर कपड़ा लौटाया और नाम की चिट्ठी भेजी। (He returned 100 metre cloth to Sanyaji Mills and sent a debit note).

(vii) उसने 600 गर्म कोट 300 प्रति कोट की दर से अंजनिया ब्रदर्स से एक माह के उधार पर खरीदा। (He purchased 600 Woollen Coats at Rs. 300 per Coat from Anjanya Bros. on one month credit).

(viii) उसने 500 बने हुये पेन्ट 50 प्रति पेन्ट की दर से पटवा बद्रर्स से एक माह के उधार पर खरीदा। (He purchased 500 ready made Pants at Rs. 50 per Pant from Patwa Bros. on one month credit).

(ix) उसने 50 साड़ी 150 रु. प्रति साड़ी की दर से गंगा मिल्स से खरीदी तथा उन्हें मुख्यमंत्री सहायता कोष में दिया। (He purchased from Ganga Mills 50 Sarees at Rs. 150 per Saree and gave it in "Chief Minister's Relief Fund").

[Ans : Total of Purchases Book Rs. 164,000, Total of Sales Book Rs. 1,08,000. Total of purchase return book Rs. 5,850, Total of sales

return book Rs. 10,800 and Total of Journal proper Rs. 7,500]

9. जयश्री एण्ड कम्पनी के तीन खानों वाली रोकड़ बही में निम्नलिखित व्यवहारों को लिखिये। (Enter the following transactions in a three column Cash Book of Messers Jaishree & Co.)

2009

April 1 हाथ में रोकड़ 500 रु. तथा बैंक शेष 9,570 रु.। (Cash in hand Rs. 500; balance at bank Rs. 9,570)

2 एस गोविन्द से 2,000 रु. रोकड़ प्राप्त किये तथा उसे 100 रु. बट्टा दिया। (Received cash from S. Govind Rs. 2,000 and allowed him discount Rs. 100)

4 एस. के. बोस को चैक से 700 रु. का भुगतान किया तथा 20 रु. बट्टा प्राप्त किया। (Paid S.K. Bose by cheque Rs. 700, discount received Rs. 20)

6 2,000 रु. का माल खरीदा, चैक से भुगतान किया (Purchased goods for Rs. 2,000 and paid by cheque)

8 बैंक में जमा कराये। (Deposited with bank) Rs. 2,000

10 अतुल घोष को माल बेचा। (Sold goods to Atul Ghosh) Rs. 1,000

12 800 रु. का माल बेचा तथा चैक से भुगतान प्राप्त किया। (Sold goods for Rs. 800 and received payment by cheque)

14 अतुल घोष से पूर्ण भुगतान में 950 रु. का चैक प्राप्त हुआ। (Received a cheque of Rs. 950 from Atul Ghosh in full settlement of his account)

16 कार्यालय प्रयोग के लिए 1,000 रु. बैंक से निकाले तथा 50 रु. किराया रोकड़ चुकाया। (Withdrew from bank for office use Rs. 1,000; paid rent in cash Rs. 50)

18 मूलचन्द से 3,000 रु. का माल खरीदा तथा 100 रु. बट्टा काटकर 2,900 रु. का चैक से भुगतान किया। (Purchased goods worth Rs. 3,000 from Mool Chand and paid Rs. 2,900 by cheque after deducting Rs. 100 cash discount)

20 टेलीफोन बिल का भुगतान किया। (Paid telephone bill) Rs. 80

24 अहमद को चुकाये 584 रु. तथा बट्टा प्राप्त 16 रु.। (Paid Ahmed by cheque Rs. 584; discount received Rs. 16)

25 रोकड़ बिक्री (Cash sales) Rs. 1,700

26 राबर्ट एन्थोनी से चैक प्राप्त हुआ 380 रु. जिसे बैंक में जमा करवा दिया, तथा बट्टा दिया 20 रु.। (Received a cheque from Robert Anthony and deposited into bank Rs. 380; discount allowed Rs. 20)

28 कार्यालय प्रयोग के लिए पुराना स्कूटर 4,000 रु. में खरीदा, इस राशि का चैक निर्गमित

टिप्पणी

किया। (Purchased an old scootor for office use Rs. 4,000 and issue a cheque for the amount)

29 बैंक ने सूचित किया कि राबर्ट एन्थौनी का चैक अप्रतिष्ठित हो गया। (Bank intimated that Robert Anthony's cheque has been dishonoured)

30 बैंक में जमा कराये (Deposited with bank) Rs. 500

पास बुक में दर्शाये गये बैंक व्यय (Bank Charges as shown in the pass book) Rs. 6.

[Ans. : Cash balance Rs. 2,570 & bank balance Rs. 2,630]

इकाई २ शिक्षण के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आपको ज्ञात होगा कि -

* सहायक बहियां क्या है तथा इनकी किस प्रकार के व्यापार में उपयोगिता है।
* रोकड़ बही कितने प्रकार की बनाई जाती है तथा प्रत्येक की व्यापार में क्या उपयोगिता है।
* तलपट क्या है तथा इसे किस प्रकार बनाया जाता है।
* तलपट मिल जाने पर भी कौन कौनसी अशुद्धियां बहियों मे रह सकती है।
* उचंती खाता क्या है तथा तलपट मिलाने में इसकी क्या भूमिका है।
* विभिन्न प्रकार के समायोजनों का अंतिम खाते बनाते समय क्या महत्व है।
* तलपट समायोजित तलपट से किस प्रकार भिन्न है।
* अंतिम खाते बनाना व्यापारी के लिए क्यों आवश्यक है।
* क्षैतिज एवम लम्बाकार प्रारूप में अंतिम खाते किस प्रकार बनाये जाते है।

संरचना (Structure)

2.1 सहायक बहियों का परिचय

2.1.1 सहायक बहियों के प्रकार

2.1.1 रोकड़ बही के प्रकार

2.2 तलपट का अर्थ एवं परिभाषा

2.2.1 खातों की पहचान करके तलपट बनाना।

2.2.2 तलपट का मिलान खाताबही की शुद्धता का प्रमाण नहीं।

2.2.3 तलपट के मिलान को प्रभावित करने वाली अशुद्धियां

2.2.4 उचंती खाता।

2.3 समायोजन एवं समायोजन प्रविष्टियों का अर्थ

2.3.1 प्रमुख समायोजन

2.3.2 समायोजनों का सारांश

2.3.3 समायोजित तलपट

2.4 अंतिम खातो का अर्थ

2.4.1 अंतिम खातों की उपयोगिता

2.4.2 अंतिम खातों में सम्मिलित खाते

2.4.3 अंतिम खातों के लम्बाकार प्रारूप

2.1 सहायक बहियों का परिचय (Introduction to Subsidiary Books)

व्यापार से सम्बन्धित समस्त व्यवहारों का लेखा जर्नल में किया जाता है। जब व्यापार का विस्तार हो जाता है और व्यापारिक लेनदेनों की संख्या बढ़ जाती है तो ऐसी स्थिति में समस्त व्यापारिक लेनदेनों को एक जर्नल में लिखना असुविधाजनक हो जाता है। जब व्यापारी लेखा पुस्तकों के रूप में एक ही जर्नल रखता है तो उसे कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है इससे बचने के लिए जर्नल का उप-विभाजन किया जाता है जिससे विभिन्न व्यक्तियों में कार्य का विभाजन आसानी से किया जा सके। इसके लिए व्यवहारों की प्रकृति और व्यापार की आवश्यकता को ध्यान रखते हुए कुछ और जर्नल बनाये जाते हैं। इनमें क्रय जर्नल, विक्रय जर्नल, क्रय वापसी जर्नल, विक्रय वापसी जर्नल, रोकड़ जर्नल, देय बिल जर्नल, प्राप्य बिल जर्नल तथा मुख्य जर्नल शामिल किये जाते हैं। व्यवहारों की प्रकृति के अनुसार इन बहियों में प्रविष्टियाँ की जाती है। इन बहियों को सहायक बहियाँ या प्रारम्भिक लेखे की बहियाँ भी कहते हैं।

2.1.1 सहायक बहियों के प्रकार (Kinds of Subsidiary)

सहायक बहियां आठ प्रकार की होती है। इनके नाम निम्नलिखित है -

1. क्रय बही, 2. विक्रय बही, 3. क्रय वापसी बही, 4. विक्रय वापसी बही, 5. प्राप्य बिल बही,

6. देय बिल बही, 7. रोकड़ बही, 8. मुख्य जर्नल

1. क्रय बही (Purchases Book) : क्रय बही में व्यापारी द्वारा उधार खरीद गये माल के लेनदेनों का लेखा होता है। माल से तात्पर्य उस वस्तु से है जिसमें व्यापारी व्यापार करता है। इसमें सम्पत्ति के उधार खरीदने का लेखा नहीं किया जाता है क्योंकि इसे माल नहीं माना जाता है। क्रय बही में प्रविष्टियाँ प्राप्त बीजक से की जाती हैं जिसे विक्रेता (लेनदार) उधार माल खरीदने पर देता है। क्रय बही का प्रारूप निम्नलिखित प्रकार है -

Purchase Journal/Purchase Book

Date	Particulars	Invoice No.	L.F.	Amount		
				Details Rs.	VAT Rs.	Total Rs.
	Purchase A/c Dr.					

2. विक्रय बही (Sales Book): विक्रय बही में उधार बेचे गये ऐसे माल के व्यवहारों का लेखांकन होता है जिसमें संस्था व्यापार करती है। इसमें सम्पत्ति के उधार बेचने का लेखा नहीं किया जाता है। विक्रय बही में प्रविष्टियाँ उन बिलों की प्रतिलिपि से की जाती है जो देनदार को उधार माल बेचने पर दिये जाते हैं। माल का उधार विक्रय बिल बनाकर किया जाता है। बिल में बेचे गये माल का समस्त विवरण लिखा जाता है जिसमें बेचे गये माल का मूल्य उस पर लगाया गया विक्रय कर, खर्चें तथा दान आदि की राशि पृथक-पृथक दिखायी जाती है अतः इन समस्त मदों को दिखाने हेतु स्तम्भाकार विक्रय बही बनानी होती है। आजकल व्यवहार में भी स्तम्भाकार विक्रय बही का ही प्रचलन है। विक्रय बही का प्रारूप इस प्रकार है -

Columnar Sales Book / Columnar Sales Journal

Date	Particulars	Invoice No.	L.F	Amount (Rs.)					
				Details Rs.	Sales Rs.	Sales Tax or VAT Rs.	Expenses Rs.	Charity Rs.	Total Rs.

विक्रय खाने के योग को विक्रय खाते में, वेट खाने के योग को वेट खाते में, खर्चों के खाने के योग को सम्बन्धित खर्च खाते में और दान खाने के योग को दान खाते में खताया जाता है।

3. क्रय वापसी बही (Purchases Return Book): कभी-कभी उधार खरीदे गये माल में से कुछ माल वापिस विक्रेता को किन्हीं कारणों से लौटा दिया जाता है। ऐसे व्यवहारों का लेखा जिस बही में किया जाता है उस बही को क्रय वापसी या जावक बही कहते हैं। क्रय वापसी बही में अग्रलिखित प्रकार के व्यवहारों का लेखा किया जाता है :

1) घटिया किस्म का माल होना;
(2) नमूने के अनुसार माल न होना;
(3) माल का मार्ग में क्षतिग्रस्त होना;
(4) माल बिना आदेश के प्राप्त हो जाना;
(5) आदेश से अधिक माल प्राप्त हो जाना।

क्रय वापसी बही का प्रारूप इस प्रकार है -

Purchase Return Book / Journal

Date	Particulars	Debit Note No.	L.F.	Amount (Rs.)		
				Details	Vat	Total

4. विक्रय वापसी बही (Sales Return Book) : यदि उधार बेचा गया माल वापिस लौटा दिया जाता है तो इसका लेखा जिस बही में किया जाता है उसे विक्रय वापसी बही या वापसी आवक बही कहते हैं। विक्रय वापसी बही में निम्नलिखित माल को लौटाने से सम्बन्धित व्यवहारों का लेखा किया जाता है :

(1) घटिया किस्म का माल भेजने पर;
(2) नमूने के अनुसार माल न भेजने पर;
(3) क्षतिग्रस्त माल भेजने पर;
(4) बिना आदेश के माल भेजने पर; तथा
(5) आदेश से अधिक माल भेजने पर।

विक्रय वापसी बही का प्रारूप इस प्रकार है -

टिप्पणी

Sales Return Book / Journal

Date	Particulars	Credit Note No.	L.F	Amount (Rs.)	
				Details	Total

5. प्राप्य बिल बही (Bills Receivable Book) : ग्राहकों से प्राप्त हुए प्राप्य बिलों का लेखा जिस बही में किया जाता है उसे प्राप्य बिल बही कहते है। प्राप्य बिल बही का प्रारूप निम्नलिखित है –

Bills Receivable Book / Journal

Sl. No.	Date when received	From whom received	Drawer	Acceptor	Date of bill	Term	Due date	L.F.	Amount Rs.	Remarks

6. देय बिल बही (Bills Payable Book) : व्यापारी द्वारा स्वीकार किये गये समस्त देय बिलों का लेखा जिस बही में किया जाता है उसे देय बिल बही कहते है। देय बिल बही का प्रारूप निम्नलिखित है –

Bills Payable Book / Journal

Sl. No.	Date of Acceptance	To whom given	Payee's Name	Where payable	Date of bill	Term	Due date	L.F.	Amount Rs.	Remarks

७. रोकड़ बही (Cash Book) : रोकड़ प्राप्ति एवम् रोकड़ भुगतान से सम्बन्धित व्यवहारों का लेखा जिस बही में किया जाता है उसे रोकड़ बही कहते है। यह प्रारंभिक लेखे की पुस्तक होने के साथ साथ रोकड़ खाते का भी कार्य करती है क्योंकि व्यापारी को खाताबही में रोकड़ खाता खोलने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। रोकड़ प्राप्तियां इस बही के नाम पक्ष में तथा रोकड़ भुगतान जमा पक्ष में लिखे जाते है। इसके पश्चात राकेड़ बही से खाताबही में खतौनी कर दी जाती है। व्यापार की आवश्यकता के अनुसार रोकड़ बही निम्नलिखित रूपों में बनाई जा सकती है –

(i) साधारण रोकड़ बही (Simple Cash Book)

(ii) दो खानों वाली रोकड़ बही (Two Column Cash Book)

(iii) तीन खानों वाली रोकड़ बही (Three Column Cash Book)

(iv) लघु या फुटकर रोकड़ बही (Petty Cash Book)

(i) साधारण रोकड़ बही (Simple Cash Book) : रोकड़ प्राप्तियों एवम् रोकड़ भुगतानों का लेखा इस बही में किया जाता है। इसका प्रारूप खाते के प्रारूप जैसा ही होता है। साधारण रोकड़ बही का प्रारूप निम्नलिखित है -

Cash Book

Dr. Cr.

Date	Particulars	L.F.	Amount Rs.	Date	Particulars	L.F.	Amount Rs.

(ii) दो खानों वाली रोकड़ बही (Two Column Cash Book) : यह भी साधारण रोकड़ बही जैसी ही है, केवल इतना ही अन्तर है कि इसमें रोकड़ के साथ साथ बट्टे की राशि का खाना भी दोनों पक्षो में होता है जिसमें रोकड़ बट्टे से सम्बंधित लेखांकन किया जाता है। दिया गया बट्टा नाम पक्ष में तथा प्राप्त बट्टा जमा पक्ष में लेखांकित किया जाता है। दो खानों वाली रोकड़ बही का प्रारूप निम्नलिखित है -

Two Column Cash Book

Date	Particulars	L.F.	Amount Rs.		Date	Particulars	L.F.	Amount Rs.	
			Discount	Cash				Discount	Cash

(iii) तीन खानों वाली रोकड़ बही (Three Column Cash Book) : वर्तमान समय में अधिकतर व्यवहार चैक से होते है इसलिए रोकड़ तथा बट्टे के खाने के साथ साथ बैंक का खाना भी रोकड़ बही में हो तो व्यापार के लिए सुविधाजनक रहता है। विपरीत प्रविष्टि (Contra Entry) के अतिरिक्त तीन खानों वाली रोकड़ बही ठीक उसी प्रकार बनायी जाती है जिस प्रकार दो खानों वाली रोकड़ बही बनायी जाती है। ऐसे व्यवहार जो तीन खानों वाली रोकड़ बही के दोनों पक्षों पर प्रभाव डालते है वे व्यवहार विपरीत प्रविष्टी के रूप में लेखांकित किये जाते है। बैंक में धन जमा करवाना, बैंक से धन निकालना ऐसे व्यवहार है जो बैंक तथा रोकड़ दोनों ही खातों में लेखांकित होते है। बैंक में राशि जमा करवाने पर बैंक को नाम किया जायेगा और रोकड़ को जमा किया जायेगा अर्थात रोकड़ बही के नाम पक्ष में विवरण के खाने में To Cash लिखकर राशि बैंक के खाने में लिखी जायेगी। इसी प्रकार रोकड़ बही के जमा पक्ष में विवरण के खाने में By Bank लिखकर राशि रोकड़ के खाने में लिखी जायेगा। यह विपरीत प्रविष्टि होने से LF के दोनों खानों में C लिखा जायेगा जिसकी अर्थ है कि इस व्यवहार का दोहरा लेखा रोकड़ बही में ही पूरा हो गया है तथा खाताबही में किसी प्रकार की खतौनी की आवश्यकता नहीं है क्योंकि रोकड़ का खाना रोकड़ खाता तथा बैंक का खाना बैंक खाता होता है। ठीक इसी प्रकार बैंक से राशि निकालने पर रोकड़ बही के नाम पक्ष में To Bank लिखकर राशि रोकड़ के खाने में लिखी जायेगी। इसी प्रकार रोकड़ बही के जमा पक्ष में By Cash शब्द लिखकर राशि बैंक के खाने में लिखी जायेगी। इस विपरीत प्रविष्टि के लिए दोनों LF खानों मे C लिखकर दोहरा लेखा पूरा कर लिया जायेगा। रोकड़ का खाना हमेशा नाम शेष बतलायेगा परन्तु बैंक का खाना जमा का शेष भी बतला सकता है जिसे बैंक अधिविकर्ष कहते है। इसका प्रारूप निम्नलिखित है -

Three column cash book

Date	Particulars	L.F.	Amount (Rs.)			Date	Particulars	L.F.	Amount (Rs.)		
			Discount Rs.	Cash Rs.	Bank Rs.				Discount Rs.	Cash Rs.	Bank Rs.

(v) फुटकर रोकड़ बही (Petty Cash Book): बड़े बड़े व्यापार ग्रहों में छोटे छोटे खर्चों के भुगतानों को यदि मुख्य रोकड़ बही में लिखा जाता है तो यह मुख्य रोकड़पाल (Main Cashier) पर अधिक भार हो जायेगा और इससे न केवल उसका छोटी छोटी चीजों में समय व्यर्थ नष्ट होगा बल्कि महत्वपूर्ण कार्यों के सम्पादन में देरी होगी जो व्यापार के लिए हानिकारक होगी। इसलिए ऐसे खर्चों के लिए अलग से रोकड़ बही बनवा ली जाती है जिसे फुटकर रोकड़ बही कहते है जिसे एक अलग व्यक्ति द्वारा बनाया जाता है उसे फुटकर रोकड़िया (Petty Cashier) कहते है। यदि व्यापार छोटा हो तो फुटकर रोकड़ के व्यवहार साधारण रोकड़ बही में जिस प्रकार लेखांकित होते है वैसे ही कर सकते है परन्तु व्यापार बड़ा होने पर खानों वाली फुटकर रोकड़ बही बनाई जाती है जिसमें प्रत्येक खर्चें के शीर्षक के लिए अलग खाना होता है। इसकी खतौनी करते समय प्रत्येक खाने के योग को सम्बंधित खाते में खता दिया जाता है। इस विधि में मुख्य रोकड़िये द्वारा कुछ राशि एक निर्धारित अवधि के लिए फुटकर रोकड़िये को फुटकर खर्चों के भुगतान हेतु दे दी जाती है जब उसके द्वारा वह राशि खर्च हो जाय या उस अवधि के बीतने पर फुटकर रोकड़िया हिसाब बनाकर मुख्य रोकड़ियें को दे देता है। मुख्य रोकड़िया उतनी राशि फुटकर रोकड़िये को दे देता है जितनी राशि के खर्चों का हिसाब उसने दिया है इस प्रकार फुटकर रोकड़िये के पास उतनी ही राशि हो जाती है जितनी शुरू में उसे दी गई थी। यही क्रम आगे भी चलता रहता है। इसे अग्रदाय पद्धति (Imprest System) कहते है। बड़े व्यापार ग्रहों में प्रयुक्त होने वाली खानों वाली फुटकर रोकड़ बही का प्रारूप निम्नलिखित है -

Petty Cash Book

Amount Received	Date	Particulars	Voucher No.	Total Payments	Printing & Stationery	Postage & Telegr-ams	Carriage	Cartage	Refres-hments	Travelling Exp.	Misc. Exp.
Rs.				Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.

8. मुख्य जर्नल (Journal Proper): जिन व्यवहारों का लेखा क्रय बही, विक्रय बही, क्रय वापसी बही, विक्रय वापसी बही, रोकड़ बही, प्राप्य बिल बही एवं देय बिल बही में नहीं किया जाता है उनका लेखा मुख्य जर्नल में किया जाता है। जिन व्यवहारों का लेखा मुख्य जर्नल में करते हैं उनके कुछ उदाहरणों का उल्लेख निम्नलिखित प्रकार से है :

१. **प्रारम्भिक प्रविष्टि (Opening Entry) :** प्रारम्भिक प्रविष्टि का लेखा मुख्य जर्नल में किया जाता है। प्रारम्भिक प्रविष्टि प्रत्येक वर्ष के प्रथम दिन की जाती है। प्रारम्भिक प्रविष्टि पिछले वित्तीय वर्ष के चिट्ठे से संपत्तियों एवं दायित्वों के शेषों का चालू वर्ष में लाने के लिए की जाती है।

२. **अंतिम प्रविष्टियाँ (Closing Entries) :** अंतिम प्रविष्टियाँ माल से सम्बन्धित वस्तुगत खातों तथा नाममात्र के खातों को बंद करने के लिए लेखा वर्ष के अन्तिम दिन की जाती है। इन खातों के शेष व्यापारिक खाते अथवा लाभ हानि खाते में स्थानांतरित किये जाते हैं। माल से सम्बंधित खाते एवं प्रत्यक्ष व्यय खाते व्यापारिक खाते में तथा अन्य नाममात्र के खातों के शेष लाभ हानि खाते में स्थानांतरित किये जाते हैं।

३. **स्थानांतरण प्रविष्टियाँ (Transfer Entries) :** स्थानांतरण प्रविष्टियाँ एक खाते के शेष को दूसरे खाते में स्थानांतरित करने के लिए की जाती हैं जैसे आहरण खाते के शेष का पूंजी खाते में स्थानांतरण।

४. **समायोजन प्रविष्टियाँ (Adjustment Entries) :** समायोजन प्रविष्टियाँ लेखा वर्ष के अंतिम दिन की जाती हैं ताकि सम्बन्धित लेखा वर्ष का लाभ हानि खाता 'सही एवं उचित' लाभ तथा चिट्ठा 'सही एवं उचित' आर्थिक स्थिति का चित्र प्रस्तुत कर सके। जिन समायोजनों का लेखा वित्तीय वर्ष में नहीं किया गया है उनका प्रभाव सम्बन्धित वर्ष की लेखा पुस्तकों में लाने के लिए अन्तिम प्रविष्टियाँ की जाती हैं जैसे - अंतिम रहतिया, अदत्त खर्चे (Outstanding Expenses), अग्रिम खर्चें (Prepaid Expenses), स्थायी सम्पत्तियों पर मूल्य ह्रास (Depreciation) इत्यादि। समायोजन प्रविष्टियों का विस्तृत अध्ययन इसी इकाई में आगे करेंगे।

५. **सुधार प्रविष्टियाँ (Rectification Entries) :** खाताबही बन्द करने के बाद कुछ अशुद्धियों का पता चलता है तो ऐसी अशुद्धियों के सुधार हेतु सुधार प्रविष्टियाँ की जाती हैं। जैसे कोई व्यवहार प्रारम्भिक लेखा पुस्तकों में लिखने से छूट जाय, किसी व्यवहार की खाते में खतौनी नहीं की गई हो या गलत की गई हो।

६. **विविध प्रविष्टियाँ (Miscellaneous Entries) :** मुख्य जर्नल में निम्नलिखित प्रविष्टियों का लेखा भी किया जाता है :

(अ) नकद के अतिरिक्त पूँजी के रूप में व्यापार में लाई जाने वाली सम्पत्ति।
(ब) सम्पत्ति का उधार क्रय एवं विक्रय।
(स) लेनदार को बिल का बेचान।
(द) बेचना किये गये बिल का अनादरण।
(य) डूबत ऋण अपलिखित करना।
(र) माल दान में देना।
(ल) माल चोरी चला जाना।
(व) माल आग द्वारा नष्ट होना।
(श) माल घर खर्च के लिए निकालना।
(ष) माल की असामान्य हानि इत्यादि।
(ह) नकद के अतिरिक्त अन्य प्रतिफल के बदले में खरीदी गई सम्पत्तियाँ।

उदाहरण (Illustration) – 1

निम्नलिखित व्यवहारों को क्रय बही तथा क्रय वापसी बही में लेखांकित कीजिये। (Enter the following transactions in the Purchase Book and Purchase Return Book) :

2009

Jan. 1 रमेश एण्ड कम्पनी से खरीदा : 100 साड़ियें दर 176 रु. प्रति साड़ी तथा 50 थान पोपलीन दर 75 रु. प्रति थान बिल नम्बर 10314, व्यापारिक बट्टा 10 प्रतिशत। (Purchase from Ramesh & Company : 100 Sarees @ Rs. 176 each and 50 thans of Poplin @ Rs. 75 per than. Bill No. 10314, trade discount 10%).

टिप्पणी

" 8 रमेश एण्ड कम्पनी से खरीदे हुए पोपलीन के 10 थान रास्ते में क्षतिग्रस्त हो गये। उनसे निवेदन किया गया कि 25 रु. प्रति थान छूट प्रदान करे जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। नाम की चिट्ठी संख्या 1032. (10 Thans of Poplin purchased from Ramesh & Co. were damaged in transit. They were requested to grant an allowance of Rs. 25 per than, which was accepted by them. Debit note no. 1032).

" 12 शिव एजेन्सीज से खरीदा : 200 धोती जोड़े दर 250 रु. प्रति जोड़ा, 150 थान (एक थान में 20 मीटर) सर्टिंग दर 40 रु. प्रति मीटर, दलाली 500 रु., धर्मादा 50 रु. तथा बारदाना 150 रु. बिल नम्बर 1564, व्यापारिक बट्टा 10 प्रतिशत। (Purchased from Shiv Agencies : 200 Dhoti Pairs @ Rs. 250 per pair, 150 Thans of Shirting containing 20 meters per than @ Rs. 40 per meter. Brokerage Rs. 500. Dharmada Rs. 50 and Bardana Rs. 150, Bill No. 1564. Trade discount 10%).

" 23 शिव एजेन्सीज से प्राप्त माल की जांच करते समय पाया कि 10 धोती जोड़े कम थे और उसके लिए जमा की की चिट्ठी संख्या 1286 प्राप्त हुई। (On checking the goods with the invoice received from Shiv Agencies 10 Dhoti pairs were found short and credit note received for the same. credit note no. 1286).

" 26 पी. के. भाटिया एण्ड कम्पनी से जमा की चिट्ठी प्राप्त हुई क्योंकि 31.12.2008 के बिल संख्या 10691 की जोड़ 10,000 रु. अधिक लगी हुई थी। इस बिल पर 10 प्रतिशत व्यापारिक बट्टा दिया गया था। (Received a credit note from P.K. Bhatiya & Company because of the Bill No. 10691 dated 31.12.2008 was over cast by Rs. 10,000. 10% Trade discount was allowed on this bill).

" 27 घटिया किस्म की होने के कारण रमेश एण्ड कम्पनी को 10 साड़िया लौटाई। नाम की चिट्ठी संख्या 1061। (10 Sarees were returned to Ramesh & Co. due to inferior quality. Debit note no. 1061).

" 30 किशोर एण्ड कम्पनी से खरीदा : 5 गांठे धोती जोड़े प्रत्येक गांठ में 100 जोड़े दर 150 रु. प्रति जोड़ा। (Purchased from Kishore & Company : 5 Bales of dhoti pairs containing 100 pairs each @ Rs. 150 each pair).

" 30 शिव एजेन्सीज को 1,600 रु. का माल लौटाया। (Goods returned to Shiv Agencies Rs. 1,600).

" 31 क्षतिग्रस्त धोती जोड़ों की एक गांठ किशोर एण्ड कम्पनी को वापस लौटाई। (One defective bale of dhoti pair returned to Kishore and Company).

हल (Solution) :

Purchase Book

Date	Particulars	Invoice No.	L.F.	Rs.	Rs.
2009					
Jan 1	**Ramesh & Company**				
	100 Sarees @ Rs. 176 each			17,600	
	50 Thans of Poplin @ Rs. 75 per than	10,314		3,750	
	Less : Trade Discount 10%			21,350	
				2,135	19,215
Jan 12	**Shiv Agencies :**				
	200 Dhoti Pairs @ Rs. 250 per pair	1,564		50,000	
	150 Thans shirting @ Rs. 800 per than			1,20,000	
				1,70,000	
	Less : Trade Discount 10%			17,000	
				1,53,000	
	Brokerage			500	
	Dharmada			50	
	Bardana			150	1,53,700
Jan. 30	**Kishore & Company :**				
	5 Bales of Dhoti pairs @ Rs. 15,000 per bale				75,000
Jan. 31	Purchase A/c Dr.				2,47,915

Purchase Return Book

Date	Particulars	Debit Note No.	L.F.	Rs.	Rs.
2009					
Jan 27	**Ramesh & Company :**	1061			
	10 Sarees @ Rs. 176 each			1,760	
	Less : Trade Discount 10%			176	1,584
Jan 30	**Shiv Agencies :**				
	Goods returned.				1,600
Jan. 31	**Kishore & Company :**				
	01 Bales of Dhoti pairs @ Rs. 15,000				15,000
Jan. 31	Purchase Return A/c Cr.				18,184

टिप्पणी

उदाहरण (Illustration) – 2.

शिवानन्द फर्नीचर एवं स्टेशनर्स के निम्नलिखित व्यवहारों से विक्रय बही तथा विक्रय वापसी बही बनाइये। (From the following transactions prepare sales book and sales return book of M/s. Shivanand Furnitures and Stationers) :

2009

April 1 सेकिंड हैन्ड बुक कम्पनी को बेचा - (Sold to Second Hand Book Company) :

100 वित्तीय लेखांकन - लेखक बिस्सा, चितलंगी दर 500 रु. प्रत्येक (100 Financial Accounting by Bissa & Chitlangi @ Rs. 500 each)

100 लेखाशास्त्र - लेखक वडेरा, भार्गव दर 50 रु. प्रत्येक (100 Accountancy by Vadera & Bhargava @ Rs. 50 each)

50 लागत लेखांकन - लेखक ओसवाल, माहेश्वरी दर 250 रु., प्रत्येक व्यापारिक बट्टा 20 प्रतिशत। (50 Cost Accounting by Oswal & Maheshwari @ Rs. 250 each Trade Discount 20%)

" 5 सैकिंड हेन्ड बुक कम्पनी ने सूचित किया कि बरसात के कारण लेखाशास्त्र - लेखक वडेरा, भार्गव की 20 प्रतियां रास्ते में खराब हो गई जमा की चिट्ठी संख्या 1033 से उन प्रतियों पर 20 प्रतिशत छूट प्रदान की गई। (Second Hand Book Company informed that 20 copies of Accountancy by Vadera & Bhargava damaged in transit due to rain. An allowance on those copies @ 20% was given to him vide credit note no. 1033).

April 7 महिला महाविद्यालय को बेची - (Sold to Mahila Mahavidhyalaya) :

200 टेबल दर 200 रु. प्रति टेबल। (200 Tables @ Rs. 200 each)

200 कुर्सिया दर 100 रु. प्रति कुर्सी। (200 Chairs @ Rs. 100 each)

5 सोफासेट दर 5000 रु. प्रति सोफासेट। (5 Sofa set @ Rs. 5,000 each)

5 ड्रेसिंग टेबल दर 2000 रु. प्रति ड्रेसिंग टेबल। (5 Dressing Table @ Rs. 2,000 each)

20 बैंच दर 500 रु. प्रति बेंच। (20 Benches @ Rs. 500 each)

व्यापारिक बट्टा 10 प्रतिशत। (Trade discount 10%)

" 10 महिला महाविद्यालय ने अधिक मात्रा में भेजी गई एक ड्रेसिंग टेबल तथा दो बेंचें वापस लौटाई। (Mahila Mahavidhyalaya returned excess quantity of one dressing table and two benches)

" 12 बिल की जोड़ 1000 रु. से अधिक लगने के कारण सैकिंड हैण्ड बुक कम्पनी को जमा की चिट्ठी संख्या 1039 भेजी। (Credit note no. 1039 sent to second hand book company for overcastting of invoice sent to them Rs. 1,000)

" 25 गोयल बुक डिपो को बेचा : (Sold to Goyal Book Depot) :

200 दर्जन केमलीन पैंसिलें दर 10 रु. प्रति दर्जन। (200 Dozen Camlin Pencils @ Rs.10 per dozen)

260 सेट केमलीन पेन दर 50 रु. प्रति सेट। (260 set Camlin Pen @ Rs. 50 per set)

100 कागज रिमें दर 70 रु. प्रति रिम। (100 Paper rims @ Rs. 70 each)

500 चेतक कॉपी दर 10 रु. प्रति कॉपी। (500 Chetak note book @ Rs. 10 each)

व्यापारिक बट्टा 10 प्रतिशत, दलाली 2 प्रतिशत, धर्मादा 100 रु.। (Trade discount 10%, Brokerage 2%, Dharmada Rs. 100)

" 28 गोयल बुक डिपो ने केमलीन पेन के 60 सेट लौटाये। (Goyal Book Depot returned 60 set Camlin Pen).

" 30 प्रत्येक कागज की रिम की दर 10 रु. अधिक लगाने के कारण गोयल बुक डिपो को जमा की चिट्ठी संख्या

1051 भेजी। (A Credit note no. 1051 sent to Goyal Book Depot for excess charge of Rs. 10 per paper rim)

" 30 किताब महल को बेचा। (Sold to Kitab Mahal) :

1200 ऊंट छाप स्याही की दवातें दर 25 रु. प्रति दवात। (1200 Inkpots Camel brand @ Rs. 25 per inkpot)

1200 ऊंट छाप लेई 300 मिली लीटर दर 20 रु. प्रति नग। (1200 Camel brand paste 300 ml. @ Rs. 20 per piece)

व्यापारिक बट्टा 20 प्रतिशत। (Trade discount 20%)

हल (Solution) :

M/s. Shivanand Furnitures & Stationers

Sales Book

Date	Particulars	Invoice No.	L.F.	Amount				
				Details	Sales	Brokerage	Dharmada	Total
				Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
2009								
1.4	**Second Hand Book Company :**							
	100 Financial Accounting by Bissa & Chitlangi @ Rs. 500 each			50,000				
	100 Accountancy by Vadera & Bhargava @ Rs. 50 each			5,000				
	50 Cost Accounting by Oswal & Maheshwari @ Rs. 250 each			12,500				
				67,500				
	Less : Trade discount 20%			13,500	54,000	—	—	54,000
7.4	**Mahila Mahavidhyalaya :**							
	200 Tables @ Rs. 200 each			40,000				
	200 Chairs @ Rs. 100 each			20,000				
	5 Sofa set @ Rs. 5000 each			25,000				
	5 Dressing table @ Rs. 2000 each			10,000				
	20 Benches @ Rs. 500 each			10,000				
				1,05,000				
	Less : Trade discount 10%			10,500	94,500	—	—	94,500
25.4	**Goyal Book Depot :**							
	200 Dozen Camlin Pencils @ Rs. 10 per dozen			2,000				
	260 set Camlin Pen @ Rs. 50 per set			13,000				
	100 Paper rims @ Rs. 70 each			7,000				
	500 Chetak note book @ Rs. 10 each			5,000				
				27,000				
	Less : Trade discount 10%			2,700	24,300			
	Add : Brakerage 2%			486		486		
	Dharmada			100			100	24,886

टिप्पणी

Date	Particulars	Invoice No.	L.F.	Amount				
				Details	Sales	Brokerage	Dharmada	Total
				Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
2009								
30.4	**Kitab Mahal :**							
	1200 Inkpots Camel brand @ Rs. 25 per inkpot			30,000				
	1200 Camel paste 300 ml. @ Rs. 20 per piece			24,000				
				54,000				
	Less : Trade discount 20%			10,800	43,200	—	—	43,200
	Total				2,16,000	486	100	2,16,586

Sales Return Book

Date	Particulars	Credit Note No.	L.F.	Rs.	Rs.
2009					
10.4	**Mahila Mahavidhyalaya :**				
	1 Dressing tale @ Rs. 2,000 each			2,000	
	2 Benches @ Rs. 500 each			1,000	
				3,000	
	Less : Trade discount 10%			300	2,700
28.4	**Goyal Book Depot :**				
	60 set Camlin Pen @ Rs. 50 per set			3,000	
	Less : Trade discount 10%			300	2,700
	Sales Return A/c Dr.				5,400

उदाहरण (Illustration) – 3.

मयंक की प्राप्य बिल बही तथा देय बिल बही में निम्नलिखित व्यवहारों को लिखिये – (Enter the following transactions in bills receivable and bills payable books of Mayank) :

2009

July 1 सोहन एण्ड सन्स ने 2,500 रु. का एक बिल 3 माह की अवधि का स्वीकार किया। (Sohan & Sons accepted a bill of Rs. 2,500 for the term of 3 months)

8 कपिल एण्ड कम्पनी से 12,000 रु. का एक बिल 2 माह की अवधि का प्राप्त हुआ। (A bill received from Kapil & Company of Rs. 12,000 for the term of 2 months).

July 12 नवीन ट्रेडर्स पाली का 10,000 रु. का एक बिल 4 माह की अवधि का स्वीकार किया। (Accepted a bill of Rs. 10,000 drawn by Naveen Traders Pali for the period of 4 months)

17 मुकुल एण्ड कम्पनी द्वारा स्वीकृत 5,000 रु. का बिल 3 माह की अवधि का प्राप्त हुआ। (Received a bill of Rs. 5,000 duily accepted by Mukul & Company for 3 months)

20 हेमन्त कम्पनी द्वारा लिखा हुआ 2 माह की अवधि का 7,000 रु. का बिल स्वीकार किया। (Accepted a bill drawn by Hemant & Company for Rs. 7,000 for the period of two months)

July 24 रमेश द्वारा लिखित 4,000 रु. का 3 माह की अवधि का बिल स्वीकार किया जिसका कि भुगतान शिव को किया जायेगा। (Accepted Ramesh's draft for the period of three months for Rs. 4,000, the payment of which would be given to Shiv).

हल (Solution) :

विनिमय बिलों की परिपक्वता (Maturity) तिथि ज्ञात करते समय देय तिथि में तीन दिन ओर जोड़े जाते है जिन्हें अनुग्रह दिवस (Days of Grace) कहते है।

Bills Receivable Book

Sl. No.	Date of receipt	From whom Received	Drawer	Acceptor	Date of Bill	Term	Due Date	L.F.	Amount	Remark
	2009				2009		2009		Rs.	
1	July 1	Sohan & Sons	Mayank	Sohan & Sons	July 1	3 months	Oct. 4		2,500	
2	July 8	Kapil & Sons	Mayank	Kapil & Co.	July 8	2 months	Sept. 11		12,000	
3	July 17	Mukul & Co.	Mayank	Mukul & Co.	July 17	3 months	Oct. 20		5,000	
									19,500	

Bills Payable Book

Sl. No.	Date of given	To whom given	Payee	Where payable	Date of Bill	Term	Due Date	L.F.	Amount	Remark
	2009				2009		2009		Rs.	
1	July 12	Naveen Traders	Naveen Traders	Pali	July 12	4 months	Nov. 15		10,000	
2	July 20	Hemant & Co.	Hemant & Co.	—	July 20	2 months	Sept. 23		7,000	
3	July 24	Ramesh	Shiv	—	July 24	3 months	Oct. 27		4,000	
									21,000	

उदाहरण (Illustration) – 4.

निम्नलिखित व्यवहारों को साधारण रोकड़ बही में लिखिये। (Enter the following transactions in a simple cash book).

2009		Rs.
April 1	हाथ में रोकड़ (Cash in hand)	3,000
" 1	रोकड़ विक्रय (Cash Sales)	40,000
" 2	रोकड़ क्रय (Cash Purchases)	15,000
" 4	रिषभ से प्राप्त (Received from Rishabh)	18,000
" 8	स्कूटर खरीदा (Purchase of Scooter)	35,000
" 12	मजदूरी चुकाई (Wages paid)	6,600
" 15	आनन्द से प्राप्त (Received from Anand)	21,500
" 17	कमीशन प्राप्त (Commission received)	4,500
" 20	किराया चुकाया (Rent paid)	6,000
" 22	डाक टिकट खरीदे (Purchase of postage stamp)	1,000
" 23	स्टेशनरी खरीदी (Stationery purchased)	2,400
" 26	बिक्री कर चुकाया (Sales tax paid)	8,000
" 27	थेला भाड़ा चुकाया (Cartage paid)	500
" 28	ब्याज प्राप्त (Interest received)	2,900
" 29	अनिल को चुकाये (Paid to Anil)	15,000
" 30	संजय से प्राप्त (Received from Sanjay)	3,000

हल (Solution) :

Cash Book

Dr. Cr.

Date	Particulars	L.F.	Amount	Date	Particulars	L.F.	Amount Rs.
2009			Rs.	2009			Rs.
April 1	To Balance b/d		3,000	April 2	By Purchases A/c		15,000
" 1	To Sales A/c		40,000	" 8	By Scooter A/c		35,000
" 4	To Rishabh		18,000	" 12	By Wages A/c		6,600
" 15	To Anand		21,500	" 20	By Rent A/c		6,000
" 17	To Commission A/c		4,500	" 22	By Postage A/c		1,000
" 28	To Interest A/c		2,900	" 23	By Stationery A/c		2,400
" 30	To Sanjay		3,000	" 26	By Sales Tax A/c		8,000
				" 27	By Cartage A/c		500
				" 29	By Anil		15,000
				" 30	By Balance c/d		3,400
			92,900				92,900

उदाहरण (Illustration) – 5.

निम्नलिखित व्यवहारों को दो खातों वाली रोकड़ बही में लिखिये। (Enter the following transactions in two column cash book) :

2009		Rs.
Jan. 1	सुरेश ने रोकड़ से व्यापार प्रारंभ किया। (Suresh started a business with cash)	1,00,000
" 3	बैंक में जमा करवाये। (Deposited in to bank)	90,000
" 5	हरी से रोकड़ माल खरीदा। (Goods purchased from Hari in cash)	8,000
" 7	रोकड़ विक्रय। (Cash Sales)	6,000
" 9	मोहन से 11,100 रु. के पूर्ण भुगतान में 10,000 रु. प्राप्त। (Received from Mohan Rs. 10,000 in full settlement of Rs. 11,100)	
" 12	रोकड़ खरीद। (Cash Purchases)	3,000
" 15	रमेश को 12,500 रु. के पूर्ण भुगतान में 10,800 रु. चुकाये। (Paid to Ramesh Rs. 10,800 in full settlement of Rs. 12,500)	
" 17	हेमन्त से 8,000 रु. का चैक प्राप्त हुआ, उसे 750 रु. का बट्टा दिया। (Received a cheque from Hemant Rs. 8,000 and discount allowed to him Rs. 750)	
" 18	पंकज को 9,000 रु. के पूर्ण भुगतान में 8,200 रु. चुकाये। (Paid to Pankaj Rs. 8,200 in full settlement of Rs. 9,000)	
" 20	यात्रा व्यय चुकाये। (Travelling expenses paid)	2,500
" 21	कमीशन प्राप्त। (Commission received)	3,750
" 24	बिजली एवं पानी के चुकाये। (Paid for electricity and water)	700
" 26	थेला भाड़ा चुकाया। (Cartage paid)	100
" 28	डाक व तार व्यय चुकाये। (Postage and telegram exp. Paid)	80
" 30	मजदूरी चुकाई (Wages paid)	1,200
" 31	वेतन चुकाया। (Salaries paid)	2,000

टिप्पणी

हल **(Solution) :**

Dr. Two Column Cash Book Cr.

Date	Particulars	L.F.	Amount		Date	Particulars	L.F.	Amount	
			Discount	Cash				Discount	Cash
2009			Rs.	Rs.	2009			Rs.	Rs.
Jan 1	To Capital A/c			1,00,000	Jan 3	By Bank A/c			90,000
" 7	To Sales A/c			6,000	" 5	By Purchase A/c			8,000
" 9	To Mohan's A/c		1,100	10,000	" 12	By Purchases A/c			3,000
" 17	To Hemant's A/c		750	8,000	" 15	By Ramesh's A/c		1,700	10,800
" 21	To Commission A/c			3,750	" 18	By Pankaj's A/c		800	8,200
					" 20	By Travelling Exp. A/c			2,500
					" 24	By Electricity and Water Exp. A/c			700
					" 26	By Cartage A/c			100
					" 28	By Postage & Telagram Exp. A/c			80
					" 30	By Wages A/c			1,200
					" 31	By Salaries A/c			2,000
					" 31	By Balance c/d			1,170
			1,850	1,27,750				2,500	1,27,750

उदाहरण (Illustration) – 6.

निम्नलिखित व्यवहारों की तीन खानों वाली रोकड़ बही में लिखिये। (Enter the following transactions in three column cash book) :

2009		Rs.
April 1	हस्तगत रोकड़ (Balance in hand)	1,250

2009		Rs.
"	बैंक अधिविकर्ष (Bank Overdraft)	15,000
"3	रोकड़ विक्रय (Cash Sales)	8,000
"4	मुकेश से 11,500 रु. के पूर्ण भुगतान में प्राप्त (Received from Mukesh in full settlement of Rs. 11,500)	11,000
"7	सोफा खरीदा व चैक से चुकाये। (Purchase sofa set and paid by cheque)	6,800
"9	बैंक में रोकड़ जमा करवाये (Cash deposited in to bank)	15,000
" 10	रोकड़ खरीदा (Cash purchases)	5,000
" 12	माल बेचा व चैक से भुगतान प्राप्त (Goods sold and payment received by cheque)	9,800
" 14	सुनील को चैक से चुकाये तथा बट्टा प्राप्त 500 रु. (Paid to Sunil by cheque and discount received Rs. 500)	5,800
" 15	कार्यालय प्रयोग हेतु बैंक से निकाले (Withdrew from bank for office use)	1,000
" 17	रोकड़ विक्रय (Cash Sales)	7,250
" 18	राम से माल खरीदा 13,000 रु., तथा 5 प्रतिशत बट्टा काटकर चैक से भुगतान किया। (Purchased goods from Ram Rs. 13,000 and paid by cheque after deducting 5% discount)	
" 19	बैंक में चैक जमा करवाया। (Cheques deposited in to bank)	
" 20	बिजली व टेलीफोन के बिल चैक से चुकाये (Electricity and Telephone bills paid by cheque)	3,400
" 21	बीमा प्रीमियम चैक से चुकाया (Paid for insurance premium by cheque)	1,200
" 23	व्यक्तिगत प्रयोग हेतु बैंक से निकाले (Withdrew from bank for personal use)	4,000
" 24	रमेश से चैक प्राप्त हुआ (Received a cheque from Ramesh)	15,000
" 27	संजय से रोकड़ प्राप्त व बट्टा दिया 150 रु. (Received cash from Sanjay and discount allowed Rs. 150)	780
" 28	रमेश का चैक बैंक में जमा करवाया (Ramesh cheque deposited in to bank)	
" 29	किराये का चैक से भुगतान किया (Rent paid by cheque)	2,000
" 30	वेतन चुकाया (Salaries paid)	7,200
30	रमेश का चैक अप्रतिष्ठित हुआ तथा बैंक ने लौटाय। (Ramesh cheque dishonoured and returned by bank)	

टिप्पणी

हल (Solution) :

Dr. Three Column Cash Book Cr.

Date	Particulars	L.F	Amount			Date	Particulars	L.F	Amount		
			Dis.	Cash	Bank				Dis.	Cash	Bank
2009			Rs.		Rs.	2009			Rs.		Rs.
1.4	To Balance b/d		—	1,250	—	1.4	By balance b/d		—	—	15,000
3.4	To Sales A/c		—	8,000	—	7.4	By Furniture A/c		—	—	6,800
4.4	To Mukesh's A/c		500	11,000	—	9.4	By Bank A/c	C		15,000	—
9.4	To Cash A/c	C	—	—	15,000	10.4	By Purchases A/c		—	5,000	—
12.4	To Sales A/c		—	9,800	—	14.4	By Sunil		500	—	5,800
15.4	To Bank A/c	C	—	1,000	—	15.4	By Cash A/c	C	—	—	1,000
17.4	To Sales A/c		—	7,250	—	18.4	By Purchases A/c		—	—	12,350
19.4	To Cash A/c	C	—	—	9,800	19.4	By Bank A/c	C	—	9,800	—
24.4	To Ramesh		—	15,000	—	20.4	By Electricity &				
27.4	To Sanjay		150	780	—		Telephone Exp. A/c		—	—	3,400
28.4	To Cash A/c	C	—	—	15,000	21.4	By Insurance Pre. A/c		—	—	1,200
30.4	To Balance c/d		—	—	26,750	23.4	By Drawings A/c		—	—	4,000
						28.4	By Bank A/c	C	—	15,000	—
						29.4	By Rent A/c		—	—	2,000
						30.4	By Salaries A/c		—	7,200	—
						30.4	By Ramesh		—	—	15,000
						30.4	By Balance c/d		—	2,080	—
			650	54,080	66,550				500	54,080	66,550

उदाहरण (Illustration) – 7

निम्नलिखित व्यवहारों को फुटकर रोकड़ बही में लिखिये -(Enter the following transactions in petty cash book) :

01.04.2009 को फुटकर रोकड़िये को फुटकर खर्चों के लिए 1,500 रु. दिये माह के अन्तर्गत फुटकर रोकडियें ने निम्नलिखित भुगतान किये - (On 01.04.2009 Rs. 1,500 were given to the petty cashier for petty expenses. The petty cashier made the following payments during the month) :

April 1 थेला भाड़ा 50 रु., चाय, कॉफी आदि 125 रु. तथा स्टेशनरी के 15 रु. (Cartage Rs. 50, Tea, Coffee etc. Rs. 125 and stationery Rs. 15)

3 डाक के 25 रु., स्टाम्प पेड के 10 रु., ठण्डा पेय के 112 रु. तथा मजदूरी के 25 रु. (Postage Rs. 25, Stamp pad Rs. 10, Cold drinks Rs. 112 and Wages 25)

6 टेक्सी भाड़ा 20 रु., लिफाफे 15 रु. तथा नमकीन व बिस्कीट 120 रु. (Taxi hire Rs. 20, Envelops Rs. 15 and namkeen & biscuits Rs. 120)

9 रेल भाड़ा 120 रु., कुली के व्यय 10 रु. तथा थेला भाड़ा 5 रु. (Railway freight Rs. 120, Coolie

charges Rs. 10 and Thela hire Rs. 5)

15 थेला भाड़ा 15 रु., रबड़ की मोहरें खरीदी 25 रु. तथा फिनाईल के 28 रु. (Thela charges Rs. 15, purchase rubber stamp Rs. 25 and Phenyle Rs. 28)

20 झाड़ू 12 रु., पोचा 20 रु. तथा मिठाई 250 रु. (Zadu Rs. 12, Pocha Rs. 20 and Sweets Rs. 250)

26 पेंसिल व रबड़ 128 रु., फोटो प्रति 7 रु. तथा पानी का बिल चुकाया 54 रु. (Pencils & erasors Rs. 128, Photo copies Rs. 7 and Water bill paid Rs. 54)

30 थेला भाड़ा 20 रु., पेट्रोल 56 रु. तथा कागज की रिम 100 रु. (Thela hire Rs. 20, Petrol Rs. 56 and Paper rim Rs. 100)

हल (Solution) :

Pettty Cash Book

Receipts	Date	Particulars	Voucher No.	Total Amount	Wages	Carriage & Cartage	Printing & Stationery	Postage & Telegram	Refres-hment	Misc. Exp.
Rs.	2009		Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
1,500	1.4	To Cash A/c								
	"	By Cartage A/c	4/1	50	—	50	—	—	—	—
	"	By Refreshment A/c	4/2	125	—	—	—	—	125	—
	"	By Stationery A/c	4/3	15	—	—	15	—	—	—
	3.4	By Postage A/c	4/4	25	—	—	—	25	—	—
	"	By Misc. Exp. A/c	4/5	10	—	—	—	—	—	10
	"	By Refreshment	4/6	112	—	—	—	—	112	—
	"	By Wages A/c	4/7	25	25	—	—	—	—	—
	6.4	By Misc. Exp.	4/8	20	—	—	—	—	—	20
	"	By Stationery A/c	4/9	15	—	—	15	—	—	—
	"	By Refreshment	4/10	120	—	—	—	—	120	—
	9.4	By Carriage A/c	4/11	120	—	120	—	—	—	—
	"	By Wages A/c	4/12	10	10	—	—	—	—	—
	"	By Cartage	4/13	5	—	5	—	—	—	—
	15.4	By Cartage	4/14	15	—	15	—	—	—	—
	"	By Misc. Exp.	4/15	25	—	—	—	—	—	25
	"	By Misc. Exp.	4/16	28	—	—	—	—	—	28
	20.4	By Misc. Exp.	4/17	12	—	—	—	—	—	12
	"	By Misc. Exp.	4/18	20	—	—	—	—	—	20
	"	By Refreshment	4/19	250	—	—	—	—	250	—
	26.4	By Stationery	4/20	128	—	—	128	—	—	—
	"	By Printing	4/21	7	—	—	7	—	—	—
	"	By Misc. Exp.	4/22	54	—	—	—	—	—	54
	30.4	By Cartage	4/23	20	—	20	—	—	—	—
	"	By Misc. Exp.	4/24	56	—	—	—	—	—	56
	"	By Stationery	4/25	100	—	—	100	—	—	—
	"	By Balance c/d		133	—	—	—	—	—	—
1,500				1,500	35	210	265	25	607	225
133	1.5	To Balance b/d								
1,367	1.5	To Cash A/c								

टिप्पणी

उदाहरण (Illustration) – 8.

शिव ऐजेन्सीज बालोतरा के निम्नलिखित व्यवहारों से क्रय बही, विक्रय बही, क्रय वापसी बही, विक्रय वापसी बही रोकड़ बही तथा मुख्य जर्नल बनाईये – (Prepare Purchase Book, Sales Book, Purchase Return Book, Sales Return Book and Journal proper from the following transactions of M/s Shiv Agencies of Balotra) :

2009

Apr il 1 अक्षय एण्ड सन्स से खरीदा : 1000 मीटर लट्ठा दर 20 रु. प्रति मीटर, 200 मीटर सिल्क दर 100 रु. प्रति मीटर / बिल नम्बर 10125 (Purchased from Akshay & Sons : 1000 meters lattha cloth @ Rs. 20 per meter, 200 meters Silk @ Rs. 100 per meter vide invoice no. 10125)

3 राकेश वस्त्र भण्डार से 45000 रु. पूर्ण भुगतान में प्राप्त। (Cash received from Rakesh Vashtra Bhandar in full settlement Rs. 45,000)

4 राकेश वस्त्र भण्डार को बेचा : 200 मीटर सर्टिंग दर 100 रु. प्रति मीटर, 160 मीटर सूटिंग दर 200 रु. प्रति मीटर। व्यापारिक बट्टा 10 प्रतिशत बिल नम्बर 100620 (Sold to Rakesh Vashtra Bhandar : 200 meters shirting @ Rs. 100 per meter, 160 meters suiting @ Rs. 200 per meter, Trade discount 10% vide Bill No. 100620).

6 कोहिनूर स्टील कम्पनी से 5000 रु. में आलमारी खरीदी (Almiragh purchased from Kohinoor Steel Company Rs. 5,000)

7 कमीशन चुकाया 2000 रु., किराया चुकाया 5000 रु. (Commission paid Rs. 2,000 and Rent paid Rs. 5,000)

8 ऋषभ वस्त्र भण्डार से खरीदा : 100 थान पोपलीन (एक थान में 50 मीटर) दर 25 रु. प्रति मीटर, 200 मीटर शर्टिंग दर 200 रु. प्रति मीटर। व्यापारिक बट्टा 5 प्रतिशत बिल नम्बर 16421 (Purchased from Rishib Vashtra Bhandar : 100 than Poplin @ Rs. 25 per meter @ 50 meter in each than, 200 meter shirting @ Rs. 200 per meter, Trade discount 5% vide invoice no. 16421).

10 1200 रु. का घटिया माल लौटाने के बदले राजू साड़िज से जमा का पत्रक संख्या 1201 प्राप्त हुआ। (Received credit note no. 1201 from Raju sarees due to return of inferior goods Rs. 1,200).

11 किशोर एण्ड कम्पनी से 10000 रु. अग्रिम प्राप्त हुए। (Received from Kishore and Company Rs. 10,000 in advance)

11 निजी प्रयोग के लिए 1800 रु. का माल निकाला। (Goods withdrawn for personal use Rs. 1,800)

13 खर्चे चुकाये 2000 रु. तथा अक्षय को चुकाये 40000 रु. (Expenses paid Rs. 2,000 and paid to Akshay Rs. 40,000)

2009

14 कपिल क्लोथ स्टोर को बेचा : 200 चद्दरें दर 300 रु. प्रति चद्दर, 120 दर्जन रूमाल दर 20 रु. प्रति रूमाल। व्यापारिक बट्टा 10 प्रतिशत, पैकिंग खर्च 30 रु. तथा भाड़ा 40 रु. बिल नम्बर 109312 (Sold to Kapil cloth stores : 200 Bed sheets @ Rs. 300 per bed sheet, 120 dozens Napkin @ Rs. 20 per napkin, Trade discount 10%, packing charges Rs. 30 and freight Rs. 40 vide Bill No. 109312)

15 रोकड़ विक्रय 58,000 रु. (Cash Sales Rs. 58,000)

18 कल्पना साड़ीज सूरत में खरीदा - 300 पोलिस्टर की साडियां दर 150 रु. प्रति साड़ी, दलाली 2 प्रतिशत, भाड़ा 190 रु., पैकिंग व्यय 500 रु. तथा व्यापारिक बट्टा 10 प्रतिशत (Purchased from Kalpana Sarees, Surat : 300 Polyster Sarees @ Rs. 150 each, Brokerage 2%, Freight Rs. 190 packing charges 500 and trade discount 10%.)

Apr
il 22 किशोर एण्ड कम्पनी पोकरण को बेचा - 100 पोलिस्टर की साड़िया दर 180 रु. प्रति साड़ी बिक्री कर 10 प्रतिशत व्यापारिक बट्टा 5 प्रतिशत (Sold to Kishore & Company Pokaran : 100 Polyster Sarees @ Rs. 180 each, Sales tax 10%, Trade discount 5%).

23 कल्पना साड़ीज को चुकाया 40,000 रु. तथा बट्टा प्राप्त 650 रु.। (Paid to Kalpana Sarees Rs. 40,000 and discount received Rs. 650).

24 आनन्द मिल्स से खरीदा - 500 साड़ियां दर 200 रु. प्रति साड़ी व्यापारिक बट्टा 5 प्रतिशत इसमें से सुभद्रा साड़ीज फलौदी को 200 साड़ियां 25 प्रतिशत लाभ जोड़कर बेची। व्यापारिक बट्टा 10 प्रतिशत, धर्मादा 100 रु., बिक्री कर 10 प्रतिशत बिल नम्बर 18112 तथा 110991. (Purchased from Anand Mills 500 Sarees @ Rs. 200 per Saree at 5% trade discount and out of it he sold to Subhadra Sarees Phalodi, 200 Sarees by adding 25% profit on it at 10% trade discount, Charity Rs. 100 and Sales tax 10% vide bill no. 18112 & 110991).

25 कपिल क्लोथ स्टोर ने 10 चादरें लौटायी। (Goods returned by Kapil cloth stores : 10 Bed sheets).

25 रोकड़ विक्रय 1,20,000 रु. तथा थेला भाड़ा चुकाया 3,000 रु. (Cash sales Rs. 1,20,000 and cartage paid Rs. 3,000).

27 राम किशोर दिवालिया हो गया और उससे 1,200 रु. ही प्राप्त हो सके। (Ram Kishore became insolvant and could not receive Rs. 1,200 from him).

27 1,00,000 रु. ऋषभ वस्त्र भण्डार को चुकाये। (Paid to Rishabh Vashtra Bhandar Rs. 1,00,000).

28 क्षतिग्रस्त 8 साड़ियां लौटाने के कारण आनन्द मिल्स से जमा पत्रक संख्या 1021 प्राप्त हुआ। (Received credit Note No. 1021 from Anand Mills due to return of 8 defective sarees).

28 किशोर एण्ड कम्पनी से पूर्ण भुगतान में 7,000 रु. प्राप्त हुए। (Received from Kishore & Company Rs.

2009

7,000 in full settlement).

29 सुभद्रा साड़ीज फलौदी ने 10 साड़िया लौटायी। (Subhadra Sarees Phalodi returned 10 Sarees).

29 कपिल क्लोथ स्टोर्स से पूर्ण भुगतान में 75,000 रु. प्राप्त हुए। (Received from Kapil cloth stroes Rs. 75,000 in full settlement).

30 मोतीलाल एण्ड कम्पनी को माल बेचा : 500 मीटर वेलवेट दर 250 रु. प्रति मीटर, 300 मीटर गारडन दर 100 रु. प्रति मीटर। व्यापारिक बट्टा 10 प्रतिशत, भाड़ा 300 रु., दलाली 2 प्रतिशत, धर्मादा 200 रु. तथा बिक्री कर 10 प्रतिशत बिल नम्बर 121011 (Goods sold to Moti Lal & Company : 500 meters valvet @ Rs. 250 per meter, 300 meters garden @ Rs. 100 per meter, Trade discount 10%, freight Rs. 300, Brokerage 2%, Charity Rs. 200 and Sales tax 10% vide Bill No. 121011)

30 1,000 रु. का माल दान में दिया। (Goods given as charity Rs. 1,000)

30 वेतन चुकाया 10,000 रु. तथा बिक्री कर चुकाया 19,035 रु. (Salaries paid Rs. 10,000 and sales tax paid Rs. 19,035)

30 एक पुरानी कार यश को बेची 50,000 रु. (An old car sold to Yash Rs. 50,000)

30 डाक तार व्यय चुकाये 650 रु. (Postage charges paid Rs. 650)

30 बिल की जोड़ 1,000 रु. से अधिक लग जाने के कारण अनुपम साड़ीज से जमा की चिट्ठी प्राप्त हुई। (Credit note received from Anupam Sarees due to overcast of invoice Rs. 1,000)

2009

Apr ऋषभ वस्त्र भण्डार को पूर्ण भुगतान में चुकाये 55,000 रु. (Paid to Rishabh Vashtra
il 30 Bhandar in full settlement Rs. 55,000)

30 कल्पना साड़ीज को 10 क्षतिग्रस्त पोलिस्टर की साड़िया लौटाई (Return 10 defective polyster sarees to Kalpana Sarees)

30 यात्रा व्यय के चुकाये 6,400 रु. (Traveling Expenses paid Rs. 6,400)

30 मोती लाल एण्ड कम्पनी ने 50 मीटर क्षतिग्रस्त गार्डन तथा 20 मीटर वेलवेट लौटाया। (Moti Lal & Co. returned 50 meters defective garden and 20 meter valvet)

30 1,680 रु. का माल चुरा लिया गया। (Goods stolen worth Rs. 1,680)

हल (Solution) :

Sales Book

Date	Particulars	L.F.	Invoice No.	Amount					
				Details	Sales	Sales Tax	Exp.	Charity	Total
				Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
2009 April 4	**Rakesh Vashtra Bhandar :**		100620						
	200 meter Shirting @ Rs. 100 per meter			20,000					
	160 meters Suiting @ Rs. 200 per meter			32,000					
				52,000					
	Less : Trade discount 10%			5,200	46,800	—	—	—	46,800
14	**Kapil Cloth Stores :**		109312						
	200 Bed sheets @ Rs. 300 per bed sheet			60,000					
	1440 Napkin @ Rs. 20 per napkin			28,800					
				88,800					
	Less : Trade discount 10%			—8,880	79,920				
	Packing Charges			30					
	Freight			40			70		79,990
22	**Kishore & Co.; Pokaran :**								
	100 Polyster Sarees @ Rs. 180 each			18,000					
	Less : Trade discount 5%			900	17,100				
	Sales Tax 10%					1,710			18,810
24	**Subhadra Sarees, Phalodi :**		110991						
	200 Sarees @ Rs. 250 per saree			50,000					

टिप्पणी

	Less : Trade discount 10%			5,000	45,000				
	Sales Tax 10%					4,500		100	49,600
	Charity								
30	**Moti Lal & Company :**		121011						
	500 Meters Valvet @ Rs. 250 per meter			1,25,000					
	300 meters Garden @ Rs. 100 per meter			30,000					
				1,55,000					
	Less : Trade discount 10%			15,500	1,39,500				
	Sales Tax 10%					13,950			
	Freight			300					
	Brokerage 2%			2,790			3,090		
	Charity							200	1,56,740
	Total				3,28320	20,160	3,160	300	3,51,940

Purchase Book

Date	Particulars	L.F.	Invoice No.	Amount Details	Amount Total
2009				Rs.	Rs.
April 1	**Akshay & Sons :**				
	1000 meters Lattha @ Rs. 20 per meter		10125	20,000	
	200 meters Silk @ Rs. 100 per meter			20,000	40,000
8	**Rishibh Vashtra Bhandar :**				
	5000 meters Poplin @ Rs. 25 per meter		16421	1,25,000	
	200 meters Shirting @ Rs. 200 per meter			40,000	
				1,65,000	
	Less : Trade discount 5%			8,250	1,56,750

Date	Particulars		L.F.	Invoice No.	Amount	
					Details	Total
2009					Rs.	Rs.
18	**Kalpana Sarees, Surat :**					
	300 Polyster Sarees @ Rs. 150 each				45,000	
	Less : Trade discount				4,500	
					40,500	
	Add : Brakerage 2%	810				
	Freight	190				
	Packing charges	500			1,500	42,000
24	**Anand Mills :**					
	500 Sarees @ Rs. 200 each			18112	1,00,000	
	Less : Trade discount 5%				5,000	95,000
30	**Purchase A/c**	Dr.				3,33,750

Purchase Return Book

Date	Particulars		L.F.	Dr./Cr. Note No.	Amount	
					Details	Total
					Rs.	Rs.
2009						
April 10	**Raju Saries :**			Cr. Note		1,200
	Inferior goods returned			No. 1201		
" 28	**Anand Mills :**			Cr. Note		
	8 Saries @ Rs. 200 each			No. 1021	1,600	
	Less : Trade discount 5%				80	1,520
" 30	**Kalpana Sarees :**					
	10 Polyster sarees @ Rs. 150 each				1,500	
	Less : Trade discount 10%				150	1,350
"30	**Purchase Return A/c**	Cr.				4,070

Sales Return Book

Date	Particulars	L.F.	Dr./Cr. Note No.	Amount	
				Details	Total
2009				Rs.	Rs.
April 25	**Kapil Cloth Stroes :**				
	10 Bed sheets @ Rs. 300 each			3,000	
	Less : Trade discount 10%			300	2,700
" 29	**Subhadra Sarees :**				
	10 sarees @ Rs. 250 each			2,500	
	Less : Trade discount @ 10%			250	
				2,250	
	Add : Sales Tax @ 10%			225	2,475
" 30	**Moti Lal & Company :**				
	20 meters Valvet @ Rs. 250 per meter			5,000	
	50 meters Garden @ Rs. 100 per meter			5,000	
				10,000	
	Less : Trade discount 10%			1,000	
				9,000	
	Add : Sales Tax 10%			900	9,900
" 30	**Sales Return A/c** Dr.				13,950
	Sales Tax A/c Dr.				1,125

Journal Proper

Date	Particulars	L.F.	Amount (Rs.)	
2009				
April 6	Furniture A/c Dr.		5,000	
	To Kohinoor Steel Company			5,000
	(Being Almiragh purchased)			
" 7	Discount A/c Dr.		1,800	

Date	Particulars		L.F.	Amount (Rs.)	
2009					
	To Rakesh A/c				1,800
	(Being discount allowed to Rakesh)				
" 11	Drawings A/c	Dr.		1,800	
	To Purchases A/c				1,800
	(Being goods withdraw for personal use)				
" 23	Kalpana Sarees A/c	Dr.		650	
	To Discount A/c				650
	(Being discount received from Kalpana Sarees)				
" 27	Bad Debts A/c	Dr.		1,200	
	To Ram Kishore				1,200
	(Being Ram Kishore became insolvant)				
" 28	Discount A/c	Dr.		1,810	
	To Kishore & Co				1,810
	(Being discount allowed to Kishore & Co.)				
" 29	Discount A/c	Dr.		2,290	
	To Kapil cloth stores				2,290
	(Being discount allowed to Kapil cloth stores)				
" 30	Rishabh Vashtra Bhandar	Dr.		1,750	
	To Discount A/c				1,750
	(Being discount received from Rishabh Vashtra Bhandar)				
" 30	Charity A/c	Dr.		1,000	
	To Purchase A/c				1,000
	(Being goods given as charity)				
" 30	Yash	Dr.		50,000	
	To Car A/c				50,000
	(Being old car sold to Yash)				
" 30	Anupam Sarees	Dr.		1,000	
	To Purchases A/c				1,000
	(Being credit note received for over casting of invoice)				
" 30	Loss by theft A/c	Dr.		1,680	
	To Purchase A/c				1,680

टिप्पणी

टिप्पणी

Date	Particulars	L.F.	Amount (Rs.)	
2009	(Being goods stolen)			
	Total		69,980	69,980

Dr. Cash Book Cr.

Date	Particulars	L.F.	Amount Rs.	Date	Particulars	L.F.	Amount Rs.
2009				2009			
3.4	To Rakesh Vashtra Bhandar		45,000	7.4	By Commission A/c		2,000
11.4	To Kishore & Co.		10,000	7.4	By Rent A/c		5,000
15.4	To Sales A/c		58,000	13.4	By Expenses A/c		2,000
25.4	To Sales A/c		1,20,000	13.4	By Akshay		40,000
28.4	To Kishore & Co,		7,000	23.4	By Kalpana Sarees		40,000
29.4	To Kapil cloth stores		75,000	25.4	By Cartage A/c		3,000
				27.4	By Rishabh Vashtra Bhandar		1,00,000
				30.4	By Salaries A/c		10,000
				"	By Sales Tax A/c		19,035
				"	By Postage charges A/c		650
				"	By Rishabh Vashtra Bhandar		55,000
				"	By Travelling Exp. A/c		6,400
				"	By Balance c/d		31,915
			3,15,000				3,15,000

2.2 तलपट का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition of Trial Balance)

व्यापार में होने वाले समस्त व्यवहारों को सर्वप्रथम बहियों में लिखा जाता है। लेखन कार्य के पश्चात् उन व्यवहारों की खाता बही में खतौनी की जाती हैं। व्यवहारों का लेखांकन, उनकी खतौनी, खातों के योग लगाने तथा शेष निकालने में कोई गणितीय अशुद्धि न रह जाय, इस बात की पुष्टि करने के लिए जो तालिका या सूची बनाई जाती है उसे तलपट कहते हैं। यदि तलपट के नाम तथा जमा पक्ष के योग बराबर आ जाते हैं तो व्यापारी इतना आश्वस्त हो सकता है कि उसकी बहियों में किसी तरह की गणितीय अशुद्धि नहीं रही है, अर्थात् जितनी राशि नाम पक्ष में लिखी गई है उतनी ही जमा पक्ष में भी लिखी जा चुकी है। तलपट का मिल जाना इस बात का द्योतक नहीं है कि प्रारम्भिक बहियों तथा खाताबही में कहीं भी अशुद्धियाँ नहीं हैं।

''एक निश्चित तिथि को प्रत्येक व्यवहार का दोहरा लेखा हो जाता है तब उनके शेषों की सूची बनायी जाती है। इसी सूची को तलपट कहा जाता है।''

स्पाइसर एण्ड पैगलर

तलपट का प्रारूप (Form of Trial Balance) :

Trial Balance of ....

As on ....

Sl.No.	Name of Ledger Accounts	L.F.	Amount (In Rs.)	
			Debit	Credit

2.2.1 खातों की पहचान करके तलपट बनाना :

यदि प्रश्न में खातों के शेषों के बारे में जानकारी न दी हो कि उनके नाम के शेष है या जमा के शेष, तो उनसे तलपट बनाते समय खातों की प्रकृति के आधार पर उन्हें नाम या जमा की तरफ लिखा जाता है। विभिन्न प्रकार के खातों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जाता है -

1. व्यक्तिगत खाते, 2. वास्तविक खाते, 3. अवास्तविक खाते।

इनके शेषों के बारे में जानकारी प्राप्त करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखेंगे -

१. **व्यक्तिगत खाते :** कुछ व्यक्तिगत खातों के नाम शेष होते है तथा कुछ के जमा के शेष होते है। जमा के शेष वाले खातों में पूँजी खाता, प्राप्त ऋण खाता, लेनदार खाते, बैंक अधिविकर्ष खाता तथा सम्पति की पूर्तिकर्त्ताओं के खातों को शामिल किया जाता है। नाम के शेष वाले खातों में देनदारों के खाते, देय ऋण खाता, बैंक खाता, आहरण खाता आदि को शामिल किया जाता है।

टिप्पणी

२. **वास्तविक खाते :** इनमें सम्पतियों से सम्बन्धित खातों के 'नाम' के शेष होते है जैसे भवन, मशीनरी, फर्नीचर, विनियोग, प्रारम्भिक रहतिया, एकस्व, व्यापारिक चिन्ह एवं ख्याति इत्यादि। इसी प्रकार माल से सम्बन्धित खातों में विक्रय वापसी खाते तथा क्रय खाते का 'नाम' शेष होता है। माल से सम्बन्धित खातों में क्रय वापसी खाते का 'जमा' का शेष होता है।

३. **अवास्तविक खाते :** इन खातों के 'जमा' एवं 'नाम' दोनों प्रकार के शेष होते हैं। खातों की प्रकृति के अनुसार उन्हें, 'नाम' तथा 'जमा' के खाने में लिखा जाता है। जैसे - मजदूरी, वेतन, चुंगी, भाड़ा, किराया, छपाई, टेलीफोन व्यय, डाक तार व्यय आदि के 'नाम' शेष होते है। इसी प्रकार किराया प्राप्त, कमीशन प्राप्त, बट्टा प्राप्त, ब्याज प्राप्त, लाभांश प्राप्त, विक्रय आदि खातों के 'जमा' के शेष होते हैं अर्थात् व्यय खातों तथा हानियों के खातों के 'नाम' शेष तथा आय तथा लाभ के खातों के 'जमा' के शेष होते हैं। यदि प्रश्न में किसी खाते के नाम के आगे 'जमा' या 'नाम' लिखा हो तो उन्हें तलपट में उसी के अनुसार दर्शाया जाता है।

नोट :– विक्रय के शेष को अवास्तविक खातों में शामिल किया गया है क्योंकि जब तक माल नहीं बिकता वह रहतिये का हिस्सा होने से वास्तविक खाता होता है परन्तु उसके विक्रय हो जाने पर उसमें लाभ या हानि का हिस्सा शामिल हो जाता है और संस्था की आगम का हिस्सा बन जाता है।

2.2.2 तलपट का मिलान खाताबही की शुद्धता का प्रमाण नहीं :

तलपट का मिलान इस बात को स्पष्ट करता है कि लेखों में किसी तरह की गणितीय अशुद्धि नहीं है। जितनी राशि से व्यवहारों को 'नाम' किया गया है उतनी ही राशि से 'जमा' भी किया गया है। तलपट का मिलान इस बात को सिद्ध नहीं करता कि अब लेखों में किसी भी प्रकार की अशुद्धि नहीं है। ऐसी कई तरह की अशुद्धियाँ हैं जो तलपट के मिल जाने के उपरान्त भी लेखों में रह जाती है। यदि लेखे शुद्ध नहीं है तो उनसे बनने वाले अन्तिम खाते शुद्ध नहीं हो सकते। अतः लाभ हानि खाता सही व उचित लाभ की स्थिति तथा चिट्ठा व्यापार की सही आर्थिक स्थिति को प्रदर्शित नहीं कर सकता है। भूल की अशुद्धि, सिद्धान्त की अशुद्धि, क्षतिपूरक अशुद्धि तथा कुछ हिसाब की अशुद्धियाँ तलपट के मिलान को प्रभावित नहीं करती है।

उपरोक्त अशुद्धियों का पता लगाना अत्यन्त कठिन कार्य है। यह कार्य वही व्यक्ति कर सकता है जो लेखा कार्य में दक्ष हो। सामान्यतया ऐसी अशुद्धियाँ अंकेक्षण कार्य के दौरान पकड़ी जा सकती हैं। यदि अन्तिम खाते बनाने से पहले ऐसी अशुद्धियों का पता लग जाय तो उन्हें तुरन्त सही किया जा सकता है परन्तु विपरीत परिस्थिति में इनका सुधार तो आने वाली लेखा अवधि में सुधार प्रविष्टियों (Rectification Entries) द्वारा ही किया जाता है।

2.2.3 तलपट के मिलान को प्रभावित करने वाली अषुद्धियाँ

ऐसी अशुद्धियाँ जो सहायक बहियों का योग लगाने में हो, सहायक बहियों से खाता बही में गलत राशि से खतौनी करने के कारण हो, खातों का योग करने में हो, खातों का शेष निकालने में हो या खाताबही से खातों को तलपट में लिखते समय हो तो इनसे तलपट का मिलान नहीं होता है। ऐसी अशुद्धियों के कारण व्यवहार का पूर्ण रूप से दोहरा लेखा नहीं होता है और यदि दोहरा लेखा हो गया हो तो वह समान राशि से न होने के कारण तलपट मेल नहीं खा सकता है।

2.2.4 उचंती खाता (Suspense Account) :

यदि काफी प्रयत्न करने पर भी तलपट न मिल रहा हो और व्यापारी द्वारा किन्हीं कारणों से अन्तिम खातों का बनाया जाना आवश्यक हो तो अन्तर की राशि जिस खाते में हस्तान्तरित करके तलपट मिलाया जाता है, उसे उचंती खाता कहते है। यदि तलपट के 'नाम' पक्ष का योग 'जमा' पक्ष के योग से अधिक है तो अन्तर की राशि 'जमा' पक्ष में लिखकर तलपट मिला दिया जाता है। इसी प्रकार यदि 'जमा' का का योग 'नाम' पक्ष के योग से अधिक है तो अन्तर की राशि 'नाम' पक्ष में लिखकर तलपट मिला दिया जाता है।

यह खाता अल्पकाल के लिए अन्तिम खाते बनाने के उद्‌देश्य से खोला जाता है। अगले वर्ष में अशुद्धियों का सुधार हो जाने के पश्चात् यह खाता स्वतः बन्द हो जाता है। इस खाते का 'नाम' का शेष होने पर इसे चिट्‌ठे के सम्पत्ति पक्ष में दर्शाया जाता है और 'जमा' का शेष होने पर इसे चिट्‌ठे के दायित्व पक्ष में दर्शाया जाता है।

उदाहरण (Illustration) – 9.

निम्नलिखित सूचनाओं से तलपट बनाइये। (Prepare trial balance from the following information) :

Name of account	Rs.	Name of account	Rs.
Capital A/c	5,00,000	Debtors A/c	2,20,000
Drawings A/c	1,00,000	B/P A/c	35,000
Purchases A/c	12,00,000	B/R A/c	1,65,000
Sales A/c	15,48,000	Machinery A/c	2,25,000
Purchases Return A/c	60,000	Patents A/c	40,000
Sales Return A/c	85,000	Live Stock A/c	28,000
Loan received A/c	1,00,000	Opening Stock A/c	1,05,000
Bank overdraft A/c	1,50,000	Land & Building A/c	2,00,000
Bank A/c	20,000	Cash A/c	1,000
Creditors A/c	1,60,000	Charity A/c	500
Wages A/c	1,50,000	Loss by fire A/c	5,500
Rent Received A/c	30,000	Profit on sale of investments A/c	60,000
Discount A/c Dr.	40,000	Depreciation A/c	40,000
		Salaries A/c	25,000
		Bad debts A/c	5,000
		Commission A/c 'Credit'	12,000

टिप्पणी

हल (Solution) :

Trial Balance as on ....

Sl. No.	Name of Ledger Account	L.F.	Amount (Rs.)	
			Debit	Credit
1.	Capital A/c		–	5,00,000
2.	Drawing A/c		1,00,000	–
3.	Purchases A/c		12,00,000	–
4.	Sales A/c		–	15,48,000
5.	Purchases Return Ac		–	60,000
6.	Sales Return A/c		85,000	–
7.	Loan Received A/c		–	1,00,000
8.	Bank overdraft A/c		–	1,50,000
9.	Creditors A/c		–	1,60,000
10.	Wages A/c		1,50,000	–
Sl. No.	Name of Ledger Account	L.F.	Amount (Rs.)	
			Debit	Credit
11.	Rent Received A/c		–	30,000
12.	Discount A/c (Dr.)		40,000	–
13.	Bank A/c		20,000	–
14.	Debtors A/c		2,20,000	–
15.	Bills Payable A/c		–	35,000
16.	Bills Receivable A/c		1,65,000	–
17.	Machinery A/c		2,25,000	–
18.	Patents A/c		40,000	–
19.	Live Stock A/c		28,000	–
20.	Opening Stock A/c		1,05,000	–
21.	Land & Building A/c		2,00,000	–
22.	Cash A/c		1,000	–
23.	Charity A/c		500	–
24.	Loss by Fire A/c		5,500	–
25.	Profit on sale of Investments A/c		–	60,000
26.	Depreciation A/c		40,000	–
27.	Salaries A/c		25,000	–
28.	Bad debts A/c		5,000	–
29.	Commission A/c		–	12,000
	Total		26,55,000	26,55,000

उदाहरण (Illustration) – 10.

अनुभवहीन लेखाकार द्वारा बनाये गये निम्नलिखित तलपट को सही कीजिये। (Correct the following Trial Balance prepared by an inexperienced accountant).

Sl. No.	Name of Ledger Account	L.F.	Amount (Rs.)	
			Debit	Credit
			Rs.	Rs.
1.	Purchases A/c		2,50,000	–
2.	Sales A/c		–	2,00,000
3.	Capital A/c		2,00,000	–
4.	Bad debts A/c		–	25,000
5.	Commission Received A/c		25,000	–
6.	Bank Loan A/c		–	1,00,000
7.	Fixed Investments A/c		–	1,00,000
8.	Bills payable A/c		50,000	–
9.	Opening Stock A/c		–	75,000
10.	Other expenses A/c		–	75,000
11.	Debtors & Creditors A/c		2,25,000	1,75,000
			7,50,000	7,50,000

Solution :

Trial Balance as on .....

Sl. No.	Name of Ledger Account	L.F.	Amount (Rs.)	
			Debit	Credit
			Rs.	Rs.
1.	Purchases A/c		2,50,000	–
2.	Sales A/c		–	2,00,000
3.	Capital A/c		–	2,00,000
4.	Bad debts A/c		25,000	–
5.	Commission Received A/c		–	25,000
6.	Bank Loan A/c		–	1,00,000
7.	Fixed Investments A/c		1,00,000	–
8.	Bills payable A/c		–	50,000
9.	Opening Stock A/c		75,000	–
10.	Other expenses A/c		75,000	–
11.	Debtors & Creditors A/c		2,25,000	1,75,000
	TOTAL		7,50,000	7,50,000

2.3 समयोजन एवं समायोजन प्रविष्टियों का अर्थ (Adjustments and Adjustment Entries)

तलपट बनाने के बाद अगला कदम अंतिम खाते बनाने का होता है। एक व्यापारी द्वारा लेखा वर्ष में अर्जित किया गया लाभ या उठाई गई हानि ज्ञात करने के लिए व्यापार एवं लाभ हानि खाता बनाया जाता है तथा व्यापार की आर्थिक स्थिति का पता लगाने के लिए चिट्ठा बनाया जाता है। यह कार्य तभी संभव है जबकि लेखा अवधि से सम्बंधित समस्त व्यवहार पुस्तकों में लेखांकित हो गये हो अन्यथा वर्ष के अन्त में समायोजन प्रविष्टियां करके इस कार्य को पूरा किया जाता है।

लेखांकित आय से सम्बंधित व्ययों एवम् हानियों तथा लेखांकित व्ययों एवम् हानियों से सम्बंधित आयों का पूर्णतः लेखांकन न हुआ हो तो उन्हे ज्ञात कर उनका लेखांकन करना ही समायोजन है। इससे न केवल लेखांकन की अवधारणों एवम् परम्पराओं का पालन होगा बल्कि व्यवसाय का लाभ-हानि खाता, व्यापार की सही एवम् उचित लाभ की स्थिति तथा चिट्ठा व्यापार की सही एवम् उचित आर्थिक स्थिति का प्रदर्शन कर सकेंगे। अतः लेखांकन की अवधारणों एवम् परम्पराओं को ध्यान में रखते हुए अंतिम खाते बनाने से पूर्व ज्ञात समायोजनों के लिए जो प्रविष्टियों की जाती है उन्हें समायोजन प्रविष्टियां कहते हैं।

2.3.1 प्रमुख समायोजन

प्रमुख समायोजन निम्नलिखित है :-

1. वर्ष के अन्त का रहतिया (Stock at the end of the year)
2. बकाया तथा उपार्जित व्यय (Outstanding and Accrued Expenses)
3. पूर्वदत्त व्यय (Prepaid Expenses)
4. उपार्जित आय तथा बकाया आय (Accrued Income and Outstanding Income)
5. अनुपार्जित आय (Unearned Income)
6. मूल्य ह्रास (Depreciation)
7. डूबत एवम संदिग्ध ऋणों के लिए आयोजन (Provision for Bad and Doubtful Debts)
8. देनदारों पर बट्टे के लिए आयोजन (Provision for Discount on Debtors)
9. लेनदारों पर बट्टे के लिए आयोजन (Provision for Discount on Creditors)
10. प्रबन्धकीय पारिश्रमिक (Managerial Remuneration)
11. पूंजी पर ब्याज (Interest on Capital)

12. आहरण पर ब्याज (Interest on Drawings)

13. माल की आग, चोरी या प्राकृतिक प्रकोप से हानि (Loss of Goods by Fire, Theft or Attack by Nature)

14. माल के विक्रय के अतिरिक्त अन्य उपयोग (Use of goods other than sales.)

1. वर्ष के अन्त में रहतिया (Stock at the end of the Year) : जो माल लेखा वर्ष के अन्त में व्यापार में (व्यापारी के गोदाम में) विद्यमान रहता है उसे वर्ष के अन्त का रहतिया कहते है। वर्ष के अन्तिम दिन व्यापार में विद्यमान रहतिया निम्नलिखित तीन रूपों में हो सकता है -

(1) कच्ची सामग्री (Raw Material) (2) अर्द्ध निर्मित माल (Semi Finished Goods)

(3) निर्मित माल (Finished Goods)

वर्ष के अन्त में विद्यमान रहतिये का लेखांकन (Accounting of Stock at the end of the year) दो तरह से किया जाता है -

(1) अंतिम खाते बनाने से पूर्व (2) अंतिम खाते बनाते समय।

(1) अंतिम खाते बनाने से पूर्व यदि लेखांकन किया जाय तो रहतिया क्रय में समायोजित हो जाता है और इसका नाम शेष चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में दिखाया जाता है। इस दशा में निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है -

Stock A/c Dr.

To Purchases A/c

(Being stock at the end adjusted)

(2) अंतिम खाते बनाते समय यदि इसका लेखांकन किया जाय तो इसे निर्माण या व्यापार खाते के जमा पक्ष में तथा चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में दिखाया जाता है। इसके लिए निम्नलिखित समायोजन प्रविष्टि की जाती है -

Stock A/c Dr.

To Manufacturing / Trading A/c

(Being stock at the end adjusted)

यदि वर्ष के अन्त का रहतिया कच्चे माल या अर्द्ध निर्मित माल का हो तो वह निर्माण खाते में जमा होगा। अगले वर्ष यह रहतिया निर्माण या व्यापारिक खाते के नाम पक्ष में हस्तांतरित कर दिया जाता है।

2. अदत्त तथा उपार्जित व्यय (Outstanding and Accrued Expenses) : ऐसे व्यय जिनका सम्बन्ध वर्तमान लेखा अवधि से होता है लेकिन इनका भुगतान इस लेखा अवधि में नहीं किया गया है तो ऐसे व्यय अदत्त तथा उपार्जित व्यय कहलाते हैं। लेखांकन की दृष्टि से ऐसे व्यय जो चालू लेखा अवधि से सम्बन्धित तो है

टिप्पणी

और उनका भुगतान इसी वर्ष में होना था और नहीं किया गया है तो वे व्यय बकाया व्यय कहलाते है। ऐसे व्यय जो चालू लेखा अवधि से सम्बन्धित तो है परन्तु उनका भुगतान अगली अवधि में ही देय होगा तो ऐसे व्ययों को उपार्जित (Accrued Expenses) कहते हैं। कुछ विद्वान ऐसा वर्गीकरण न कर दोनों को बकाया व्यय ही कहते हैं परन्तु ऐसा वर्गीकरण करके समझाना विद्यार्थियों के लिए हितकर है। इसकी प्रविष्टि निम्नलिखित होगी -

Respective Expenses A/c Dr.

To Outstanding / Accrued Expenses A/c

(Being expenses due)

3. पूर्वदत्त व्यय (Prepaid Expenses) : ऐसे व्यय जिनका सम्बन्ध आगामी लेखा अवधि से है परन्तु उनका भुगतान चालू लेखा अवधि में कर दिया जाता है तो ऐसे व्ययों के भुगतानों को पूर्वदत्त व्यय कहते हैं। इन व्ययों का लाभ भी आगामी अवधि में ही प्राप्त होगा इसलिए मिलान की अवधारणा का पालन करने के लिए अदत्त एवम् पूर्वदत्त व्ययों का समायोजन करना आवश्यक होता है। पूर्वदत्त व्ययों के लेखांकन के लिए निम्नलिखित समायोजन प्रविष्टि की जाती है -

Prepaid Respective Expenses A/c Dr.

To Respective Expenses A/c

(Being expenses paid in advance)

4. उपार्जित आय तथा बकाया आय (Accrued Income and Outstanding Income) : ऐसी आय जो वर्तमान लेखा अवधि से सम्बंधित है परन्तु न तो प्राप्त होनी देय हुई है और न प्राप्त हुई है उसे उपार्जित आय कहते हैं। बकाया आय वह आय होती है जो वर्तमान लेखा अवधि से सम्बन्धित होती है और प्राप्त होनी देय भी हो गई है परन्तु प्राप्त नहीं हुई है। उदाहरण के लिए एक व्यापारी ने 1,00,000 रु. के ऋणपत्र खरीद रखे है जिन पर 30 जून और 31 दिसम्बर को प्रति छः माही 12 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज मिलता है। व्यापारी की लेखा पुस्तकें 31 मार्च को बन्द होती है। व्यापारी को 31 दिसम्बर तक देय ब्याज 31 मार्च तक नहीं मिला। इस दशा में 31 दिसम्बर को देय ब्याज = 6,000 रु. (1,00,000 x 12/100 x 6/12) रु. अदत्त ब्याज है तथा 1 जनवरी से 31 मार्च तक का 3 माह का ब्याज = 2,000 रु.(1,00,000 x 12/100 x 3/12) रु. उपार्जित ब्याज है। इसके लिए प्रविष्टि निम्नलिखित होगी -

Accrued / Outstanding Income A/c Dr.

To Respective Income A/c

(Being income accrued / outstanding but not yet received)

5. अनुपार्जित आय (Unearned Income or Income received in Advance) : ऐसी आय जो आने वाली या भावी लेखा अवधि से सम्बंधित है और चालू लेखा अवधि में प्राप्त हो जाती है तो यह चालू लेखा अवधि की आय न होने से चालू लेखा अवधि के लिए अनुपार्जित आय या आय की अग्रिम प्राप्ति कहलाती है। इसके लेखांकन की निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है -

Respective Income A/c Dr.

To Unearned Income A/c

(Being income relating to next year received in advance)

6. मूल्य ह्रास (Depreciation) : स्थायी सम्पत्तियाँ व्यापार में प्रयोग करने के लिए खरीदी जाती है जो व्यवसाय के लार्भाजन में सहायक होती है और इन सम्पत्तियों के उपयोग करने से उनके जीवनकाल एवम् मूल्य दोनों में कमी होना स्वाभाविक है। इसके अलावा समय बीतने (व्यतीत होने) के साथ-साथ नई-नई तकनीकों का भी विकास होता है। इसलिए जैसे-जैसे सम्पत्ति का प्रयोग किया जाता है, समय बीतने व नई-नई तकनीकों के विकास के कारण इसके मूल्य में कमी होना स्वाभाविक होता है। इसी कमी की राशि को ही मूल्य ह्रास कहते हैं। इसका लेखा इस प्रकार किया जाता है -

Depreciation A/c Dr.

To Respective Assets A/c

(Being depreciation charged)

7. संदिग्ध ऋणों के लिए आयोजन (Provision for Doubtful Debts) : वर्तमान समय में अधिकांश व्यापार उधार पर निर्भर है और जिन्हें व्यापारी उधारी पर माल बेचता है उनमें से अधिकांश व्यापारी समय पर भुगतान कर देते हैं परन्तु कुछ व्यापारी ऐसे भी होते हैं जो व्यापार बन्द करके स्वयं लापता हो जाते हैं या कुछ व्यापारी स्वयं को दिवालिया घोषित करने के लिए आवेदन कर देते हैं। अतः जिन व्यापारियों से राशि वसूल होने की बिलकुल संभावना न हो उनको डूबत ऋण मान लिया जाता है परन्तु जिन ऋणों से कुछ वसूल होने की संभावना हो उनके लिए व्यापारी डूबत एवम् संदिग्ध ऋणों के रूप में प्रावधान बनाना उचित समझता है। इसके लिए निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है -

(i) Profit & Loss A/c Dr.

To Provision for Bad & Doubtful Debts A/c

(Being amount provided for doubtful debts)

(ii) Bad Debts A/c Dr.

To Debtors A/c

(Being bad debts written off)

(iii) Provision for Doubtful Debts A/c Dr.

To Bad Debts A/c

(Being Bad Debts A/c transferred)

8. देनदारों पर बट्टे के लिए आयोजन (Provision for Discount on Debtors) : व्यापारी द्वारा उधार बेचे गये माल का भुगतान जल्दी प्राप्त करने की दृष्टि से देनदारों को नकद बट्टा प्रदान किया जाता है। यह बट्टा व्यापार के लिए हानि होता है। यह बट्टा देनदारों को उसी स्थिति में प्रदान किया जाता है जबकि वे व्यापारी

टिप्पणी

द्वारा निर्धारित अवधि में बकाया राशि का भुगतान कर दें। अतः वर्ष के अन्त में जितने भी देनदार होते हैं उनमें से कुछ देनदार ऐसे भी हो सकते हैं जिनके भुगतान करने की निर्धारित तिथि अगले लेखा वर्ष में आयेगी। अतः ऐसे देनदारों को दिये जाने वाले बट्टे का प्रावधान न बनाया जाये तो इस वर्ष से सम्बंधित आय की हानि इसी वर्ष में लेखांकित न होने से लाभ-हानि खाता व्यापार की सही लाभ की स्थिति तथा चिट्ठा व्यापार की सही आर्थिक स्थिति को प्रदर्शित नहीं करेगा। इसका लेखांकन निम्नलिखित प्रकार से किया जाता है -

(i) देनदारों को बट्टा देने पर :

Discount A/c Dr.

To Debtors A/c

(Being discount allowed to debtors)

(ii) देनदारों पर बट्टे के लिए आयोजन बनाने पर :

Profit and Loss A/c Dr.

To Provision for Discount on Debtors A/c

(Being provision for discount made)

(iii) बट्टे खाते को देनदारों पर बट्टा आयोजन खाते में हस्तांतरित करने पर :

Provision for Discount on Debtors A/c Dr.

To Discount A/c

(Being discount transferred)

(iv) यदि पिछले वर्ष में बट्टा आयोजन न हो :

Profit and Loss A/c Dr.

To Discount A/c

(Being discount transferred)

(v) बट्टा आयोजन खाते का अधिक शेष होने पर उसका लाभ-हानि खाते में हस्तांतरण :

Provision for Discount on Debtors A/c Dr.

To Profit and Loss A/c

(Being excessive provision transferred)

9. लेनदारों पर बट्टे के लिए आयोजन/संचय (Provision/Reserve for Discount on Creditors) : जिन पक्षकारों से व्यापारी माल खरीदता है उन्हें उनके द्वारा निर्धारित समय सीमा से भुगतान कर दिया जाये तो नकद बट्टा प्राप्त होता है। व्यापार में जितने भी लेनदार हैं उन पर निर्धारित दर से प्राप्त होने वाले बट्टे का आयोजन करना आवश्यक है क्योंकि प्राप्त होने वाला बट्टा व्यापार का लाभ है और सम्बंधित लेखा अवधि के लाभों का पूर्ण लेखा बहियों में न किया जाये तो न तो लाभ-हानि खाता व्यापार का सही लाभ प्रदर्शित कर सकेगा और न ही चिट्ठा सही आर्थिक स्थिति का चित्रण कर सकेगा।

टिप्पणी

वर्ष भर में लेनदारों से प्राप्त होने वाले बट्टे को 'लेनदारों पर बट्टे के लिए आयोजन खाते' में हस्तांतरित किया जाता है और यदि इस खाते में कोई शेष न हो तो इसे लाभ-हानि खाते में हस्तांतरित किया जाता है। इसका लेखांकन निम्नलिखित प्रकार किया जाता है -

(i) लेनदारों पर बट्टे के लिए आयोजन करने पर :

Provision for discount on Creditors A/c Dr.

To Profit and Loss A/c

(Being Provision for discount on Creditors made)

(ii) लेनदारों से बट्टा प्राप्त होन पर

Creditors A/c Dr.

To Discount A/c

(Being discount received from Creditors)

(iii) बट्टे खाते को 'लेनदारों पर बट्टे के लिए आयोजन' खाते में हस्तांतरित करने पर :

Discount A/c Dr.

To Provision for discount on Creditors A/c

(Being discount account transferred)

(iv) बट्टे खाते को लाभ-हानि खाते में हस्तांतरित करने पर :

Discount A/c Dr.

To Profit & Loss A/c

(Being discount account transferred)

10. प्रबन्धक को पारिश्रमिक (Commission to General Manager) : जो व्यक्ति व्यवसाय का प्रबंध करते हैं उन्हें नियोक्ता द्वारा वेतन के अतिरिक्त शुद्ध लाभों पर भी निश्चित दर से पारिश्रमिक/कमीशन दिया जा सकता है। नियोक्ता द्वारा इस प्रकार का प्रलोभन देने का एक कारण यह भी होता है कि प्रबंधक व्यवसाय की लार्भाजन क्षमता से स्वयं को जुड़ा हुआ महसूस करे तथा लार्भाजन क्षमता बढ़ाने पर ध्यान दें। इस प्रकार पारिश्रमिक की गणना तब तक नहीं की जा सकती हैं जब तक कि अंतिम खाते न बनाये जायें। इस समायोजन का प्रभाव ठीक वैसा ही पड़ेगा जैसा कि अदत्त एवं उपार्जित व्ययों का होता है। इसके लिए निम्नलिखित लेखा प्रविष्टि की जाती है -

Managers Commission A/c Dr.

To Outstanding Managers Commission A/c

(Being Commission payable to manager)

मैनेजर कमीशन खाते का नाम शेष लाभ-हानि खाते में हस्तांतरित कर दिया जाता है तथा बकाया मैनेजर कमीशन खाते का जमा शेष चिट्ठे के दायित्व पक्ष में दिखाया जाता है। इस कमीशन की गणना दो प्रकार से की जाती है। यदि प्रश्न में भाषा इस तरह की प्रयोग की गई हो जिससे यह स्पष्ट होता हो कि लाभ में शुद्ध लाभ तथा स्वयं

टिप्पणी

मैनेजर का कमीशन दोनों शामिल है अर्थात् शुद्ध लाभ या कमीशन वसूल करने के बाद के लाभ पर निश्चित दर से कमीशन देना है तो कमीशन की गणना निम्नलिखित प्रकार की जायेगी -

$$\text{कमीशन} = \frac{(\text{कमीशन वसूल करने से पूर्व का लाभ x कमीशन की दर से प्रतिशत में})}{(100 + \text{कमीशन की दर प्रतिशत में})}$$

यदि भाषा से यह स्पष्ट हो कि कमीशन लाभ पर ही देना है न कि शुद्ध लाभ पर तो लाभ की राशि ज्ञात कर उस पर निर्धारित दर से कमीशन दे दिया जायेगा और शेष राशि शुद्ध लाभ होगा। इस दशा में कमीशन की गणना निम्नलिखित प्रकार से होगी -

$$\text{कमीशन} = \frac{(\text{कमीशन वसूल करने से पूर्व का लाभ x कमीशन की दर प्रतिशत में})}{100}$$

11. पूंजी पर ब्याज (Interest on Capital) : लेखा वर्ष के अन्त में व्यापारी व्यापार का लाभ-हानि खाता बनाकर लेखा वर्ष का लाभ ज्ञात करता है। व्यापारी द्वारा व्यापार में पूंजी लगायी जाती है जिसके प्रयोग से लाभ अर्जित होता है। यदि यही पूंजी व्यापारी द्वारा अन्य व्यक्तियों या वित्तीय संस्थाओं से उधार ली जाती तो उस पर ब्याज का भुगतान करना पड़ता। अतः यदि व्यापारी यह भी जानना चाहे कि यदि पूंजी पर ब्याज देना पड़े तो ब्याज का भुगतान करने के पश्चात कितना लाभ शेष बचता है तो भी वह पूंजी पर ब्याज का समायोजन करता है। पूंजी पर ब्याज व्यापार के लिए व्यय न होकर लाभों का नियोजन है जिसे अंतिम खाते बनाते समय लाभ-हानि नियोजन खाते के नाम पक्ष में दिखाया जाता है और ब्याज की राशि व्यापारी की पूंजी में जोड़कर पूंजी को चिट्ठे के दायित्व पक्ष में दिखाया जाता है। इसके लिए निम्नलिखित लेखा प्रविष्टि की जाती है -

Interest on Capital A/c Dr.

To Capital A/c

(Being interest on Capital charged)

12. आहरण पर ब्याज (Interest on Drawings) : पूंजी पर ब्याज लगाने की तर्ज पर ही यदि व्यापारी व्यापार से रोकड़ या माल स्वयं के प्रयोग हेतु निकालता है तो उससे व्यापार में विद्यमान रोकड़ तथा माल जो भी निकलता है उसमें कमी आती है। अतः व्यापारी द्वारा व्यापार से किये गये आहरण पर भी ब्याज लगाया जाना (वसूल किया जाना) चाहिये। आहरण पर ब्याज व्यापार के लिए आय के समान है परन्तु इसकी बाह्य पक्ष से प्राप्ति न होकर व्यापार के स्वामी से ही वसूली की जाने से यह लाभ-हानि खाते में न लिखी जाकर लाभ-हानि नियोजन खाते में जमा की जाती है। इसका दूसरा प्रभाव आहरण को बढ़ाता है जिसका अन्ततोगत्वा परिणाम पूंजी में कमी के रूप में होता है और यह समायोजित पूंजी चिट्ठे के दायित्व पक्ष में दर्शायी जाती है। इसके लिए निम्नलिखित लेखा प्रविष्टि की जाती है -

Drawings A/c Dr.

To Interest on Drawings A/c

(Being interest charged on drawings)

13. माल की आग, चोरी या प्राकृति प्रकोप से हानि (Loss of Godos by Fire, Theft or attack by Nature) : यदि व्यापार में माल चोरी हो जायें, प्राकृतिक प्रकोप से खराब या नष्ट हो जायें या व्यापार में आग लग जाने से माल आग से जल जाये तो इस प्रकार की हानियां असामान्य हानि की श्रेणी में आती है। हानि होने पर निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है –

Loss by Theft A/c Dr.

Loss by Fire A/c Dr.

Loss by Flood / Earthquake A/c Dr.

To Purchases A/c

(Being Loss of goods due to theft/fire/flood etc.)

इसका प्रभाव यह होता है कि सम्बन्धित हानि का खाता लाभ-हानि खाते के नाम पक्ष में चला जाता है तथा क्रय की राशि में से सम्बन्धित माल की हानि को घटाकर क्रय खाते का अंतिम शेष व्यापार खाते (Trading Account) के नाम पक्ष में लिखा जाता है। यदि यह माल बीमा कम्पनी से बीमित हो तो बीमा कम्पनी जितनी राशि का दावा स्वीकार कर लेती है उसके लिए निम्नलिखित लेखा प्रविष्टि की जाती है –

Insurance Company A/c Dr.

To Insurance Claim A/c

(Being claim accepted by Insurance Company)

14. माल के विक्रय के अतिरिक्त अन्य उपयोग (Use of Goods other than Sales): यदि व्यापारी द्वारा माल के विक्रय के अतिरिक्त उसे मुफ्त नमूनों में विज्ञापन के रूप में बांटने के लिए प्रयोग किया जायें, माल का प्रयोग कर्मचारियों को त्यौहारों पर उपहार देने में किया जायें, माल स्वयं के निजी प्रयोग हेतु निकाला जाये, माल दान में दिया जायें, स्वयं के व्यापार में माल का प्रयोग किया जायें या मजदूरों अथवा कर्मचारियों को वेतन के रूप में माल दिया जाये तो इसके सम्बन्ध में यदि लेखांकन पहले से नही किया गया है तो निम्नलिखित प्रकार से समायोजन किया जायेगा –

(a) माल मुफ्त नमूनों में बांटने पर –

Free Sample / Advertisement A/c Dr.

To Purchases A/c

(Being Goods distributed as free samples)

(b) कर्मचारियों को त्यौहारों पर माल उपहार स्वरूप देने पर :

Gifts & Presents A/c Dr.

टिप्पणी

To Purchases A/c

(Being goods distributed to employees as gift on festivals) (c) व्यापारी द्वारा स्वयं (c) निजी प्रयोग हेतु माल निकालने पर :

Drawings A/c Dr.

To Purchases A/c

(Being goods withdraw for personal use)

(d) माल दान में देना :

Donations / Charity A/c Dr.

To Purchases A/c

(Being goods given away as charity)

(e) व्यापार में माल का प्रयोग कार्यालय/संचालन व्यय के रूप में करना :

Office / Operating Expenses A/c Dr.

To Purchases A/c

(Being goods use for office / business operation)

(f) यदि माल का प्रयोग स्थायी सम्पत्ति बनाने या उसकी मरम्मत हेतु किया जाय :

Respective Fixed Assets A/c Dr.

Repair & Maintenance of Fixed Assets A/c Dr.

To Purchases A/c

(Being goods use for installation / construction / Repairs of Fixed Assets)

(g) वेतन / मजदूरी के रूप में कर्मचारियों को माल दिया जाय :

Salaries / Wages A/c Dr.

To Purchases A/c

(Being goods given as salaries / wages)

2.3.2 समायोजनों का सारांष (Summary of Adjustments) :

क्र. सं.	समायोजन	निर्माण एवं व्यापार खाता	लाभ-हानि खाता	चिट्ठा
1.	वर्ष के अन्त का रहतिया	कच्चे माल तथा चालू कार्य (WIP) का रहतिया निर्माण खाते में तथा तैयार माल का	--	कच्चा माल, चालू कार्य या अर्द्ध निर्मित माल और निर्मित माल का रहतिया

		रहतिया व्यापार खाते के जमा पक्ष में लिखा जाता है।		चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में दर्शाया जाता है।
2.	बकाया व्यय / उपार्जित व्यय	जो व्यय निर्माण एवम व्यापार खाते से सम्बन्धित है उन्हें इस खाते के नाम पक्ष में सम्बन्धित मद की राशि में जोड़कर दिखाते है।	जो व्यय लाभ-हानि खाते से सम्बन्धित है उन्हें लाभ-हानि खाते के नाम पक्ष में सम्बन्धित मद की राशि में जोड़कर दिखाते है।	बकाया/उपार्जित व्यय खाते का शेष चिट्ठे के दायित्व पक्ष में, चालू दायित्व के रूप में दिखाया जाता है।
3.	पूर्वदत्त व्यय	जो व्यय निर्माण एवम व्यापार खाते से सम्बन्धित है उन्हें इस खाते के नाम पक्ष में सम्बन्धित व्यय की मद में से घटाकर दिखायेंगे।	जो व्यय लाभ-हानि खाते से सम्बंधित है उन्हे इस खाते के नाम पक्ष में सम्बंन्धित व्यय की मद में से घटाकर दिखायेंगे।	पूर्वदत्त व्यय खाते का शेष चिट्ठे में चालू सम्पत्ति के रूप में सम्पत्ति पक्ष में दिखाया जाता है।
4.	अदत्त/उपार्जित आय	--	इस आय को लाभ-हानि खाते के जमा पक्ष में सम्बन्धित आय की मद में जोड़कर दिखायेंगे।	अदत्त/उपार्जित आय खाते का शेष चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में चालू सम्पत्ति के रूप में दिखाया जायेगा।
5.	अनुपार्जित आय	--	यह आय लाभ-हानि खाते के जमा पक्ष में सम्बन्धित आय की मद में से घटाकर दिखायी जायेगी।	अनुपार्जित आय खाते का शेष चिट्ठे के दायित्व पक्ष में चालू दायित्व के रूप में दिखाया जाता है।
6.	मूल्य ह्रास	निर्माण से सम्बन्धित मशीनों का ह्रास निर्माणा खाते के नाम पक्ष में दिखाया जाता है।	उत्पादन में प्रत्यक्ष रूप से काम न आने वाली सम्पत्तियों का ह्रास लाभ-हानि खाते के नाम पक्ष में दिखाया जाता है।	मूल्य ह्रास की राशि को चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में सम्बन्धित सम्पत्ति में से घटाकर दिखायेंगे।
7.	डूबत एवं संदिग्ध ऋणों के लिए आयोजन	--	चालू वर्ष में किया जाने वाला संदिग्ध ऋणों का आयोजन लाभ-हानि खाते के नाम पक्ष में दिखाया जाता है।	इस आयोजन खाते का शेष चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में देनदारों में से घटाकर दिखाया जाता है।

टिप्पणी

8.	देनदारों पर बट्टे के लिए प्रावधान	--	चालू वर्ष में किया जाने वाला देनदारों पर बट्टे का आयोजन लाभ-हानि खाते के नाम पक्ष में दिखाया जायेगा।	इस आयोजन खाते का शेष चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में देनदारों में से घटाकर दिखाया जाता है।
9.	लेनदारों पर बट्टे के लिए प्रावधान	--	चालू वर्ष में किया जाने वाला लेनदारों पर बट्टे का आयोजन लाभ-हानि खाते के जमा पक्ष में दिखाया जाता है।	इस आयोजन खाते का शेष दायित्व पक्ष में लेनदारों में से घटाकर दिखाया जाता है।
10.	प्रबंधकीय पारिश्रमिक	कारखाना प्रबंधक को कमीशन निर्माण/व्यापार खाते के नाम पक्ष में दिखाया जाता है।	मुख्य प्रबन्ध को कमीशन लाभ-हानि खाते के नाम पक्ष में दिखाया जाता है।	कारखाना/मुख्य प्रबंधक को देय कमीशन (Commission Payable) खाते का शेष चिट्ठे के दायित्व पक्ष में दिखाया जाता है।
11.	पूंजी पर ब्याज	--	इसे लाभ-हानि नियोजन खाते के नाम पक्ष में दिखाया जायेगा।	इस चिट्ठे के दायित्व पक्ष में (यदि पूंजी खाते का जमा का शेष है) पूंजी में जोड़कर दिखाया जाता है।
12.	आहरण पर ब्याज	--	इसे लाभ-हानि नियोजन खाते के जमा पक्ष में दिखाया जाता है।	इसे चिटठे के दायित्व पक्ष में (यदि पूंजी खाते का जमा शेष है) पूंजी में से घटाकर और नाम शेष होने पर जोड़कर दिखाया जाता है।
13.	माल की आग/ चोरी से हानि	यह हानि निर्माण/व्यापार खाता बनाते समय क्रय में से घटाकर दिखायी जाती है।	इस हानि को लाभ-हानि खाते के नाम पक्ष में तथा बीमा दावे खाते को जमा पक्ष में दिखाया जाता है।	बीमा कम्पनी से प्राप्त होने वाली क्षतिपूर्ति की राशि यदि बकाया है तो बीमा कम्पनी का खाता सम्पत्ति पक्ष में दिखाया जाता है।

2.3.3 समायोजित तलपट (Adjusted Trial Balance)

अंतिम खाते तलपट के आधार पर बनाये जाते है। यदि तलपट बन जाने के बाद कुछ समायोजन करने बाकी है तो उन्हें सीधा अंतिम खाते बनाते समय अंतिम खाते के प्रारूप में ही जोड़ या घटाकर दिखा सकते है परन्तु लेखाकार चाहे तो पहले मुख्य जर्नल में उन समायोजनों की प्रविष्टियां करके उनकी खतौनी खाता बही में करने के पश्चात तलपट बना सकता है। इसे समायोजित तलपट कहते है। इसे निम्नलिखित प्रकार से बनाया जाता है।

उदाहरण (Illustration) – 11

विवेक ब्रदर्स का 31 मार्च 2009 का तलपट निम्नलिखित था। (The following was the trial balance of Vivek Brothers as on 31st March 2009.

Sl. No.	Name of Ledger A/c	L.F.	Amount Dr.	Amount Cr.
			Rs.	Rs.
1.	Capital		–	1,25,000
2.	Building		75,000	–
3.	Stock 01.04.2008		34,500	–
4.	Purchase & Sale		54,750	1,28,500
5.	Returns		2,000	1,250
6.	Furniture		6,500	–
7.	Motor Car		60,000	–
8.	Bed debts		1,750	–
9.	Provision for Doubtful Debts		–	3,000
10.	Interest		1,000	–
11.	Commission		–	3,750
12.	Tax & Insurance		8,000	–
13.	Cash		6,500	–
14.	Bank overdraft		–	54,500
15.	Car Expenses		9,000	–
16.	General Expenses		8,000	–
17.	Salaries		33,000	–
18.	Debtors & Creditors		40,000	24,000
			3,40,000	3,40,000

टिप्पणी

निम्नलिखित समायोजनों की समायोजन प्रविष्टियां करते हुए समायोजित तलपट बनाइये। (Make adjustment entries and prepare adjusted trial balance taking into account the following adjustments).

1. वर्ष के अन्त में रहतिया 32,500 रु. था। (Stock at the end of the year was Rs. 32,500).
2. भवन पर 10 प्रतिशत तथा मोटर कार पर 15 प्रतिशत ह्रास लगाइये। (Charged depreciate Building by 10% and motor car by 15%).
3. वेतन 11 माह का ही दिया गया है। (Salaries have been paid for 11 months).
4. 1,500 रु. का माल दान में दिया। (Goods worth Rs. 1,500 given away as charity).
5. मोटर कार स्वामी द्वारा पूर्णतः घरेलू कार्य में प्रयोग की गई (The motor car wholly used for private purposes by the proprietor).
6. 500 रु. और डूब गये तथा देनदारों पर संदिग्ध ऋणों के लिए 5 प्रतिशत से प्रावधान बढ़ाइये। (Write off Rs. 500 further as bad debts and increase provision for doubtful debts 5% on Debtors.)
7. आग से 3,000 रु. का माल नष्ट हो गया तथा बीमा कम्पनी ने 1,000 रु. का दावा स्वीकार किया। (Goods worth Rs. 3,000 lost by fire and Insurance company accepted claim for Rs. 1,000).

हल (Solution) :

Journal Proper

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr. Rs.	Amount Cr. Rs.
2009	Stock A/c Dr.		32,500	
Mar. 31	To Purchases A/c			32,500
	(Being stock at the end of the year adjusted)			
"	Purchases Return A/c Dr.		1,250	
	To Purchases A/c			1,250
	(Being Purchase Return transferred to purchases Account)			
"	Sales A/c Dr.		2,000	
	To Sales Return A/c			2,000
	(Being Sales Return transferred to Sale Account)			
"	Depreciation A/c Dr.		16,500	
	To Building A/c			7,500
	To Motor A/c			9,000

	(Being depreciation charged on building and motor car)			
"	Salary A/c Dr.		3,000	
	To Outstanding Expenses			3,000
	(Being Salary Outstanding)			
"	Charity A/c Dr.		1,500	
	To Purchases A/c			1,500
	(Being goods given away as charity)			
"	Drawings A/c Dr.		18,000	
	To Depreciation A/c			9,000
	To Car Expenses A/c			9,000
	(Being car wholly use by proprietor for personal use, hence expenses transferred)			
"	Loss by fire A/c Dr.		2,000	
	Insurance Co. A/c Dr.		1,000	
	To Purchases A/c			3,000
	(Being goods destroyed by fire and claim accepted by insurance co.)			
"	Bad debts Dr.		500	
	To Debtors A/c			500
	(Being further Bad debts written off)			
"	Provision for Bad debts A/c Dr.		2,250	
	To Bad debts A/c			2,250
	(Being Bad debts transfer to provision for bad debts account)			

Date	Particulars	L.F.	Amount	
			Dr. Rs.	Cr. Rs.
2009 Mar. 31	P & L A/c Dr.		1,975	
	To Provision for Bad debts A/c			1,975

टिप्पणी

	(Being provision transferred to P & L Account)			
''	Capital A/c Dr.		18,000	
	To Drawing A/c			18,000
	(Being Drawings transferred to Capital account			

Adjusted Trial Balance as on 31st March, 2009

Sl. No.	Name of Ledger Account	L.F.	Amount Dr.	Amount Cr.
			Rs.	Rs.
1.	Capital		–	1,07,000
2.	Building		67,500	–
3.	Depreciation		7,500	–
4.	Stock 01.04.2008		34,500	–
5.	Purchase and Sales		16,500	1,26,500
6.	Furniture		6,500	
7.	Motor Car		51,000	
8.	Provision for Bad debts		–	2,725
9.	Interest		1,000	–
10.	Commission		–	3,750
11.	Tax and Insurance		8,000	–
12.	Cash		6,500	–
13.	Bank overdraft		–	54,500
14.	General Expenses		8,000	—
15.	Salaries		36,000	–
16.	Outstanding Salaries		–	3,000
17.	Stock 31.03.2008		32,500	–
18.	Charity		1,500	–
19.	Debtors and Creditors		39,500	24,000
20.	Loss by Fire		2,000	–
21.	Profit and Loss A/c		1,975	–
22.	Insurance Co.		1,000	–
			3,21,475	3,21,475

इस उदाहरण में रहतिये के समायोजन की प्रविष्टि प्रथम विधि से की गई है।

2.4 अंतिम खातों का अर्थ (Meaning of Final Accounts)

वर्ष के अन्त में व्यापारी यह तथ्य जानने के लिए उत्सुक रहता है कि व्यापार में कितना लाभ अर्जित हुआ या कितनी हानि उठानी पड़ी और व्यापार की आर्थिक स्थिति किस प्रकार की है। दोहरा लेखा पद्धति की प्रारंभिक लेखा एवमं वर्गीकरण अवस्था में इन तथ्यों की जानकारी नहीं मिल सकती और तलपट केवल खातों में की गई खतौनी की गणितीय शुद्धता की जांच करता है। व्यापार की लाभ हानि एवम् आर्थिक स्थिति की जानकारी प्राप्त करने के लिए दोहरा लेखा प्रणाली की सारांश अवस्था का प्रयोग किया जाता है जिसमें व्यापारी तलपट की सहायता से निम्नलिखित विवरण पत्र बनाता है।

1. आय का विवरण (Income statement) :

(i) व्यापार खाता (Trading account) (ii) लाभ हानि खाता (Profit and Loss Account)

2. स्थिति पत्रक या चिट्ठा (Statement of Affairs or Balance Sheet)

व्यापार खाते द्वारा सकल लाभ या सकल हानि प्रदर्शित की जाती है। लाभ-हानि खाता लेखा वर्ष में अर्जित किया गया लाभ या हानि प्रदर्शित करता है तथा चिट्ठा व्यवसाय की आर्थिक स्थिति का चित्रण करता है। यह तीनों मिलाकर अंतिम खाते कहलाते है।

2.4.1 अंतिम खातों की उपयोगिता

व्यापारी इनके आधार पर भविष्य की नीतियां निर्धारित करने के लिए देखेगा कि व्यापारिक लेनदार उधार की सुविधा देंगे तथा वित्तीय संस्थाऐं ऋण उपलब्ध करवायेंगी या नहीं। कर्मचारी अंतिम खातों से यह पता लगायेंगे कि क्या उनकी नौकरी स्थिर है या नहीं तथा उनकी पदौन्नती व वेतन वृद्धि की क्या संभावनाऐं है। विनियोक्ता इस तथ्य की जानकारी प्राप्त करता है कि व्यापार की लाभार्जन क्षमता तथा आर्थिक स्थिति कैसी है। व्यापार एवम् लाभ-हानि खाते में आने वाली मदें पूरे वर्ष के आंकड़ों का प्रतिनिधित्व करती है इसलिए उनके आगे For the year ending लिखते है जबकि चिट्ठे में दिखलायी जाने वाली मदें उस निश्चित तिथि को उनके शेष दर्शाती है इसलिए उसके आगे as on या as at लिखते है।

2.4.2 अंतिम खातों में सम्मिलिति खाते

अंतिम खातों में निम्नलिखित खातों को सम्मलित करते है जिन्हें क्षितिजाकार प्रारूप में इस प्रकार बनाते है -

1. उत्पादन खाता, 2. व्यापार खाता, 3. लाभ हानि खाता, 4. चिट्ठा

1. उत्पादन खाता (Manufacturing Account) : यह व्यापार खाते का ही हिस्सा है। जो संस्थाऐं उत्पादन एवं विक्रय दोनों कार्य करती है और अपने द्वारा उत्पादित माल की लागत ज्ञात करना चाहती है तो वह उत्पादन खाता बनाकर ज्ञात करती है। इसके पश्चात व्यापार खाता बनाकर सकल लाभ या सकल हानि की जानकारी प्राप्त करती है। इसके नाम तथा जमा पक्ष में दर्शायी जाने वाली मदें निम्नलिखित प्रारूप द्वारा दर्शायी गई है तथा इस परिस्थिति में उत्पादन या निर्माण खाते के पश्चात बनने वाले व्यापार खाते में दर्शायी जाने वाली मदें भी व्यापार खाता बनाकर दर्शायी गई है।

टिप्पणी

निर्माण खाते का प्रारूप (Proforma of Manufacturing Account)

Dr. Manufacturing Account for the year ending .... Cr.

Particulars	Amount	Particulars	Amount
	Rs.		Rs.
To work in progress at the beginning	---	By work in progress at the end	---
To Stock of Raw Material at the beginning	---	By Sales of defective material	---
To purchase of Raw material		By Stock of raw material at the end	---
Less : Purchases Return	---	By Cost of Production	
To Freight	---	(Balancing figure transferred to trading A/c)	
To Wages	---		
To Carriage Inward	---		
To carriage on purchases	---		
To productive expenses	---		
To Direct Expenses	---		
To Cartage	---		
To Salary of watchman	---		
To Custom Duty	---		
To Excise Duty	---		
To Motive Power	---		
To Import Duty	---		
To Dock Due	---		
To Factory Expenses	---		
To Factory Rent, Rates & Taxes	---		
To Factory Fuel, Light, Power, Water	---		
To Factory Insurance	---		

To Depreciation on Plant & Machinery	– – –		
To Stores Consumed	– – –		
To Manufacturing Expenses	– – –		
To Salary of Factory Manager	– – –		
To Other productive expenses (Jute, Lubricating Oil, Grease etc.)	– – –		
	– – –		– – –

Dr. Trading Account for the year ending .... Cr.

Particulars	Amount	Particulars	Amount
	Rs.		Rs.
To Stock of finished goods at the beginning	– – –	By Sales – – –	
To Cost or production	– – –	Less : Sales Return – – –	– – –
To Profit & Loss A/c (Gross Profit trans.)	– – –	By stock of Finished Goods at the end	– – –
	– – –		– – –

व्यापार खाता (Trading Account) : ऐसी संस्थाऐं जो केवल तैयार माल की खरीद - बिक्री के व्यवसाय में संलग्न है (उत्पादन कार्य नहीं करती) वे अपना सकल लाभ या सकल हानि ज्ञात करने के लिए व्यापार खाता ही बनाती है इन्हें निर्माण खाता बनाने की आवश्यकता नहीं है। इस परिस्थिति में बनने वाले व्यापार खाते का प्रारूप निम्नलिखित होगा -

व्यापार खाते का प्रारूप (Proforma of Trading Account)

Dr. Trading Account for the year ending … Cr.

Particulars	Amount	Particulars	Amount
	Rs.		Rs.
To Stock at the beginning	– – –	By Sales :	– – –
To Purchases :	– – –	Cash – – –	

टिप्पणी

Cash ––– Credit ––– Less : Purchases Returns ––– or Return outward ––– Less : Goods Given away : ––– Charity –– Drawings –– Donation –– Free sample –– –––		Credit ––– Less : Sales returns ––– or Return inward –––	
		By subsidy received on sale	–––
		By Stock at the end	–––
		By Profit & Loss A/c (Gross loss transferred)	–––
To Wages/Wages on purchases	–––		
To Wages and Salaries	–––		
To Carriage/Carriage Inward	–––		
To Inward Expenses	–––		
Particulars	Amount	Particulars	Amount
	Rs.		Rs.
To Customs Duty	–––		
To Import Duty	–––		
To Freight/Freight on purchases	–––		
To Railway Freight	–––		
To Dock Dues charges	–––		
To Gas, Water and Light	–––		
To Brokerage & Commission on purchases	–––		
To Cartage/Cartage on purchases	–––		
To Royalty on production	–––		
To other Direct Expenses	–––		
To Profit & Loss A/c (Gross profit transferred)	–––		–––

लाभ हानि खाता (Profit and Loss Account) : व्यापार खाते से सकल लाभ या सकल हानि ज्ञात करने के पश्चात जो अवास्तविक खाते व्यापार खाते अथवा निर्माण एवम् व्यापार खाते में नहीं दर्शाये गये है उन्हें लाभ हानि खाते में दर्शाया जाता है। नाम शेष वाले अवास्तविक खाते जो लाभ हानि खाते में दर्शाये जाते है उन्हें अप्रत्यक्ष व्यय कहते है। इस खाते के जमा पक्ष का नाम पक्ष पर आधिक्य शुद्ध लाभ तथा नाम पक्ष का जमा पक्ष पर आधिक्य शुद्ध हानि दर्शाता है जिसे व्यापारी के पूंजी खाते में हस्तांतरित कर दिया जाता है। लाभ हानि खाते का प्रारूप इस प्रकार है -

लाभ हानि खाते का प्रारूप (Proforma of Profit and Loss Account)

Dr. Profit and Loss Account for the year ending ... Cr.

Particulars	Amount	Particulars	Amount
	Rs.		Rs.
To Trading A/c	– – –	By Trading A/c	– – –
To Salary & Wages	– – –	By Interest earned	– – –
To Factory Expenses	– – –	By Commission earned	– – –
To Factory Rent	– – –	By Rent earned	– – –
To Factory Insurance	– – –	By Profit on sale of Fixed Assets	– – –
To Factory Repair	– – –	By Income from Investment	– – –
To Rent, Rates & Taxes	– – –	By Sale of Scrap	– – –
To Fire Insurance premium	– – –	By Miscellaneous Incomes	– – –
To Repair & maintenance	– – –	By Discount earned	– – –
To Royalty on sales	– – –	By Provision for Discount on Creditors	– – –
To Depreciation	– – –	By Profit on sale of Investments	– – –
To Audit fees	– – –	By Insurance claim	– – –
To Bank charges	– – –	By Dividend	– – –
To Legal charges	– – –	By Apprentice premium	– – –
To Miscellaneous Expenses	– – –	By Bad Debts Recovered	– – –
To Discount allowed to Debtors	– – –	By Interest on Drawings	– – –
To Interest/Interest on Loans	– – –	By Capital A/c	
To Carriage outward	– – –	(Net loss transferred)	– – –

टिप्पणी

Particulars	Amount	Particulars	Amount
	Rs.		Rs.
To Freight outward	– – –		
To Commission to sales men	– – –		
To Trade Expenses	– – –		
To Traveling Expenses	– – –		
To Entertainment Expenses	– – –		
To Sales Promotion Expenses	– – –		
To Advertising and Publicity	– – –		
To Bad Debts	– – –		
To Provision for Bad Debts	– – –		
To Provision for Discount on Debtors	– – –		
To Packing Expenses	– – –		
To Interest on Overdrafts	– – –		
To Loss on sale of Fixed Assets	– – –		
To Loss by Theft	– – –		
To Loss by Fire	– – –		
To Loss by Embezzlement	– – –		
To Loss on sale of Investments	– – –		
To Printing & Stationery	– – –		
To Postage Telegram & Telephone Exp.	– – –		
To Office Expenses	– – –		
To Discount on bills discounted	– – –		
To Interest on Capital	– – –		
To Commission Allowed	– – –		
To Establishment Expenses	– – –		
To Administrative Expenses	– – –		

Particulars	Amount	Particulars	Amount
	Rs.		Rs.
To Electricity Charges	---		
To Other Indirect Expenses	---		
To Capital A/c (Net profit transferred)	---		
	---		---

चिट्ठा **(Balance Sheet) :** वे खाते जिन्हें व्यापार एवम् लाभ हानि खाते में नहीं दिखाया जाता उन्हें चिट्ठे में दिखाया जाता है। व्यक्तियों एवम संस्थाओं के खाते, सम्पत्तियों एवं दायित्वों से सम्बंधित खाते तथा व्यापारी का पूंजी खाता चिट्ठे में दिखाया जाता है। नाम शेष वाले खाते सम्पत्ति पक्ष में तथा जमा शेष वाले खाते दायित्व पक्ष में दर्शाये जाते हैं। चिट्ठा बनाने के दो क्रम प्रचलित है - (i) तरलता क्रम एवं (ii) स्थायित्व क्रम। क्रमानुसार चिट्ठे का प्रारूप इस प्रकार है -

टिप्पणी

चिट्ठे का तरलता क्रम में प्रारूप (Proforma of Balance Sheet in Liquidity Order)

Balance Sheet as on ....

Liabilities		Amount	Assets		Amount
		Rs.			Rs.
Current Liabilities :			Current Assets :		
Bank Overdraft		– – –	Cash in hand		– – –
Bills Payable		– – –	Cash at Bank		– – –
Outstanding Expenses		– – –	Bills Received		– – –
Sundry Creditors		– – –	Sundry Debtors		– – –
Collected Sales Tax		– – –	Prepaid Expenses		– – –
Income received in advanced		– – –	Outstanding/Accrued Income		– – –
Long term Liabilities :			Stock at the end :		
Bank Loan		– – –	Finished Goods	– – –	
Loan on mortgage		– – –	Raw Material	– – –	
Capital			Work-in-progress	– – –	– – –
Opening Capital	– – –		Investments :		
Add : Interest on Capital	– – –		Government Securities	– – –	
Add : Net Profit	– – –		Other Securities	– – –	– – –
Less : Net Loss	– – –		Fixed Assets :		
Less : Drawings	– – –		Live Stock		– – –
Less : Interest on Drawings	– – –		Furniture		– – –
Less : Life Insurance premium	– – –		Plant & Machinery		– – –
Less : Personal Income Tax	– – –	– – –	Building		– – –
			Patents		– – –
			Trade mark		– – –
			Goodwill		– – –
		– – –			– – –

Liabilities	Amount	Assets	Amount
	Rs.		Rs.
Contingent Liability :	– – –		– – –

चिट्ठे का स्थायित्व क्रम में प्रारूप (Proforma of Balance Sheet in Permanence Order)

Balance Sheet as on ....

Liabilities		Amount	Assets		Amount
		Rs.			Rs.
Capital :			Fixed Assets :		
Opening Capital	– – –		Goodwill		– – –
Add : Interest on Capital	– – –		Patents		
Add : Net Profit	– – –		Trade Mark		– – –
Less : Net Loss	– – –		Building		– – –
Less : Drawings	– – –		Plant & Machinery		– – –
Less : Life Insurance premium	– – –		Furniture		– – –
Less : Personal Income Tax	– – –	– – –	Live Stock		– – –
Long Term Liabilities :			Investments :		
Loan on Mortgage		– – –	Government Securities		– – –
Bank Loan		– – –	Other Securities		– – –
Current Liabilities :			Current Assets :		
Collected Sales Tax		– – –	Investments		– – –
Income received in advance		– – –	Sundry Debtors		– – –
Sundry Creditors		– – –	Prepaid Expenses		– – –
Outstanding & Accrued Expenses		– – –	Outstanding/Accrued Income		– – –
Bills payable		– – –	Stock at the end :		
Bank overdraft		– – –	Finished Goods	– – –	
			Raw Material	– – –	
			Work-in-progress	– – –	– – –
			Bill receivable		

टिप्पणी

		Cash at Bank Cash in hand	––– –––
	–––		–––
Contingent Liability :	–––		–––

उदाहरण (Illustration) – 12

31 दिसम्बर 2009 का विवेक ब्रदर्स का तलपट निम्नलिखित था। (The following was the Trial Balance of Vivek Brothers as on 31st December, 2009).

Particulars	Debit	Credit
	Rs.	Rs.
Capital	–	1,25,000
Building	75,000	–
Cash	6,500	–
Stock	34,500	–
Furniture	6,500	–
Debtors & Creditors	40,000	24,000
Motor Car	60,000	
Bad Debts	1,750	
Provision for Doubtful Debts	–	3,000
Interest	1,000	–
Commission	–	3,750
Tax and Insurance	8,000	
Bank overdraft	–	54,500
Car Expenses	9,000	
General Expenses	8,000	
Salaries	33,000	
Purchases and Sales	54,750	1,28,500
Returns	2,000	1,250
	3,40,000	3,40,000

व्यापार खाता, लाभ हानि खाता तथा चिट्ठा बनाइये। 31.12.2009 को रहतिया 32,500 रु. था। (Prepare Trading Account, Profit and Loss Account and Balance Sheet. Stock was Rs. 32,500 on

31.12.2009).

हल (Solution) :

Dr. Trading Account for the year ending 31st December, 2009 Cr.

Particulars		Rs.	Particulars		Rs.
To Stock		34,500	By Sales	1,28,500	
To Purchase	54,750		Return	2,000	1,26,500
Less : Returns	1,250	53,500	By Stock		32,500
To Profit & Loss A/c (Gross profit transferred to P & L A/c)		71,000			
		1,59,000			1,59,000

Dr. Profi and Loss Account for the year ending 31st December, 2009 Cr.

Particulars	Rs.	Particulars	Rs.
To Bad Debts	1,750	By Trading A/c	71,000
To Interest	1,000	By Commission	3,750
To Taxes & Insurance	8,000		
To Car Expenses	9,000		
To General Expenses	8,000		
To Salaries	33,000		
To Capital A/c (Net profit transferred to Capital A/c)	14,000		
	74,750		74,750

Balance Sheet as on 31st December, 2009

Liabilities		Rs.	Assets	Rs.
Creditors		24,000	Cash	6,500
Provision for Bad debts		3,000	Debtors	40,000
Bank overdraft		54,500	Stock	32,500
Capital	1,25,000		Furniture	6,500
Add : Net Profit	14,000	1,39,000	Motor Car	60,000
			Building	75,000
		2,20,500		2,20,500

उदाहरण (Illustration) – 13

एक्स के व्यवसाय का 31 दिसम्बर 2009 को तलपट निम्नलिखित है। (Following is the trial balance of the business of X as on 31st December, 2009).

Particulars	Dr. Amount	Cr. Amount
	Rs.	Rs.
Capital		6,200
Building	6,000	
Cash Balance	700	
Investment Purchased on 01.04.2007	1,200	
Furniture	600	
Debtors & Creditors	1,420	1,100
Interest on Investment for half year		100
Discount	20	
Printing & Stationery	50	
Rent & Rates	1,700	
Wages & Octroi	710	
Purchases and Sale	8,000	12,600
Return	600	1,000
	21,000	21,000

निम्नलिखित समायोजनों को ध्यान में रखते हुए 31 दिसम्बर 2009 को व्यापार खाता, लाभ हानि खाता तथा

चिट्ठा बनाइये - (Considering the following adjustment, prepare Trading Account, Profit & Loss Account and Balance Sheet as on 31st December, 2009).

(1) वर्ष के अन्त में स्कन्ध की लागत 1,400 रु. तथा बाजार मूल्य 1,300 रु. (Cost price of stock at the end is Rs. 1,400 and market price is Rs. 1,300).

(2) छपाई के 30 रु. देने बकाया है। (Rs. 30 is outstanding for printing).

(3) देनदारों से 300 रु. वसूल नहीं हो सके। (Rs. 300 could not be realised from debtors).

(4) आग से 400 रु. का माल नष्ट हो गया, बीमा कम्पनी ने 350 रु. का दावा स्वीकार किया। (Goods costing Rs. 400 destroyed by Fire. Insurance Co. accepted claim for Rs. 350).

(5) फर्नीचर पर 10 प्रतिशत वार्षिक ह्रास तथा भवन पर 5 प्रतिशत वार्षिक ह्रास लगाइये। (Depreciate building and furniture @ 5% p.a. and 10% p.a. respectively).

(6) एक्स ने 300 रु. व्यक्तिगत प्रयोग के लिए निकाले। (X withdrew Rs. 300 for personal use).

हल (Solution) :

Trading and Profit & Loss Account for the year ending 31st December, 2009

Particulars		Amount	Particulars		Amount
		Rs.			Rs.
To Purchases	8,000		By Sales	12,600	
Less : Return	1,000		Less : Return	600	12,000
	7,000		By Stock		1,300
Less : Loss by Fire	400	6,600			
To Wages & Octroi		710			
To Profit & Loss A/c (Gross Profit Transferred)		5,990			
		13,300			13,300
To Rent & Rates		1,700	By Trading A/c		5,990
To Loss by Fire		400	By Interest on Investment	100	
To Bad Debts		300	Add : Accrued Interest	50	150
To Discount		20	by Insurance Claim		350
To Printing & Stationery	50				
Add : Outstanding	30	80			
To Depreciation on					
Building	300				
Furniture	60	360			
To Capital A/c (Net Profit transferred)		3,630			
		6,490			6,490

Balance Sheet as on 31st December, 2009

Liabilities		Amount Rs.	Assets		Amount Rs.
Capital	6,200		Building	6,000	
Less : Drawing	300		Less : Depreciation	300	5,700

टिप्पणी

टिप्पणी

	5,900		Furniture	600	
Add : Net profit	3,630	9,530	Less : Depreciation	60	540
Creditors		1,100	Debtorss	1,420	
Outstanding printing & Stationery		30	Less : Bad debts	300	1,120
			Investments		1,200
			Accrued Interest		50
			Insurance Co.		350
			Stock		1,300
			Cash in Hand	700	
			Less : Drawing	300	400
		10,660			10,660

उदाहरण (Illustration) – 14

रामनारायण एण्ड सन्स की पुस्तकों से 31 मार्च 2009 को निम्नलिखित तलपट बनाया गया - (The following Trial Balance was prepared in the books of Shri Ram Narayan & Sons as on 31st March, 2009).

Name of Account	Dr. Amount Rs.	Cr. Amount Rs.
Drawing & Capital	5,000	1,00,000
Purchases & Sales	68,000	1,50,000
Sundry Debtors	40,000	–
Stock	30,000	–
Returns Inward	3,000	–
Bank overdraft	–	12,000
Salaries	17,000	–
Office Heating & Lighting	2,000	–
Lease hold property	80,000	–
Commission Received		2,000
Traveling Expenses	3,000	–
Printing & Stationery	1,000	–
Furniture	9,000	
Provision for Doubtful Debts	–	4,000
Wages & Freight	10,000	
	2,68,000	2,68,000

निम्नलिखित समायोजनों को ध्यान में रखते हुए 31 मार्च 2009 को समाप्त होने वाली अवधि का व्यापार खाता, लाभ हानि खाता तथा इसी तिथि का चिट्ठा बनाइये। (Prepare Trading Account and Profit & Loss Account for the year ended 31st March, 2009 and Balance Sheet as on the date taking into account the following adjustments).

(1) वर्ष के अन्त में रहतिये का मूल्य 15,000 रु. था। (Stock valued at the end of the year Rs. 15,000).

(2) मजूदरी के 1,000 रु. अभी तक चुकाने बाकी है। (Wages Rs. 1,000 still unpaid).

(3) प्राप्त कमीशन का 75 प्रतिशत कार्य ही पूर्ण हुआ। (75% work completed of commission received).

(4) पट्टधर सम्पत्ति पर 5 प्रतिशत तथा फर्निचर पर 10 प्रतिशत ह्रास लगाइये। (Provide depreciation on leasehold property @ 5% and furniture @ 10%).

(5) संदिग्ध ऋणों पर प्रावधान 6 प्रतिशत तक रखिये। (Provision for doubtful debts maintain up to 6%).

(6) 10,000 रु. की नई मशीने खरीदी तथा चैक से भुगतान कर दिया परंतु इसके लिए कोई प्रविष्टि नहीं की गई। (Purchased a new machinery for Rs. 10,000 and payment was made by cheque but no entry has been passed).

(7) 2,000 रु. का वेतन अगले वर्ष से सम्बंधित है। (Salary Rs. 2,000 related to next year).

हल (Solution) :

Trading and Profit & Loss Account for the year ending 31st March, 2009

Particulars		Amount	Particulars		Amount
		Rs.			Rs.
To Stock		30,000	By Sales	1,50,000	
To Purchases		68,000	Less : Return	3,000	1,47,000
To Wages & Freight	10,000		By Stock		15,000
Add : Outstanding Wages	1,000	11,000			
To P & L A/c					
(Gross profit transferred)		53,000			
		1,62,000			1,62,000
To Salaries	17,000		By Trading Account		53,000
Less : Prepaid Salaries	2,000	15,000	By Commission	2,000	
To Office heating & lighting		2,000	Less : Unearned Comm.	500	1,500
To Traveling Expenses		3,000	By provision for Bad and		
To Printing & Stationery		1,000	Doubtful debts		1,600
To Depreciation on :					
Lease hold property	4,000				
Furniture	900	4,900			
To Capital A/c		30,200			
(Net profit transferred to capital A/c)					
		56,100			56,100

Balance Sheet as on 31st March, 2009

Liabilities		Amount	Assets		Amount
		Rs.			Rs.
Capital	1,00,00 0		Lease hold property	80,000	
Less : Drawings	5,000		Less : Depreciation	4,000	76,000
	95,000		Machinery		10,000
Add : Net profit	30,200	1,25,200	Furniture	9,000	
Unearned commission		500	Less Depreciation	900	8,100
Outstanding Wages		1,000	Stock		15,000
Bank overdraft	12,000		Debtors	40,000	
Add : Purchases of			Less : Provision for Bad		
Machinery	10,000	22,000	& Doubtful Debts	2,400	37,600
			Prepaid salary		2,000
		1,48,700			1,48,700

Working Notes :

Dr. Provision for Bad & Doubtful Debts Account Cr.

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2009		(Rs.)	2008		(Rs.)
31 March	To Profit Loss A/c	1,600	1 April	By Balance b/d	4,000
	(Balancing Figure)				
31 March	To Balance c/d	2,400			
		4,000			4,000

उदाहरण (Illustration) – 15

31 मार्च 2009 को रमेश की बहियों से निम्नलिखित शेष प्राप्त किये गये – (The following balances extracted from the books of Shri Ramesh on 31st March, 2009).

Name of Account	Rs.
Stock	60,000
Purchases	1,15,000
Sales	1,61,000
Capital	26,000

टिप्पणी

Name of Account	Rs.
Creditors	38,590
Returns Inward	6,000
Loan taken	15,000
Bills receivable	2,000
Returns outward	5,000
Debtors	25,000
Machinery	11,000
Building	9,900
Rent paid	3,000
Paid Interest on Loan	1,000
Commission Received	3,710
Provision for Doubtful Debts	2,000
Bad debts	400
Bank Balance	4,500
Cash Balance	510
Furniture	5,000
Establishment Expenses	8,000
P.F. deducted from salaries (Credit)	500
Electric charges	490

अन्य सूचनाऐं (other Information) :

(1) 31 मार्च 2009 को रहतिया 50,000 रु. (Stock Rs. 50,000 on 31st March, 2009)

(2) ऋण पर बकाया ब्याज 500 रु. (Outstanding Interest on loan is Rs. 500).

(3) 400 रु. डूबत ऋण के और अपलिखित कीजिये तथा डूबत ऋण प्रावधान के शेष को 2,000 रु. से बढ़ाइये। (Write off further bad debts of Rs. 400 and increase the balance of provision for Doubtful Debts by Rs. 2,000)

(4) मशीनरी पर 15 प्रतिशत वार्षिक तथा फर्निचर पर 10 प्रतिशत वार्षिक मूल्य ह्रास लगाइये। (Charge depreciation at 15% on machinery and 10% on furniture per annum)

(5) भविष्य निधि में नियोक्ता के अंशदान का 1,000 रु. का प्रावधान कीजिये। (Make a provision of Rs. 1,000 for employer's Contribution to provident fund)

(6) मुख्य प्रबंधक को शुद्ध लाभ पर 10 प्रतिशत कमीशन देना है (इस कमीशन को घटाने के बाद के लाभ पर) (A commission of 10% on net profit [after charging such commission] to be given to the General Manager)

31 मार्च 2009 को समाप्त होने वाले वर्ष का व्यापार खाता लाभ हानि खाता तथा चिट्ठा बनाइये। (Prepare Trading and Profit & Loss account and Balance Sheet for the year ended 31st Mach, 2009).

हल (Solution) :

Trading and Profit & Loss Account for the year ending 31st March, 2009

Particulars		Amount	Particulars		Amount
		Rs.			Rs.
To Stock		60,000	By Sales	1,61,000	
To Purchases	1,15,000		Less: Return Inward	6,000	1,55,000
Less : Returns outward	5,000	1,10,000	By Stock		50,000
To Profit & Loss A/c		35,000			
(Gross profit transferred)		2,05,000			2,05,000
To Rent		3,000	By Trading A/c		35,000
To Interest on Loan	1,000		By Commission Received		3,710
Add : Outstanding Interest	500	1,500			
To provision for Bad & D. Debts		2,000			
To Establishment Expenses		8,000			
To Electric Charge		490			
To Employer's contribution to P.F.		1,000			
To Depreciation on :					
Machinery	1,650				
Furniture	500	2,150			
To General manager commission		1,870			
(20,570 x 10/110)					
To Capital A/c					
(Net profit transferred)		18,700			
		38,710			38,710

Balance Sheet as on 31st March, 2009

Liabilities		Amount	Assets		Amount
		Rs.			Rs.
Outstanding General Manager's Commission		1,870	Cash in Hand		510
			Cash at Bank		4,500
Pro. for Employer's contribution to P.F.		1,000	Bills receivable		2,000
P.F. deducted from salaries		500	Debtors	25,000	
Creditors		38,590	Less : Further Bad Debts	400	
Loan taken	15,000			24,600	
Add : Interest outstanding	500	15,500	Less : Pro. for Bad & D. Debts	3,200	21,400
Capital	26,000		Stock		50,000
Add : Net profit	18,700	44,700	Furniture	5,000	
			Less : Depreciation	500	4,500
			Machinery	11,000	
			Less : Depreciation	1,650	9,350
			Building		9,900
		1,02,160			1,02,160

Dr. Provision for Bad & Doubtful Debts Account Cr.

	Particulars	Amount		Particulars	Amount
		Rs.			Rs.
	To Bad debts	400		By Balance b/d	2,000
	To Further Bad debts	400		By P & L A/c (Given)	2,000
	To Balance c/d	3,200			
		4,000			4,000

उदाहरण (Illustration) –16

एक्स का 31 मार्च 2009 का तलपट निम्नलिखित था – (The trial balance of Mr. X as on 31.03.2009 was as follows) :

Name of Account	Rs. (Dr.)	Rs. (Cr.)
Capital	—	12,50,000
Drawings	1,25,000	—
Purchases and Sales (including Sales Tax)	19,62,000	25,90,000
Stock	2,20,000	—
Returns	26,000	22,000
Freight	55,000	—
Salaries	2,95,000	—
Commission Received	—	57,500
Discount	25,000	25,000
Dividend	—	32,000

टिप्पणी

Bad Debts	19,500	—
Debtors and Creditors	2,65,000	2,00,000
Purchase Subsidies	—	64,500
Sales Tax Paid	1,22,000	—
Salesman's Commission	15,000	—
Investments	2,05,000	—
Furniture	2,20,000	—
Office Expenses	72,500	—
Cash	29,000	—
Bank	6,00,000	—
Provision for Doubtful Debts (01.04.2008)	—	15,000
	42,56,000	42,56,000

निम्नलिखित सूचनाओं को ध्यान में रखते हुए 31 मार्च 2009 को समाप्त होने वाले वर्ष का व्यापार एवम् लाभ हानि खाता बनाइये तथा इसी तिथि का चिट्ठा बनाइये। (Prepare the Trading and Profit & Loss Account for the year ending March 31, 2009 and the Balance Sheet as on that date having regard to the following information) :

(i) 31 मार्च 2009 को अंतिम रहतिये का पता नहीं लगाया जा सका। एक्स शुद्ध विक्रय पर 25 प्रतिशत की दर से सकल लाभ अर्जित करता है। (Closing stock as at 31.03.2009 could not be ascertained. Mr. X earned gross profit @ 25% on net sales).

(ii) संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान देनदारों पर 7.50 प्रतिशत बनाये रखना है। (Provision for doubtful debts are to be maintained @ 7.5% on debtors).

(iii) 31 मार्च 2009 को एक्स ने एक चालू व्यापार वाई से 6,00,000 रु. में खरीदा। उसने स्कन्ध 3,25,000 रु. में, देनदार 2,65,000 रु. में, फर्निचर 75,000 रु. में तथा लेनदार 75,000 रु. में लिये। एक्स ने क्रय प्रतिफल का भुगतान चैक से किया। जबकि क्रय प्रतिफल के भुगतान एवं व्यापार के ग्रहण करने से सम्बन्धित कोई लेखा प्रविष्टि नहीं की गई। (On 31.03.2009, Mr. X purchased a running business of Mr. Y for Rs. 6,00,000. He took over stock Rs. 3,25,000; Debtors Rs. 2,65,000; Furniture Rs. 75,000 and Creditors Rs. 75,000. Mr. X paid the purchase consideration by cheque. However, no entry was passed to record acquisition of business and payment of purchase price).

(iv) फर्निचर पर 10 प्रतिशत ह्रास का प्रावधान कीजिये। (Provide depreciation @ 10% p.a. on furniture).

(v) क्रय में 01.01.2009 को खरीदा गया 45,000 रु. का फर्निचर शामिल है। (Purchases include purchase of furniture on 01.01.2009 worth Rs. 45,000).

(vi) विक्रय में पुराने फर्निचर की बिक्री के 16,000 रु. शामिल है जो 01.10.2008 को की गई। बेचे गये फर्निचर का पुस्तक मूल्य 01.04.2008 को 26,000 रु. था। (Sales include sale of old furniture for Rs. 16,000 on 01.10.2008. the book value of furniture sold was Rs. 26,000 on 01.04.2008).

हल (Solution) :

Dr. Trading Account for the year ended 31.03.2009 Cr.

To Opening Stock :		2,20,000	By Sales	25,90,000	
To Purchases	19,62,000		Less : Sales Tax	1,22,000	
Add : Goods Acquired on				24,68,000	
Purchase of business	3,25,000		Less : Sale of Furniture	16,000	
	22,87,000			24,52,000	
Less : Purchase Returns	22,000		Less : Sales Return	26,000	24,26,000
	22,65,000		By Closing Stock :		
Less : Purchase of Furniture	45,000		Stock of Purchase		
	22,20,000		of business	3,25,000	
Less : Purchase Subsidies	64,500	21,55,500	Stock before purchase of		
To Freight		55,000	business	2,86,000	6,11,000
To Profit & Loss A/c (Gross Profit)			(balancing figure)		
(25% of Rs. 24,26,000)		6,06,500			
		30,37,000			30,37,000

टिप्पणी

Dr. Profit and Loss Account for the year ended 31.03.2009 Cr.

To Salaries	2,95,000	By Trading A/c (Gross Profit)	6,06,500
To Office Expenses	72,500	By Commission Received	57,500
To Salesman's Commission	15,000	By Dividend	32,000
To Provision for Bad & Doubtful Debts Rs. (39,750 + 19,500 –15,000)	44,250		
To Loss on Sale of Furniture Rs. (26,000 – Depn.1,300 – 16,000)	8,700		
To Depreciation on Furniture Rs. (1,300 + 20,525)	21,825		
To Capital A/c (Net Profit)	2,38,725		
	6,96,000		6,96,000

Balance Sheet as at 31.03.2009

Liabilities		Amount	Assets		Amount
Sundry Creditors	2,00,000		Cash		29,000
Add : Purchased	75,000	2,75,000	Bank	6,00,000	
Capital	12,50,000		Less : Paid for P.C.	6,00,000	—
Less : Drawings	1,25,000		Debtors	2,65,000	
	11,25,000		Add : Purchases of Drs.	2,65,000	
Add : Net Profit	2,38,725	13,63,725		5,30,000	
			Less : Provision @ 7.5%		

		on 5,30,000	39,750	4,90,250
		Closing Stock		6,11,000
		Investments		2,05,000
		Furniture	2,20,000	
		Add : Purchased on 1.1.09	45,000	
		31.03.09	75,000	
			3,40,000	
		Less : Sold on 01.10.2009	26.000	
			3.14.000	
		Less : Depreciation		
		(1,125 + 19,400)	20,525	2,93,475
		Goodwill (1)		10,000
	16,38,725			16,38,725

Calculation of Goodwill :

Goodwill = PC – Net Worth

= Rs. 6,00,000 – Rs. (3,25,000 + 2,65,000 + 75,000 – 75,000)

= Rs. 10,000

2.4.3 अंतिम खातों के लम्बाकार प्रारूप (Vertical Form of Final Account)

वर्तमान समय में अंतिम खाते क्षितिजाकार प्रारूप (जो पूर्व में वर्णित है) की जगह लम्बाकार प्रारूप में बनाने पर जोर दिया जा रहा है क्योंकि इनसे कुछ अधिक सूचनाऐं प्राप्त होती है। लम्बाकार प्रारूप इस प्रकार है –

Trading and Profit & Loss Account For the year ending ……….

Particulars	Rs.	Rs.	Rs.
Sales – Cash			—
Credit			—
			—
Less : Sales Return			—
Net Sales			xxx

टिप्पणी

Less : Cost of goods sold :				
Opening Stock		– –		
Purchases Cash		– –		
Purchases Credit		– –		
		x x		
Less : Purchase Return	– –			
Goods use for other	– –	– –	– –	
			– –	
Less : Closing Stock			– –	
			– –	
Direct Expenses		– –		
Add : Outstanding Expenses		– –		
		– –		
Less : Prepaid Expenses		– –	– –	
Cost of Goods Sold				– –
Gross Profit (+) / Loss (–)				xxx
Less : Indirect Expenses :				
Administration & Office Expenses			– –	
Selling & Distribution Expenses			– –	
General Expenses			– –	
			– –	
Add : Outstanding Expenses			– –	
			– –	
Less : Prepaid Expenses			– –	
			– –	
Depreciation on Assets		– –		
Bad Debts / Provision for Bad Debts		– –		
Discount Allowed		– –		
Loss on Sale of Assets		– –		

Other Losses	– –	– –	– –
			– –
Add : Indirect Income :			
Discount Received		– –	
Profit on Sale of Assets		– –	
Interest on Drawings		– –	
		– –	
Add : Accrued Income		– –	
		– –	
Less : Unearned Income		– –	– –
Net Profit / Loss (Transferred to Capital Account)			xxx

Balance Sheet as at ……………

Particulars	Rs.	Rs.	Rs.
A. Application of Funds :			
Fixed Assets :			
Goodwill			– –
Land & Building			– –
Machinery & Plant			
Less : Depreciation			– –
Furniture & Fixtures			
Less : Depreciation			– –
Patents			– –
Investments			– –
Current Assets (X) :			
Stock		– –	
Debtors		– –	
B / R		– –	
Accrued Income		– –	

टिप्पणी

Prepaid Expenses		– –	
Cash & Bank Balance		– –	
Total (X)		xxx	
Less : Current Liabilities (Y) :			
Creditors	– –		
B / P	– –		
Bank Overdraft	– –		
Outstanding Expenses	– –		
Unearned Income	– –	xxx	
Working Capital (X – Y)			– –
Total A (Net Capital Employed)			xxx
Particulars	Rs.	Rs.	Rs.
B. Sources of Funds :			
Capital of Owner		– –	
Add : Net Profit		– –	
Interest on Capital		– –	
Additional Capital		– –	
		xxx	
Less : Drawings	– –		
Net Loss	– –		
Interest on Drawings	– –	– –	– –
Financed by outsider (Bank Loan etc.)			– –
Total B			– –

उदाहरण (Illustration) – 17

31 मार्च 2009 को श्री लक्ष्मण का तलपट निम्नलिखित था। आपसे निवेदन किया गया है कि समायोजनों का प्रभाव देते हुए अंतिम खाते लम्बाकार (लम्बवत) प्रारूप में तैयार कीजिये। (The following is the trial balance of Shri Laxman as on 31st March, 2009. You are requested to prepare the final account in vertical format after giving effect to the adjustments).

Particulars	(Dr.) Rs.	(Cr.) Rs.
	Rs.	Rs.
Debtors & Creditors	1,45,000	63,000
Drawings & Capital Account	52,450	7,10,000
Insurance	6,000	—
General Expenses	30,000	
Salaries	1,50,000	
Patents	75,000	
Machinery	2,00,000	
Freehold Land	1,00,000	
Building	3,00,000	
Stock (01.04.2007)	57,600	
Carriage on Purchases	20,400	
Carriage on Sales	32,000	
Fuel & Power	47,300	
Wages	1,04,800	
Returns	6,800	5,000
Purchase & Sales	4,06,750	9,87,800
Cash at Bank	26,300	
Cash in Hand	5,400	
Total	17,65,800	17,65,800

निम्नलिखित समायोजन किये जाने है - (The following adjustments are to be made) :

(i) 31 मार्च 2009 को रहतिये का मूल्य 68,000 रु. था। (Stock on 31st March, 2009 was valued at Rs. 68,000).

(ii) देनदारों के 5 प्रतिशत तक डूबत ऋण तथा संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान कीजिये। (A provision for bad and doubtful debts is to be created to the extent of 5% on sundry debtors).

(iii) मशीनों को 10 प्रतिशत से तथा पेटैन्ट्स को 20 प्रतिशत से ह्रसित कीजिये। (Depreciate machinery by 10% and patents by 20%).

टिप्पणी

(iv) मजदूरी में ग्राहकों तथा कर्मचारियों के लिए साइकिल स्टेण्ड बनाने पर खर्च हुए 20,000 रु. शामिल है। (Wages include a sum of Rs. 20,000 spent on the erection of a cycle shed for employees and customers).

(v) मार्च 2009 के वेतन के 15,000 रु. चुकाने बाकी है। (Salaries for the months of March, 2009 amounting to Rs. 15,000 were unpaid).

(vi) बीमा में एक पॉलिसी पर चुकाया गया 1,700 रु. का प्रीमियम शामिल है जिसकी अवधि 30 सितम्बर, 2009 को समाप्त होगी। (Insurance includes a premium of Rs. 1,700 on a policy expiring on 30th September, 2009).

हल (Solution)

Trading and Profit & Loss Account

For the year ending 31st March, 2009

Particulars	Rs.	Rs.	Rs.
Sales			9,87,800
Less : Return Inward			6,800
Net Sales			9,81,000
Less : Cost of goods sold :			
Opening Stock		57,600	
Purchases	4,06,750		
Add : Carriage on Purchases	20,400		
	4,27,150		
Less : Return outwards	5,000	4,22,150	
Wages	1,04,800		
Less : Wages for Cycle Shed	20,000	84,800	
Fuel & Power		47,300	
		6,11,850	
Less : Closing Stock		68,000	
Cost of goods sold			5,43,850
Gross Profit			4,37,150
Less : Administrative & Selling Expenses			
Insurance	6,000		

Less : Prepaid	850	5,150	
General Expenses		30,000	
Salaries	1,50,000		
Add : Outstanding Salary	15,000	1,65,000	
Carriage on Sales		32,000	
Provision for Bad Debts and doubtful		7,250	
Depreciation On :			
Machinery		20,000	
Patents		15,000	2,74,400
Net Profit transfer to Capital account			1,62,750

Balance Sheet of Shri Laxman

As on 31st March, 2009

Particulars		Rs.	Rs.	Rs.
A. Application of Funds				
Fixed Assets :				
Freehold Land			1,00,000	
Building			3,00,000	
Machinery		2,00,000		
Less : Depreciation		20,000	1,80,000	
Patents		75,000		
Less : Depreciation		15,000	60,000	
Cycle Shed			20,000	6,60,000
CURRENT ASSETS : (X)				
Stock		68,000		
Sundry Debtors	145000			
Less : Prov. For Bad & doubtful Debts	7,250	1,37,750		
Cash at Bank		26,300		

टिप्पणी

Cash in Hand	5,400		
Prepaid Insurance	850	2,38,300	
CURRENT LIABILTIES : (Y)			
Sundry Creditors	63,000		
Outstanding Salaries	15,000	78,000	
Working Capital (X – Y)			1,60,300
Net Assets Employed			8,20,300
B. Sources of Funds			
Capital		7,10,000	
Add : Net Profit		1,62,750	
		8,72,750	
Less : Drawings		52,450	8,20,300
			8,20,300

स्व मूल्यांकन मापदण्ड (Self Assesment Test) :

परीक्षा के प्रश्न (Examination Question) :

1. सहायक बहियों से आपका क्या आशय है। इन बहियों को बनाने के उद्देश्य बताइये। (What do you mean by subsidiary books ? Describe the objects of preparing such books.).
2. मुख्य जर्नल क्या है? इस पुस्तक में कौन कौन से व्यवहारों का लेखा किया जाता है ? (What is a journal proper ? What types of transactions are passed through this book /).
3. समायोजन प्रविष्टियां क्या है ? अंतिम खाते बनाने के लिए ये क्यों आवश्यक है ? (What are adjustment entries ? Why are these necessary for preparing final accounts ?).
4. समायोजित तलपट क्या है? इसके बनाने की प्रक्रिया बतलाइये। (What is adjusted trial balance ? Discuss the process of making it).
5. चिट्ठे के दायित्व पक्ष की ओर दिखलायी जाने वाली मदों को स्थायित्व क्रम में लिखिये। (Write the items in permanence order, shown on liability side of balance sheet).
6. निम्नलिखित व्यवहारों को श्री मुकेश की सहायक बहियों में लिखिये। (Record the following transactions in subsidiary books of Shri Mukesh) :

   (i) उसने कैलिको मिल्स से 500 मीटर कपड़ा 60 रु. प्रति मीटर की दर से खरीदा, 10 प्रतिशत व्यापारिक बट्टा। पटेल को लागत से दुगने मूल्य बेचा। (He purchased from calico mills 500 meters of cloth at Rs. 60 per metre at 10% trade discount and sold to patel at double the price than cost).

   (ii) पटेल ने 100 मीटर कपड़ा लौटाया तथा मुकेश ने उस माल कैलिको मिल्स को लौटा दिया। (Patel returned 100 meters of cloth and Mukesh returned these goods to calico mills).

   (iii) अम्बिका मिल्स से 500 साडियां 200 रु. प्रति साडी की दर से खरीदी। इसमें से 250 साडियें उसने आनन्द को 20 प्रतिशत लाभ जोड़कर 10 प्रतिशत व्यापारिक बट्टे पर बेची। (Purchased from Ambica mills 500 Sarees at Rs. 200 per saree and out of it he sold to Anand 250 sarees by adding 20% profit on it at 10% trade discount).

   (iv) सूर्या से 100 धोतियों का आदेश 19 रु. प्रति धोती की दर से प्राप्त हुआ। (An order for 100 Dhoties at Rs. 19 per Dhoti is received from Surya).

   (v) सन्याजी मिल्स से 1000 मीटर कपड़ा 5 रु. प्रति मीटर की दर से 10 प्रतिशत व्यापारिक बट्टे पर खरीदा। (Purchased from Sanyaji Mills 1,000 meters cloth at Rs. 5 per meter at 10% trade discount).

(vi) उसने सन्याजी मिल्स को 100 मीटर कपड़ा लौटाया और नाम की चिट्ठी भेजी। (He returned 100 metre cloth to Sanyaji Mills and sent a debit note).

(vii) उसने 600 गर्म कोट 300 रु. प्रति कोट की दर से अंजनिया ब्रदर्स से एक माह के उधार पर खरीदे। (He purchased 600 Woollen Coats at Rs. 300 per Coat from Anjanya Bros. on one month credit).

(viii) उसने 500 बने बनाये पेन्ट 50 रु. प्रति पेन्ट की दर से पटवा बद्रर्स से एक माह के उधार पर खरीदा। (He purchased 500 ready made Pants at Rs. 50 per Pant from Patwa Bros. on one month credit).

(ix) उसने 50 साडियें 150 रु. प्रति साड़ी की दर से गंगा मिल्स से खरीदी तथा उन्हें मुख्यमंत्री सहायता कोष में दिया। (He purchased from Ganga Mills 50 Sarees at Rs. 150 per Saree and gave it in "Chief Minister's Relief Fund").

[Ans : Total of Purchase Book Rs. 164,000, Total of Sale Book Rs. 1,08,000. Total of purchase return book Rs. 5,850, Total of sales return book Rs. 10,800 and Total of Journal proper Rs. 7,500]

7. वित्तीय वर्ष के अन्त में निम्नलिखित लेनदेनों की समायोजन प्रविष्टियाँ दीजिये। (Give adjustment entries for the following at the end of financial year) :

(i) वर्ष के अंत के स्टॉक का मूल्यांकन 2,000 रु. से कम किया गया था। (Stock at the end was undervalued by Rs. 2,000).

(ii) वर्ष भर में 13 माह का वेतन 3,900 रु. चुकाया गया। (During the year salary Rs. 3,900 was paid for 13 months).

(iii) सरकारी प्रतिभूतियों पर 1,000 रु. ब्याज के बकाया थे। (Interest Rs. 1,000 was due on government securities).

(iv) डूबत एवं संदिग्ध ऋणों के लिए 5,000 रु. का आयोजन कीजिये। (Provide Rs. 5,000 for Bad and Doubtful Debts).

8. 31 मार्च 2009 की निम्नलिखित सूचनाओं से समायोजन प्रविष्टियां कीजिये। (Give adjustment entries from the following informations on 31st Mar., 2009) :–

(i) 1 जुलाई 2008 को खरीदे गये 100 रु. वाले 1,000 12 प्रतिशत ऋणपत्रों पर ब्याज के 3,000 रु. प्राप्त हुए। (On 1st July 2008 purchased 1,000, 12% Debentures of Rs. 100 each, on which interest Rs. 3,000 has been received).

(ii) 15,000 रु. के प्राप्त कमीशन से सम्बन्धित 20 प्रतिशत कार्य अपूर्ण है। (20% work is incomplete related to commission received Rs. 15,000).

(iii) 24,000 रु. के विक्रय मूल्य का माल गोयल को विक्रय और वापसी की शर्त पर 28 मार्च 2009 को भेजा जिसका पुस्तकों में लेखा नहीं हुआ। 31 मार्च 2009 तक गोयल की स्वीकृति प्राप्त नहीं हुई। लागत पर 20 प्रतिशत लाभ अर्जित किया गया। (Goods worth Rs. 24,000 sales price sent to Goyal on condition of "Sales or Return" basis on 28th March, 2009, which was not recorded in the books. Goyal's acceptance was not received upto 31st March, 2009. The profit is earned at 20% on cost).

(iv) व्यापारी ने वर्ष के मध्य 10,000 रु. का आहरण किया। आहरण पर ब्याज 10 प्रतिशत लगाया जाता है। (Trader withdrew Rs. 10,000 in the mid year. Interest on drawings was charged at 10% per annum).

(v) 1 अप्रेल 2008 को मशीनरी खाते का शेष 90,000 रु. था। 31.12.2008 को 50,000 रु. की एक नई मशीन खरीदी। ह्रास 20 प्रतिशत लगाना है। (On 1st April, 2008, the balance of Machinery Account was Rs. 90,000. On 31st December, 2008, a new machine of Rs. 50,000 was purchased. At the end of the year, 20% depreciation is to be charged).

(Ans. : Total of journal Rs. 50,000).

9. एक व्यापारी की पुस्तकों में 1 जनवरी 2009 को बकाया वेतन खाते का शेष 200 रु. था। वर्ष के दौरान 55,000 रु. का वेतन चुकाया। वर्ष के अन्त में 8,000 रु. वेतन के बकाया थे। उपर्युक्त से वर्ष 2009 के लिए वेतन सम्बन्धी सभी आवश्यक प्रविष्टियां दीजिये एवं वेतन खाता तैयार कीजिये। (Balance of outstanding salary account show on 1st January 2009 in the books of a trade amounting to Rs. 200. Salaries paid during the year Rs. 55,000. Salary outstanding at the end of the year Rs. 8,000. Pass necessary journal entries relating to salaries for the year 2008 and prepare Salary Account.)

10. 31 दिसम्बर 2008 को डूबत ऋणों के लिए आयोजन का शेष 8,000 रु. था। वर्ष 2008 में डूबत ऋण अपलिखित किये गये 2,000 रु.। इस वर्ष के अंत में 1,000 रु. के डूबत ऋण ओर अपलिखित करने हैं। 2009 वर्ष के अंत में देनदार 51,000 रु. के थे। व्यापारी द्वारा डूबत ऋणों के लिए आयोजन देनदारों पर 5 प्रतिशत की दर से बनाया जाता है। उपर्युक्त सूचनाओं से वर्ष 2009 के लिए डूबत ऋण आयोजन खाता एवं डूबत ऋण खाता तैयार कीजिए तथा मदों को अंतिम खातों में दिखाइए। (On 31st December 2008 Balance of Provision for Bad Debts Account was Rs. 8,000. In the year 2009 Rs. 2,000 bad debts written off. At the end of year Rs. 1,000 is to be written off. At the end of year 2009 Debtors was Rs. 51,000. Trader maintain provision for bad debts @ 5% on Debtors. From the above information prepare provision for bad debts account and bad debts account for the year 2009, and show item in Final Account).

(And. : Balance of Pro. For DD Rs. 2,500 and excess provision Rs. 2,500 transfer to

Profit & Loss A/c)

11. श्री रामनारायण एण्ड सन्स की पुस्तकों से 31 मार्च 2009 को निम्नलिखित तलपट बनाया गया था। (The following Trial Balance was prepared in the books of Shri Ram Naryan & Sons as 31st March, 2009) :–

Name of Accounts	Debit Rs.	Credit Rs.
Drawings & Capital	5,000	1,00,000
Purchases & Sales	68,000	1,50,000
Sundry Debtors	40,000	—
Stock	30,000	—
Returns Inward	3,000	—
Bank Overdraft	—	12,000
Salaries	17,000	—
Office Heating & Lighting	2,000	—
Lease-hold Property	80,000	—
Commission Received	—	2,000
Traveling Expenses	3,000	—
Printing & Stationery	1,000	—
Furniture	9,000	—
Provision for Doubtful Debts	—	4,000
Wages & Freight	10,000	—
	2,68,000	2,68,000

समायोजन प्रविष्टियां करते हुए समायोजित तलपट तैयार कीजिये। (Prepare adjustment entries for the year ending 31st March, 2008 and prepare Adjusted Trial Balance) :

(i) स्कन्ध का मूल्यांकन 15,000 रु. हुआ था। (Stock was valued at Rs. 15,000).

(ii) मजदूरी के अभी तक 1,000 रु. बकाया है। (Wages are still in arrear of Rs. 1,000).

(iii) प्राप्त कमीशन का सिर्फ 75 प्रतिशत काम ही पूरा हुआ है। (Only 75% work is completed of the commission received).

(iv) पट्टधर सम्पत्ति पर 5 प्रतिशत तथा फर्निचर पर 10 प्रतिशत ह्रास लगाइये। (Charge depreciation 5% on Lease-hold property and 10% on Furniture).

(v) देनदारों पर संदिग्ध ऋणों के लिये आयोजन 6 प्रतिशत बनाये रखना है। (Provision for Doubtful Debts is to be maintained @ 6% on Debtors).

(vi) 10,000 रु. में नई मशीन खरीदी तथा उसका भुगतान चैक से किया परन्तु इसके लिए पुस्तकों में कोई प्रविष्टि नही की गई। (A new machinery was purchased for Rs. 10,000 and payment was made by cheque, but no entry had been passed for it in the books).

(vii) 2,000 रु. का वेतन अगले वर्ष से सम्बन्धित है। (Salary Rs. 2,000 is relating to the next year).

(Ans. : Total of adjusted Trial Balance Rs. 2,71,000).

आवंटन (Assignment) :

1. ''रोकड़ बही सहायक पुस्तक तथा खाताबही दोनों है।'' इस कथन की व्याख्या कीजिये। (Cash book is both a journal as well as a ledger. Explain this statement).
2. संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान खाता कैसे बनाया जाता है? इस खाते का क्या उद्देश्य है? इसे चिट्ठे में किस प्रकार दिखाया जाता है? (How is the account relating to provision for doubtful debts kept ? What is the object of this account ? How is it shown in the balance sheet).
3. समायोजन का अर्थ बतलाते हुए इसकी उपयोगिता बतलाइये। (While discussing the meaning of adjustment describe the utility of it).
4. तलपट तथा चिट्ठे में अन्तर स्पष्ट कीजिये। (Distinguish between trial balance and balance sheet).
5. जयश्री एण्ड कम्पनी की तीन खानों वाली रोकड़ बही में निम्नलिखित व्यवहारों को लिखिये। (Enter the following transactions in a three column cash book of Messers Jaishree & Co.)

2009

April 1 हाथ में रोकड़ 500 रु. तथा बैंक शेष 9,570 रु.। (Cash in hand Rs. 500; balance at bank Rs. 9,570)

" 2 एस गोविन्द से 2,000 रु. रोकड़ प्राप्त किये तथा उसे 100 रु. बट्टा दिया। (Received cash from S. Govind Rs. 2,000 and allowed him discount Rs. 100)

" 4 एस. के. बोस को चैक से 700 रु. का भुगतान किया तथा 20 रु. बट्टा प्राप्त किया। (Paid S.K. Bose by cheque Rs. 700, discount received Rs. 20)

" 6 2,000 रु. का माल खरीदा, चैक से भुगतान किया। (Purchased goods for Rs. 2,000 and paid by cheque)

टिप्पणी

" 8 बैंक में जमा कराये। (Deposited with bank) Rs. 2,000

" 10 अतुल घोष को माल बेचा। (Sold goods to Atul Ghosh) Rs. 1,000

" 12 800 रु. का माल बेचा तथा चैक से भुगतान प्राप्त किया। (Sold goods for Rs. 800 and received payment by cheque)

" 14 अतुल घोष से पूर्ण भुगतान में 950 रु. का चैक प्राप्त हुआ। (Received a cheque of Rs. 950 from Atul Ghosh in full settlement of his account)

" 16 कार्यालय प्रयोग के लिए 1,000 रु. बैंक से निकाले तथा 50 रु. किराया रोकड़ चुकाया। (Withdrew from bank for office use Rs. 1,000; paid rent in cash Rs. 50)

" 18 मूलचन्द से 3,000 रु. का माल खरीदा तथा 100 रु. बट्टा काटकर 2,900 रु. का चैक से भुगतान किया। (Purchased goods worth Rs. 3,000 from Mool Chand and paid Rs. 2,900 by cheque after deducting Rs. 100 cash discount)

" 20 टेलीफोन बिल का भुगतान किया। (Paid telephone bill) Rs. 80

" 24 अहमद को चुकाये 584 रु. तथा बट्टा प्राप्त 16 रु.। (Paid Ahmed by cheque Rs. 584; discount received Rs. 16)

" 25 रोकड़ बिक्री (Cash sales) Rs. 1,700

" 26 राबर्ट एन्थोनी से चैक प्राप्त हुआ 380 रु. जिसे बैंक में जमा करवा दिया तथा बट्टा दिया 20 रु.। (Received a cheque from Robert Anthony and deposited into bank Rs. 380; discount allowed Rs. 20)

" 28 कार्यालय प्रयोग के लिऐ पुराना स्कूटर 4,000 रु. में खरीदा, इस राशि का चैक निर्गमित किया। (Purchased an old scootor for office use Rs. 4,000 and issue a cheque for the amount)

" 29 बैंक ने सूचित किया कि राबर्ट एन्थौनी का चैक अप्रतिष्ठित हो गया। (Bank intimated that Robert Anthony's cheque has been dishonoured)

" 30 बैंक में जमा कराये (Deposited with bank) Rs. 500

पास बुक में दर्शाये गये बैंक व्यय (Bank Charges as shown in the pass book) Rs. 6.

[Ans. : Cash balance Rs. 2,570 & bank balance Rs. 2,630]

6. निम्नलिखित व्यवहारों से आवश्यक जर्नल प्रविष्टि दीजिये। (Give necessary journal entries from the following transactions).

(i) व्यापारी ने वर्ष के मध्य में 10,000 रु. की पूंजी लगायी। व्यापारी की पूंजी पर 6 प्रतिशत ब्याज लगाना बाकी है। (Trader introduced Capital Rs. 10,000 in middle of the year. Charging of interest on capital @ 6% is due.).

(ii) बीमा किश्त के 5,000 रु. एक वर्ष के 1 जनवरी, 2009 को चुकाये। लेखा पुस्तकें प्रतिवर्ष 31 मार्च को

बंद की जाती है। (Instalment of insurance paid for one eyar Rs. 5,000 on 1st January, 2009. Books close on 31st March every year).

(iii) वेतन 500 रु. मजदूरी 300 रु. विज्ञापन के 200 रु. अदत्त है। (Salary Rs. 500, Wages Rs. 300 and Advertisement Rs. 200 is outstanding).

(iv) व्यापारी ने 10 प्रतिशत स्थायी जमा में 1 फरवरी, 2009 को 15,000 रु. जमा कराये। लेखा पुस्तकें 31 मार्च 2009 को बन्द की जाती है। (Trader deposit Rs. 15,000 in 10% of fixed deposit on 1st February, 2009. Books close on 31st March, 2009).

(v) व्यापारी ने 10,000 रु. की मशीन 1 अप्रेल, 2009 को उधरी खरीदी। मशीन को स्थापित करने में 300 रु. का माल काम आया एवं 100 रु. मजदूरी के चुकाये। मजदूरी की राशि मजदूरी खाते में नाम लिख दी। (A machinery costing Rs. 10,000 purchased on 1st April, 2009 by trader. Goods used Rs. 300 and paid wages Rs. 100 for installation of machinery; payment of wages debited to wages account).

(vi) उपरोक्त मशीनरी पर 8 प्रतिशत से मूल्य ह्रास लगाइये। (Depreciation charged @ 8% on above machinery).

(vii) 200 रु. कमीशन के अनुपार्जित है। (Unearned Commission Rs. 200).

(viii) एक नये उत्पाद के लिए 500 रु. का माल नमूने के रूप में वितरित किया। (Good valued Rs. 500 distributed as free sample for new product).

(ix) 3,000 रु. का बीमित माल आग से नष्ट हो गया। बीका कम्पनी ने 60 प्रतिशत दावा ही स्वीकार किया। (Insured goods worth Rs. 3,000 destroyed by fire. Insurance Company accepted only 60% claim).

(x) 1,500 रु. विक्रय मूल्य का माल आहरण किया जिसे विक्रय मान लिया। व्यापारी लागत 50 प्रतिशत पर लाभ कमाता है। (Sales value of goods Rs. 1,500 draw by trader treated as sales. Trader earn a profit @ 50% on cost).

7. 31 मार्च 2009 को रमेश की पुस्तकों से निम्नलिखित तलपट प्राप्त किया गया। (The following Trial Balance have been extracted from the books of Mr. Ramesh as on 31st March, 2009) :–

	Rs.
Stock	60,000
Purchases	1,15,000
Sales	1,61,000
Capital	26,000
Creditors	38,590
Returns Inward	6,000

टिप्पणी

टिप्पणी

Loan Taken	15,000
Bills Receivable	2,000
Returns Outwards	5,000
Debtors	25,000
Machinery	11,000
Building	9,900
Rent Paid	3,000
Paid Interest on Loan	1,000
Commission Received	3,710
Provision for Doubtful Debts	2,000
Bad Debts	400
Bank Balance	4,500
Cash Balance	510
Furniture	5,000
Establishment Expenses	8,000
P.F. Deducted from salaries credit	500
Electric charges	490

अन्य सूचनाऐं (Other Information) :

(i) 31 मार्च 2009 को रहतिया 50,000 रु. (Stock Rs. 50,000 on 31st March, 2009).

(ii) ऋण पर बकाया ब्याज 500 रु. (Outstanding interest on Loan is Rs. 500).

(iii) 400 रु. डूबत ऋण के ओर अपलिखित कीजिये तथा संदिग्ध ऋणों के प्रावधान को 2,000 रु. से बढ़ाइये। (Write-off further Bad Debts of Rs. 400 and increase the balance of provision for Doubtful Debts by Rs. 2,000).

(iv) मशीनरी पर 15 प्रतिशत वार्षिक तथा फर्निचर पर 10 प्रतिशत वार्षिक मूल्य ह्रास लगाइये। (Charge depreciation at 15% on Machinery and 10% on Furniture per annum).

(v) भविष्य निधि में नियोक्ता के अंशदान का 1,000 रु. का प्रावधान कीजिये। (Make a provision of Rs. 1,000 for Employer's contribution to Provident Fund).

(vi) मुख्य प्रबंधक को शुद्ध लाभ पर (जो उक्त कमीशन के बाद हो) 10 प्रतिशत कमीशन दिया जाता है। (A commission of 10% on Net Profit (after charging such commission) to be given to the General Manager).

31 मार्च 2009 को समाप्त वर्ष के लिए समायोजित तलपट बनाइये। (Give adjustments entries for the year ending 31st March, 2009 and prepare a adjusted Trial Balance as on that date) :

(Ans. : Total of adjusted Trial Balance Rs. 2,45,370).

8. 31 दिसम्बर 2009 को पेट्रिक की पुस्तकों से निम्नलिखित शेष प्राप्त किये गये। (The following balances were extracted form the Books of Mr. Pratik as on 31st December, 2009).

Particulars	Amount Rs.	Particulars	Amount Rs.
Stock	34,000	Bills Payable	12,000
Purchases	3,70,000	Bank Loan	20,000

Particulars	Amount Rs.	Particulars	Amount Rs.
Sales	5,50,000	Bills Receivable	25,000
Selling Expenses	35,000	Fire Insurance Premium	2,000
Capital	2,50,000	Returns Outward	2,000
Creditor	60,000	Debtors	87,000
Returns Inward	4,000	Machinery	1,00,000
Factory Fuel & Power	16,000	Building	1,40,000
Salaries & Wages	47,000	Bad Debts	2,000
Interest on Bank Loan	2,000	Drawings	30,000
Commission Received	3,000	Cash in Hand	6,000
Provision for Doubtful debts	3,000		

अन्य सूचनाऐं (Other Information) :

(i) 31 दिसम्बर 2009 को रहतिया 49,400 रु. (Stock on 31st December, 2009 was Rs. 49,400).

(ii) उधार क्रय 1,000 रु. तथा उधार विक्रय 3,000 रु. पुस्तकों में लेखांकित नहीं की गई है। (Credit purchases of Rs. 1,000 and Credit Sales of Rs. 3,000 were not recorded in books).

टिप्पणी

(iii) पूर्वदत्त अग्नि बीमा प्रीमियम 500 रु., बैंक ऋण पर बकाया ब्याज 400 रु. तथा उपार्जित कमीशन 1,000 रु. (Fire Insurance Premium is prepaid Rs. 500 Outstanding interest on Bank Loan is Rs. 400 and Accrued Commission is Rs. 1,000).

(iv) देनदारों पर 5 प्रतिशत संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान बनाये रखना है। (Provision for doubtful debts is to be maintained at 5% on Debtors).

(v) प्रति वर्ष ह्रास लगाइये - भवन पर 5 प्रतिशत, मशीनरी पर 10 प्रतिशत (Charge Depreciation - 5% on Building and 10% on Machinery per annum).

(vi) प्रबंधक को शुद्ध लाभ पर 10 प्रतिशत कमीशन जो कि उक्त कमीशन घटाने के बाद आये। (Provide for Manager Commission @ 10% on Net Profit, after charging such Commission).

31 दिसम्बर 2009 का समाप्त होने वाली अवधि का व्यापार खाता, लाभ हानि खाता तथा इसी तिथि का चिट्ठा बनाइये। (Prepare Trading Account, Profit & Loss Account for the year ending 31st December, 2009 and the Balance Sheet on that date).

(Ans. : Gross Profit Rs. 1,79,400, Net Profit Rs. 70,000, Total of Balance Sheet Rs. 3,90,400).

इकाई 3 शिक्षण के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आपको ज्ञात होगा कि -

* शाखा क्या होती है, ये भौगोलिक दृष्टि से एवं नियंत्रण की दृष्टि से कितने प्रकार की होती है।
* नियंत्रित शाखओं की क्या विशेषताऐं होती है तथा मुख्यालय इनका लाभ किन किन विधियों से ज्ञात करता है।
* स्वतंत्र शाखा क्या है तथा मुख्यालय इनके लेखे अपनी बहियों में किन-किन विधियों से शामिल करता है।
* विदेशी शाखा क्या है तथा इसका तलपट देश की मुद्रा में किस प्रकार बदला जाता है।
* विभागीय लेखे क्या है तथा व्यापारी के लिए इनकी क्या उपयोगिता है।
* साझेदारी किसे कहते है तथा विभिन्न परिस्थितियों में साझेदारों में लाभ हानि का विभाजन किस प्रकार होता है।
* जब फर्म की लेखा पुस्तकें बंद कर दी जाय तो पिछले वर्षों के समायोजन साझेदारों के पूंजी खातों में किस प्रकार किये जाते है।
* किसी साझेदार के फर्म में प्रवेश करने पर लेखांकन सम्बंधी कौन कौनसी समस्याऐं उत्पन्न होती है तथा उनका समाधान किस प्रकार किया जाता है।
* किसी साझेदार के अवकाश ग्रहण करने पर लेखांकन सम्बंधी कौन कौनसी समस्याऐं उत्पन्न होती है तथा उनका समाधान किस प्रकार किया जाता है।
* किसी साझेदार की मृत्यु हो जाने पर लेखांकन सम्बंधी कौन कौनसी समस्याऐं उत्पन्न होती है तथा उनका समाधान किस प्रकार किया जाता है।

संरचना (Structure)

३.१ शाखा सम्बंधी लेखों का परिचय

३.१.१ शाखाओं के प्रकार

३.१.१.१ नियंत्रित शाखा का अर्थ एवं विशेषताऐं

३.१.१.१.१ शाखा खाता पद्धति

३.१.१.१.२ रहतिया तथा देनदार पद्धति

३.१.१.१.३ स्मरणार्थ शाखा व्यापार एवं लाभ हानि खाता पद्धति

३.१.१.१.४ थोक तथा फुटकर लाभ की पृथक गणना पद्धति

३.१.१.२ स्वतंत्र शाखा का अर्थ

टिप्पणी

३.१.१.२.१ समायोजन की प्रथम पद्धति

३.१.१.२.२ समायोजन की द्वितीय पद्धति

३.१.१.२.३ समायोजन की तृतीय पद्धति

३.१.२ विदेशी शाखा

३.२ विभागीय खातों का अर्थ

३.२.१ विभागीय लेखे रखने से लाभ

३.२.२ प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष व्ययों का विभाजन

३.२.३ अन्तर विभागीय स्थानान्तरण

३.३ साझेदरी फर्म द्वारा लेखांकन

३.३.१ साझेदरी का अर्थ एवं परिभाषाऐं

३.३.२ साझेदारी फर्म के लाभ का विभाजन

३.३.३ स्पष्ट समझौते के अभाव में फर्म की लेखांकन प्रक्रिया

३.३.४ पूंजी तथा आहरण पर ब्याज सम्बंधी विशिष्ट नियम

३.३.५ साझेदारों को फर्म के लाभ के हिस्से का आश्वासन

३.३.६ स्थायी तथा परिवर्तनशील पूंजी खाते

३.३.७ बन्द लेखा पुस्तकों में समायोजन

३.४ नये साझेदार का प्रवेश

३.४.१ नये साझेदार के प्रवेश पर उत्पन्न होने वाली लेखांकन सम्बंधी समस्याऐं

३.४.१.१ लाभ हानि अनुपात का निर्धारण

३.४.१.२ ख्याति का मूल्यांकन एवं समायोजन

३.४.१.३ सम्पत्तियों तथा दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन

३.४.१.४ संचित लाभों का समायोजन

३.४.१.५ संयुक्त बीमा पॉलिसियों का समायोजन

३.४.१.६ पूंजी का समायोजन

टिप्पणी

३.५ साझेदार की सेवानिवृति

३.५.१ साझेदार के सेवानिवृत होने पर उत्पन्न होने वाली लेखांकन सम्बंधी समस्याऐं

३.५.१.१ नये लाभ हानि अनुपात की गणना

३.५.१.२ ख्याति का समायोजन

३.५.१.३ सम्पत्तियों एवं दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन

३.५.१.४ संचित लाभों का समायोजन

३.५.१.५ जीवन बीमा पॉलिसियों का समायोजन

३.५.१.६ सेवानिवृत होने वाले साझेदार को भुगतान

३.५.१.७ पूंजी का समायोजन

३.६ साझेदार की मृत्यु

३.६.१ साझेदार की मृत्यु होने पर उत्पन्न होने वाली लेखांकन संबंधी समस्याऐं

३.६.१.१ जीवन बीमा पॉलिसियों का लेखांकन

३.६.१.१.१ संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी

३.६.१.१.२ व्यक्तिगत जीवन बीमा पॉलिसी

३.६.१.२ मृतक साझेदार के हिस्से का निबटारा

३.७ स्व मूल्यांकन मापदण्ड

३.१ शाखा सम्बन्धी लेखो का परिचय (Introduction to Accounts Relating to Branches)

एक विकासशील व्यापारिक संस्था द्वारा अपने माल का विक्रय बढ़ाने के लिए एक ही नगर के कई भागों में या विभिन्न नगरों में अतिरिक्त विक्रय केन्द्र खोले जाते है उन्हें शाखाऐं कहते हैं। शाखाऐं खोलने का उद्‌देश्य विक्रय में वृद्धि द्वारा अधिक लाभ कमाने के अतिरिक्त ग्राहकों को अधिक सुविधा प्रदान करना भी हो सकता है। विभिन्न शाखाओं के माध्यम से अर्जित लाभ की पृथक पृथक गणना करने तथा शाखाओं द्वारा किये जाने वाले कार्यों पर समुचित नियन्त्रण रखने के लिए शाखा से सम्बंधित खाते बनाना आवश्यक हो जाता है। भौगोलिक दृष्टि से शाखा कार्यालयों को दो वर्गों में बांटा जा सकता है।

(i) भारतीय शाखाऐं (Indian Branches) (ii) विदेशी शाखाऐं (Foreign Branches)

भारतीय शाखाओं से आशय भारत में खोली गई सहायक इकाइयों से है जिसमें मुख्य कार्यालय भी स्थित होता है। शाखा कार्यालयों द्वारा रखे गये लेखे तथा शाखा के संबंध में मुख्य कार्यालय में रखे गये लेखे, शाखा द्वारा किये जाने वाले कार्यों तथा उन्हें सौंपे गये अधिकारों पर निर्भर करते हैं। कुछ शाखाऐं केवल मुख्य कार्यालय से प्राप्त माल बेचने का ही काम करती हैं; जबकि कुछ अन्य शाखाऐं स्वतन्त्र रूप से खरीद बिक्री का काम भी कर सकती हैं। ऐसी शाखाऐं मुख्य कार्यालय द्वारा निर्मित या प्रेषित माल के अतिरिक्त स्वनिर्मित या अन्य निर्माताओं से खरीदा हुआ माल भी बेचती हैं। इस प्रकार कुछ शाखाओं की कार्य पद्धति पूर्णतया मुख्य कार्यालय द्वारा नियंत्रित रहती है जबकि कुछ शाखाऐं अपनी नीति स्वयं निर्धारित करती हैं।

३.१.१ शाखाओं के प्रकार (Types of Branches)

मुख्य कार्यालय तथा शाखा के सम्बन्धों के आधार पर लेखांकन की दृष्टि से शाखाओं को निम्नलिखित श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है - (i) नियंत्रित शाखाऐं (Controlled Branches) (ii) स्वतन्त्र शाखाऐं (Independent Branches)

३.१.१.१ नियन्त्रित शाखा का अर्थ एवं विशेषताऐं (Meaning and Charactertistics of Controlled Branch) :

नियंत्रित शाखा उसे कहते है जिसके व्यापार सम्बंधी समस्त निर्णय मुख्य कार्यालय द्वारा लिये जाते है। ऐसी शाखाओं की निम्नलिखित विशेषताऐं होती है -

(i) माल का प्रदाय (Goods Send) - नियन्त्रित शाखा स्वयं माल नहीं खरीद सकती। उसको माल मुख्य कार्यालय से भेजा जाता है। मुख्य कार्यालय कभी-कभी अपनी सुविधानुसार शाखा को किसी बाह्य पूर्तिकर्त्ता से माल प्राप्त करने का निर्देश भी दे सकता है तथा उसका भुगतान करने का दायित्व मुख्य कार्यालय का ही रहता है। मुख्य कार्यालय माल के साथ दर्शनार्थ बीजक (Proforma invoice) भेजता है। कभी-कभी यह बीजक लागत मूल्य पर

टिप्पणी

बनाया जाता है तथा इस लागत मूल्य पर एक निश्चित प्रतिशत से लाभ जोड़कर विक्रय मूल्य निर्धारित करने का निर्देश शाखा प्रबन्धक को दिया जाता है। अधिकतर दर्शनार्थ बीजक माल की लागत में लाभ जोड़कर बनाये जाते हैं। बीजक में जो लाभ की राशि जोड़ी जाती है उसे लागत पर बढ़ोतरी (Loading) कहते हैं। दर्शनार्थ बीजक में माल लागत से अधिक मूल्य पर दिखाने के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं :-

(अ) लाभ गुप्त रहना - मुख्य कार्यालय ने कितना लाभ कमाया है, यह तथ्य शाखा प्रबन्धक से गुप्त रहता है, क्योंकि शाखा प्रबन्धक को माल की लागत मालूम नहीं होती।

(आ) **विक्रय मूल्य का निर्देश** - दर्शनार्थ बीजक में दिया हुआ मूल्य शाखा प्रबन्धक के लिए निर्देशित विक्रय मूल्य होता है। शाखा प्रबन्धक को माल दर्शनार्थ बीजक में दिये गये मूल्य पर ही बेचना पड़ता है।

(ii) रोकड़ पर विक्रय - शाखा प्रबन्धक को मुख्य कार्यालय से प्राप्त माल अधिकतर रोकड़ पर ही बेचना पड़ता है। यदि मुख्य कार्यालय स्वीकृति दे तो शाखा प्रबन्धक माल उधार भी बेच सकता है।

(iii) निर्धारित विक्रय मूल्य — शाखा प्रबन्धक को माल बीजक मूल्य पर या बीजक मूल्य से अधिक पर बेचना होता है। यदि मुख्य कार्यालय का आदेश माल बीजक मूल्य पर बेचने का ही है तो शाखा प्रबन्धक न तो बीजक मूल्य से कम पर और न ही बीजक मूल्य से अधिक पर माल बेच सकता है।

(iv) राशि का प्रेषण - शाखा के पास रकम नकद बिक्री से प्राप्त होती है तथा यदि माल उधार बेचा है तो ग्राहकों से भी प्राप्त होती है। रकम चाहे नकद बिक्री से प्राप्त हुई हो या ग्राहकों से वह समस्त रकम शाखा प्रबन्धक को मुख्य कार्यालय में भेजनी पड़ती है या मुख्य कार्यालय के बैंक खाते में जमा करवानी पड़ती है।

(v) शाखा के खर्च - शाखा प्रबन्धक प्राप्त रोकड़ में से कोई खर्चा नहीं कर सकता इसलिये शाखा के स्थिर खर्च जैसे - किराया, वेतन इत्यादि तथा फुटकर खर्च के लिये रकम मुख्य कार्यालय से प्राप्त होती है। मुख्य कार्यालय समय समय पर फुटकर खर्च के लिए अग्रिम तथा शाखा के स्थिर खर्चों के लिए चैक भेजता है।

नियन्त्रित शाखा के हिसाब (Accounting records at a Controlled Branch) : एक नियन्त्रित शाखा के यहां पर निम्नलिखित पुस्तकें रखी जाती हैं :-

(i) रोकड़ तालिका - इसमें रोकड़ बिक्री से तथा ग्राहकों से प्राप्त रोकड़ राशियां डेबिट की जाती हैं तथा मुख्य कार्यालय को भेजी गई रोकड़ क्रेडिट की जाती है।

(ii) फुटकर व्यय का हिसाब - मुख्य कार्यालय से फुटकर खर्च के लिए अग्रिम राशि प्राप्त होती है तथा जो फुटकर खर्च शाखा में किये गये हैं उनका पूरा हिसाब शाखा प्रबन्धक को रखना पड़ता है।

(iii) विक्रय तालिका - यदि शाखा पर उधार माल बेचा जाता है तो विक्रय खाताबही रखी जाती है। इसमें प्रत्येक ग्राहक का एक खाता रखा जाता है।

(iv) माल तालिका - शाखा पर एक रहतिये का रजिस्टर रखा जाता है। इसमें प्रत्येक प्रकार का माल जो कि मुख्य कार्यालय से प्राप्त होता है उसका एक खाता रखा जाता है। यह लेखा साधारणतया माल की मात्रा (Quantity) में

टिप्पणी

ही रखा जाता है। इसमें लेखा अवधि के प्रारम्भ में शेष माल जो शाखा के पास था, चालू अवधि में जो माल प्राप्त हुआ है, जो माल बेच दिया गया है तथा जो बच गया है इन सबके बारे में पूर्ण विवरण लिखा जाता है। प्रत्येक मास के अन्त में या अन्य किसी तिथि को जो कि मुख्य कार्यालय द्वारा निर्धारित की जाती है शाखा द्वारा मुख्य कार्यालय को निम्नलिखित पत्रक तैयार करके भेजे जाते है :-

(i) **रकम भेजने का पत्रक** (Statement of Remittances) – इस पत्रक में शाखा द्वारा गत मास में भेजी गई विभिन्न रकमों का विवरण होता है। मुख्य कार्यालय इस पत्रक से शाखा से प्राप्त हुई विभिन्न रकमों का मिलान कर लेता है।

(ii) **रहतिया का पत्रक** (Statement of Stock) – इसमें प्रत्येक प्रकार के माल के लिए निम्नलिखित तथ्य दिये हुए होते हैं। (अ) माल का प्रारम्भिक शेष। (आ) स्वयं मुख्य कार्यालय से या उसके निर्देश पर प्राप्त माल। (इ) बेचा गया माल। (ई) नष्ट हो गया या खोया हुआ माल जिसको अपलिखित करने के लिये मुख्य कार्यालय से अनुमति ले ली है। (उ) माल का अन्तिम शेष।

नियन्त्रित शाखा के बारे में मुख्य कार्यालय में लेखे (Accounting records at a Head Office regarding a controlled branch): मुख्य कार्यालय प्रत्येक शााखा का लाभ ज्ञात करना चाहता है। मुख्य कार्यालय द्वारा शाखा से हुए लाभ को ज्ञात करने के लिये लेखे रखने की निम्नलिखित चार पद्धतियां अपनाई जाती हैं :-

(1) शाखा खाता पद्धति (Branch Account Method)

(2) रहतिया तथा देनदार पद्धति (Stock and Debtors Method)

(3) स्मरणार्थ शाखा व्यापार तथा लाभ हानि खाता पद्धति (Memorandum Branch Trading and Profit & Loss Account Method)

(4) थोक व्यापार का लाभ तथा फुटकर व्यापार का लाभ पृथक-पृथक ज्ञात करने की विधि (Distinction between wholesale & retail profit Method.)

३.१.१.१.१ शाखा खाता पद्धति (Branch Account Method)

मुख्य कार्यालय की बहियों में प्रत्येक शाखा के लिए एक अलग खाता खोला जाता है। इस शाखा खाते के द्वारा शाखा से होने वाले लाभ या हानि ज्ञात किये जाते हैं। इस खाते को बनाने के लिये मुख्य कार्यालय अपनी बहियों में शाखा तथा मुख्य कार्यालय के बीच के व्यवहारों का लेखा ही करता है। शाखा तथा तीसरे पक्ष के बीच हुए व्यवहारों का लेखा मुख्य कार्यालय की बहियों में नहीं किया जाता है। इस विधि में मुख्य कार्यालय की बहियों में निम्नलिखित प्रविष्टियाँ की जाती हैं:-

(1) मुख्य कार्यालय द्वारा शाखा को माल भेजने पर -

Branch Account Dr. [Invoice Price]

To Goods sent to Branch A/c

(Being goods sent to branch)

उपरोक्त प्रविष्टि लागत मूल्य पर या लाभ सहित दर्शनार्थ बीजक मूल्य (लागत में लाभ जोड़कर) पर की जाती है।यदि मुख्य कार्यालय के आदेशानुसार शाखा ने माल किसी बाह्य पक्ष से प्राप्त किया हो तो उपरोक्त प्रविष्टि में शाखा को प्रेषित माल खाते (Goods sent to Branch Account) के स्थान पर उक्त माल के पूर्तिकर्त्ता को जमा किया जावेगा। इसके विपरीत यदि मुख्य कार्यालय ने माल का नकद भुगतान कर दिया हो तो पूर्तिकर्त्ता के स्थान पर नकद को जमा किया जायेगा।

(2) यदि शाखा ने माल मुख्य कार्यालय को वापिस लौटा दिया है तो लौटाये गये माल के लागत मूल्य या बीजक मूल्य पर (जैसी उपरोक्त (1) प्रविष्टि की गई है) निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है :-

Goods sent to Branch A/c Dr. [Invoice price]

To Branch A/c

(Being goods returned by branch)

स्पष्टतः शाखा कार्यालय द्वारा किसी बाह्य पक्ष से प्राप्त माल को लौटाया गया हो तो मुख्य कार्यालय (Goods sent to Branch Account) के स्थान पर उक्त बाह्य पूर्तिकर्त्ता को लागत मूल्य पर नाम (Dr.) करेगा।

(3) शाखा के द्वारा रोकड़ विक्रय की रकम मुख्य कार्यालय को भेजने पर -

Bank A/c Dr.

To Branch A/c

(Being cash received for cash sales)

(4) शाखा द्वारा किये गये उधार विक्रय का मुख्य कार्यालय की बहियों में कोई लेखा नहीं होता है क्योंकि यह व्यवहार शाखा व उसके ग्राहकों के साथ है। मुख्य कार्यालय व शाखा के बीच का यह व्यवहार नहीं है।

(5) शाखा द्वारा ग्राहकों से प्राप्त रकम मुख्य कार्यालय को भेजने पर -

Bank A/c Dr.

To Branch A/c

(Being cash collected from branch debtors)

(6) शाखा के ग्राहकों द्वारा माल को वापिस शाखा को लौटा देना, शाखा द्वारा ग्राहकों को छूट, कटौती व शाखा के ग्राहकों से अप्राप्य ऋण की मुख्य कार्यालयों की बहियों में कोई प्रविष्टि नहीं होती है। यदि शाखा के ग्राहक द्वारा माल सीधे मुख्य कार्यालय को लौटा दिया जाता है तो जर्नल प्रविष्टि उपरोक्त (2) की भांति ही की जावेगी।

(7) मुख्य कार्यालय द्वारा शाखा को फुटकर खर्च के लिए अग्रिम के रूप से राशि भेजना अथवा शाखा के स्थिर खर्चों के लिए चैक भेजना -

Branch A/c Dr.

To Bank/Cash A/c

(Being cash/cheque sent for petty cash and other expenses)

टिप्पणी

(8) प्राप्त अग्रिम में से शाखा द्वारा खर्चे चुकाना - इसके लिये मुख्य कार्यालय की बहियों में कोई लेखा नहीं होता है क्योंकि यह मुख्यालय व शाखा के बीच का व्यवहार नहीं है।

(9) मुख्य कार्यालय द्वारा शाखा को फर्नीचर या अन्य उपकरण भेजना - यदि फर्नीचर या उपकरण नया खरीद कर भेजा जाय-

Branch A/c Dr.

To Cash/Bank/Supplier Firm A/c

(Being asset purchased and sent for use at branch)

यदि मुख्य कार्यालय अपने पास विद्यमान उपकरणों में से भेजे तो -

Branch A/c Dr.

To Furniture/Fixture/Office Appliances A/c

(Being asset sent to branch for use there)

शाखा द्वारा अपनी स्थायी सम्पत्तियों पर ह्रास लगाने की मुख्य कार्यालय की बहियों में कोई लेखा नहीं किया जाता है। शाखा खाते से लाभ ज्ञात करने के लिए वर्ष के अन्त में निम्नलिखित समायोजन करने आवश्यक हैं :-

(i) शाखा को भेजे गये माल के संबंध में दर्शनार्थ बीजक लागत पर बनाया गया हो तो किसी समायोजन की कोई आवश्यकता नहीं होती। इसके विपरीत यदि दर्शनार्थ बीजक लागत में लाभ जोड़कर बनाया गया हो तो उसमें विद्यमान लाभ या बढ़ोतरी (loading) का प्रभाव कम करने के लिए निम्नलिखित समायोजन प्रविष्टि की जाती है :-

Goods sent to Branch A/c Dr.

To Branch A/c[Loading on goods received by branch cancelled]

(Being loading on goods sent to branch)

(ii) यदि शाखा या शाखा के ग्राहकों द्वारा सीधे मुख्य कार्यालय को माल लौटाया गया हो तो इसमें सम्मिलित बढ़ोतरी (loading) के प्रभाव को कम करने के लिए उपरोक्त की ठीक विपरीत समायोजन प्रविष्टि की जानी चाहिए। इसका एक वैकल्पिक रूप यह भी हो सकता है कि मुख्य कार्यालय द्वारा भेजे गये कुल माल में से शाखा तथा ग्राहकों द्वारा मुख्य कार्यालय को लौटाया गया माल घटाकर शुद्ध राशि के संबंध में ही समायोजन किया जाए। शाखा को भेजे गये माल खाते (Goods sent to Branch Account) का शेष अब शाखा को भेजे गये माल की लागत पर रह जावेगा जिसको व्यापार खाते (Trading Account) में हस्तांतरित कर दिया जाता है।

Goods sent to Branch A/c Dr.

To Trading A/c

(Being balance of goods-sent to branch account transferred to trading account)

(iii) शाखा के पास वर्ष के अन्त में निम्नलिखित सम्पत्तियां विद्यमान रहती हैं -

(1) Branch Stock at Invoice price Or on cost in case of direct purchases (2) Branch Debtors

(3) Branch Petty Cash and Prepaid Expenses.

(4) Furniture or other appliances at depreciated value (After charging current year depreciation)

इन सम्पत्तियों को मुख्य कार्यालय की बहियों में सम्मिलित करने के लिये निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है :-

Branch Stock A/c Dr. (Invoice price)

Branch Debtors A/c Dr.

Branch Petty Cash A/c Dr.

Branch Prepaid Expenses A/c Dr.

Branch Furniture A/c Dr.

To Branch Account

(Being incorporation of Branch Assets in Head Office books)

नोट :- कई बार प्रश्नों में वर्ष के अंतिम दिन के शाखा के देनदार दिये हुए नहीं होते हैं। इस परिस्थिति में स्मरणार्थ शाखा देनदार खाता (Memorandum Branch Debtors Account) बनाकर इन्हें ज्ञात करते हुए लेखों में सम्मिलित करना पड़ता है। इसी प्रकार कभी कभी लेखा अवधि की अंतिम तिथि को शाखा के पास बचे हुए माल की गणना भी करनी पड़ सकती है, यदि प्रश्न में यह जानकारी उपलब्ध न हो। इसके लिये माल में होने वाली छीजत को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

(iv) शाखा का रहतिया मुख्य कार्यालय की बहियों में बीजक मूल्य पर लिया जाता है, परन्तु स्थिति विवरण में रहतिया लागत से अधिक पर नहीं दिखाया जा सकता है, इसलिये रहतिये के मूल्य में लागत से ज्यादा जो लाभ या बढ़ोतरी (Loading) सम्मिलित है उसके लिए स्कंध संचिति खाता (Stock Reserve Account) बनाया जाता है।

Branch A/c Dr.

To Branch Stock Reserve A/c

(Being stock reserve created for loading included in the invoice value of the stock)

नोट :- चूंकि मुख्य कार्यालय के आदेश के अनुसार अन्य पूर्तिकर्ताओं से प्राप्त माल का लेखा लागत पर ही किया जाता है अतः उसके अवशिष्ट रहतिये पर स्कंध संचय का समायोजन करने की आवश्यकता नहीं होती। उपरोक्त प्रविष्टियां तथा समायोजन करने के पश्चात् यदि शाखा खाते का जमा पक्ष भारी है तो लाभ और यदि नाम पक्ष भारी है तो हानि है। शाखा खाते द्वारा दर्शाये गये लाभ या हानि को मुख्यालय के लाभ हानि खाते में हस्तान्तरित कर देते हैं।

(v) यदि शाखा खाता लाभ दर्शाता है तो -

Branch A/c Dr.

To Profit and Loss A/c

(Being profit shown by Branch account transferred to Profit and Loss account)

(आ) यदि शाखा खाता हानि दर्शाता है तो -

Profit and Loss A/c Dr.

To Branch A/c

टिप्पणी

(Being loss shown by Branch account transferred to Profit and Loss account)

प्रत्येक वर्ष के अंत में ये खाते मुख्य कार्यालय की बहियों में खोले जाते हैं तथा अगले वर्ष की पहली तारीख को ही ये सम्पत्ति खाते के नाम शेष शाखा खाते में निम्नलिखित प्रविष्टि द्वारा हस्तान्तरित कर दिये जाते हैं :-

Branch A/c Dr.

To Branch Stock A/c

To Branch Debtors A/c

To Branch Petty Cash A/c

To Branch Prepaid Exp. A/c

To Branch Furniture and Assets A/c

(Being branch assets transferred to branch account)

प्रत्येक वर्ष के अंत में हिसाब बन्द करते समय गत वर्ष से आगे लाया गया शाखा स्कन्ध संचय खाते (Branch Stock Reserve Account) का जमा शेष भी शाखा खाते (Branch Account) में हस्तान्तरित कर दिया जाता है।

Branch Stock Reserve Account Dr.

To Branch Account

(Being opening balance of Stock Branch Reserve Account transferred to branch account)

एक मुख्य कार्यालय की बहियों में एक पुरानी शाखा के खाते का प्रारूप नीचे दिया गया है।

Dr. Branch Account **Cr.**

		Rs.			Rs.
	To Branch Stock A/c	Invoice Price		By Goods sent to Branch A/c (Returns)	Invoice Price
	To Branch Debtors A/c				
	To Branch Petty Cash A/c			By Bank A/c : Cash Sales	
	To Branch Furniture A/c			Received from Debtors	
	To Goods sent to Branch A/c	Invoice Price		By Branch Stock A/c	Invoice Price
	To Creditors/Bank A/c			By Branch Debtors A/c	
	(Direct purchase under			By Branch Petty Cash A/c	
	instructions of H.O.)			By Branch Furniture A/c	
	To Cash/Bank/Furniture A/c			By Goods sent to Branch A/c	Net Loading
	To Bank A/c (Expsenses)			By Branch Stock Reserve A/c	

	To Branch Stock Reserve A/c (Closing stock) To P&L A/c (if any) (Profit transferred)			(Opening Stock) By P&L A/c (if any) (Loss transferred)	

टिप्पणी

यदि मुख्य कार्यालय द्वारा शाखा को भेजे गये माल का बीजक लागत पर ही बनाया गया हो तो उपरोक्त शाखा खाते (Branch Account) में बढोतरी के (loading) समायोजनों की प्रविष्टियां नहीं की जावेंगी।

उदाहरण (Illustration) : १(जब शाखा को माल लागत मूल्य पर भेजा जाता है) :

निम्नांकित जानकारी से लाभ हानि की गणना करते हुए आवश्यक खाते बनाइये। अन्तिम रहतिये की गणना नहीं की जा सकी परन्तु यह ज्ञात है कि शाखा कार्यालय लागत में 20 प्रतिशत जोड़कर माल का विक्रय करता है। शाखा प्रबन्धक वर्ष के लाभ (कमीशन की गणना से पूर्व) पर 5 प्रतिशत कमीशन प्राप्त करने का अधिकारी है। (Prepare necessary Accounts while calculating the Profit or Loss from the following particulars. Closing stock could not be calculated but it is known that the Branch sells the goods by adding 20% profit on the cost price. The Branch Manager is entitled to 5% Comission on the annual profit before charging this commission).

Opening stock at the branch Rs. 30,000, Goods sent to branch Rs. 90,000, Sales (all cash) Rs. 1,20,000, Expenses paid by H.O. : Salaries Rs. 10,000, other expenses Rs. 4,000.

हल (Solution) :

Head Office Journal

Date	Particulars	L.F.	Rs.	Rs.
	Branch A/c Dr.		30,000	
	To Stock at Branch A/c			30,000
	(Being opening Stock at Branch)			
	Branch A/c Dr.		90,000	
	To Goods sent to Branch A/c			90,000
	(Being Goods sent to Branch at cost)			
	Cash/Bank A/c Dr.		1,20,000	
	To Branch A/c			1,20,000
	(Being remittance received from Branch)			
	Branch A/c Dr.		14.000	
	To Bank A/c			14,000
	(Being expenses at Branch paid by us)			
	Branch A/c Dr.		300	
	To Outstanding Manager's Commission A/c			300

टिप्पणी

Date	Particulars		L.F.	Rs.	Rs.
	(Being Commission payable to Manager)				
	Stock at Branch A/c	Dr.		20,000	
	To Branch A/c				20,000
	(Being closing stock at Branch)				
	Branch A/c	Dr.		5,700	
	To Profit and Loss A/c				5,700
	(Being Branch Profit transferred)				
	Goods sent to Branch A/c	Dr.		90,000	
	To Trading A/c				90,000
	(Being goods sent to branch account transferred)				

Branch Account

		Rs.		Rs.
	To Stock at Branch A/c	30,000	By Bank A/c	1,20,000
	To Goods sent to Branch A/c	90,000	(Cash Sales)	
	To Bank A/c (Expenses)		By Stock at Branch A/c	20,000
	Rs.			
	Salaries 10,000			
	Others 4,000	14,000		
	To Manager's Commission payable	300		
	To Profit & Loss A/c	5,700		
		1,40,000		1,40,000

Working Notes : Rs.

(i) Calculation of Closing Stock

	Rs.
Opening Stock at Branch	30,000
Add : Goods Sent	90,000
	1,20,000
Less : Cost of goods sold for Cash Rs. 1,20,000 x $\frac{100}{120}$ =	1,00,000
Closing Stock at Branch	20,000

(ii) Calculation of Manager's Commission — Rs.

Total of Credit side of Branch A/c — 1,40,000

Less : Total of Dr. side of Branch A/c before writing off Commission 1,34,000

6,000

Commission being 5% of profit will be Rs. 6,000 x $\frac{5}{100}$ =300

उदाहरण (Illustration) : २ (जब शाखा को माल बीजक मूल्य पर भेजा जाता है) :

एक मुख्य कार्यालय ने अपनी शाखा को विक्रय मूल्य पर 74,000 रु. का बीजक बनाकर माल भेजा जिसका निर्धारण लागत में 331/3% जोड़कर किया गया। शाखा द्वारा उधार व रोकड़ विक्रय क्रमशः 31,000 रु. व 17,000 रु. के किये गये। शाखा ने मुख्यालय को 2,000 रु. बीजक मूल्य का माल लौटाया तथा अपने ग्राहकों द्वारा लौटाया गया 1,000 रु. वि. मू. का माल प्राप्त किया। शाखा ने ग्राहकों को 1,200 रु. का बट्टा दिया तथा मुख्यालय को नकद बिक्री व ग्राहकों से प्राप्त राशि पेटे 38,600 रु. भेजे। शाखा के पास प्रारम्भिक तथा अन्तिम रहतिया बीजक मूल्य पर क्रमशः 15,000 रु. तथा 39,000 रु. का था। शाखा के प्रारम्भिक व अन्तिम देनदार क्रमशः 12,000 रु. तथा 19,200 रु. के थे। 1,000 रु. बीजक मूल्य के माल की छीजत आंकी गई। मुख्यालय की बहियों में शाखा खाता तथा शाखा को प्रेषित माल का खाता बनाइये।

(A head office consigned goods to branch at selling price invoicing the same at Rs. 74,000 determined at cost plus 331/3%. Credit and Cash Sales at the branch were Rs. 31,000 and Rs. 17,000 respectively. The branch returned to H.O. goods worth Rs. 2,000 at I.P. and received goods returned by customers Rs. 1,000 at selling price. Branch allowed to customers discount Rs. 1,200 and sent Rs. 38,600 to head office in respect of cash sales and collection from Debtors The branch had opening and closing stock at I.P. at Rs. 15,000 and Rs. 39,000 respectively. The Opening and the Closing Debtors at the branch were Rs. 12,000 and Rs. 19,200 respectively. Loss of goods through spoilage was recknowed at Rs. 1,000 (I.P.) Prepare Branch Account and Goods Sent to Branch Account in H.O. Books).

हल (Solution) :

Branch Account

			Rs.					Rs.
	To Branch Stock A/c		15,000		By Cash A/c	Rs.		
	To Branch Debtors A/c		12,000		Cash Sales	17,000		
	To Goods Sent to Branch A/c		74,000		Recd. from Debtors			
	To Branch Stock Reserve A/c		9,750		Rs (38,600 – 17,000)	21,600		38,600
	To Profit & Loss A/c		9,800		By Goods Sent to Branch A/c (Return)			2,000

			Rs.				Rs.
					By Branch Stock A/c		39,000
					By Branch Debtors A/c		19,200
					By Branch Stock Reserve A/c		3,750
					By Goods Sent to Branch A/c (Loading)		18,000
			1,20,550				1,20,550

Goods Sent to Branch Account

			Rs.				Rs.
	To Branch A/c		2,000		By Branch A/c		74,000
	To Branch A/c		18,000				
	To Trading A/c		54,000				
			74,000				74,000

Memorandum Branch Debtors Account

			Rs.				Rs.
	To Opening Balance		12,000		By Returns by Debtors to Branch A/c		1,000
	To Credit Sales A/c		31,000		By Discount A/c		1,200
					By Cash A/c (Balancing Figure)		21,600
					By Balance c/d		19,200
			43,000				43,000

३.१.१.१.२ रहतिया तथा देनदार पद्धति (Stock and Debtors Method)

इस विधि का प्रयोग तभी करना उचित है जबकि शाखा प्रबन्धक के लिए माल बीजक मूल्य पर ही बेचना आवश्यक होता है। शाखा प्रबन्धक माल, न तो बीजक मूल्य से कम पर और न ही बीजक मूल्य से अधिक पर बेच सकता है। इस पद्धति में शाखा खाता नहीं खोला जाता बल्कि निम्नलिखित खाते खोले जाते हैं :-

(1) शाखा रहतिया खाता (Branch Stock Account)

(2) शाखा देनदार खाता (Branch Debtors Account)

(3) शाखा फुटकर रोकड़ खाता [Branch Petty Cash Account (if any)]

(4) शाखा स्कन्ध संचय खाता (Branch Stock Reserve Account)

(5) शाखा खर्च खाता (Branch Expenses Account)

(6) शाखा को भेजे गये माल का खाता (Goods Sent to Branch Account)

(7) शाखा समायोजन खाता (Branch Adjustment Account)

स्कन्ध एवम् देनदार पद्धति के अन्तर्गत रोजनामचे में प्रविष्टियां : स्कंध एवं देनदार पद्धति में शाखा के समस्त व्यवहारों की प्रविष्टियां मुख्य कार्यालय की बहियों में की जाती हैं। व्यवहार चााहे शाखा तथा मुख्य कार्यालय के बीच हो चाहे शाखा और किसी अन्य पक्षकार के बीच हो, इस पद्धति में समस्त व्यवहारों का लेखा मुख्य कार्यालय की बहियों में किया जाता है। विभिन्न व्यवहारों के लिए निम्नलिखित प्रविष्टियां की जाती है -

1) मुख्य कार्यालय द्वारा शाखा को बीजक मूल्य पर माल भेजने पर -

Branch Stock A/c Dr. (At Invoice Price or cost)

To Goods Sent to Branch A/c

(Being goods sent to branch)

(2) शाखा कार्यालय द्वारा मुख्य कार्यालय को माल वापिस लौटाने पर,

Goods Sent to Branch A/c Dr. (At Invoice Price or cost)

To Branch Stock A/c

(Being goods returned by branch)

(3) शाखा द्वारा रोकड़ विक्रय करने पर जिसकी रकम रोजाना मुख्य कार्यालय को भेजने पर-

Bank A/c Dr.

To Branch Stock A/c

(Being cash received for cash sales at branch)

(4) शाखा द्वारा ग्राहकों को उधार माल बेचने पर -

Branch Debtors A/c Dr.

To Branch Stock A/c

(Being cradit sales made by branch)

(5) शाखा द्वारा ग्राहकों से रकम प्राप्त करके मुख्य कार्यालय को भेजने पर -

Bank Account Dr.

To Branch Debtors A/c

टिप्पणी

(Being cash received from Branch Debtors at branch)

(6) शाखा के ग्राहकों द्वारा शाखा को माल लौटाये जाने पर -

Branch Stock A/c Dr.

To Branch Debtors A/c

(Being goods returned by branch customers)

(7) शाखा के ग्राहकों द्वारा सीधा मुख्य कार्यालय को माल लौटाने पर -

Goods Sent to Branch A/c Dr.

To Branch Debtors A/c

(Being goods returns by branch debtors directly to H.O.)

(8) मुख्य कार्यालय के आदेशानुसार विक्रय मूल्य में शाखा द्वारा कटौती करने पर -

Goods sent to Branch A/c Dr.

To Branch Stock A/c

(Being reduction is S.P. made by H.O.)

(9) शाखा प्रबन्धक अपने ग्राहकों को छूट व कटौती देता है तथा शाखा के ग्राहकों से ऋण अप्राप्य हो जाता है तो यह हानियां शाखा खर्च खाते में लिखी जाने पर -

Branch Expenses A/c Dr.

To Branch Debtors A/c

(Being discount allowed and bad debts at branch)

(10) मुख्यालय द्वारा शाखा को वेतन, किराया व कर चुकाने के लिए चैक भेजने पर -

Branch Expenses A/c Dr.

To Bank A/c

(Being cheque sent for Branch expenses)

(11) मुख्यालय द्वारा शाखा को खुदरा रोकड़ के लिए चैक भेजने पर -

Branch Petty Cash A/c Dr.

To Bank A/c

(Being cheque sent for petty expenses)

टिप्पणी

(12) खुदरा रोकड़ में से शाखा द्वारा फुटकर खर्च चुकाने पर –

Branch Expenses Account Dr.

To Branch Petty Cash A/c

(Being expenses paid out of petty cash)

समायोजन (Adjustments)

(i) शाखा के पास बचे हुए माल का अन्तिम शेष जो माल की भौतिक गणना से ज्ञात हुआ है शाखा रहतिया खाते के जमा पक्ष में लिख दिया जाता है।

यदि शाखा रहतिया खाते का जमा पक्ष भारी है तो अन्तर की राशि ''आधिक्य'' (Surplus) है जिसको कि शाखा समायोजन खाते में निम्नलिखित प्रविष्टि से हस्तान्तरित कर देते हैं :-

Branch Stock A/c Dr.

To Branch Adjustment A/c

(Being surplus transferred to Branch Adjustment Account)

इसके विपरीत यदि शाखा रहतिया खाते का नाम पक्ष भारी है तो अन्तर की राशि 'कमी' (Shortage) को भी निम्नलिखित प्रविष्टि द्वारा शाखा समायोजन खाते में हस्तान्तरित कर देते हैं –

Branch Adjustment A/c Dr.

To Branch Stock A/c

(Being shortage transferred to Branch Adjustment Account)

(ii) शाखा का स्कंध संचय (Branch Stock Reserve) – शाखा स्कंध संचय खाते का प्रारम्भिक शेष शाखा स्कंध समायोजन खाते में हस्तान्तरित कर दिया जाता है –

Branch Stock Reserve A/c Dr.

To Branch Adjustment A/c

(Being opening balance of Branch stock reserve transferred)

शाखा का अन्तिम रहतिया भी बीजक मूल्य पर है जो कि लागत से अधिक है। अतः अन्तिम रहतिये के मूल्य में जुड़ी वृद्धि के लिए शाखा स्कंध संचय का प्रावधान निम्नलिखित प्रविष्टि से बनाया जाता है –

Branch Adjustment A/c Dr.

To Branch Stock Reserve A/c

(Being Stock Reserve created for loading included in closing stock)

(iii) शाखा ने वापसी घटाने के बाद जो शुद्ध माल प्राप्त किया है उसमें भी लागत पर वृद्धि सम्मिलित है। इस वृद्धि को शाखा समायोजन खाते में निम्नलिखित प्रविष्टि द्वारा हस्तान्तरित कर देते हैं –

टिप्पणी

Goods Sent to Branch A/c Dr.

To Branch Adjustment A/c

(Being loading on Goods sent to Branch transferred to Branch Adjustment Account)

इस प्रविष्टि के पश्चात् शाखा को भेजे गये माल खाते का शेष निम्नलिखित प्रविष्टि द्वारा व्यापार खाते में हस्तान्तरित किया जाता है –

Goods Sent to Branch A/c Dr.

To Trading A/c

(Being balance of goods sent to branch account transferred)

(iv) शाखा खर्च खाते का शेष निम्नलिखित प्रविष्टि द्वारा शाखा समायोजन खाते में हस्तान्तरित किया जाता है –

Branch Adjustment A/c Dr.

To Branch Expenses A/c

(Being balance of branch expenses account transferred)

(v) अब यदि शाखा समायोजन खाते का जमा पक्ष भारी है तो लाभ है अतः प्रविष्टि निम्नलिखित होगी –

Branch Adjustment A/c Dr.

To P&L A/c

(Being of branch profit transferred)

यदि शाखा समायोजन खाते का नाम पक्ष भारी है तो हानि है अतः प्रविष्टि निम्नलिखित होगी –

Profit and Loss A/c Dr.

To Branch Adjustment A/c

(Being branch loss transferred)

उदाहरण (Illustration) : 3

आगरा जनरल स्टोर की एक शाखा जयपुर में है। शाखा को माल विक्रय मूल्य पर भेजा जाता है जो लागत मूल्य से 25 प्रतिशत अधिक होता है। शाखा अपनी विक्रय खाताबही रखती है और नकद प्राप्तियों को स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर में खोले गये प्रधान कार्यालय के खाते में प्रति दिन जमा करा देती है। समस्त खर्च आगरा से चैक द्वारा चुकाये जाते हैं। निम्नलिखित विवरण से प्रधान कार्यालय की पुस्तकों में शाखा स्टॉक खाता, शाखा देनदार खाता, शाखा खर्च खाता, शाखा समायोजन खाता और शाखा स्टॉक संचय खाता बनाइये – (Agra General Stores operate a branch at Jaipur. Goods are sent to branch at selling price which is cost plus 25%. Branch maintains its Sales Ledger and deposits cash receipts in the H.O. Account opened at the State Bank of Bikaner and Jaipur daily. All the expenses are paid by Agra vide cheques. From

the following particulars, prepare Branch Stock Account, Branch Debtors Account, Branch Expenses Account. Branch Adjustment Account and Branch Stock Reserve Account).

Opening balances : Stock Rs. 2.500 (I.P.) Debtors Rs. 1,400, Closing balances : Stock Rs. 2,900 I.P., Debtors Rs. 1,250, Cash sales Rs. 10,800, Credit sales Rs. 7,000, Cash received on Ledger Accounts Rs. 6,600, Discount allowed Rs. 350, Bad debts Rs. 200, goods sent to branch at I.P. Rs. 18,200, Rent, Rates and Taxes paid by H.O. Rs. 160, wages paid by H.O. Rs. 800, Sundry expenses paid by H.O. Rs. 680

हल (Solution) :

Dr. Branch Stock Account Cr.

			Rs.				Rs.
	To Balance b/d		2,500		By Bank A/c (Cash Sales)		10,800
	To Goods sent to Branch A/c		18,200		By Branch Debtors A/c (Cr. Sales)		7,000
					By Balance c/d		2,900
			20,700				20,700

Branch Debtors Account

			Rs.				Rs.
	To Balance b/d		1,400		By Bank A/c		6,600
	To Branch Stock A/c (Sales)		7,000		By Branch Expenses A/c :		
					Rs.		
					Discount 350		
					Bad debts 200		550
					By Balance c/d		1,250
			8,400				8,400

Branch Stock Reserve Account

	Rs.		Rs.
To Branch Adjustment A/c	500	By Balance b/d (2,500 x $\frac{25}{125}$)	500
To Balance c/d (2,900 x $\frac{25}{125}$)	580	By Branch Adjustment A/c	580
	1080		1080

टिप्पणी

Goods sent to Branch Account

			Rs.				Rs.
	To Branch Adjustment A/c (Loading (18,200 x $\frac{25}{125}$)		3,640		By Branch Stock A/c		18,200
	To Trading A/c		14,560				
			18,200				18,200

Branch Expenses Account

			Rs.				Rs.
	To Branch Debtors A/c		550		By Branch Adjustment A/c		2,190
	To Bank A/c : Rs. Rent & Taxes 160 Wages 800 Sundry Exps. 680		1,640				
			2,190				2,190

Branch Adjustment Account

			Rs.				Rs.
	To Branch Expenses A/c		2,190		By Goods sent to Branch A/c (Loading		3,640
	To Branch Stock Reserve A/c (on Closing Stock)		580		By Branch Stock Reserve A/c (on Opening Stock)		500
	To P&L A/c (Net Profit transferred)		1,370				
			4,140				4,140

शाखा समायोजन खाता बनाने का वैकल्पिक तरीका : उपरोक्त विधि से शाखा समायोजन खाता बनाने पर इस खाते से शाखा का शुद्ध लाभ ही ज्ञात होता है। यदि शाखा का सकल लाभ व शुद्ध लाभ अलग-अलग ज्ञात करना हो तो शाखा समायोजन खाते को दो भागों में बांट देते हैं। प्रथम भाग में केवल लागत में वृद्धि से सम्बन्धित प्रविष्टियां ही होती हैं। यह

प्रथम भाग सकल लाभ दर्शाता है जिसे द्वितीय भाग में हस्तान्तरित कर दिया जाता है तथा शेष प्रविष्टियां द्वितीय भाग में करते हैं और शाखा समायोजन खाते का द्वितीय भाग शुद्ध लाभ दर्शाता है। इस उदाहरण के शाखा समायोजन खाते को इस वैकल्पिक पद्धति से बनाया जाय तो इसका निम्नलिखित स्वरूप होगा :-

Branch Adjustment Account

			Rs.				Rs.
	To Branch Stock Reserve A/c		580		By Goods sent to Branch A/c		3,640
	To Gross Profit		3,560		By Branch Stock Reserve A/c		500
			4,140				4,140
	To Branch Expenses A/c		2,190		By Gross Profit		3,560
	To P&L A/c (Net profit trans.)		1,370				
			3,560				3,560

उदाहरण (Illustration) : ४

निम्नलिखित विवरण से शाखा संबंधी आवश्यक खाते रहतिया तथा देनदार पद्धति से बनाओ – (Prepare necessary accounts related to the Branch under the Stock and Debtors Method with the help of the following particulars).

		Rs.
Balance of Stock at I.P. on 01.01.2008		60,000
Goods sent to branch at I.P.		1,26,000
Credit Sales		70,000
Cash Sales		42,000
Returns by Customers		4,000
Returns by Branch to H.O.		6,000
Cash received from Customers		50,000
Discount to Customers		1,800
Bad Debts		200
Cheques sent to branch :	Rs.	
Salary	9,000	
Rent	2,000	11,000
Cheque sent for petty cash		400
Petty expenses out to petty cash		320
Balance of petty cash on 01.01.2008		80
Sundry Debtors on 01.01.2008		80,000
Balance of Stock at I.P. on 31.12.2008		71,700

टिप्पणी

शाखा को माल लागत पर 20% अधिक लगाकर भेजा गया जो कि माल का विक्रय मूल्य भी है। शाखा द्वारा प्राप्त समस्त रोकड़ मुख्य कार्यालय को भेज दी जाती है। शाखा के खर्चे मुख्य कार्यालय द्वारा चैक से चुकाये जाते हैं। (Goods were sent to the Branch after adding 20% on the cost, which is also the selling price for the Branch. Total receipts at the branch are remitted to H.O. Branch expenses are paid by the H.O. by cheques).

हल (Solution) :

Dr. Branch Stock Account Cr.

2008			Rs.	2008			Rs.
Jan.1	To Balance b/d		60,000	Jan.1	By Bank A/c		42,000
Jan.1	To Goods sent to Branch A/c		1,26,000	to	By Branch Debtors A/c		70,000
to	To Branch Debtors A/c		4,000	Dec. 31	By Goods Sent to Branch A/c		6,000
Dec. 31					By Branch Adjustment A/c		
					(Shortage Balancing Figure)		300
					By Balance c/d		71,700
			1,90,000				1,90,000

Dr. Branch Stock Reserve Account Cr.

2008			Rs.	2008			Rs.
Dec.31	To Branch Adjustment A/c		10,000	Jan. 1	By Balance b/d		10,000
"	To Balance c/d		11,950	Dec.31	By Branch Adjustment A/c		11,950
			21,950				21,950

Dr. Branch Debtors Account Cr.

			Rs.				Rs.
2008				2008			
Jan.1	To Balance b/d		80,000	Jan.1	By Branch Stock A/c		4,000
Jan.1	To Branch Stock A/c		70,000	to	By Bank A/c		50,000
to				Dec. 31			

			Rs.				Rs.
Dec. 31					By Branch Expenses A/c :		
					Discount	1,800	
					Bad Debts	200	2,000
					By Balance c/d		94,000
					(Balancing Figure)		
			1,50,000				1,50,000

Dr. **Branch Petty Cash Account** **Cr.**

2008			Rs.	2008			Rs.
Jan.1	To Balance b/d		80	Jan.1	By Branch Exp. A/c		320
Jan.1	To Bank A/c		400	to Dec.31			
to Dec. 31				Dec. 31	By Balance c/d		160
			480				480

Dr. **Branch Expenses Account** **Cr.**

2008			Rs.	2008			Rs.
Jan.1	To Branch Debtors A/c		2,000	Dec. 31	By Branch Adjustment A/c		13,320
to	To Branch Petty Cash A/c		320				
Dec. 31	To Bank A/c		11,000				
			13,320				13,320

Dr. **Goods Sent to Branch Account** **Cr.**

2008			Rs.	2008			Rs.
01.01 to	To Branch Stock A/c		6,000	01.01 to	By Branch Stock A/c		1,26,000
31.12	To Branch Adjustment A/c		20,000	31.12			
Dec. 31	To Trading A/c		1,00,000				
			1,26,000				1,26,000

टिप्पणी

Dr. Branch Adjustment Account Cr.

2008			Rs.	2008			Rs.
Dec. 31	To Branch Stock A/c		300	Dec. 31	By Goods sent to		
	(Shortage)				Branch A/c		20,000
Dec. 31	To Branch Stock			Dec. 31	By Branch Stock		
	Reserve A/c		11,950		Reserve A/c		10,000
Dec. 31	To Branch Exp. A/c		13,320				
Dec. 31	To P&L A/c						
	(Net Profit transferred)		4,430				
			30,000				30,000

Alternatey :

Branch Adjustment Account

2008			Rs.	2008			Rs.
Dec. 31	To Branch Stock A/c			Dec.31	By Goods Sent to		
	(Loading on Shortage)		50		Branch A/c		20,000
				Dec.31	By Branch Stock		
Dec.31	To Branch Stock Reserve A/c		11,950		Reserve A/c		10,000
Dec.31	To Gross Profit c/d		18,000				
			30,000				30,000
Dec. 31	To Branch Stock A/c			Dec. 31	By Gross Profit b/d		18,000
	(Cost on Shortage)		250				
Dec.31	To Branch Expenses A/c		13,320				
Dec.31	To Profit & Loss A/c						
	(Net Profit transferred)		4,430				
			18,000				18,000

३.१.१.१.३ स्मरणार्थ शाखा व्यापार एवं लाभ-हानि खाता पद्धति (Memorandum Branch Trading and Profit and Loss Account Method)

एक मुख्य कार्यालय अपनी शाखा (जिसकी विक्रय नीति मुख्य कार्यालय से पूर्णतया नियन्त्रित है) का लाभ स्मरणार्थ व्यापार एवं लाभ हानि खाता बनाकर भी ज्ञात कर सकता है। इस विधि में प्रारंभिक रहतिया, अन्तिम रहतिया, शाखा को भेजा गया माल तथा शाखा द्वारा वापिस भेजा गया माल लागत पर ही दिखाया जाता है। यदि प्रश्न में उधार विक्रय नहीं दिया गया है तो शाखा देनदार खाता तैयार करके ज्ञात किया जा सकता है। इसके पश्चात शाखा का व्यापार एवम् लाभ हानि खाता बनाकर शाखा का इस विधि के अनुसार सकल लाभ तथा शुद्ध लाभ ज्ञात कर लिया जाता है।

उदाहरण (Illustration) : ५

जयपुर स्थित गुप्ता एण्ड कम्पनी अपनी जोधपुर शाखा को माल का प्रेषण इस आदेश के साथ करती है कि नकद बिक्री बीजक मूल्य पर हो तथा उधार बिक्री सूची मूल्य के आधार पर हो तथा साथ ही शीघ्र भुगतान करने पर 15 प्रतिशत की छूट प्रदान करने की शर्त भी रखी जाय। सूची मूल्य लागत में 50 प्रतिशत जोड़कर बनाई जाती है तथा शाखा को माल सूची मूल्य से 20 प्रतिशत कम पर बीजक बनाकर भेजा जाता है। निम्नलिखित जानकारी के आधार पर शाखा का व्यापारिक एवं लाभ हानि खाता 31.12.2008 को बनाइये ताकि वर्ष के सही लाभ हानि ज्ञात हो सकें। यह भी बताया गया कि वर्ष में माल का कुछ भाग जलकर नष्ट हो गया जो बीजक मूल्य पर बीमित था। इसका मूल्य ज्ञात करना है। वर्ष भर की शीघ्र भुगतान की प्रवृत्ति के आधार पर 31.12.2008 को देनदारों के देय शीघ्र भुगतान की छूट के लिये प्रावधान भी करना है। (Gupta and company of Jaipur consigns goods to its Jodhpur Branch with an advice to affect cash sales at Invice Price and Credit Sales at the List Price with a condition of 15% cash discount for prompt payment. List price is 50% above cost. Invoice to Branch is prepared at 20% less than the List price. Prepare Trading and Profit and Loss Account of the Branch on the basis of the following particulars as on 31.12.2008 to ascertain correct Profit or Loss. It was also stated that a portion of stock was lost by fire which was insured at Invoice Price. Value of this is tobe calculated. A provision for cash discount tobe allowed to Debtors as on 31.12.2008 is also to be made on the basis of the tendency of prompt payment during the year).

Opening Balances :– Stock Rs. 36,000 (I.P.); Debtors Rs. 30,000; Goods received from H.O. Rs. 3,96,000 (I.P.); Sales : Cash Rs. 1,38,000; Credit Sales Rs. 3,00,000; Cash realized from Debtors Rs. 2,56,905; Discount allowed Rs. 40,095; Expenses at Branch Rs. 18,000; Remittances to H.O. Rs. 3,60,000; Closing Balances : Debtors Rs. 33,000; Cash Rs. 16,905; Stock Rs. 45,000 (I.P.)

हल (Solution) :

Memorandum Branch Stock Account (At IP)

2008			Rs.	2008			Rs.
1.1	To Balance b/d		36,000	1.1 to	By Cash A/c		1,38,000
1.1 to	To Goods from H.O. A/c		3,96,000	31.12			
31.12				"	By Sales at Credit adjusted at I.P.		
					(Rs. 3,00,000 x 120/150)		2,40,000
				"	By Loss due to fire A/c		
					(balancing figure)		9,000
				"	By Balance c/d		45,000
			4,32,000				4,32,000

Branch Debtors Account

2008		Rs.	2008		Rs.
1.1	To Balance b/d	30,000	1.1 to	By Cash A/c	2,56,905
1.1 to	To Sales A/c (Credit)	3,00,000	31.12		
31.12			"	By Discount A/c	40,095
			"	By Balance c/d	33,000
		3,30,000			3,30,000

Trading and Profit and Loss Account

	Rs.			Rs.
To Opening Stock (at Cost)		By Sales :	Rs.	
(Rs. 36,000 x 100/120)	30,000	Cash	1,38,000	
To Goods from H.O. (at Cost)		Credit	3,00,000	4,38,000
(Rs. 3,96,000 x 100/120)	3,30,000	By Insurance claim		9,000
To Gross Profit c/d	1,24,500	By Closing Stock (at Cost)		
		(Rs. 45,000 x 100/120)		37,500
	4,84,500			4,84,500
To Expenses	18,000			
To Discount	40,095	By Gross Profit b/d		1,24,500
To Provision for discount on future prompt payment (W.N.)	4,455			
To Net Profit	61,950			
	1,24,500			1,24,500

Cash at Branch Account

		Rs.		Rs.
	To Sales A/c	1,38,000	By Expenses A/c	18,000
	To Debtors A/c	2,56,905	By Remittance to H.O. A/c	3,60,000
			By Balance c/d	16,905
		3,94,905		3,94,905

Working Notes

31.12.2008 को शीघ्र भुगतान करने वाले बकाया देनदारों को दिये जाने वाले बट्टे के प्रावधान की गणना -

	Rs.
2008 में 15 प्रतिशत बट्टा दिया	40,095
अतः बट्टा प्राप्त करने वाले देनदार $= \text{Rs.}40{,}095 \times \frac{100}{15}$	2,67,300
इन देनदारों से प्राप्त राशि (2,67,300 - 40,095)	2,27,205

इस वर्ष चुकाये गये कुल देनदार = Rs. (2,56,905 + 40,095) = 2,97,000

अतः शीघ्र भुगतान करने वाले देनदार = $\frac{\text{Debtors claiming Discount}}{\text{Total Debtors cleared in 2008}} \times 100 = \frac{\text{Rs. } 2{,}67{,}300}{\text{Rs. } 2{,}97{,}000} \times 100 = 90\%$

31.12.2008 को बकाय देनदार 33,000 जिसमें से शीघ्र भुगतान करने वाले देनदार 90 प्रतिशत

अतः उनको देय बट्टे का प्रावधान = Rs. 33,000 x 90% x 15% = Rs. 4,455

३.१.१.१.४. थोक तथा फुटकर लाभ की पृथक गणना पद्धति (Distinction between wholesale and retail profit Method)

कुछ व्यापार गृह थोक व्यापार करते हैं तथा वे फुटकर माल बेचने के लिए शाखा खोलते हैं। इस परिस्थिति में केवल फुटकर व्यापार से कमाया गया लाभ ही शाखा का सही लाभ माना जाता है क्योंकि थोक व्यापार का लाभ तो मुख्य कार्यालय किसी अन्य व्यक्ति को अपना माल बेचकर भी कमा सकता था। मानाकि किसी वस्तु की लागत मुख्य कार्यालय को 340 रु. लगी। इसका थोक मूल्य 360 रु. है। यह वस्तु शाखा को भेजी जाती है और शाखा कार्यालय इस वस्तु को 375 रु. में बेच देता है। इस वस्तु के बिकने पर कुल लाभ 35 रु. कमाया गया है। इसमें से 15 रु. तो फुटकर व्यापार का लाभ है। यही लाभ शाखा द्वारा कमाया गया माना जायेगा। 20 रु. का लाभ थोक व्यापार का है। वह लाभ मुख्य कार्यालय का माना जाता है क्योंकि मुख्य कार्यालय यह लाभ तो अपना माल किसी भी तृतीय पक्ष को बेच कर भी कमा सकता था।

यदि थोक व फुटकर लाभ अलग-अलग ज्ञात करना है तो मुख्य कार्यालय शाखा को माल थोक मूल्य पर ही भेजेगा। थोक मूल्य ही शाखा को भेजे गये दर्शनार्थ बीजक का मूल्य होगा। शाखा व्यापार खाते में माल बीजक मूल्य पर ही नाम किया जाता है। मुख्य कार्यालय के व्यापार खाते में शाखा को भेजे गये माल का खाता बीजक मूल्य पर ही हस्तान्तरित होता है, न कि लागत पर।

टिप्पणी

यदि शाखा के पास अन्तिम रहतिया है तो इस शेष माल को भी बीजक मूल्य पर दिखाया जाता है। इसलिये इस पर स्कन्ध संचय बनाना आवश्यक है। इस दशा में शाखा के अन्तिम रहतिये के लिये स्कन्ध संचय मुख्य कार्यालय के लाभ-हानि खाते में से बनाया जाता है।

उदाहरण (Illustration) : ६

एक्स लि. की कोटा में शाखा है। ग्राहकों को माल लागत में १००% जोड़कर बेचा जाता है। थोक भाव लागत में ६०% जोड़ने से आते हैं। कोटा को माल थोक मूल्य पर भेजा जाता है। निम्नलिखित विवरणों से मुख्य कार्यालय एवं कोटा शाखा का वर्ष २००८ का लाभ निकालिये। विक्रय मुख्य कार्यालय पर थोक आधार पर एवं शाखा पर केवल ग्राहकों को किया जाता है। शाखा के स्कंध का मूल्यांकन बीजक मूल्य पर किया जाता है। (X Ltd. has a banch at Kota. Goods are sold to customers at cost plus 100%. The wholesale price is cost plus 60%. Goods are invoiced to Kota at wholesale price. From the following particulars, find out the profit made at the Head Office and Kota Branch for the year 2008).

	H.O.	Kota
	Rs.	Rs.
Stock on 1 Jan. 2008	50,000	—
Purchases	3,00,000	—
Goods sent to Kota	96,000	—
Sales	3,04,000	1,00,000
Expenses	80,000	10,000

हल (Solution) :

Trading and Profit & Loss Account for the year ended 31.12.2008

Particulars	H. O.	Branch	Particulars	H.O.	Branch
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
To Opening Bank	50,000	—	By Sales	3,04,000	1,00,000
To Purchases	3,00,000	—	By Goods sent to Branch	96,000	16,000
To Goods recd. from HO	—	96,000	By Closing Stock	1,38,000	
To Gross profit	1,88,000	20,000			

		5,00,000	1,16,000		5,00,000	1,16,000
To Stock Reserve	(Rs. 16000 x 60) / 160	6,000	—	By Gross Profit	1,88,000	20,000
To Expenses		80,000	10,000			
To Net Profit		1,02,000	10,000			
		1,88,000	20,000		1,88,000	20,000

Stock Account

Date	Particulars	H. O.	Branch	Date	Particulars	H.O.	Branch
2008				2008	By Cost of goods sold		
1.1	To Balance b/d	50,000	—	1.1 to	Rs. (3,04,000) x 100 / 200	1,52,000	
1.1 to	To Purchases/Goods			31.12			
31.12	from H.O.	3,00,000	96,000		(Rs. 96000 ÷ 160x100)		
				"	By IP of goods sold	60,000	
				"	(Rs. 100000 ÷ x 160)	—	80,000
				"	By Balance c/d	1,38,000	16,000
		3,50,000	96,000			3,50,000	96,000

३.१.१.२ स्वतन्त्र शाखा का अर्थ (Meaning of Independent Branch)

एक शाखा यदि अपने व्यापार सम्बन्धी नीति निर्धारण में स्वतन्त्र है तो उसको लेखा करने की दृष्टि से स्वतन्त्र शाखा मानते हैं। एक स्वतन्त्र शाखा स्वयं माल खरीद सकती है तथा मुख्य कार्यालय से भी माल प्राप्त करती है। शाखा प्रबन्धक माल उधार या रोकड़ बेच सकता है। शाखा के पास उपलब्ध रोकड़ में से शाखा प्रबन्धक लेनदारों का भुगतान करता है तथा शाखा के खर्चें चुकाता है। यदि प्रबन्धक के पास रोकड़ आवश्यकता से अधिक है तो समय-समय पर वह रोकड़ मुख्य कार्यालय को भेज देता है। असाधारण परिस्थितियों में यदि शाखा में राकेड़ की कमी पड़ती है तो शाखा प्रबन्धक मुख्य कार्यालय से रोकड़ मंगवा लेता है। इस परिस्थिति में शाखा तथा मुख्य कार्यालय का संबंध देनदार व लेनदार का होता है। साधारणतया शाखा कार्यालय का खाता मुख्य कार्यालय की बहियों में नाम का शेष बताता है और देनदार होता है। इसके विपरीत शाखा कार्यालय की बहियों में मुख्य कार्यालय का खाता जमा का शेष दर्शाता है तथा लेनदार होता है।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि मुख्यालय की ही भांति शाखा द्वारा भी मुख्यालय सहित अन्य सभी पक्षों के साथ किये जाने वाले अपने सभी व्यवहारों का लेखा अपनी सहायक बहियों में किया जाता है तथा अपनी खाताबही तैयार की जाती है। स्पष्टतः तलपट बनाने के उपरान्त शाखा कार्यालय के व्यापारिक, लाभ हानि खाता तथा चिट्ठा भी तैयार किया जाता हैं। इसमें मुख्यालय का खाता एक प्रकार से पूंजी खाते के रूप में चिट्ठे के दायित्व पक्ष में दर्शाया

टिप्पणी

जाता है। मुख्यालाय अपनी लेखांकन परंपरा के अनुसार शाखा कार्यालय के तलपट के आधार पर अथवा शाखा द्वारा तैयार किये गये अंतिम लेखों के आधार पर शाखा के समस्त व्यवहारों को अपने अंतिम लेखों में सम्मिलित करते हुए पूरे व्यापार के अंतिम लेखे तैयार करता है। मुख्यालय के अंतिम लेखों में शाखा के समंको को सम्मिलित (Incorporate) करने की तीन पद्धतियाँ आगे चलकर विस्तार पूर्वक समझाई गई हैं। इससे पहले आवश्यक है कि मुख्य कार्यालय तथा शाखा के पारस्परिक लेखांकन को समझा जाय। इनके बीच में निम्नलिखित व्यवहारों के होने की कल्पना की जा सकती है जिनका लेखा दोनों पक्षों की बहियों में इस प्रकार किया जाना चाहिये :-

संभावित पारस्परिक व्यवहार **Possible transactions**	**मुख्यालय में लेखा** **Accounting in the Head Office**	**शाखा में लेखा** **Accounting in the branch**
1 Goods sent by H.O. to Branch	Branch A/c Dr. To Goods sent to Branch A/c	Goods received from HO A/c Dr. To Head Office A/c
2 Goods returned by Branch	Goods sent to Branch A/c Dr. To Branch A/c	Head Office A/c Dr. To Goods received from HO A/c
3 Payment by H.O. to Branch	Branch A/c Dr. To Cash/Bank A/c	Cash/Bank A/c Dr. To Head Office A/c
4 Payment by Branch to H.O. from time to time	Cash / Bank A/c Dr. To Branch Remittance A/c	Remittances to H.O. A/c Dr. To Cash/Bank A/c

संभावित पारस्परिक व्यवहार **Possible transactions**	**मुख्यालय में लेखा** **Accounting in the Head Office**	**शाखा में लेखा** **Accounting in the branch**
5 Entry for total remittances at the end of the year	Branch Remittance A/c Dr. To Branch A/c	Head Office A/c Dr. To Remittances to HO A/c
6 Purchase of Fixed Assets or Transfer of some H.O. Fixed Assets for use in Branch & payment by HO where branch Fixed Assets A/c is also	Branch Fixed Assets A/c Dr. To Cash/Bank/Supplier/ Fixed Assets A/c	No entry by Branch

	maintained is HO books		
7	Transaction as above but Fixed Assets Account opened at Branch	Branch A/c Dr. To Cash/Bank/Supplier's/ Fixed Assets A/c	Fixed Assets A/c Dr. To Head Office A/c
8	Payment by Branch for Purchase of H.O.Assets	Fixed Assets A/c Dr. To Branch A/c	Head Office A/c Dr. To Cash/Bank/Suppliers' A/c
9	Accounting for Depreciation on Branch F.A. where, H.O. maintains the Account of Branch F.A.	Branch A/c Dr. To Branch Fixed Assets A/c	Depreciation A/c Dr. To Head Office A/c
10	If Account of Branch F.A. is in Branch Books	No Entry	Depreciation A/c Dr. To Fixed Assets A/c
11	Branch Expenses paid by HO	Branch A/c Dr. To Cash/Bank A/c	Expenditure A/c Dr To Head Office A/c
12	HO Expenditure paid by Bracnh	Expenditure A/c Dr. To Branch A/c	Head Office A/c Dr. To Cash/Bank A/c
13	HO recovering its Adm Exp. from Branch	Branch A/c Dr. To Exp.A/c OR P&L A/c	Expenditure A/c Dr. To Head Office A/c
14	`A' Branch paying for `B's Branch expenses under the direction of Head Office	B Branch A/c Dr. To A Branch A/c	**A Branch :** Head Office A/c Dr. To Cash/Bank A/c **B Branch :** Expenses A/c Dr. To Head Office A/c
15	Payment by HO for Branch purchases or to Branch Crs.	Branch A/c Dr. To Cash/Bank A/c	Purchases A/c OR Crs A/c Dr. To Head Office A/c
16	Payment by Branch for H.O Purchases or to H.O. Crs.	Purchases A/c OR Crs. A/c Dr. To Branch A/c	Head Office A/c Dr. To Cash/Bank A/c
17	Collection of Branch Debtors by HO	Cash/Bank A/c Dr. To Branch A/c	Head Office A/c Dr. To Debtors A/c
18	Collection of HO Debtors by Branch	Branch A/c Dr. To Debtors A/c	Cash/Bank A/c Dr. To Head Office A/c

टिप्पणी

संभावित पारस्परिक व्यवहार **Possible transactions**	मुख्यालय में लेखा **Accounting in the Head Office**	शाखा में लेखा **Accounting in the branch**
19 H.O. Goods transferred by `A' Branch to `B' Branch under the direction of H.O.	Goods sent to `A' Branch A/c Dr. To `A' Branch A/c `B' Branch A/c Dr. To Goods sent to `B' Branch A/c	**A Branch :** Head Office A/c Dr. To Goods Recd.from H.O. A/c **`B' Branch:** Goods Recd from HO A/c Dr. To Head Office A/c
20 Branch's income received by Head Office	Bank/Cash A/c Dr. To Branch A/c	Head Office A/c Dr. To Income A/c
21 H.O. Income recd. by Branch	Branch A/c Dr. To Income A/c	Cash/Bank A/c Dr. To Head Office A/c
22 Goods lost in transit and Branch not responsible for it	Loss in Transit A/c Dr. To Branch A/c	No Entry
23 Goods or cash in transit which were sent by HO to Branch **OR** when were sent by the Branch to H.O. but which were recd. at the destination after the last working day of the accounting year.	Goods in Transit A/c Dr. Cash in Transt A/c Dr. To Branch A/c No Entry	No Entry Goods in transit A/c Dr. Cash in Transit A/c Dr. To Head Office A/c
24 Net Profit as per Branch Books	Branch A/c Dr. To P&L A/c	Profit & Loss A/c Dr. To Head Office A/c
25 Loss shown by Branch P&L A/c	Profit & Loss A/c Dr. To Branch A/c	Head Office A/c Dr. To Profit & Loss A/c
26 Branch purchases under	Branch A/c Dr.	Purchases A/c Dr.

	H.O. directions payment for which is supposed tobe made by Head Office	To Cash/Bank/Suppliers	To Head Office A/c
27	Purchase returns by Branch from above purchase directly to be supplier	Suppliers OR Crs. A/c Dr. (For Branch goods) To Branch A/c	Head Office A/c Dr. To Purchases Returns A/c
28	Goods or cash in transit reaching the Branch at the beginning of the year	Branch A/c Dr. To Goods in Transit A/c To Cash in Transit A/c	Cash/Bank A/c Dr. Goods From H.O. A/c Dr. To Head Office A/c
(a)	Where accounting was done by Head Office		
		No entry in H.O. Books	Cash/Bank A/c Dr. To Cash in Transit A/c

संभावित पारस्परिक व्यवहार **Possible transactions**		मुख्यालय में लेखा **Accounting in the Head Office**	शाखा में लेखा **Accounting in the branch**
(b)	Where accounting was done by the Branch		Goods Received from H.O. Dr. To Goods in Transit A/c
29	Goods or cash in transit reaching the H.O. at the beginning of the year.	Cash/Bank A/c Dr. To Cash in Transit A/c Goods sent to Branch Dr. A/c To Goods in Transit A/c	No Entry in Branch Books
(a)	Where accounting was done by the Head Office		
(b)	Where accounting was done at the Branch	Cash/Bank A/c Dr. Goods sent to Branch Dr. A/c To Branch A/c	Head Office A/c Dr. To Cash in Transit A/c To Goods in Transit A/c

शाखा का तलपट मुख्य कार्यालय की बहियों में सम्मिलित करना (Incorporation of Branch Trial Balance in Head Office Books) : स्वतन्त्र शाखा चाहे अपना तलपट मुख्य कार्यालय को भेजे अथवा अपने व्यापारिक, लाभ हानि खाता तथा चिट्‌ठा बनाकर भेजे, मुख्यालय के अंतिम लेखों में इन्हें सम्मिलित करना

टिप्पणी

आवश्यक होता है क्योंकि शाखा चाहे अपनी व्यवस्था की दृष्टि से स्वतंत्र हो, वह मुख्यालय के व्यापार का ही एक भाग होती है। शाखा के समंकों को मुख्यालय की बहियों में सम्मिलित करने ;पदबवतचवतंजपवदद्ध का आधारभूत बिन्दु मुख्यालय की बहियों में स्थित शाखा खाते का शेष ही होता है। यही शाखा के पृथक स्वतंत्र व्यवहारों तथा मुख्यालय के साथ किये गये व्यवहारों के बीच की कड़ी का काम करता है, अतः यह देखना अत्यंत ही महत्वपूर्ण है कि शाखा के अंतिम लेखों में प्रदर्शित मुख्यालय खाते का शेष मुख्यालय की बहियों में खोले गये शाखा खाते के शेष से मेल खाता हो।

कभी-कभी परीक्षा प्रश्नों में प्रस्तुत जानकारी के अनुसार मुख्यालय खाते का शेष शाखा खाते के शेष से मेल नहीं खाता। इस अंतर के प्रमुख कारण निम्नांकित हो सकते हैं :-

(अ) दोनों पक्षों द्वारा प्रेषित माल अथवा नकद राशि दूसरे पक्ष को न पंहुचने के कारण उस पक्ष द्वारा प्रविष्टि न हो पाई हो।

(आ) शाखा की स्थायी सम्पत्तियों का खाता मुख्यालय की पुस्तकों में हो तथा उस पर ह्रास का लेखा दोनों में से किसी एक पक्ष द्वारा नियमानुसार न किया गया हो।

(इ) मुख्यालय ने अपने प्रशासनिक व्ययों का एक अंश शाखा से वसूल करने का निर्णय किया हो और शाखा द्वारा इसकी उचित प्रविष्टि न की गई हो।

(ई) शाखा तथा मुख्यालय द्वारा एक दूसरे की ओर से कुछ भुगतान किये गये हों अथवा प्राप्त किये गये हों और इसकी सूचना संबंधित पक्ष को न हो पाई हो।

इससे पूर्व पृष्ठों में मुख्यालय तथा शाखा के पारस्परिक 29 प्रकार के व्यवहारों की कल्पना करते हुए उनके समुचित लेखांकन के दिशा निर्देश दिये गये हैं। तदनुसार आवश्यक लेखांकन कर लेने पर मुख्यालय तथा शाखा कार्यालय के पारस्परिक चालू खातों (Current Accounts) के शेष मेल खा जावेंगें।

उपरोक्त समायोजन करने के पश्चात् मुख्य कार्यालय की बहियों में शाखा का तलपट सम्मिलित किया जाता है। शाखा के तलपट को मुख्य कार्यालय की बहियों में सम्मिलित करने की तीन विधियां हैं।

३.१.१.२.१ समामेलन की प्रथम पद्धति (First Method of incorporation) :

(1) मुख्य कार्यालय अपनी बहियों में अपना स्वयं का व्यापार एवं लाभ हानि खाता बनाने के साथ-साथ शाखा के तलपट से शाखा का व्यापारिक एवं लाभ हानि खाता भी बनाता है तथा शाखा कार्यालय का शुद्ध लाभ या हानि ज्ञात कर लेता है तथा अपनी बहियों में शाखा का शुद्ध लाभ या शुद्ध हानि सम्मिलित कर लेता है। यदि शुद्ध लाभ है तो मुख्य कार्यालय निम्नलिखित प्रविष्टि करता है -

Branch A/c Dr.

To Profit and Loss A/c

(Being incorporation of branch net profit)

टिप्पणी

यदि शाखा का लाभ हानि खाता शुद्ध हानि दर्शाता है तो इस शुद्ध हानि को सम्मिलित करने के लिए निम्नलिखित प्रविष्टि करते हैं। -

Profit and Loss A/c Dr.

To Branch A/c

(Being incorporation of net loss of the branch)

इस प्रकार शाखा के शुद्ध लाभ या हानि को मुख्य कार्यालय के लाभ-हानि खाते में सम्मिलित कर लिया जाता है। उपरोक्त प्रविष्टि के पश्चात् शाखा खाता बनाया जाता है। इस खाते का अन्तिम शेष शाखा की सम्पत्तियां व शाखा के दायित्वों के अन्तर के बराबर होना चाहिए। शाखा की सम्पत्तियों में मार्गस्थ रोकड़ भी सम्मिलित होता है।

इस प्रकार ज्ञात शाखा की सम्पत्तियों का शाखा के दायित्वों पर आधिक्य मुख्यालय स्थित शाखा खाते के नाम शेष के बराबर पाया जाय तो फर्म के चिट्ठे में शाखा खाते के शेष की बजाय शाखा की सम्पत्तियां व उसके दायित्व सम्मिलित कर दिये जाते हैं। व्यवहार में अधिकतर यह प्रथम तरीका ही काम में लिया जाता है।

३.१.१.२.२. समामेलन की द्वितीय पद्धति (Second Method of incorporation) :

इस पद्धति के अन्तर्गत मुख्यालय की बहियों में शाखा के शुद्ध लाभ या शुद्ध हानि को सम्मिलित करने के साथ-साथ शाखा की समस्त सम्पत्तियां व दायित्व भी सम्मिलित कर लिये जाते हैं। शाखा के तलपट को मुख्य कार्यालय की बहियों में सम्मिलित करने के लिए निम्नलिखित तीन जर्नल प्रविष्टियां की जाती हैं -

(1) शाखा का शुद्ध लाभ सम्मिलित करना (For incorproration of branch Net Profit) :

Branch A/c Dr.

To profit and Loss A/c

(Being incorporation of banch net proifit)

शाखा की शुद्ध हानि सम्मिलित करना (For incorporation of branch Net Loss) :

Profit and Loss A/c Dr.

To Branch A/c

(Being incorporation of branch net loss)

(2) शाखा की सम्पत्तियां सम्मिलित करना (For incorporation of branch assets) :

Branch Assets (Individual A/c's) A/cs Dr.

To Branch A/c

(Being incorporation of branch assets)

(3) शाखा के दायित्व सम्मिलित करना (For incorporation of branch liabilities) :

Branch A/c Dr.

To Branch Liabilities (Indivudual A/c's) A/cs

टिप्पणी

(Being incorporation of branch Liabilities)

उपरोक्त प्रविष्टियों को शाखा खाते में खताने पर शाखा खाता बन्द हो जाता है तथा शाखा की प्रत्येक सम्पत्ति व प्रत्येक दायित्व का खाता मुख्य कार्यालय की बहियों में खुल जाता है जो कि मुख्य कार्यालय के स्थिति विवरण में दिखाये जाते हैं।

अगले वर्ष की पहली तारीख को ही निम्नलिखित प्रविष्टियों द्वारा शाखा की सम्पत्तियां व शाखा के दायित्व खाते, शाखा खाते में हस्तान्तरित करके बन्द कर दिये जाते हैं।

Branch A/c Dr.

To Branch Assets A/c

(Being branch assets transferred)

Branch Liabilities A/c Dr.

To Branch A/c

(Being branch liabilities transferred)

३.१.१.२.३. समामेलन की तृतीय पद्धति (Third Method of Incorporation) :

शाखा के व्यवहारों को मुख्य कार्यालय की बहियों में सम्मिलित करने के लिए शाखा का सम्पूर्ण तलपट सम्मिलित किया जाता है। इस तरीके में निम्नलिखित प्रविष्टियां की जाती हैं -

(1) शाखा के व्यापार खाते की नाम पक्ष की मदें सम्मिलित करने के लिए (For incorporation of debit items of branch trading account) :

Branch Trading A/c Dr.

To Branch A/c

(Being incorporation of Opening stock, net Purchases, Wages, Carriage inwards and Goods received from Head Office A/cs exists in branch books)

(2) शाखा के व्यापार खाते की जमा पक्ष की मदें सम्मिलित करने के लिए (For incorporation of credit side items of branch trading account) :

Branch A/c Dr.

To Branch Trading A/c

(Being incorporation of net Sales and Closing stock of branch)

(3) शाखा का सकल लाभ हस्तान्तरित करने के लिए (For transfer of branch gross profit) :

Branch Trading A/c Dr.

To Branch Profit and Loss A/c

(Being branch gross profit transferred)

OR

शाखा की सकल हानि हस्तांतरित करने के लिए (For transfer of branch gross loss) :

Branch Profit & Loss A/c Dr.

To Branch Trading A/c

(Being branch gross loss transferred)

(4) शाखा के विभिन्न अप्रत्यक्ष खर्चों को सम्मिलित करने के लिए (For incorporation of branch indirect expenses) :

Branch Profit and Loss A/c Dr.

To Branch A/c

(Being incorporation of various branch indirect expenses)

(5) शाखा की आय को सम्मिलित करने के लिए (For incorporation of branch income) :

Branch A/c Dr.

To Branch Profit and Loss A/c

(Being incorporation of income items of branch)

(6) शाखा के लाभ-हानि खाते के शुद्ध लाभ या शुद्ध हानि को मुख्य कार्यालय के सामान्य लाभ-हानि खाते में सम्मिलित करने के लिए (For incorporation of branch net profit or net loss in H.O. general profit and loss account) :

Branch Profit and Loss A/c Dr.

To General Profit and Loss A/c

(Being branch net profit transferred to General Profit and Loss A/c)

OR

General Profit and Loss A/c Dr.

To Branch Profit and Loss A/c

(Being branch net loss transferred to General Profit and Loss A/c)

(7) शाखा की सम्पत्तियों को सम्मिलित करने के लिए (For incorporation of branch assets)

Branch Assets (individual A/c's) A/c Dr.

To Branch A/c

(Being incorporation of branch assets)

(8) शाखा के दायित्व को सम्मिलित करने के लिए (For incorporation of branch liabilities)

Branch A/c Dr.

To Branch Liabilities (Individual liability A/c's) A/c

टिप्पणी

(Being incorporation of branch liabilities)

उपरोक्त आठ प्रविष्टियों के करने के बाद शाखा का सम्पूर्ण तलपट मुख्य कार्यालय की बहियों में सम्मिलित हो जाता है तथा इन प्रविष्टियों की खतौनी करने पर शाखा खाता बन्द हो जाता है। अगले ही दिन शाखा की सम्पत्तियों एवं दायित्वों के खातों को शाखा खाते में हस्तान्तरित कर दिया जाता है। इसकी प्रविष्टियां निम्नलिखित होंगी –

Branch A/c Dr.

To Branch Assets A/c

(Being branch assets transferred)

Branch Liabilities A/c Dr.

To Branch A/c

(Being branch liabilities transferred)

उदाहरण (Illustration) : ७

निम्नलिखित के संषोधन या समायोजन के लिये मुख्य कार्यालय व शाखा कार्यालय में प्रविष्टियॉ दीजिये। (Give Journal entries to rectify or adjust the following in the books of Head Office and Branch).

(1) शाखा ने मुख्य कार्यालय के अधिकारी को जो निरीक्षण के लिये आया था, ४,००० रु. वेतन के दिये और अपने वेतन खाते के नाम में लिख दिये। (Branch paid salary Rs. ४,००० to a head office official, who came for inspection and debited the amount to Salary Account).

(2) शाखा ने ८,००० रु. का माल खरीदा जिसके लिये मुख्य कार्यालय ने भुगतान किया। मुख्य कार्यालय ने यह रकम अपने क्रय खाते के नाम में लिख दी। (Goods costing Rs. 8,000 purchased by Branch, but payment made by Head Office. The Head Office has debited this amount to its own Purchases Account).

(3) शाखा की स्थाई सम्पत्ति पर १,६०० रु. ह्रास लगाना है। शाखा की स्थाई सम्पत्ति का खाता मुख्य कार्यालय की बहियों में है। (Depreciation Rs. 1,600 is to be charged on Branch Fixed Assets. The Account of Branch Fixed Assets is maintained in the Head Office books).

(4) शाखा की तरफ से २,००० रु. मुख्य कार्यालय को प्रशासकीय सेवाओं के लिये वसूल करने हैं। (The Head Office has to charge Rs. 2,000 from branch for administrative services).

(5) मुख्य कार्यालय ने २,७०० रु. का माल शाखा को भेजा जो कि शाखा को वित्तीय वर्ष समाप्त होने तक प्राप्त नहीं हुआ। (Head Office sent goods of Rs. 2,700 which were not received by the branch till the end of the financial year).

हल (Solution) :

Head Office Journal

			Rs.	Rs.
	(1) Salary A/c Dr.		4,000	
	To Branch A/c			4,000
	(Being salary paid by the branch to head office official adjusted)			
	(2) Branch A/c Dr.		8,000	
	To Purchase A/c			8,000
	(Being rectification of purchases for branch debited to Purchase Account)			
	(3) Branch A/c Dr.		1,600	
	To Branch Fixed Assets A/c			1,600
	(Being depreciation provided on Branch Fixed Assets)			
	(4) Branch A/c Dr.		2,000	
	To Administrative Expenses A/c			2,000
	(Being administrative expenses charged)			
	(5) Goods in Transit Dr.		2,700	
	To Branch A/c			2,700
	(Being goods sent to branch not received by the branch till the end of the financial year)			

Branch Journal

			Rs.	Rs.
	(1) Head Office A/c Dr.		4,000	
	To Salary A/c			4,000
	(Being salary paid to head office official wrongly debited to salary account now corrected)			

			Rs.	Rs.
	(2) Purchase A/c Dr.		8,000	
	To Head Office A/c			8,000
	(Being Goods purchased by us but payment made by the head office)			

टिप्पणी

			Rs.	Rs.
	(3) Depreciation A/c Dr.		1,600	
	To Head Office A/c			1,600
	(Being depreciation on Fixed Assets provided; account of which is in Head Office books)			
	(4) Administrative Expenses A/c Dr.		2,000	
	To Head Office A/c			2,000
	(Being expenses charged by head office for administrative services)			

मद संख्या 5 के लिये शाखा कार्यालय में कोई प्रविष्टि नहीं की जावेगी। माल मुख्य कार्यालय ने भेजा था इसलिए इसका समायोजन मुख्य कार्यालय ही करेगा।

उदाहरण (Illustration) : ८

३१ दिसम्बर २००८ को समाप्त वर्ष के लिये जोधपुर मुख्यालय द्वारा बाड़मेर शाखा से निम्नांकित तलपट प्राप्त किया गया। मुख्य कार्यालय की बहियों में ३१.१२.२००८ को शाखा खाते का नाम का शेष ६०० रु. था। २८ दिसम्बर २००८ को मुख्यालय ने २,००० रु. का माल शाखा को भेजा जो शाखा को ३ जनवरी २००९ को प्राप्त हुआ। शाखा ने २९ दिसम्बर २००८ को १,६०० रु. भेजे गये जो मुख्य कार्यालय ने १ जनवरी २००९ को प्राप्त किये। मुख्य कार्यालय की बहियों में शाखा के तलपट को सम्मिलित करने के लिये आवश्यक जरनल प्रविष्टियां कीजिये तथा शाखा खाता बनाइये। (Following Trial Balance of Barmer Branch for the year ending on 31.12.2008 was received by a Jodhpur H.O. The Branch account in the H.O. Books showed a Debit Balance of Rs. 600 on 31.12.2008. The H.O. sent goods costing Rs. 2,000 to Branch on 28 December 2008 which were received by the Branch on 3 January 2009. The Branch remitted a sum of Rs. 1,600 to H.O. on 29 December 2008 which was received by the H.O. on 1 January 2009. Pass necessary Journal entries in the H.O. Books to incorporate the Branch Trial Balance and prepare the Branch Account).

Trial Balance as on 31.12.2008

		Rs.	Rs.
Jodhpur Head Office Account		3,000	—
Stock Jan. 1, 2008		6.000	—
Purchases		34,000	—
Sales		—	60,000
Goods received from Head Office		9,000	—
Salaries		2,000	—
Debtors		3,000	—

		Rs.	Rs.
Creditors		—	2,000
Rent		800	—
Office Expenses		1,600	—
Furniture		2,000	—
Cash		600	
		62,000	62,000

Stock in hand as on 31.12.2008 Rs. 4,000

हल (Solution) :

मुख्यालय की पुस्तकों में शाखा के तलपट को सम्मिलित करने से पूर्व मुख्यालय को भेजी गई १,६०० रु. की राशि जो मार्ग में है, के लिये शाखा द्वारा किये गये निम्नांकित समायोजन की कल्पना करते हुए तलपट में सुधार कर लेना चाहिए। इसके फलस्वरूप मुख्यालय के खाते का १,४०० रु. से नाम शेष रह जावेगा। मार्गस्थ रोकड़ १,६०० रु. तलपट के नाम पक्ष में सम्मिलित हो जावेगा।

Cash in Transit A/c Dr. 1,600

To H.O. A/c 1,600

(Being adjustment for cash in transit)

इस प्रश्न में केवल तलपट को सम्मिलित करने के लिये प्रविष्टियां करने को कहा है इसलिये यह प्रविष्टियां तृतीय तरीके से की जानी चाहिये।

			Rs.	Rs.
2008				
31.12	Goods in Transit A/c Dr.		2,000	
	To Branch A/c			2,000
	(Being goods sent by HO remained in transit)			
"	Branch Trading A/c Dr.		49,000	
	To Branch A/c			49,000
	(Being incorporation of the following items on the debit side of the Branch Trading account Opening Stock Rs. 6,000; Purchases Rs. 34,000 and Goods Received from Head Office Rs. 9,000)			
31.12	Branch A/c Dr.		64,000	
	To Branch Trading A/c			64,000

टिप्पणी

2008			Rs.	Rs.
	(Being Incorporation of the following items on the credit side of Branch Trading Account) Rs. Sales 60,000 Closing Stock 4,000			
"	Branch Trading A/c Dr.		15,000	
	To Branch Profit & loss A/c			15,000
	(Being gross profit transferred to Branch Profit & Loss Account)			
	Branch Profit & Loss A/c Dr.		4,400	
	To Branch A/c			4,400
	(Being incorporation of following items) Rs. Salaries 2,000 Rent 800 Office Expenses 1,600			
	Branch Profit & Loss A/c Dr.		10,600	
	To General Profit and Loss A/c			10,600
	(Being Net Profit transferred)			

2008			Rs.	Rs.
31.12	Branch Cash A/c Dr.		600	
	Branch Cash in Transit A/c Dr.		1,600	
	Branch Debtors A/c Dr.		3,000	
	Branch Stock A/c Dr.		4,000	
	Branch Furniture A/c Dr.		2,000	
	To Branch A/c			11,200
	(Being incorporation of Branch Assets)			
	Branch A/c Dr.		2,000	
	To Branch Creditors A/c			2,000
	(Being incorporated of Branch Creditors)			

Dr. Branch Account **Cr.**

2008		Rs.	2008		Rs.

टिप्पणी

31.12	To Balance b/d	600	31.12	By Goods in Transit A/c	2,000
"	To Branch Trading A/c	64,000	"	By Branch Trading A/c	49,000
"	To Branch Creditors A/c	2,000	"	By Branch P&L A/c	4,400
			"	By Branch Assets A/c	11,200
		66,600			66,600
2009			2009		
01.01	To Branch Assets	11,200	01.12	By Branch Liabilities	2,000

उदाहरण (Illustration) : ९

पंकज लिमिटेड पाली ने एक शाखा जोधपुर में खोली जो मुख्यालय से स्वतंत्र कार्य करेगी। 31 मार्च 2008 को समाप्त होने वाली अवधि में शाखा के व्यवहार निम्नलिखित है – (Pankaj Ltd. Pali opens a new branch at Jodhpur which trades independently of the H.O. The transactions of the branch for the year ended 31st March, 2008 are as under) :

	Rs.
Goods Supplied by H.O.	20,000
Purchases from Outsiders :	
Cash	3,000
Credit	15,500
Sales :	
Cash	4,600
Credit	25,000
Cash received from customers	30,400
Cash paid to creditors	14,200
Expenses paid by branch	8,950
Furniture purchased by branch on credit	3,500
Cash received from head office initially	4,000
Remittances to H.O.	11,000

आप मुख्यालय की पुस्तकों में शाखा का व्यापार एवं लाभ हानि खाता तथा शाखा का खाता और शाखा की पुस्तकों में मुख्यालय का खाता, शाखा के तलपट को समामेलन की प्रथम विधि से समेकित करते हुए बनाइये। निम्नलिखित सूचनाओं को ध्यान में रखना है – (You are required to prepare branch trading and profit and loss account and branch account in the H.O. books and H.O. Account in branch books after incorporation of the branch trial balance using first method, taking following into consideration) :

टिप्पणी

1. शाखा की स्थायी सम्पत्तियों के खाते मुख्यालय की पुस्तकों में रखे गये है। (The account of the branch fixed assets are maintained in head office books).
2. फर्निचर पर 5 प्रतिषत की दर से ह्रास अपलिखित कीजिये। (Write off depreciation on furniture @ 5% p.a.)
3. 2,000 रु. शाखा से मुख्यालय को भेजे जो रास्ते में है। (A remittance of Rs. 2,000 from the branch to the H.O. is in transit).
4. शाखा के अंतिम रहतिये का मूल्यांकन 12,000 रु. है। (Branch closing stock is valued at Rs. 12,000).

हल (Solution) :

In H.O. Books
Branch Trading and Profit & Loss Account

For the year ended 31st March, 2008

		Rs.			Rs.
To Goods Received from H.O.		20,000	By Sales A/c :	Rs.	
To Purchases :	Rs.		Cash	4,600	
Cash	3,000		Credit	25,000	29,600
Credit	15,500	18,500	By Closing Stock		12,000
To Gross Profit		3,100			
		41,600			41,600
To Expenses		8,950	By Gross Profit		3,100
To Depn. on Furniture		1,75	By General P&L A/c		6,025
		9,125			9,125

Jodhpur Branch Account

		Rs.			Rs.
	To Bank A/c	4,000		By Branch Furniture A/c	3,500
	To Goods sent to branch A/c	20,000		By Bank A/c	9,000
	To Branch Furniture A/c	175		By P&L A/c	6,025
				By Balance c/d	5,650
		24,175			24,175

टिप्पणी

Head Office Account

		Rs.			Rs.
	To Bank A/c	11,000		By Bank A/c	4,000
	To Creditors for Furniture	3,500		By Goods recd. from H.O. A/c	20,000
	To P&L A/c	6,025		By Depn. on Furniture A/c	175
	To Balance c/d	5,650		By Cash in Transit A/c	2,000
		26,175			26,175

३.१.२ विदेशी शाखा (Foreign Branch)

किसी भी देश की एक व्यापारिक इकाई अपने व्यवसाय का आकार बढ़ाने के लिए किसी अन्य देश में अपनी शाखा स्थापित कर सकती है। उसे विदेशी शाखा माना जावेगा। इस अध्याय के प्रारंभ में व्यावसायिक नियंत्रण की दृष्टि से 'नियंत्रित' तथा 'स्वतंत्र' दो रूपों में शाखाओं का वर्गीकरण करने के साथ ही साथ देशी तथा विदेशी शाखा का भी उल्लेख किया गया था। यदि दोनों देशों में एक ही मुद्रा का चलन हो तो विदेशी शाखा से संबंधित व्यवहारों के मुख्यालय में लेखाबद्ध करने में कोई कठिनाई नहीं होती। मुख्यालय वाले देश की मुद्रा से शाखा वाले देश की मुद्रा भिन्न होने पर लेखांकन में कठिनाई आ सकती है। एक विदेशी शाखा भी नियंत्रित तथा स्वतंत्र दोनों में से किसी एक प्रकार की हो सकती है। सामान्यतया दूर विदेशों में खोली जाने वाली शाखा स्वतंत्र होने की ही अधिक संभावना रहती है।

विदेशी शाखा अपना तलपट मुख्य कार्यालय को भेजती है जो कि मुख्य कार्यालय की बहियों में सम्मिलित करना होता है। विदेशी शाखा से प्राप्त तलपट विदेशी मुद्रा में होता है, इसलिये इसको मुख्य कार्यालय की बहियों में तब ही सम्मिलित किया जा सकता है जबकि इसे मुख्य कार्यालय के देश की मुद्रा में परिवर्तित कर दिया जाय। उदाहरण के लिए मुंबई में स्थित एक मुख्य कार्यालय की शाखा लन्दन में है। मुख्य कार्यालय को लन्दन से प्राप्त तलपट पौंड में होगा। यह तलपट मुख्य कार्यालय मुम्बई की बहियों में तब ही सम्मिलित हो सकता है जब इसकी राशियाँ रुपयों में परिवर्तित कर दी जायें।

मुख्य कार्यालय द्वारा शाखा के तलपट को अपनी मुद्रा में परिवर्तित करने से पहले यह देखना आवश्यक है कि मार्गस्थ रोकड़ (Cash in transit) तथा मार्गस्थ माल (Goods in transit) कितना है। यदि शाखा ने कोई रकम भेजी है तथा लेखा वर्ष की समाप्ति तक वह रकम मुख्य कार्यालय को प्राप्त नहीं हुई है तो शाखा की बहियों में इसका समायोजन निम्नलिखित प्रविष्टि द्वारा करना पड़ता है -

Cash in Transit A/c   Dr.

    To Head Office A/c   (in foreign currency)

(Being cash sent not received by head office)

टिप्पणी

चूंकि यह प्रविष्टि शाखा कार्यालय की ओर से की जाती है इसलिये शाखा का तलपट परिवर्तित करते समय शाखा के तलपट में एक मद मार्गस्थ रोकड़ (Cash in transit) बढ़ जाती है तथा उतनी ही राशि से शाखा के तलपट में विद्यमान मुख्यालय खाते का जमा का शेष भी बढ़ जाता है। यदि मार्गस्थ माल है तो इसकी निम्नलिखित प्रविष्टि मुख्य कार्यालय करता है -

Goods in Transit A/c Dr.

To Branch A/c (in the Currency of H.O.)

(Being goods sent by Head Office remained in transit)

इसका प्रभाव यह पड़ता है कि मुख्य कार्यालय की बहियों में शाखा खाते का नाम का शेष कम हो जाता है तथा मार्गीस्थ माल खाते का शेष फर्म के चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में दिखाया जाता है।

उपरोक्त दोनों के ठीक विपरीत पारस्परिक पत्राचार या अन्य किसी भी जाँच से यह भी जानकारी मिल सकती है कि मुख्यालय द्वारा शाखा को किसी भी प्रयोजन से भेजी गई राशि तथा शाखा द्वारा किसी भी कारण से मुख्यालय को लौटाये गये माल का कोई भाग अंतिम लेखे बनाने की तिथी तक अपने गन्तव्य स्थान पर नहीं पहुंचा है। यह भी मार्गस्थ नकद (Cash in transit) तथा मार्गस्थ माल (Goods in transit) के ही व्यवहार बनते हैं परन्तु ऊपर समझाये गये दोनों उदाहरणों से ठीक विपरीत मार्गस्थ माल विदेशी मुद्रा में होता है तथा मार्गस्थ नकद मुख्यालय की मुद्रा में होती है। शाखा कार्यालय के तलपट को मुख्यालय की बहियों में सम्मिलित (Incorporate) करने से पूर्व इनका समायोजन भी आवश्यक है।

पहले उदाहरण में मार्गस्थ रोकड़ शाखा द्वारा भेजी गई थी जिसका समायोजन भी शाखा की पुस्तकों तथा शाखा के तलपट में किया गया इसी क्रम से इस दूसरे उदाहरण में राशि मुख्यालय द्वारा भेजी गई है अतः इस मार्गस्थ रोकड़ का समायोजन मुख्यालय करेगा।

Cash in Transit A/c Dr.

To Branch A/c (in H.O. Currency)

स्पष्टतः इसके प्रभाव स्वरूप मार्गस्थ रोकड़ खाता मुख्यालय की पुस्तकों में खोला जाकर फर्म के चिट्ठे में सम्पत्ति पक्ष का एक मद बनेगा तथा पूर्व की ही भांति मुख्यालय की पुस्तकों के शाखा खाते का नाम का शेष कम हो जावेगा।

इसी पूर्व क्रम में चूंकि इस बार मार्गस्थ माल शाखा द्वारा भेजा गया है अतः इसका समायोजन शाखा की पुस्तकों तथा शाखा के तलपट में निम्नांकित प्रविष्टि द्वारा करना होगा -

Goods in Transit A/c Dr.

To H.O. A/c

इससे भी शाखा के तलपट में एक मद मार्गस्थ माल की बढ़ जायेगी तथा उपरोक्त विवरण के अनुरूप ही शाखा कार्यालय के तलपट में विद्यमान मुख्यालय खाते का जमा का शेष भी बढ़ जायेगा।

इन समायोजनों के पश्चात् ही मुख्य कार्यालय के द्वारा शाखा के तलपट का परिवर्तन किया जाता है। शाखा कार्यालय के तलपट का परिवर्तन निम्नलिखित दो परिस्थितियों में समझा जायेगा।

टिप्पणी

(अ) जबकि शाखा तथा मुख्य कार्यालय के देशों के बीच की विनिमय दर में वर्ष भर उतार चढ़ाव आये हो।

(ब) जब यह विनिमय दर स्थिर रही है।

(अ) शाखा तथा मुख्य कार्यालय के बीच की विनिमय दर परिवर्तित होती रही हो (Fluctuating Rates of Exchange): इस परिस्थिति में शाखा के तलपट का परिवर्तन निम्नलिखित नियमों द्वारा किया जाता है।

(1) मुख्य कार्यालय का खाता (Head Office Account) : मुख्य कार्यालय खाते का उपरोक्त समायोजनों के पश्चात् अंतिम रूप से ज्ञात जमा का शेष उतनी ही रकम से बदल दिया जाता है, जितना कि मुख्य कार्यालय की बहियों में शाखा खाते का उपरोक्त समायोजनों के पश्चात् अंतिम रूप से ज्ञात नाम का शेष है। ये शेष मार्गस्थ माल तथा मार्गस्थ रोकड़ की चारों मदों की प्रविष्टियों को करने के बाद का होना चाहिए।

(२) मुख्य कार्यालय से प्राप्त माल का खाता (Goods received from Head Office Account) : मुख्य कार्यालय की बहियों में शाखा को भेजे गये माल खाते का जमा का शेष होता है। शाखा के तलपट में मुख्यालय से प्राप्त माल खाते का नाम का शेष होता है। यह एक दूसरे के बराबर होने की अपेक्षा की जाती है यदि मुख्यालय द्वारा भेजा गया माल मार्ग में नहीं है और न ही वर्ष के दौरान शाखा द्वारा मुख्यालय को लौटाया गया माल ही मार्गस्थ है। अतः विदेशी शाखा के तलपट का मुख्यालय की मुद्रा में परिवर्ततन करते समय मुख्यालय से प्राप्त माल खाते की विदेशी मुद्रा में रकम के स्थान पर मुख्य कार्यालय द्वारा 'शाखा को भेजे गये माल खाते' की मुख्यालय की मुद्रा वाली राशि ही सम्मिलित की जानी चाहिये। व्यावहारिक जीवन में मुख्यालय तथा शाखा के बीच माल का आवागमन निरंतर होता रहता है अतः अंतिम लेखे बनाते समय दोनों पक्षों की ओर से भेजे/लौटाये गये माल मार्गीस्थ रहने की संभवना है। अतः शाखा के विदेशी मुद्रा वाले तलपट में विद्यमान मुख्यालय से प्राप्त माल खाते के नाम शेष में शाखा के तलपट में उसके द्वारा लौटाये गये मार्गस्थ माल (Goods in Transit) को वापस जोड़ने के पश्चात इस राशि के समकक्ष मुख्यालय की बहियों में स्थित शाखा को भेजे गये माल खाते के जमा शेष में से उपरोक्त प्रकार से मुख्यालय की बहियों में सम्मिलित रास्ते में माल की राशि घटाने के पश्चात् बचे हुए शेष के समकक्ष मानना ही उचित होगा।

(3) स्थायी सम्पत्तियाँ (Fixed Assets): स्थायी सम्पत्तियों के विदेशी मुद्रा में स्थित शेष को उस विनिमय दर से परिवर्तित करना युक्ति संगत माना जाता है जो उक्त स्थायी सम्पत्ति खरीदने की तिथि पर विद्यमान थी। स्पष्टतः स्थायी सम्पत्तियों पर शाखा द्वारा अपलिखित ह्रास की राशि को भी उसी विनिमय दर से परिवर्तित करना होगा जो उपरोक्त प्रकार से स्थायी संपत्ति की विदेशी मुद्रा की राशि के परिवर्तन के लिए उपयुक्त की गई हो। उक्त स्थायी सम्पत्ति के क्रय के लिए विदेशी शाखा ने विदेश में ऋण लिया हो और उक्त ऋण खाता भी शाखा के तपलट में विद्यमान हो और यदि मुख्यालय तथा शाखा वाले देशों में से किसी की मुद्रा का अवमूल्यन **(devaluation)** होने से उक्त विदेशी ऋण सम्बन्धी दायित्व में कोई घट बढ़ की गई हो तो इस समायोजन का प्रभाव सम्बन्धित खाते के तलपट स्थित मूल्य में करने के उपरान्त ही सम्पत्ति के मूल्य तथा सम्बन्धित ह्रास की राशियों का मुख्यालय की मुद्रा में परिवर्तित किया जाना चाहिए।

(४) चालू सम्पत्तियों के खाते (Current Assets Account) : चालू सम्पत्तियां पुनः विक्रय के लिए खरीदी जाती हैं। इन चालू सम्पत्तियों में रोकड़, बैंक बाकी, अन्तिम रहतिया, देनदार तथा मार्गस्थ रोकड़ के शेष सम्मिलित

टिप्पणी

होते हैं। इन चालू सम्पत्तियों के शेष वर्ष के अन्त की विनिमय दर से परिवर्तित किये जाते हैं।

(5) चालू दायित्वों के खाते (Current Liabilities Account) : इन खातों के शेष वर्ष के अन्त की विनिमय दर से परिवर्तित किये जाते हैं।

(6) प्रारम्भिक रहतिया (Opening Stock) : प्रारम्भिक रहतिये का शेष वर्ष के प्रारम्भ की विनिमय दर से परिवर्तित किया जाता है।

(7) आयगत मदें (Revenue items) : इन मदों में खरीद, बिक्री, मजदूरी, वेतन, किराया, कमीशन व विविध खर्च इत्यादि खातों के शेष सम्मिलित होते हैं। इन खातों के शेष वर्ष भर की औसत दर से परिवर्तित किये जाते हैं। ये खर्चे तथा आय वर्ष भर तक होते रहते हैं, इसलिए वर्ष की औसत विनिमय दर से परिवर्तित किये जाते हैं।

यदि तलपट उस वर्ष का है जिस वर्ष मुख्य कार्यालय की मुद्रा का अवमूल्यन (Devaluation) हुआ है तो समस्त आयगत मदें भी वर्ष के अन्त की विनिमय दर से परिवर्तित की जाती है।

विदेशी शाखा के तलपट को मुख्य कार्यालय की मुद्रा में बदलने के बाद तलपट के जमा पक्ष तथा नाम पक्ष की जोड़ों का अन्तर "विनिमय अन्तर खाते" में लिख दिया जाता है। विनिमय अन्तर खाते (Difference in Exchange Account) का शेष शाखा के लाभ हानि खाते में हस्तांतरित कर दिया जाता है।

(ब) विदेशी विनिमय दर स्थिर रही है (Stable Rate of Foreign Exchange) : यदि शाखा तथा मुख्य कार्यालय के बीच विदेशी विनिमय दर स्थिर रही है तो विदेशी शाखा का तलपट निम्नलिखित नियमों द्वारा परिवर्तित किया जाता है -

(१) मुख्य कार्यालय खाते का शेष (Balance of Head Office Account) : मुख्य कार्यालय द्वारा मार्गस्थ माल तथा मार्गस्थ रोकड़ की प्रविष्टियाँ करने के बाद मुख्य कार्यालय की बहियों में शाखा खाते का शेष ज्ञात कर लिया जाता है शाखा के तलपट में सम्मिलित मुख्यालय खाते के शेष में भी इससे पूर्व समझाये गये रूप में मार्गस्थ माल तथा मार्गस्थ रोकड की राशियाँ जोड़कर उतनी ही रकम में परिवर्तित किया जाता है जितना मुख्य कार्यालय की बहियों में मार्गस्थ की प्रविष्टियां करने के बाद शाखा का नाम शेष है।

(२) मुख्य कार्यालय से प्राप्त माल का खाता (Goods received from Head Office Account)

मार्गस्थ माल (Goods in Transit) के संबंध में इससे पूर्व पृष्ठों में समझाया गया था कि मुख्यालय से माल भेजने पर और शाखा में पहुंचने पर दोनों पक्ष निम्नलिखित प्रविष्टियाँ करते हैं :

Branch A/c	Dr.	Goods received from H.O. A/c	Dr.
To Goods sent to Branch A/c		To Head Office A/c	

शाखा द्वारा मुख्यालय को माल लौटाने पर यदि माल मुख्यालय पहुंच जाय तो दोनों पक्ष निम्नलिखित प्रविष्टियाँ करते हैं :

Goods sent to Branch A/c	Dr.	H.O. A/c	Dr.
To Branch A/c		To Goods received from H.O. A/c	

यदि मार्गस्थ माल न हो तो उपरोक्त राशियां समान होंगी। मुख्यालय द्वारा भेजा गया माल मार्गस्थ हो तो यह घटाया जायेगा और शाखा द्वारा लौटाया गया माल मार्गीस्थ हो तो इसे वापस जोड़ना पडेगा।

(३) स्थाई सम्पत्तियों का शेष (Balance of Fixed Assets Accounts) : इन्हें उसी विनिमय की दर से परिवर्तित किया जाता है जो दर सम्पत्तियों के खरीदते समय प्रचलित थी।

(४) शाखा कार्यालय के तलपट के अन्य समस्त मदों के शेष वर्ष की स्थिर विनिमय दर से परिवर्तित कर दिये जाते है।

तलपट का अन्तर "विनिमय अन्तर खाते" (Differnce in Exchange Account) में रख दिया जाता है जो कि शाखा के लाभ-हानि खाते में हस्तान्तरित कर दिया जाता है।

उदाहरण (Illustration) : १०

एक व्यापार गृह का मुख्य कार्यालय मुम्बई में तथा इसकी शाखा लन्दन में है। लन्दन शाखा से निम्नलिखित तलपट 31 दिसम्बर 2008 को प्राप्त हुआ है – (Head Office of a business unit is located at Mumbai and its branch is at London. The following Trial Balance has been received from the London Branch for the year ended 31st December, 2008).

	Pounds	Pounds
Cash in Hand	2,400	—
Cash at Bank	1,600	—
Stock Jan. 01, 2008	4,000	—
Purchases and Sales	12,000	22,000
Debtors and Creditors	9,000	8,000
Goods from Head Office	2,000	—
Rent	1,000	—
Salary	4,000	—
Wages	3,000	—
Furniture	2,000	—
Carriage Inward	200	—
Carriage Outward	800	—
Stationery and Printing	1,000	—
Sundry Expenses	2,000	—
Head Office Account	—	15,000
	45,000	45,000

टिप्पणी

31 दिसम्बर, 2008 को लन्दन में रहतिया 9,000 पौंड का था। विनिमय की दरें निम्नलिखित थीं – (The Stock at London on 31.12.2008 was Pounds 9,000. Following were the exchange rates)–

१ जनवरी २००८ (On 1 January, 2008) १ पौंड (Pound) = ६४ रु.

३१ दिसम्बर २००८ (On 31 December, 2008) १ पौंड (Pound) = ६७ रु.

वर्ष की औसत दर(Average exchange rate) १ पौंड (Pound) = ६६ रु.

जब फर्नीचर खरीदा गया (When Furniture was bought) १ पौंड (Pound) = ३८ रु.

३१ दिसम्बर २००८ को मुख्य कार्यालय की बहियों में शाखा खाते का नाम शेष १०,०५,००० रु. था तथा शाखा को भेजे गये माल खाते का जमा शेष १,३२,००० रु. था। ३० दिसम्बर, २००८ को मुख्य कार्यालय द्वारा ९,००० रु. का माल भेजा गया, जो कि शाखा द्वारा १२ जनवरी, २००९ को प्राप्त किया गया। शाखा ने पौंड १,००० की रकम २९ दिसम्बर, २००८ को भेजी जो कि मुख्य कार्यालय को 8 जनवरी 2009 को प्राप्त हुई तथा इससे ६७,००० रु. वसूल हुए। (The Branch Account in H.O. Books showed a debit balance of Rs. 10,05,000 on 31.12.2008 and the credit balance of goods sent to branch was Rs. 1,32,000. On 30 December, 2008 the goods sent to Branch for Rs. 9,000 reached at London on 12 January, 2009. The branch remitted pound 1,000 to H.O. on 29 December, 2008 which reached at Mumbai on 8 January, 2009 and it realised Rs. 67,000).

लन्दन शाखा के तलपट को भारतीय मुद्रा में परिवर्तित कीजिये तथा फर्नीचर पर १०% ह्रास लगाते हुए शाखा का व्यापारिक तथा लाभ हानि खाता तैयार कीजिये। (Convert the London Branch Trial Balance in Indian Currency and prepare the Trading and Profit and Loss Account while writing off 10% Depreciation on Furniture).

हल (Solution) :

Branch Account

	To Balance	Rs. 10,05,000		By Goods in Transit A/c By Balance c/d	Rs. 9,000 9,96,000
		10,05,000			10,05,000

Converted Trial Balance of the London Branch

Particulars	Adjusted Branch Trial Balance in Ponds		Debit Balances	Credit Balances
	Dr. Balance	Cr. Balance	Rs.	Rs.
Cash in Hand	2,400		1,60,800	
Cash at Bank	1,600		1,07,200	
Stock at on 01.01.2008	4,000		2,56,000	
Purchases & Sales	12,000	22,000	7,92,000	14,52,000
Debtors & Creditors	9,000	8,000	6,03,000	5,36,000

टिप्पणी

Particulars	Adjusted Branch Trial Balance in Ponds		Debit Balances	Credit Balances
	Dr. Balance	Cr. Balance	Rs.	Rs.
Goods received from H.O.	2,000	—	1,23,000	—
Rent	1,000	—	66,000	—
Salaries	4,000	—	2,64,000	—
Wages	3,000	—	1,98,000	—
Furniture Less Depreciation	1,800	—	68,400	—
Depreciation on Furniture	200		7,600	—
Carriage Inwards	200	—	13,200	—
Carriage Outwards	800	—	52,800	—
Stationery & Printing	1,000	—	66,000	—
Sundry Expenses	2,000		1,32,000	—
Head Office Account	—	16,000	—	9,96,000
Cash in Transit	1,000		67,000	—
Difference in Exchange			7,000	
Closing Stock £ 9,000 @ Rs. 67 per £ = Rs. 6,03,000	46,000	46,100	29,84,000	29,84,000

Branch Trading and Profit & Loss Account

Particulars	Rs.	Particulars	Rs.
To Opening Stock	2,56,000	By Sales	14,52,000
To Purchases	7,92,000	By Closing Stock	6,03,000
To Goods from H.O.	1,23,000		
To Wages	1,98,000		
To Carriage Inwards	13,200		
To Gross Profit	6,72,800		
	20,55,000		20,55,000
To Rent	66,000	By Gross Profit	6,72,800
To Salaries	2,64,000		
To Depreciation	7,600		
To Carriage Outward	52,800		
To Stationery & Printing	66,000		
To Sundry Expenses	1,32,000		
To Difference in Excnahge	7,000		
To Net Profit	77,400		
	6,72,800		6,72,800

विदेशी शाखा के तलपट को मुख्यालय की बहियों में सम्मिलित करने की वैकल्पिक विधि

(Alternative method of incorporating the Foreign Branch Trial Balance in Head Office Books) : विदेशी शाखा के तलपट को परिवर्तित करने की एक दूसरी विधि भी है। विदेशी शाखा से प्राप्त तलपट से पहले विदेशी मुद्रा में ही लाभ हानि खाता बना लिया जाता है। विदेशी मुद्रा में ज्ञात लाभ को विनिमय की औसत दर

टिप्पणी

से परिवर्तित कर दिया जाता है। यदि उस वर्ष मुख्य कार्यालय के देश की मुद्रा का अवमूल्यन हुआ है तो शुद्ध लाभ को वर्ष के अन्त की दर से परिवर्तित कर दिया जाता है। अन्य शेष राशियों को उसी प्रकार परिवर्तित किया जाता है जैसा पहले तरीके में किया गया था।

उदाहरण (Illustration) : ११

उदाहरण संख्या १० में प्रस्तुत जानकारी से लंदन ष्शाखा के तलपट को मुख्यालय के अंतिम लेखों में वैकल्पिक पद्धति से समामेलित कीजिये। (Incorporate the Trial Balance of the London Branch in the books of the Head Office under the alternative method from the facts given in the Illustration No. 10).

हल (Solution)

London Branch Trading and Profit and Loss Account for the year ended 31st December, 2008

	Pounds		Pounds
To Opening Stock	4,000	By Sales	22,000
To Purchases	12,000	By Stock	9,000
To Goods from Head Office	2,000		
To Wages	3,000		
To Carriage Inward	200		
To Gross Profit c/d	9,800		
	31,000		31,000

	Pounds		Pounds
To Rent	1,000	By Gross Profit b/d	9,800
To Salary	4,000		
To Carriage Outward	800		
To Printing and Stationery	1,000		
To Sundry Expenses	2,000		
To Depreciation on Furniture	200		
To Net Profit	800		
	9,800		9,800

Conveted Trial Balance

Particulars	Rate per £	Debit Rs.	Credit Rs.
Cash in Hand	67	1,60,800	
Cash at Bank	67	1,07,200	
Closing Stock	67	6,03,000	
Debtors and Creditors	67	6,03,000	5,36,000
Furniture less Depreciation (Rs. 76,000 – Rs. 7,600)	38	68,400	
Cash in transit		67,000	
Head Office A/c			9,96,000
Profit and Loss A/c (Pounds 800)	66		52,800
Difference in Exchange			24,600
		16,09,400	16,09,400

दोनों विधियों से ज्ञात शुद्ध लाभ का समाधान

Reconciliation between the Figures of net profit ascertained under the two alternative methods

Profit under the alternate method £ 800 when converted at the average rate of exchange during the year viz Rs. 66 per Pound comes to :

	Rs.
£ 800 @ Rs. 66 per Pound i.e.	52,800
Add : Credit figure of difference in Exchange under the alternate method	24,600
This figure tallies with the first method	77,400

३.२ विभागीय खातों का अर्थ (Meaning of Departmental Accounts)

जब व्यापारी अपने ग्राहकों को अधिकतम सुविधा प्रदान करने के लिए एक ही छत के नीचे उसके उपयोग की विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को बेचने के लिए अलग-अलग स्थान निर्धारित कर देता है तो उसे विभाग कहे है। जैसे कपड़ा, दवायें, घी-तेल, दाल-दलहन एवं श्रृंगार प्रसाधन सामग्री आदि। इन विभागों का अलग-अलग लाभ ज्ञात करने के लिए जो खाते बनाये जाते है उन्हें विभागीय खाते कहते है। विभागीय स्टोर के अन्तर्गत एक ही छत के नीचे कई विभाग स्थापित किये जाते हैं जो भिन्न-भिन्न प्रकार की वस्तुओं एवं सेवाओं का विक्रय करते हैं। ग्राहकों के दृष्टिकोण से भी एक ही स्थान पर विभिन्न वस्तुओं की प्राप्ति कम समय में हो जाती है। प्रत्येक विभाग का एक विभागीय अध्यक्ष होता है जो अपने विभाग की प्रगति एवं विस्तार के लिये उत्तरदायी होता है।

टिप्पणी

३.२.१ विभागीय लेखे रखने से लाभ

विभागीय लाभ हानि खातों के बनाने से व्यवसाय के प्रबन्धकों को अनेक लाभ हैंः प्रथम, प्रत्येक विभाग एवं सम्पूर्ण व्यापार के लाभ-हानि का पता लगाया जा सकता है, जिससे कार्य क्षमता अथवा कार्य शिथिलता की जानकारी मिल जाती है। इससे कर्मचारियों को वेतन वृद्धि, पदोन्नती तथा अन्य मोद्रिक एवं गैर मोद्रिक उत्प्रेरणाऐं (Motivations) प्रदान करने में आसानी रहती है। दूसरे, भविष्य की नीति के निर्धारण में विभागानुसार लाभ-हानि की जानकारी सहायक होती है। तीसरे, अन्तर विभागीय तथा अन्तरकालीन विभागीय खाते तुलनात्मक अध्ययन करने, खर्चों पर नियन्त्रण रखने व्यापार का विकास करने में सहायक होते है।

विभागीय लेखे रखना (Departmental Accounting) – वर्ष के अन्त में अलग-अलग विभागों के लाभ-हानि ज्ञात करने के लिए प्रारम्भ से ही लेखा पुस्तकें इस प्रकार रखी जाती हैं कि आसानी से विभागीय लाभ-हानि खाते बनाये जा सकें। इस कार्य के लिए क्रय पुस्तक, विक्रय पुस्तक, क्रय वापसी तथा विक्रय वापसी पुस्तक में सामान्य खानों के अलावा प्रत्येक विभाग का एक-एक अतिरिक्त स्तंभ बना दिया जाता है। प्रत्येक विभाग के प्रारम्भिक एवं अन्तिम स्टॉक की जानकारी भी अलग से अंकित की जाती है।

विभागीय सहायक पुस्तक का नमूना

दिनांक	विवरण	बीजक संख्या	पृष्ठ संख्या	योग रु.	विभाग अ	विभाग ब	विभाग स	विभाग द
					रु.	रु.	रु.	रु.

विभागों के प्रत्यक्ष व्ययों की जानकारी भी विभागानुसार अंकित की जाती है जिससे उनके सकल लाभ अथवा हानि (Gross Profit or Loss) को ज्ञात किया जा सकता है।

३.२.२ प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष व्ययों का विभाजन-(Apportionment of Direct and Indirect Expenses) –

विभागीय लाभ-हानि खाता बनाते समय लेखापाल को यह देखना पड़ता है कि व्यय की कौनसी मद किस विभाग से सम्बन्धित है और ऐसे व्यय जिनको सामूहिक रूप से किया जाता है, उनका कितना हिस्सा प्रत्येक विभाग में वितरित करना चाहिये। अतः व्ययों को उचित रीति से विभिन्न विभागों में बांटने पर ही सही लाभ हानि ज्ञात किये जा सकते हैं। व्यय प्रत्यक्ष हो अथवा अप्रत्यक्ष, बांटने की समस्या एकसी ही है। व्ययों को विभागानुसार निम्नलिखित आधारों पर वितरित किया जा सकता है :-

(i) किसी विशेष विभाग के लिए किया जाने वाला व्यय - ऐसे व्यय प्रत्यक्ष व्ययों की श्रेणी में आते हैं जिनको सम्बन्धित विभाग के व्ययों में शामिल किया जायेगा। जैसे विशेष विभाग का वेतन, स्टॉक विशेष का बीमा, बिजली का व्यय, पैकिंग आदि के खर्चे प्रमुख हो सकते हैं।

(ii) सभी विभागों पर किया गया व्यय जो किसी सुस्पष्ट सिद्धान्त के अनुसार वितरित हो सकता है - व्यापार के कुछ व्यय ऐसे होते हैं जो एक से अधिक विभाग के लिए किये जाते हैं लेकिन जिनका विभाजन किन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर ही किया जाता है। जैसे - किराये का वितरण उन विभागों द्वारा घेरे गये स्थान के क्षेत्रफल (area) के

आधार पर किया जा सकता है। हाँ, मुख्य द्वार वाले विभाग को किराये का अधिक भार सहन करना पड़ेगा। बिजली व्यय प्रत्येक विभाग में लगे पृथक मीटरों द्वारा दर्शायी गयी इकाईयों अथवा पोइन्ट्स की संख्या या बल्बों की शक्ति के अनुसार बांटा जा सकता है।

(iii) वे सामूहिक व्यय जिनका वितरण किसी अन्य न्यायसंगत आधार पर हो सकता है – प्रत्येक व्यावसायिक संस्था के कुछ ऐसे व्यय होते हैं जिनका विभिन्न विभागों में विभाजन किसी स्पष्ट आधार पर नहीं किया जा सकता है। यहां ऐसे कुछ व्ययों के वितरण के न्यायसंगत आधारों का उल्लेख किया गया है :-

(अ) कुछ व्यय जो कि विक्रय की मात्रा से सम्बन्ध रखते हैं जैसे बिक्री व्यय, नकद बट्टा या छूट, डूबत ऋण, विक्रय पर कमीशन, विज्ञापन व्यय, जावक गाड़ी भाड़ा आदि – उन्हें विभागों के विक्रय के अनुपात (Sales Ratio) में वितरित किया जाना चाहिए।

(आ) व्यावसायिक भवन पर किया जाने वाला व्यय जैसे स्थानीय कर, भवन कर, मरम्मत व्यय आदि को प्रत्येक विभाग के द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली भू-क्षेत्र के अनुपात (Space Ratio) में वितरित करना चाहिए।

(इ) प्रकाश व्यय (Lighting Expenses) – प्रकाश व्यय तथा कमरों को गरम करने के व्ययों को यदि मीटर लगे हो तो उनके द्वारा दर्शायी गई इकाइयों के अनुसार अन्यथा बल्बों की शक्ति, वाट या उनकी संख्या के आधार पर वितरित किया जाता है। अन्य सूचना के अभाव में भू-क्षेत्र के आधार को भी प्रयुक्त किया जा सकता है।

(ई) शक्ति पर व्यय (Expenses on Power) – विभिन्न विभागों में प्रयोग में लाई जाने वाली मशीनों द्वारा प्रयुक्त शक्ति पर 'पावर' के लिए किये गये व्यय का वितरण यदि मीटर लगे हो तो उनके अनुसार अन्यथा प्रत्येक विभाग में प्रयुक्त की जाने वाली मशीनों की अश्व-शक्ति (Horse Power) के आधार पर किया जाता है।

(उ) ह्रास (Depreciation) – प्रत्येक विभाग में प्रयोग में आ रही मशीनों पर मूल्य ह्रास की गणना की जानी चाहिये। सूचना के अभाव में 'बिक्री' या 'मजदूरी' के आधार पर ह्रास का वितरण किया जाना चाहिए।

(ऊ) स्टॉक का बीमा (Insurance of Stock) – विभिन्न विभागों के स्टॉक का बीमा कराने पर दिये जाने वाले प्रीमियम का विभाजन प्रत्येक विभाग के औसत स्टॉक के मूल्य के अनुपात में किया जाना चाहिए।

(ए) श्रम कल्याण व्यय (Labour Welfare Expenses) – यह व्यय प्रत्येक विभाग में कार्यरत श्रमिकों की संख्या के आधार पर बांटना चाहिए।

(iv) वे व्यय जो किसी न्यायपूर्ण नीति से वितरित नहीं किये जा सकते हैं – कुछ व्यय ऐसे होते है जिनका विभिन्न विभागों में विभाजन उपरोक्त किसी भी आधार पर अथवा अन्य किसी उचित आधार पर नहीं किया जा सकता है, जैसे- ऋण-पत्रों पर ब्याज, मुख्य प्रबन्धक का वेतन, कार्यालय व्यय आदि – ऐसे व्ययों का विभाजन नहीं करना चाहिए। इन व्ययों को सामान्य लाभ हानि खाते में हस्तान्तरित कर देना चाहिए। संस्था को प्राप्त आय के विभिन्न मद जैसे अंशों के हस्तान्तरण पर प्राप्त शुल्क, विनियोगों पर प्राप्त ब्याज तथा लाभांश आदि भी किसी विभाग से सम्बंधित न होने के कारण उसे सामान्य लाभ-हानि खाते में हस्तान्तरित कर देना चाहिए।

उपरोक्त आधारों को समझाने का प्रमुख उद्देश्य विभागानुसार लाभ-हानि ज्ञात करने में सुगमता प्रदान करना है। प्रश्नों के अनुसार आधारों में समायोजन संभव है। विभागीय लाभ-हानि खाते स्तम्भीय रूप (Columnar Form)

टिप्पणी

में बनाये जाते हैं। विभिन्न विभागों के लाभ-हानि को सामान्य लाभ-हानि खाते में हस्तान्तरित कर देते हैं जिसके शेष को चिट्ठे में ले जाते हैं।

उदाहरण (Illustration) : १२

रेडियो तथा ग्रामोफोन इक्विपमेंट कम्पनी की ३१ मार्च २००९ को समाप्य छः मासिक अवधि के निम्नलिखित अतिरिक्त सूचनाओं से अ ब तथा स विभागों के व्यापार तथा लाभ–हानि खाते तैयार कीजिये : (Prepare the trading and Profit and loss account of A, B and C department from the following Particulars related to Radio and Gramophones Equipment Company for the six months ended 31st March, 2009:)

	Rs.		Rs.
To Purchases : Radio (A)	1,40,700	By Sales : Radio (A)	1,50,000
Gramophones (B)	90,600	Gramophones (B)	1,00,000
Spare Parts for Servicing (C)	64,400	Repair Jobs (C)	25,000
To Salaries and wages	48,000	By Stock : Radio (A)	60,100
To Rent of entire premises	10,800	Gramophones (B)	20,300
To Sundry Expenses	11,000	Spare Parts for Servicing (C)	44,600
To Profit	34,500		
	4,00,000		4,00,000

अतिरिक्त सूचना (Additional Information) :

(i) रेडियो तथा ग्रामोफोन प्रदर्शन कक्ष में बेचे जाते हैं तथा मरम्मत व सर्विसिंग वर्कशाप में की जाती है। (Radio and Gramophones are sold at the showroom and repairs and servicing are done at the work-shop.)

(ii) वेतन तथा मजदूरी के व्यय का अनुपात प्रदर्शन कक्ष ३/४ तथा वर्कशाप १/४ है। (Salaries and wages comprise of as to showroom 3/4 and work shop 1/4)

(iii) प्रदर्शन कक्ष के वेतन तथा मजदूरी का वितरण अ तथा ब विभागों में १ : २ के अनुपात से करना है।(Show room Salaries and wages are allocated between A and B departments in 1 : 2)

(iv) वर्कशाप का किराया ५०० रु. माहवार है तथा प्रदर्शन कक्ष के हिस्से को अ तथा ब विभागों में समान रूप से विभाजित करना है। (The rent of workshop is Rs. 500 per month and the showroom share is to be allocated equally between A and B departments.)

(v) विविध व्ययों का वितरण तीनों विभागों के विक्रय के अनुपात में करना है। (Sundry Expenses are tobe allocated on the basis of turnover of each department.)

हल (Solution) :

महत्वपूर्ण बिन्दु :

(१) प्रदर्शन कक्ष के (v) विभाग में रेडियो का विक्रय किया जाता है तथा (ब) विभाग में ग्रामोफोन बेचे जाते हैं। स विभाग में मरम्मत का कार्य होता है। तदनुसार वेतन तथा मजदूरी का बंटवारा इस प्रकार किया जावेगा।

वेतन तथा मजदूरी की कुल राशि ४८,००० रु. का १/४ भाग स विभाग में तथा शेष ३६,००० रु. का १/३ = १२,००० रु. अ विभाग में तथा २/३ = २४,००० रु. ब विभाग में व्यय माना जावेगा।

(२) कारखाने का किराया ५०० रु. माहवार से **६** माह का = **३,०००** रु. है अतः किराये की शेष राशि १०,८०० रु. - ३,००० रु. = ७,८०० रु. अ तथा ब विभागों में समान अर्थात प्रत्येक में ३,९०० रु. बांटी जावेगी।

(३) विविध व्यय 11,000 रु. का विभाजन विक्रय के अनुपात में अर्थात १५० : १०० : २५ या ६ : ४ : १ = ६,००० रु. अ विभाग में ४,००० रु. ब विभाग में तथा **१,०००** रु. स विभाग में लिखे जावेंगे।

Departmental Trading and Profit and Loss Account for the half year ended 31.3.2009

Particulars	A	B	C	Particulars	A	B	C
	Rs.	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.	Rs.
To Purchases	1,40,700	90,600	64,400	By Sales	1,50,000	1,00,000	25,000
To Gross Profit	69,400	29,700	5,200	By Stock	60,100	20,300	44,600
	2,10,100	1,20,300	69,600		2,10,100	1,20,300	69,600
To Salaries and Wages (as per W.N. no. 1)	12,000	24,000	12,000	By G/p	69,400	29,700	5,200
To Rent (as per W.N. no. 2)	3,900	3,900	3,000	By Net Loss	—	2,200	10,800
To Sundry Expenses as per W.N.no.3)	6,000	4,000	1,000				
To Net Profit	47,500	—	—				
	69,400	31,900	16,000		69,400	31,900	16,000

टिप्पणी

३.२.३ अन्तर्विभागीय स्थानान्तरण (Inter-departmental Transfers) -

प्रायः एक विभाग से दूसरे विभागों में माल तथा सेवाओं का स्थानान्तरण होता है जिसे अन्तर्विभागीय स्थानान्तरण कहते हैं। प्रत्येक विभाग इस कार्य के लिए एक लेखा पुस्तक अलग से रखता है। विभागों के सही लाभ-हानि की जानकारी के लिए यह लेखा आवश्यक है। वर्ष के अन्त में इस लेखा पुस्तक से यह सूचना मिल जाती है कि वर्ष भर में प्रत्येक विभाग द्वारा प्रदान की गई सामग्री एवं सेवाओं का मूल्य क्या है। इन सूचनाओं के आधार पर माल अथवा सेवा प्राप्त करने वाले विभाग के व्यापार खाते को नाम (Debit) तथा माल या सेवा प्रदान करने वाले विभाग के व्यापार खाते को जमा (Credit) किया जाता है।

प्रायः अन्तर्विभागीय स्थानान्तरण लागत पर न करके सामान्य विक्रय मूल्य पर या लागत में कुछ लाभ जोड़कर किया जाता है। ऐसी स्थिति में यदि प्राप्तकर्ता विभाग उक्त हस्तान्तरित माल का पूरा विक्रय कर दे तो लेखांकन सम्बंधी कोई समस्या उत्पन्न नहीं होती। इसके विपरीत यदि प्राप्तकर्ता विभाग के पास वर्ष के अन्त में उक्त माल में से कुछ भाग बिना बिके रह जाये तो इसमें सम्मिलित लाभ पूर्णतया अर्जित नहीं माना जा सकता। अतः ऐसे अनार्जित लाभ के सम्बन्ध में स्कंध संचय (Stock reserve) बनाना आवश्यक हो जाता है। यह संचय व्यापार के सामान्य लाभ हानि खाते में से बनाना चाहिये, न कि लाभ पर माल भेजने वाले विभाग के लाभ में से। सभी विभागों की लार्भाजन क्षमता ज्ञात करते समय यही उचित माना जाता है कि अन्तर्विभागीय हस्तान्तरण प्रत्येक विभाग के सामान्य विक्रय मूल्य पर ही किया जाय।

यदि किन्हीं खर्चों का विभिन्न विभागों में वितरण विक्रय के आधार पर किया जाना हो तो प्रत्येक विभाग की पूर्ण बिक्री की राशि की गणना में बाहरी ग्राहकों को की जाने वाली बिक्री के साथ साथ उस विभाग द्वारा अन्य विभागों को भेजा गया माल भी जोड़ा जावेगा। कारण स्पष्ट है कि हस्तान्तरण भी एक प्रकार की बिक्री ही होती हैं तथा हस्तान्तरण में भी व्यापारिक उपरिव्यय तो लगते ही हैं। इसी प्रकार विभिन्न विभागों द्वारा अर्जित सकल लाभ का विक्रय पर प्रतिशत ज्ञात करते समय भी विक्रय में उक्त हस्तान्तरण सम्मिलित किये जाने चाहिये।

उदाहरण (Illustration) : १३

टेलर्स लि. के दो विभाग हैं – 'कपड़ा' तथा 'सिलाई' है। सिलाई विभाग को कपड़ा विभाग द्वारा अपने सामान्य विक्रय मूल्य पर कपड़ा प्रदान किया जाता है। 31 दिसम्बर 2009 को कम्पनी के निम्नलिखित तलपट से वर्ष का व्यापारिक तथा लाभ–हानि खाता तथा स्थिति–विवरण तैयार कीजिये – (Tailors Ltd., have two departments–'cloth' and outfitting'. Cloth is supplied to the out-fitting department by the cloth department at its usual selling price. From the following trial balance of the company as on 31st December, 2009, prepare Trading, Profit and Loss Account and the Balance Sheet) :

	Dr. Rs.	Cr. Rs.
Share Capital	—	1,50,000
Stock-Cloth Deptt. (01.01.2008)	80,000	

	Dr. Rs.	Cr. Rs.
Stock Out-fitting Deptt. (01.01.2008)	4,900	
Stock Reserve on above (01.01.2008)		400
Purchases-Cloth Deptt.	11,00,000	
Purchases-Outfitting Deptt.	10,000	
Sales-Cloth Deptt.		12,50,000
Sales Outfitting Deptt.		1,50,000
Transfer of Cloth to outfitting department at Selling Price	50,000	50,000
Directors' Fees and Remuneration	30,000	
Wages and Salaries Cloth	20,000	
Wages and Salaries Outfitting	40,000	
Rent and Rates (3/4 to Cloth)	8,000	
Lighting (3/4 to Cloth)	2,000	
Depreciation (Outfitting)	5,000	
Depreciation (Cloth)	1,000	
Office Salaries	16,000	
Furniture and Fitting	20,000	
Office Expenses	3,000	
Equipments	50,000	
Carriage inwards (on cloth)	66,000	
Investments	50,000	
Income from investments		9,500
Cash at Bank	54,000	
	16,09,000	16,09,000

कपड़े का अन्तिम स्टॉक कपड़ा विभाग में 96,000 रु. का था तथा सिलाई विभाग में 7,500 रु. का था (ये इन विभागों के लागत मूल्य पर हैं)। लेखांकन के सही सिद्धांतों के आधार पर लाभ हानि ज्ञात करनी है।

(Closing stock of Cloth in hand in the Cloth Department was Rs. 96,000 and that in Outfitting department amounted to Rs. 7,500 (at Cost to the respective departments). It is desired to ascertain profit or loss on strict accountancy principles).

टिप्पणी

हल (Solution) :

Departmental Trading and Profit and Loss Account for the year ended 31st December, 2009

Particulars	Cloth	Outfitting	Particulars	Cloth	Outfitting
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
To Opening Stock	80,000	4,900	By Sales	12,50,000	1,50,000
To Purchases	11,00,000	10,000	By Transfer to		
To Transfer from			Outfittings Deptt.	50,000	
Cloth Deptt.	—	50,000	By Closing Stock	96,000	7,500
To Wages and salaries	20,000	40,000			
To Carriage	66,000	—			
To Gross Profit	1,30,000	52,600			
	13,96,000	1,57,500		13,96,000	1,57,500
To Rent & Rates	6,000	2,000	By Gross Profit	1,30,000	52,600
To Lighting	1,500	500			
To Depreciation	1,000	5,000			
To Net Profit					
transferred to					
General P&L A/c	1,21,500	45,100			
	1,30,000	52,600		1,30,000	52,600

General Profit and Loss Account

	Rs.		Rs.	Rs.
To Director's fee and		By Profit & Loss A/c :	Rs.	
remuneration	30,000	Cloth	1,21,500	
To Office Salaries	16,000	Outfittings	45,100	1,66,600
To Office Expenses	3,000	By Income from investments		9,500
To Stock reserve on closing		By Stock reserve on Opening		
stock of out fittings deptt.		stock of Outfitting Deptt.		400
(10% on Rs. 7,500)	750			
To Net Profit	1,26,750			
	1,76,500			1,76,500

१. सिलाई विभाग को माल कपड़ा विभाग से प्राप्त होता है। कपड़ा विभाग का सकल लाभ 1,30,000 रु. है तथा विक्रय (12,50,000 + 50,000) रु. = 13,00,000 रु. है अतः सकल लाभ अनुपात 10% हुआ अर्थात सकल लाभ लागत का 1/9 हुआ। सिलाई विभाग के प्रांरभिक तथा अंतिम रहतिये पर स्कन्ध संचय लाभ हानि खाते में क्रमशः जमा तथा नाम पक्ष में लिखना पड़ेगा।

Balance Sheet as on 31.12.2009

	Rs.				Rs.
Share Capital	1,50,000	Cash at Bank			54,000
P & L A/c	1,26,750	Investments			50,000
		Equipment			50,000
		Furniture & Fittings			20,000
		Closing Stock :		Rs.	
		Cloth Dept.		96,000	
		Outfitting Dept.	7,500		
		Less Reserve	750	6,750	1,02,750
	2,76,750				2,76,750

उदाहरण (Illustration) : १४

एक फर्म के दो विभाग 'कपड़ा' तथा 'तैयार वस्त्र' हैं। तैयार वस्त्र विभाग कपड़ा विभाग से उसके सामान्य विक्रय मूल्य पर कपड़ा खरीद कर स्वयं वस्त्र बनाता है। नीचे लिखी जानकारी से विभागीय व्यापार तथा लाभ-हानि खाते बनाइये। तैयार वस्त्र विभाग के रहतिये के मूल्य में 3/4 कपड़ा तथा 1/4 अन्य व्यय मानिये। कपड़ा विभाग ने गत वर्ष 15 प्रतिशत की दर से सकल लाभ कमाया था। व्यापार के विविध व्यय 1,18,000 रु. माने जाय जिन्हं दोनों विभागों में उसके विक्रय (हस्तान्तरण सहित) के अनुपात में बांटा जाय। (A firm has two departments 'Cloth' and 'Ready made garments'. The department of readymade garments itself manufactures garments out of cloth purchased from cloth department at its usual selling price. Prepare departmental Trading and Profit & Loss Account from the following information. Assume the value of the stocks of the department of readymade garment as consisting of ¾ cloth and ¼ other expenses. The cloth department earned a gross profit of 15% last year. The general expenses of the whole business may be assumed to be Rs. 1,18,000 and distributed in the departments in the proportion to their sales including transfers).

टिप्पणी

	Cloth	Readymade Garments
	Rs.	Rs.
Opening Stock	3,00,000	50,000
Purchases	20,00,000	15,000
Sales	22,00,000	4,50,000
Transfer to readymade cloth department	3,00,000	3,00,000
Expenses :		
Manufacturing	—	60,000
Selling	20,000	6,000
Closing stock	2,00,000	60,000

हल (Solution) :

Departmental Trading and Profit and Loss Account

Particulars	Cloth	Readymade Garments	Particulars	Cloth	Readymade Garments
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
To Openint Stock	3,00,000	50,000	By Sales	22,00,000	4,50,000
To Purchases	20,00,000	15,000	By Transfer to		
To Transfer from Cloth	—	3,00,000	Readymade Garments	3,00,000	—
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
To Mfg. Expenses	—	60,000	By Closing Stock	2,00,000	60,000
To Gross Profit	4,00,000	85,000			
	27,00,000	5,10,000		27,00,000	5,10,000
To Misc. Exp.	1,00,000	18,000	By Gross Profit	4,00,000	85,000
To Selling Exp.	20,000	6,000	By Stock Reserve		
To Stock Reserve (Rs. 60,000 x 75% x 16%)	7,200	—	(Rs. 50,000 x 75% x 15%)	5,625	—
To Net Profit	2,78,425	61,000			
	4,05,625	85,000		4,05,625	85,000

Calculation of G.P. Rate of Cloth Department :

$$\text{G.P. Rate} = \frac{\text{GP}}{\text{Sales}} \times 100 \text{ or } \frac{\text{Rs. } 4,00,000}{\text{Rs. } 25,00,000} \times 100 = 16\%$$

उदाहरण (Illustration) : १५

एक व्यापारिक संस्था के तीन विभागों द्वारा वर्ष भर का क्रय निम्नलिखित था : (The following purchases were made by a business having 3 departments) :

विभाग 'अ' 1,000 इकाइयां (Department A 1,000 units)

विभाग 'ब- 2,000 इकाइयां (Department B 2,000 units)

विभाग ष्'स' 2,400 इकाइयां (Department C 2,400 units)

कुल लागत मूल्य 1,00,000 रु. (at a total cost of Rs. 1,00,000)

१ जनवरी २००९ को प्रारम्भिक रहतिया निम्नलिखित था - (Opening Stock on 1st January, 2009 were) :

विभाग 'अ' १२० इकाइयां, विभाग 'ब' ८० इकाइयां तथा विभाग 'स- १५२ इकाइयां। (Department A 120 units. Department B 80 units and Department C 152 units).

वर्ष भर की बिक्री निम्नलिखित थी :- (The Sales during the year were) :

विभाग 'अ१ १,०२० इकाइयां २० रु. प्रति इकाई की दर से (Department A 1,020 units @ Rs. 20 each)

विभाग 'ब' १,९२० इकाइयां २२.५० रु. प्रति इकाई की दर से (Department B 1,920 units @ Rs. 22.50 each)

विभाग 'स' २,४९६ इकाइयां २५ रु. प्रति इकाई की दर से (Department C 2,496 units @ Rs. 25 each)

३१ दिसम्बर २००९ को विभागीय व्यापार खाते यह मानते हुए तैयार कीजिए कि प्रत्येक विभाग के सकल लाभ की दर समान है। (Prepare Departmental Trading Accounts for the year ending 31st Dec., 2009 assuming that the rate of gross profit is the same in each case).

हल (Solution) :

इस प्रश्न में व्यापार खाता तैयार करने के लिए तीनों विभागों की वस्तुओं की प्रति इकाई लागत ज्ञात करना आवश्यक है। प्रत्येक विभाग की सकल लाभ दर समान है।

(i) यह मानते हुए कि सारा क्रय किया गया माल बिक जाता है, लाभ की मात्रा निम्नलिखित होगी -

विभाग	इकाइयां	विक्रय मूल्य प्रति इकाई	कुल विक्रय राशि
			रु.
'अ'	१,०००	२० रु.	२०,०००
'ब'	२,०००	२२.५० रु.	४५,०००
'स'	२,४००	२५ रु.	६०,०००
			१,२५,०००

लाभ = विक्रय मूल्य - लागत या 1,25,000 रु. - 1,00,000 रु. = 25,000 रु.

लाभ की दर (विक्रय मूल्य को आधार मानते हुए) = 25,000/1,25,000 x 100 = 20%

'अ' विभाग की लागत = वि.मू. - लाभ या 20 रु. - 4 रु. = 16 रु.

टिप्पणी

'ब' विभाग की लागत = वि.मू. - लाभ या 22.50 रु. - 4.50 रु. = 18 रु.

'स' विभाग की लागत = वि.मू. - लाभ या 25 रु. - 5 रु. = 20 रु.

(ii) प्रत्येक विभाग के अन्तिम स्टॉक की इकाइयां इस प्रकार ज्ञात की गई हैं -

	विभाग		
	अ	ब	स
प्रारम्भिक इकाइयां	१२०	८०	१५२
जोडोः क्रय की गई इकाइयां	१,०००	२,०००	२,४००
कुल	१,१२०	२,०८०	२,५५२
घटाओः विक्रय की गई इकाइयां	१,०२०	१,९२०	२,४९६
अन्तिम स्टॉक की इकाइयां	१००	१६०	५६

Departmental Trading Account for the year ending 31.12.2008

Particulars	A	B	C	Particulars	A	B	C
	Rs.	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.	Rs.
To Opening Stock	1,920	1,440	3,040	By Sales	20,400	43,200	62,400
" Purchases	16,000	36,000	48,000	" Closing Stock (No. of units x Cost Per Unit)	1,600	2,880	1,120
" Gross Profit (20% on Sales)	4,080	8,640	12,480				
	22,000	46,080	63,520		22,000	46,080	63,520

३.३ साझेदारी फर्मों द्वारा लेखांकन (Accounting by Partnership Firm)

जब दो या दो से अधिक व्यक्ति मिलकर किसी कारोबार को करते है जिनका उद्देश्य लाभ कमाना तथा उसे आपस में बांटना हो तो इन्हें संयुक्त रूप से साझेदारी कहते है।

३.३.१ साझेदारी का अर्थ एवं परिभाषाऐं (Meaning and Definations)

'साझेदारी उन व्यक्तियों का पारस्परिक सम्बन्ध है जो किसी ऐसे व्यापार के लाभ को बांटने के लिए सहमत हुए है जो उन सभी या उनमें से किसी के द्वारा सबकी ओर से चलाया जायेगा।' भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 की धारा 4 'साझेदारी, अनुबन्ध करने की क्षमता रखने वाले व्यक्तियों के बीच समझौता है जिससे वे समान रूप से निजी लाभ के लिए व्यवसाय करते है।' **एच. एल. हैने**

किसी व्यापारिक इकाई का एक साझेदारी फर्म के रूप में गठन करते समय अधिनियम के निम्नलिखित प्रावधान अनिवार्यतः मानने होते हैं -

(i) एक से अधिक व्यक्ति पारस्परिक समझौते द्वारा आपस में साझा संबंध स्थापित करें।

टिप्पणी

(ii) साझेदारी में कोई व्यापार चलाया जाए।

(iii) व्यापार का कार्य वे सभी मिलकर करें अथवा उनमें से कोई भी सभी की ओर से करें।

(iv) इस प्रकार चलाए गए व्यापार से होने वाले लाभ को आपस में बांटने का उनमें समझौता किया गया हो।

३.३.२ साझेदारी फर्म के लाभ का विभाजन (Division of Profit of Partnership Firm)

यदि साझेदारों ने फर्म के व्यापार में समान मात्रा में पूंजी लगाई हो और वे व्यापार के कार्यों में समान रूप से सहयोग देते हों तो फर्म का लाभ समान अनुपातों में बांटना ही उचित माना जा सकता है इसके विपरीत यदि फर्म में साझेदारों की पूंजी असमान मात्रा में हो तो अधिक पूंजी लगाने वाला साझेदार लाभ का कुछ अतिरिक्त भाग पाने की आशा कर सकता है। इसी प्रकार यदि कुछ साझेदार पूंजी लगाने के पश्चात् क्रियाशील रूप में व्यापार के लिए समय न देते हों तो अन्य क्रियाशील साझेदार अपने कार्य के लिए अतिरिक्त पारिश्रमिक पाने की भी आशा कर सकते हैं। इस समस्या के दो समाधान हो सकते हैं -

(i) लाभ वितरण के अनुपात निर्धारित करते समय साझेदारों की पूंजी की राशियों तथा उनके व्यापार में क्रियाशील सहयोग की मात्रा को आधार माना जाय अथवा -

(ii) पूंजी पर ब्याज देने तथा क्रियाशील साझेदारों को वेतन देने की व्यवस्था की जाए।

उपरोक्त प्रकार से पूंजी पर ब्याज तथा वेतन की गणना करने के उपरान्त अवशिष्ट लाभ का वितरण समान अनुपात में करने पर सभी साझेदार सहमत हो सकते हैं।

पूंजी पर ब्याज का समायोजन करने की प्रविष्टि

Interest on Capital A/c Dr.

To Capital or Current A/cs of individual partners

(Being interest allowed on partners capitals)

साझेदारी वेतन का समायोजन करने की प्रविष्टि

Partners's Salaries A/c Dr.

To Individual partners's Capital or Current A/cs

(Being salary credited to partners)

पूंजी पर ब्याज तथा साझेदारों के वेतन को लाभ हानि नियोजन खाते में हस्तांतरित कर देते है। इसके लिए निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है -

Profit and Loss Appropriation A/c Dr.

To Interest on Capital A/c

To Partners Salaries A/c

टिप्पणी

(Being interest on Capital and Partners Salary transferred)

अवशिष्ट लाभ का वितरण करने पर

Profit and Loss Appropriation A/c Dr.

To Capital or Current A/cs of individual partners

(Being net profit distributed)

साझेदारों द्वारा आहरण तथा उन पर ब्याज (Drawing by Partners and interest thereon)

साझेदारी पूंजी पर ब्याज देने की व्यवस्था फर्म को साझेदारों के आहरण पर ब्याज वसूल करने का स्वयं सिद्ध अधिकार प्रदान नहीं करती। इसके लिए साझेदारी संलेख में स्वतन्त्र प्रावधान होना आवश्यक है। यदि संलेख में आहरण पर ब्याज लेने की व्यवस्था की गई हो तो आहरण की राशियों पर निर्धारित दर से ब्याज की गणना की जायेगी तथा यह वितरण से पूर्व फर्म के लाभ में सम्मिलित किया जावेगा। आहरण के लिए निम्नलिखित प्रविष्टि होगी –

Partners's separate Drawing A/c Dr.

To Cash/Bank or Purchase A/c

(Being partner's drawing in cash or vide cheque or in the form of goods as the case may be)

आहरण पर ब्याज की निम्नलिखित प्रविष्टि होगी –

Partners's separate Drawing A/cs Dr.

To Interest on Drawings A/c

(Being interest charged on partner's drawings)

आहरण पर ब्याज को लाभ हानि नियोजन खाते में हस्तांतरित किया जाता है। इसके लिए निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है –

Interest on Drawings A/c Dr.

To P&L Appropriation A/c

(Being interest on drawings transferred.)

आहरण के हस्तांतरण की निम्नलिखित प्रविष्टि होगी –

Partner's individual Capital or Current A/cs Dr.

To Partner's separate Drawings A/cs

(Being partner's drawings account transferred)

टिप्पणी

३.३.३ स्पष्ट-समझौते के अभाव में फर्म की लेखांकन प्रक्रिया (Accounting Treatment in the Absence of Partnership Deed) :

कभी-कभी साझेदार बिना समझौता किये फर्म का व्यापार प्रारम्भ कर देते हैं। स्पष्ट समझौते के अभाव में लाभ विभाजन के संबंध में साझेदारी अधिनियम की निम्नलिखित व्यवस्था लागू होती है :-

(i) फर्म के लाभ–हानि का विभाजन समान अनुपात में किया जायेगा।

(ii) साझेदारों को फर्म से अपनी पूंजी पर ब्याज लेने का अधिकार नहीं होगा।

(iii) साझेदारों को आहरण पर ब्याज नहीं देना पड़ेगा।

(iv) फर्म की सम्पत्तियों में सभी साझेदारों का समान अधिकार होगा।

(v) किसी साझेदार ने पूंजी के अतिरिक्त कोई ऋण फर्म को दिया हो तो ऐसे ऋण पर 6% वार्षिक दर से ब्याज देय होगा।

(vi) किसी साझेदार को फर्म के कार्यों के लिए वेतन या अन्य पारिश्रमिक लेने का अधिकार नहीं होगा।

इस प्रकार यदि साझेदारों में ब्याज तथा वेतन के संबंध में कोई स्पष्ट समझौता विद्यमान न हो तो अधिनियम की उक्त व्यवस्था लागू मानी जावेगी चाहे साझेदारों द्वारा लगाई गई पूंजी की राशियों में कितनी ही असमानता हो।

३.३.४ पूंजी तथा आहरण पर ब्याज संबंधी विशिष्ट नियम (Specific rule for interest on capital and drawings) :

साझेदरों को फर्म में जमा पूंजी पर ब्याज लेने का अधिकार तथा साझेदारों के आहरण पर ब्याज वसूल करने का फर्म को अधिकार समझौते में स्पष्ट प्रावधान होने पर ही उत्पन्न होता हैं। यदि साझेदारी समझौते में केवल पंजी पर ब्याज लगाने की शर्त विद्यमान हो तो फर्म को साझेदारों के आहरण पर ब्याज वसूल करने का अधिकार तब तक नहीं होता जब तक कि समझौते में आहरण पर ब्याज लगाने का स्वतन्त्र प्रावधान न किया गया हो। पूंजी पर ब्याज के संबंध में अधिनियम की एक अन्य धारा यह भी है कि समझौते में निर्धारित दर से साझेदारों की पूंजी पर ब्याज केवल फर्म के लाभ में से ही दिया जा सकता है। अर्थात् साझेदारों की पूंजियों पर निर्धारित दर से ब्याज उनके पूंजी या चालू खातों में तभी जमा किया जा सकता है जब फर्म में साझेदारों की पूंजियों पर देय कुल ब्याज की राशि के बराबर या इससे अधिक लाभ हो रहा हो। यह लाभ उक्त ब्याज की राशि से कम हो तो प्रत्येक साझेदार के खातों में ब्याज की निर्धारित राशि जमा नहीं की जा सकती है। ऐसी स्थिति में उपलब्ध लाभ साझेदारों के खातों में ब्याज के नाम से उसी अनुपात में जमा कर दिया जायेगा जिस अनुपात में उन्हें निर्धारित ब्याज की राशियां जमा की जानी थी। इसके विपरीत यदि फर्म में किसी वर्ष व्यापारिक हानि हुई हो तो उस वर्ष साझेदारों की पूंजियों पर ब्याज नहीं दिया जा सकता। यदि साझेदार चाहें तो समझौते में ऐसा स्पष्ट प्रावधान कर सकते हैं कि पूंजी पर ब्याज अवश्य ही लगाया जायेगा चाहे फर्म में पर्याप्त लाभ हो अथवा नहीं। ऐसी स्थिति में अधिनियम की उपरोक्त व्यवस्था पर ध्यान न देते

टिप्पणी

हुए साझेदारों की पूंजियों पर निर्धारित दर से ब्याज की राशियाँ लाभ हानि खाते के नाम पक्ष में लिखने के पश्चात् लाभ-हानि खाते में जमा या नाम जैसा भी शेष हो उसे साझेदारों के पूंजी खातों में हस्तांतरित किया जायेगा।

३.३.५ साझेदारों को फर्म के लाभ के हिस्से का आश्वासन (Guarantee of Share of Profit to Partners)

फर्म के साझेदार अपने में से किसी एक को निश्चित राशि तक लाभ देने का आश्वासन समझौते के अनुसार दे सकते हैं। यह आवश्वासन किसी कनिष्ठ साझेदार को फर्म के द्वारा दिया जा सकता है या किसी वरिष्ठ साझेदार या साझेदारों द्वारा दिया जा सकता है। यदि किसी कनिष्ठ साझेदार को यह आश्वासन फर्म के द्वारा दिया जाता है तो उस साझेदार को अपना न्यूनतम हिस्सा तो मिलेगा ही तथा शेष लाभ या हानि के लिये बचे हुए साझेदार अधिकारी होंगे। यदि आश्वासन किसी वरिष्ठ साझेदार या साझेदारों द्वारा दिया गया है तथा फर्म के लाभ वितरण में उसका हिस्सा न्यूनतम राशि से कम है तो उस कमी को वरिष्ठ साझेदार या साझेदारों के हिस्सों में से कम करके उस कनिष्ठ साझेदार के हिस्से में हस्तान्तरित कर दिया जायेगा।

उदाहरण (Illustration) : १६

बुद्ध, महावीर तथा मोहम्मद ५:३:२ के अनुपात में लाभ-हानि बाँटने वाले भागीदार थे। मोहम्मद को भागीदार बनाते समय यह आश्वासन दिया गया था कि उसे लाभ के रूप में कम से कम ५,००० रु. तो मिलेंगे ही। २००७, २००८ तथा २००९ के वर्षों के परिणाम क्रमश: ३०,००० रु. लाभ, २१,००० रु. लाभ तथा ३,००० रु. हानि के रूप में रहे। तीनों वर्षों के लिए लाभ हानि वितरण बताइये यदि :- (Budha, Mahaveer and Mohammed were partners sharing profit and losses in proportions of 5:3:2. At the time of admitting Mohammed as a partners a guarantee was given that he will get atleast Rs. 5,000 by way of share in profit. The results for the years 2007, 2008 and 2009 were Rs. 30,000 Profit, Rs. 21,000 Profit and Rs. 3,000 as loss respectively. Show the distribution of Profit or loss if):

(i) मोहम्मद को आश्वासन फर्म की ओर से दिया गया हो। (Guarantee to Mohammed was given by the firm).

(ii) मोहम्मद को आश्वासन केवल बुद्ध की ओर से दिया गया हो। (Mohammed got the gurantee solely from Budha).

(iii) मोहम्मद को दिये आश्वासन की पूर्ति का दायित्व बुद्ध और महावीर का समान रूप से हो। (Budha and Mahaveer agreed to bear the shortage accruing as a result of guarantee in equal proportions).

हल (Solution) :

(i) फर्म की ओर से आश्वासन दिये जाने पर –

Profit and Loss Appropriation Account for the year ended 31st December, 2007

	Rs.		Rs.
To Partners Capital / Current A/c :		By Profit	30,000
Budha	15,000		
Mahaveer	9,000		
Mohammed	6,000		
	30,000		30,000

Profit and Loss Appropriation Account for the year ended 31st December, 2008

	Rs.		Rs.
To Partners Capital / Current A/c :		By Profit	21,000
Budha : 5/8 x 16,000	10,000		
Mahaveer : 3/8 x 16,000	6,000		
Mohammed (Minimum guarantee)	5,000		
	21,000		21,000

लाभ विभाजन के अनुपात के अनुसार मोहम्मद का भाग ४,२०० रु. आता है लेकिन न्यूनतम ५,००० रु. तो उसे मिलने ही हैं।

वैकल्पिक हल : २१,००० रु. के लाभ को तीनों साझेदारों में ५:३:२ के अनुपात में बांटने पर १०,५०० रु., ६,३०० रु. तथा ४,२०० रु. मिलेंगे। लेकिन मोहम्मद को ५,००० रु. मिलने चाहिए अत: ८०० रु. का त्याग बुद्ध तथा महावीर ५:३ के अनुपात में करेंगे अत: बुद्ध तथा महावीर को क्रमश: १०,५०० - ५०० = १०,००० रु. तथा ६,३०० – ३०० = ६,००० रु. प्राप्त होंगे।

Profit and Loss Appropriation Account for the year ended 31st December, 2009

	Rs.		Rs.
To Loss	3,000	By Capital / Current A/c :	
To Mohammed's Capital/Current A/c		Budha (5/8)	5,000
(Minimum guarantee)	5,000	Mahaveer (3/8)	3,000
	8,000		8,000

टिप्पणी

(ii) बुद्धा की ओर से आश्वासन दिये जाने पर -

वर्ष 2007 के लाभ का वितरण फर्म की ओर से आश्वासन दिये जाने जैसा ही होगा क्योंकि मोहम्मद को गारंटी से अधिक राशि लाभ विभाजन के कारण स्वतः प्राप्त हो रही है।

Profit and Loss Appropriation Account for the year ended 31st December, 2008

		Rs.		Rs.
To Partners Capital / Current A/c :			By Profit	21,000
Budha 5/10 x Rs. 21,000 =	10,500			
Less : Sacrifice for Mohammed	800	9,700		
Mahaveer (3/10 x 21,000)		6,300		
Mohammed				
(2/10 x 21,000 = Rs. 4,200 + Rs. 800)		5,000		
(Minimum guarantee by Buddha)				
		21,000		21,000

Profit and Loss Appropriation Account for the year ended 31st December, 2009

	Rs.		Rs.
To Loss	3,000	By Capital / Current A/c :	
To Mohammed Capital / Current A/c	5,000	Mahaveer : (3/10 x Rs.3,000)	900
(Minimum guarantee)		Budha : (As per working note)	7,100
	8,000		8,000

बुद्ध ही हानि की गणना इस प्रकार की गई है :

हानि का भाग रु. ३,००० ग ५/१० = १,५०० रु. मोहम्मद को प्राप्त गारंटी तथा उसकी हानि का भाग = ५,००० रु.. ६०० रु. = ५,६०० रु. कुल हानि = १,५०० रु.. ५,६०० रु. = ७,१०० रु.

(iii) मोहम्मद को आश्वासन बुद्ध और महावीर द्वारा समान रूप से दिये जाने की दशा में :

वर्ष 2007 के लाभ का वितरण (v) परिस्थिति के अनुसार किया जायेगा।

Profit and Loss Appropriation Account for the year ended 31st December, 2008

		Rs.		Rs.
To Budha Capital / Current A/c	Rs.		By Profit	21,000
5/10 x Rs. 21,000 =	10,500			
Less : Contribution for Mohammed	400	10,100		
To Mahaveer's Capital / Current A/c				
3/10 x Rs. 21,000 =	6,300			
Less : Contribution for Mohammed	400	5,900		
To Mohammed's Capital / Current A/c				
2/10 x Rs. 21,000 =	4,200			
Add : Contribution by Budha and				
Mohaveer equally	800	5,000		
		21,000		21,000

Profit and Loss Appropriation Account for the year ended 31st December, 2009

	Rs.		Rs.
To Loss	3,000	By Capital / Current A/c	
To Mohammed's Capital / Current A/c		Budha :	4,300
(Minimum guarantee)	5,000	Mahaveer :	3,700
	8,000		8,000

टिप्पणी :- हानि की गणना बुद्ध तथा महावीर के लिए निम्न प्रकार से की गई है :

मोहम्मद का भाग 3,000 रु. 2/10 = 600 रु. की हानि + उसे देय 5,000 रु. लाभ = 5,600 रु. इसका आधा भाग बुद्ध तथा शेष आधा भाग महावीर को सहन करना है।

बुद्ध की हानि : 5/10 x Rs. 3,000 = Rs. 1,500 + Rs. 2,800 = Rs. 4,300

महावीर की हानि : 3/10 x Rs. 3,000 = Rs. 900 + Rs. 2,800 = Rs. 3,700

३.३.६ स्थायी तथा परिवर्तनशील पूंजी खाते (Fixed and Fluctuating Capital Accounts)

परिवर्तनशील पूंजी खातों से आशय उन खातों से है जिनमें साझेदारों से सम्बन्धित सभी व्यवहार पूंजी खाते में ही लिखे जाते हैं। इसमें साझेदारों के पूंजी खातों के शेष बदलते रहते हैं। यदि समझौते के अनुसार साझेदार अपने पूंजी खाते के शेष एक निश्चित राशि पर रखना चाहते हैं तो प्रारम्भिक पूंजी में कमी या वृद्धि करने पर ही इसकी

टिप्पणी

प्रविष्टि पूंजी खाते में की जाती है ऐसे पूंजी खाते स्थायी पूंजी खाते कहलाते हैं। ब्याज, वेतन, लाभ, आहरण आदि व्यवहारों का लेखा करने के लिये साझेदारों के चालू खाते (Current A/cs) खोले जाते हैं। इस व्यवस्था में प्रत्येक साझेदार के लिये फर्म की खाता बही में दो खाते खोले जाते हैं।

(i) स्थायी पूंजी खाता (Fixed Capital Account) (ii) चालू खाता (Current Account)

किसी विषम परिस्थिति में आपसी समझौते के अनुसार जब तक साझेदार अपनी सारी पूंजी व्यापार से न निकाल लें, पूंजी खातों में क्रेडिट का शेष रहता है। समझौते के अनुसार देय ब्याज की गणना स्थायी पूंजी खातों के शेषों पर की जाती है। साझेदारों के चालू खातों में उनके व्यवहारों के अनुसार जमा या नाम के शेष हो सकते हैं। वर्ष के अन्त में स्थायी पूंजी खातों में जमा के शेष होने के कारण ये स्थिति-विवरण में दायित्व पक्ष की ओर दर्शाये जावेंगे तथा चालू खाते में जमा के शेष होने पर दायित्व पक्ष में स्थायी पूंजी खातों से अलग तथा नाम के शेष होने पर सम्पत्ति पक्ष में दर्शाये जावेंगे। स्थायी पूंजी खाते तथा चालू खाते सुविधानुसार स्तम्भीय पद्धति पर या पृथक लेखा पद्धति पर बनाये जा सकते हैं।

उदाहरण (Illustration) : १७

अ, ब तथा स १ जनवरी, २००८ को क्रमश ५०,००० रु. ३०,००० रु. तथा २०,००० रु. की पूंजी लगाकर एक साझेदारी व्यवसाय में सम्मिलित हुए। साझेदारों की पूंजियों पर १०: वार्षिक दर से ब्याज दिया जाता है। अ तथा ब क्रमश: ५०० रु. तथा २५० रु. प्रति माह की दर से वेतन के अधिकारी है। १ सितम्बर २००८ को स ने फर्म को १०,००० रु. का ऋण दिया। अ, ब तथा स ने वेतन तथा लाभ के हिस्से की आशा में क्रमश: १०,००० रु. , ५,००० रु. एवं ३,००० रु. के आहरण किये जिन पर क्रमश ५०० रु., २५० रु. तथा १५० रु. ब्याज लगाया गया। ३१ दिसम्बर, २००८ को समाप्त हुए वर्ष में साझेदारी वेतन घटाने के पश्चात् फर्म का लाभ २५,००० रु. आंका गया। साझेदार लाभ के प्रथम १०,००० रु. २ : १ : १ के अनुपात में बांटते हैं तथा आधिक्य को समान अनुपात में। लाभ हानि वितरण खाता तथा साझेदारों के पूंजी खाते बनाइये। (A, B and C joined a partnership business on 1 Jan. 2008 with Rs. 50,000 Rs. 30,000 and Rs. 20,000 as their respective capitals. Interest @ 10% per annum is payable on partnership capitals. A and B are entitled to partnership salaries of Rs. 500 and Rs. 250 per month respectively. On 1st September, 2008, C gave a loan of Rs. 10,000 to the firm. In anticipation of salary and profit shares, A, B and C made drawings of Rs. 10,000, Rs. 5,000 and Rs. 3,000 respectively on which Rs. 500, Rs. 250 and Rs. 150 respectively were charged as interest. The profit of the firm for the year ended on 31 December, 2008 was Rs. 25,000 after deducting partnership salaries. The partners share in profits upto Rs. 10,000 in proportions of 2:1:1 and the balance in equal proportions. Prepare the Profit and Loss Appropriation account and the Capital account of the partners).

टिप्पणी

हल (Solution) :

Profit and Loss Appropriation Account for the year ended 31st December, 2008

		Rs.			Rs.
To Interest on Capital	Rs.		By Profit		25,000
A	5,000		By Interest on Drawings		
B	3,000			Rs.	
C	2,000	10,000	A	500	
			B	250	
To Interest on C's Loan		200	C	150	900
To Net Profit transferred to Capital A/cs					
	Rs.				
A (5,000 + 1,900) =	6,900				
B (2,500 + 1,900) =	4,400				
C (2,500 + 1,900) =	4,400	15,700			
		25,900			25,900

Dr. Partners' Capital Accounts Cr.

Date	Particulars	A	B	C	Date	Particulars	A	B	C
2008		Rs.	Rs.	Rs.	2008		Rs.	Rs.	Rs.
Dec.31	To Drawings A/c	10,000	5,000	3,000	1 Jan.	By Bank A/c	50,000	30,000	20,000
"	To Int. on Drawings A/c	500	250	150	31 Dec	By Interest on Capitals	5,000	3,000	2,000
"	To Balance c/d	57,400	35,150	23,250	"	By Salary A/c	6,000	3,000	—
					"	By Profit & Loss A/c	6,900	4,400	4,400
		67,900	40,400	26,400			67,900	40,400	26,400
					2009 Jan. 1	By Balance b/d	57,400	35,150	23,250

टिप्पणियां : (1) स द्वारा फर्म को दिये गये ऋण पर ब्याज के संबंध में समझौता न होने से इस पर 6 प्रतिषत वार्षिक दर से ब्याज लगाया गया है। यह ब्याज ऋण खाते में जमा किया जाता है न कि

टिप्पणी

पूंजी खाते में।

(२) प्रश्न में लाभ की राशि साझेदारी वेतन घटाने के पश्चात् लिखि गई है अतः लाभ हानि विभाजन खाते में वेतन नाम नहीं किया गया।

(३) यदि साझेदारी वेतन भी लाभ हानि नियोजन खातो में दर्शाया जाय तो लाभ की राशि २५,००० रु. की जगह ३४,००० रु. लिखि जायेगी तथा खाते की दोनों तरफ की जोड़े भी ३४,९०० रु. लिखी जायेगी।

व्यावहारिक जीवन में साझेदार आवश्यकतानुसार फर्म से वर्ष भर में विभिन्न राशियां कई बार निकालते हैं। उन पर निर्धारित दर से गणितीय पद्धति द्वारा ब्याज की गणना की जा सकती है। यदि साझेदारों के आहरण प्रत्येक माह के अंत में, प्रारंभ में अथवा मध्य में नियमित रूप से किये गये हों तो ब्याज की गणना निम्नलिखित सूत्रों द्वारा की जाती है :

१. प्रत्येक माह के अन्त में समान राशि का आहरण होने पर कुल आहरण पर ५.५ माह का निर्धारित दर से ब्याज लगाया जायेगा।

२. प्रत्येक माह के प्रारंभ में समान राशि का आहरण होने पर कुल आहरण पर ६.५ माह का निर्धारित दर से ब्याज लगाया जायेगा।

३. प्रत्येक माह के मध्य में समान राशि का आहरण होने पर कुल आहरण पर ६ माह का निर्धारित दर से ब्याज लगाया जायेगा।

३.३.७ बंद लेखा पुस्तकों में समायोजन (Adjustment in Closed Books)

कभी-कभी साझेदारी फर्म में लाभ का वितरण करते समय समझौते की सभी शर्तों का ठीक से पालन नहीं हो पाता। समझौते में पूंजी पर ब्याज तथा वेतन देने का प्रावधान किया गया हो परन्तु शीघ्रता में या भूल से ब्याज तथा वेतन लिखे बिना ही वर्ष का लाभ बांट दिया गया हो। इसी प्रकार समझौते में निर्धारित अनुपात से भिन्न अनुपात में लाभ का वितरण भूल से किया गया हो। इन भूलों के कारण किसी साझेदार को उचित से अधिक लाभ मिल जाता हैं तथा किसी अन्य को उचित से कम लाभ मिल जाता हैं। साझेदार इस भूल को सुधारने के लिये पुनः बही खाते तैयार करने की अपेक्षा यह अधिक उचित समझते हैं कि भूल का शुद्ध परिणाम ज्ञात कर लिया जाय और आवश्यक जरनल प्रविष्टियों की सहायता से त्रुटि का सुधार कर लिया जाए।

उदाहरण (Illustration) : १८

अ ब तथा स ३:२:१ के अनुपात में लाभ हानि बांटने वाले साझोदार हैं। उनके साझेदारी संलेख में वर्ष की प्रारम्भिक पूंजी पर १०: ब्याज लगाने की व्यवस्था हैं। ३१ मार्च २००८ को समाप्त होने वाले वर्ष में व्यापारिक लाभ २१,००० रु. हुआ। अ ब तथा स की प्रारम्भिक पूंजी की राशियॉ क्रमश: ४०,००० रु. ३०,००० रु. तथा २०,००० रु. थी। उन्होंने पूंजी पर ब्याज लगाये बिना ही लाभ का निर्धारित अनुपात में वितरण करते हुए वर्ष २००७-०८ की बहियॉ बन्द कर दी। वर्ष २००८-०९ के प्रारंभ में त्रुटि का ज्ञान हुआ। वे बिना गत वर्ष की

बहियाँ बदले जर्नल प्रविष्टि द्वारा भूल संबंधी समायोजन करना चाहते हैं। उनकी सहायता कीजिये। (A, B and C are Partners sharing profits and losses in proportions of 3:2:1. Their Partnership agreement provides for interest on their capital as at the beginning of the year @ 10% per annum. The trading profit was Rs. 21,000 for the year ending 31st March, 2008. The Opening capital of A, B and C were Rs. 40,000, Rs. 30,000 and Rs. 20,000 respectively. They closed the books for the year 2007-08 after distributing the profits in the agreed proportions but without allowing interest on their capital. In the beginning of the year 2008-09, they came to know about this mistake. They want to make adjustment for correcting the error with the help of a journal entry. Please help them).

हल (Solution) :

साझेदारों ने लाभ का विभाजन तो निर्धारित अनुपात में ही किया हैं परन्तु पूंजी पर ब्याज की प्रविष्टि नहीं की गई। अतः सभी साझेदारों की पूंजियों पर देय कुल ब्याज की राशि के बराबर राशि लाभ के रूप में अधिक वितरित की गई।

त्रुटि का प्रभाव –	A	B	C
	Rs.	Rs.	Rs.
Opening capital	40,000	30,000	20,000
Interest thereon @ 10% p.a.	4,000	3,000	2,000
	Rs.	Rs.	Rs.
(i) Total interest being Rs. 9,000 which is the excess profit wongly credited previously in 3:2:1, now to be debited	4,500	3,000	1,500
(ii) Usual interest that should have been credited	4,000	3,000	2,000
(iii) Adjustment necessary now	Dr. 500	Nil	Cr. 500

Journal Entries :

A's Capital/Current A/c	Dr.	500	
To C's Capital/Current A/c			500

(Being adjustment for interest omitted previously now rectified.)

कभी-कभी वर्ष के पूंजी खातों में प्रारम्भिक शेषों के संबंध में जानकारी उपलब्ध नहीं होती। पूंजी खातों में ब्याज की गणना पूंजी खातों के प्रारम्भिक शेषों के आधार पर की जाती हैं अतः स्थिति विवरण में दर्शाये गये पूंजी खातों के अन्तिम शेषों में से ऐसी राशियाँ वापस घटा दी जाती हैं जो इस वर्ष जोड़ी गई हो जैसे लाभ का हिस्सा,

टिप्पणी

वेतन आदि। इसके विपरीत वे सब राशियॉं जोड़ दी जाती हैं जो चालू वर्ष में घटाई गई हो जैसे आहरण, आहरण पर ब्याज, हानि का हिस्सा आदि। इस प्रकार ज्ञात प्रारम्भिक पूंजी के शेषों के आधार पर समझौते के अनुसार देय ब्याज की गणना करते हुए भूल सुधार के लिए आवश्यक समायोजन की राशियॉं ज्ञात की जा सकती हैं।

उदाहरण (Illustration) : १९

अ, ब तथा स की फर्म कुछ वर्षों से अस्तित्व में है तथा लाभ हानि २ : २ : १ के अनुपात में बांटते है। स यह अनुभव करता है कि यह समझोता उसके लिए संतोषप्रद नहीं है और चाहता है कि अ तथा ब की तरह उसे भी समान लाभ मिले। वह यह भी चाहता है कि समझोता न केवल भावी लाभों से लागू हो बल्कि पूर्व प्रभाव से पिछले तीन वर्षों के लाभ जो क्रमश: २६,००० रु., २२,१०० रु. तथा २५,८०५ रु. है पर भी लागू हो। अ तथा ब को इस सम्बन्ध में कोई आपत्ति नहीं है। वे ऐसे समायोजन करने पर भी सहमत हुए जिसमें ६,५०० रु. का माल जो लाभ हानि खाते में लिख दिया गया था जो ब ने निजी तोर पर निकाला था तथा ३,९०० रु. के कार्यालय उपकरण के लिए बहियों में कोई सम्पत्ति खाता नहीं खोला गया और लाभ हानि खाते में लिख दिया गया। फर्म की मशीनों पर पिछले वर्षों से ह्रास नहीं लगाया गया तथा यह अनुमान लगाया गया कि कुल ९,०३५ रु. अपलिखित होना था। यह भी समझोता हुआ कि समायोजन के पश्चात् फर्म की कुल पूंजी में वृद्धी या कमी किये बिना पूंजी खाते एक समान हो। (The firm of A, B and C has existed for some years, Profit being shared at 2:2:1 respectively. C, however, feels that this arrangement has not been satisfactory to him and requires tobe placed on same basis as regards profit as A and B. He further wants that this arrangement shall apply not only to further profits but also retrospectively to the profits of the past three years which were Rs. 26,000, Rs. 22,100 and Rs. 25,805. A and B have no objection to this. They further agree that in making such adjustment, regards should be had to Rs. 6,500 value of goods which had been charged to profits but which actually were taken privately by B and Rs. 3,900 of office equipment for which no asset account had been opened in the books but charged to the Profit and Loss account. Plant and Machinery of the firm had not been depreciated over past years and it was estimated that the total of the amounts which should have been written off was Rs. 9,035. It was further agreed that after adjustment, the Capital Accounts were tobe equalized without, however, increasing or reducing the total Capital of the firm).

उपरोक्त समझोते का प्रभाव दिखाते हुए लाभ-हानि समायोजन खाता तथा साझेदारों के पूंजी खाते दिखाइये। पिछले वर्षों के लाभों का वितरण करने के बाद पूंजी खातों के शेष निम्नलिखित मानिये - (Show the Profit and Loss Adjustment Account and the Capital Account of the Partners after giving effect to the above agreement. Assuming that immediately after the distribution of last year's profit, balance of Capital Account stood as under) :

अ - ५२,००० रु., ब - ३९,००० रु. तथा स - २७,४३० रु.

हल (Solution) :

Profit and Loss Adjustment Account

		Rs.			Rs.
To Depn. on Plant and Machinery		9,035	By Partner's Capital A/c :		
To Partner's Capital A/c :				Rs.	
	Rs.		A	29,562	
A	25,090		B	29,562	
B	25,090		C	14,781	73,905
C	25,090	75,270	By B's Capital A/c		6,500
			By office equipment		3,900
		84,305			84,305

Partner's Capital Account

Particulars	A	B	C	Particulars	A	B	C
	Rs.	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.	Rs.
To P&L Adj. A/c	29,562	29,562	14,781	By Balance b/d	52,000	39,000	27,430
To P&L Adj. A/c	–	6,500	–	By P&L Adj. A/c	25,090	25,090	25,090
To Cash A/c (Balancing figure)	9,763	–	–	By Cash A/c (Balancing figure)	–	9,737	26
To Balance c/d	37,765	37,765	37,765				
	77,090	73,827	52,546		77,090	73,827	52,546

Calculation of past three years profit distributed in partners :

Total Profits = Rs. (26,000 + 22,100 + 25,805) or Rs. 73,905

Share of A, B and C i.e. Rs. 2:2:1 Rs. 29,562, Rs. 29,562 and Rs. 14,781 resp.

Calculation of combined capital of partners after adjustment :

= Rs. (52,000 + 39,000 + 27,430 + 25,090 + 25,090 + 25,090) – Rs. (29,562 + 29,562 + 14,781 + 6,500)

= Rs. 1,13,295

$\therefore$ Balance of Capital Account of each partner = $\frac{\text{Rs. } 1,13,295}{3}$ or Rs. 37,765

टिप्पणी

३.४ नये साझेदार का प्रवेश (Admission of New Partner)

व्यापार के विकास एवं विस्तार के लिए अतिरिक्त पूंजी, तकनिकी ज्ञान एवं मानव संसाधनों की आवश्यकता होती है। अतिरिक्त पूंजी वित्तीय संस्थाओं से ऋण लेकर प्राप्त की जा सकती है तथा प्रबंधकीय कुशलता कर्मचारियों की नियुक्ति करके प्राप्त की जा सकती है परन्तु नियुक्त व्यक्तियों की रूचि केवल अपने वेतन तक ही सीमित होती है। इनकी व्यापार की लाभार्जन क्षमता तथा व्यापार के विकास मे उतनी रूचि नहीं होती जितनी व्यापार के स्वामी की होती है। अतः दोनों ही आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नये व्यक्ति को फर्म में साझेदार के रूप में शामिल किया जाता है। नये साझेदार का प्रवेश विद्यमान सभी साझेदारों की सहमति से होता है। उसे फर्म की सम्पत्तियों में हिस्सा पाने के लिए पूंजी का भुगतान करना होता है तथा भविष्य के लाभों में हिस्सा प्राप्त करने के लिए ख्याति का भुगतान करना होता है। इस प्राप्त ख्याति की राशि को पुराने साझेदार अपने त्याग के अनुपात में बांट लेते है।

३.४.१ नये साझेदार के प्रवेश पर उत्पन्न होने वाली लेखांकन सम्बंधी समस्याऐं

जब नया साझेदार फर्म में प्रवेश लेता है तो लेखांकन सम्बंधी निम्नलिखित समस्याऐं उत्पन्न होती है-

1. लाभ हानि अनुपात का निर्धारण।
2. ख्याति का मूल्यांकन एवं समायोजन
3. सम्पत्तियों एवं दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन
4. संचित लाभों का समायोजन
5. संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसियों का समायोजन
6. पूंजी का समायोजन

३.४.१.१. लाभ हानि अनुपात का निर्धारण (Determination of Profit Sharing Ratio) : नये साझेदार को लाभ में हिस्सा दिया जाता है तो पुराने साझेदार अपने लाभ का त्याग करते है। परिणामस्वरूप परिवर्तित लाभ हानि अनुपात निम्नलिखित परिस्थितियों में निम्नलिखित प्रकार से ज्ञात किया जाता है -

(i) जब नये साझेदार द्वारा पुराने साझेदारों से उनके पुराने लाभ हानि अनुपात में अपना हिस्सा प्राप्त किया जाय - इस दशा में नये लाभ हानि अनुपात की गणना इस प्रकार होगी -

अ तथा ब लाभ हानि ३ : २ के अनुपात में बांटते हैं इन्होनें स को लाभ में <u>१/६</u> हिस्से के लिए प्रवेश दिया। नया अनुपात इस प्रकार होगा -

माना कुल हिस्सा = १

नये साझेदार का हिस्सा = १/६

शेष हिस्सा = १ – १/६ या ५/६

अतः अ का हिस्सा = $\frac{3}{5}$ x $\frac{5}{6}$ or $\frac{3}{6}$

अतः ब का $\frac{2}{\ }$ x $\frac{5}{\ }$ or $\frac{2}{\ }$

हिस्सा = $\frac{\quad}{5}$ $\frac{\quad}{6}$ $\frac{\quad}{6}$

∴ New Ratio of A, B and C = 3 : 2 : 1

(ii) जब नया साझेदार पुराने साझेदारों से समान अनुपात में लाभ का हिस्सा प्राप्त करे - इस दशा में नये लाभ हानि अनुपात की गणना इस प्रकार होगी -

एक्स तथा वाई २ : १ के अनुपात में लाभ हानि बांटने वाले साझेदार है उन्होंने जेड को १/४ हिस्से के लिए साझेदार बनाया जो उसने एक्स तथा वाई से बराबर प्राप्त किया। नया अनुपात इस प्रकार होगा -

एक्स का नया अनुपात = $\frac{2}{3} - (\frac{1}{4} \times \frac{1}{2})$ or $\frac{2}{3} - \frac{1}{8} = \frac{16 - 3}{24}$ or $\frac{13}{24}$

वाई का नया अनुपात = $\frac{1}{3} - (\frac{1}{4} \times \frac{1}{2})$ or $\frac{1}{3} - \frac{1}{8} = \frac{8 - 3}{24}$ or $\frac{5}{24}$

जेड का अनुपात = $\frac{1}{4}$

∴ New ratio of X, Y and Z = 13 : 5 : 6

(iii) **जब नया साझेदार पुराने साझेदारों से अपने लाभ का हिस्सा असमान मात्रा में प्राप्त करे** - इस दशा में नये लाभ हानि अनुपात की गणना इस प्रकार होगी -

पी तथा क्यू साझेदार है लाभ हानि २:३ के अनुपात में बांटते है। उन्होने आर को साझेदारी में शामिल किया। पी ने अपने हिस्से का १/८ भाग तथा क्यू ने अपने हिस्से का १/४ भाग आर को दिया। नया अनुपात इस प्रकार होगा -

पी का नया अनुपात = $\frac{2}{5} - (\frac{2}{5} \times \frac{1}{8})$ or $\frac{2}{5} - \frac{2}{40}$ or $\frac{14}{40}$

क्यू का नया अनुपात = $\frac{3}{5} - (\frac{3}{5} \times \frac{1}{4})$ or $\frac{3}{5} - \frac{3}{20}$ or $\frac{9}{20}$

आर का नया अनुपात $\frac{2}{\quad} + \frac{3}{\quad}$ or $\frac{2 + 6}{\quad}$ or $\frac{8}{\quad}$

$$= \frac{\quad}{40} \quad \frac{\quad}{20} \quad \frac{\quad}{40} \quad \frac{\quad}{40}$$

$\therefore$ New ratio of P, Q and R = 14 : 18 : 8 or 7 : 9 : 4

(iv) **जब नया साझेदार अपना हिस्सा किसी एक साझेदार से प्राप्त करे** - इस दशा में नये लाभ हानि अनुपात की गणना इस प्रकार होगी -

अ तथा ब साझेदार है तथा लाभ हानि 2:1 के अनुपात में बांटते है। उन्होंने स को साझेदारी में प्रवेश दिया तथा 1/4 लाभ का हिस्सा दिया जो वह अ से प्राप्त करेगा। नया अनुपात इस प्रकार होगा -

अ का नया अनुपात $= \frac{2}{3} - \frac{1}{4}$ or $\frac{8-3}{12} = \frac{5}{12}$

ब का नया अनुपात $= \frac{1}{3}$

स का नया अनुपात $= \frac{1}{4}$

$\therefore$ New ratio of A, B and C = 5 : 4 : 3

(v) **जब नया साझेदार पुराने साझेदारों से निश्चित भाग प्राप्त करे** - इस दशा में नये लाभ हानि अनुपात की गणना इस प्रकार होगी -

अ तथा ब बराबरी के साझेदार है। उन्होंने स को 2/5 हिस्से के लिए प्रवेश दिया। स 1/4 भाग अ से तथा 3/20 भाग ब से प्राप्त करेगा। नया अनुपात इस प्रकार होगा -

अ का नया अनुपात $= \frac{1}{2} - \frac{1}{4}$ or $\frac{2-1}{4}$ or $\frac{1}{4}$

ब का नया अनुपात $= \frac{1}{2} - \frac{3}{20}$ or $\frac{10-3}{20}$ or $\frac{7}{20}$

$\therefore$ New ratio of A, B and C = 5 : 7 : 8

त्याग का अनुपात (Sacrificing Ratio) : जब नये साझेदार को प्रवेश देकर उसे लाभों में हिस्सा दिया जाता है तो पुराने साझेदारों को अपने लाभ के हिस्से का त्याग करना होता है जिससे उनका लाभ में हिस्सा पुराने हिस्से की तुलना में कम हो जाता है। इस प्रकार पुराने साझेदारों के पुराने लाभ हानि अनुपात और नये लाभ हानि अनुपात का अन्तर ही त्याग का अनुपात कहलाता है। त्याग के अनुपात की गणना करना इसलिए आवश्यक है क्योंकि नया प्रवेश करने वाला साझेदार जो ख्याति के लिए राशि लायेगा उसे पुराने साझेदार अपने द्वारा किये गये त्याग के अनुपात में

बाटेंगे। अतः त्याग का अनुपात = पुराना अनुपात - नया अनुपात। जैसे अ तथा ब साझेदार है लाभ हानि 4:3 के अनुपात में बांटते है। उन्होंने स को नये साझेदार के रूप में साझेदार बनाया। नये साझेदार सहित इनका लाभ हानि अनुपात 3:2:1 है। अ तथा ब का त्याग का अनुपात इस प्रकार होगा -

$$\text{अ का त्याग का अनुपात} = \frac{4}{7} - \frac{3}{6} \text{ or } \frac{24-21}{42} = \frac{3}{42}$$

$$\text{ब का त्याग का अनुपात} = \frac{3}{7} - \frac{2}{6} \text{ or } \frac{18-14}{42} = \frac{4}{42}$$

$\therefore$ अ तथा ब का त्याग का अनुपात = 3 : 4

उदाहरण (Illustration) : २०

1. एक्स तथा वाई साझेदार है लाभ हानि ३:२ के अनुपात में बांटते है। उन्होंने जेड को लाभ के १/३ हिस्से के लिए प्रवेश दिया। नया लाभ हानि अनुपात ज्ञात कीजिये। (X and Y are partners in profit sharing ratio 3 : 2. They admitted Z for 1/3 share of profit. Find out new profit sharing ratio).
2. अ तथा ब २:३ के अनपुात में लाभ हानि बांटने वाले साझेदार है। उन्होंने से को १/४ लाभ के हिस्से के लिये प्रवेश दिया। वह ४/२० भाग अ से तथा १/२० भाग ब से प्राप्त करेगा। नया लाभ हानि अनुपात ज्ञात कीजिये। (A and B are partners in the ratio of 2 : 3. They admit C for 1/4 share of profit. He takes 4/20 share from A and 1/20 share from B. Find out new profit sharing ratio)
3. अ तथा ब ४:३ में लाभ हानि बांटने वाले साझेदार है। उन्होंने स को २/७ लाभ के हिस्से के लिए साझेदारी में प्रवेश दिया। स द्वारा अ तथा ब से अपना हिस्सा समान मात्रा में प्राप्त किया जायेगा। नया लाभ हानि अनुपात ज्ञात कीजिये। (A and B are partners sharing profits in the ratio of 4 : 3. They admit C for 2/7 share of profit into partnership firm. C gets his share equally from both A & B. Find out new profit sharing ratio).
4. आर तथा एस लाभ हानि १७:१६ के अनुपात में बांटते है उन्होंने टी को ०१.०१.२००८ को साझेदारी में शामिल किया। आर ने अपने हिस्से का ५/१७ भाग तथा एस ने अपने हिस्से का १/४ भाग दिया। ०१.०७.२००८ को टी ने आर तथा एस से उनके हिस्से का १/१२ भाग प्राप्त किया। ०१.०१.२००८ से ३०.०६.२००८ तक सभी साझेदारों का लाभ हानि अनुपात क्या होगा तथा अन्ततः उनका लाभों में क्या हिस्सा होगा। (R and S share profits and losses in the ratio of 17 : 16. They admit on

टिप्पणी

01.01.2008, T into partnership. R gives 5/17th part of his share and C gives 1/4th part of his share to T. On 01.07.2008, T acquires 1/12th part of the respective shares of R and S. What will be the profit sharing ratio of all partners since 01.01.2008 to 30.06.2008 and what will be their ultimate shares in profits).

5. राम तथा मोहन एक फर्म में साझेदार है लाभ हानि ३:२ के अनुपात में बांटते है। उन्होंने सोहन को लाभों में १/४ भाग के लिए साझेदार लिया। सोहन ने राम तथा मोहन से २:१ में अपना हिस्सा प्राप्त किया। नया लाभ विभाजन अनपुात ज्ञात कीजिये। (Ram and Mohan are partners in a firm sharing profits and losses in the ratio of 3 : 2. They admit Sohan as partner with 1/4 share in profit. Sohan acquire his share from Ram and Mohan in the ratio of 2 : 1. Calculate new profit sharing ratio).

6. पी तथा क्यू साझेदार है लाभ हानि ७:५ के अनुपात में बांटते है। इन्होंने आर को नये साझेदार के रूप में प्रवेश दिया जो अपना हिस्सा पी से १/१२ तथा क्यू से १/८ प्राप्त किया। नया लाभ हानि अनुपात ज्ञात कीजिये। (P and Q are partners sharing profits and losses in the ratio of 7 : 5. They admit R as a new partner who acquires his share as 1/12th from P and 1/8th from Q. Calculate new profit sharing ratio).

7. पी तथा क्यू साझेदार है लाभ हानि ७:३ के अनुपात में बांटते है पी ने अपने हिस्से का १/७ भाग समर्पित किया तथा क्यू में अपने हिस्से का १/३ भाग आर में पक्ष में समर्पित किया। नया लाभ विभाजन अनुपात ज्ञात कीजिये। (P and Q are partners sharing profits and losses in the ratio of 7 : 3. P surrender 1/7th of his share and Q surrender 1/3rd of his share in favour of R, a new partner. Calculate new profit sharing ratio).

हल (Solution) :

(i) माना कि कुल हिस्सा = 1

नये साझेदार का हिस्सा जेड = 1/3

एक्स का नया अनुपात = $1 - \frac{1}{3}$ or $\frac{2}{3}$

∴ एक्स का नया अनुपात = $\frac{3}{5} \times \frac{2}{3}$ or $\frac{2}{5}$

∴ वाई का नया अनुपात = $\frac{2}{5} \times \frac{2}{3}$ or $\frac{4}{15}$

∴ एक्स, वाई व जेड का नया अनुपात = 6 : 4 : 5

(ii)

$$\text{अ का नया अनुपात} = \frac{2}{5} - \frac{4}{20} \text{ or } \frac{8-4}{20} = \frac{4}{20}$$

$$\text{ब का नया अनुपात} = \frac{3}{5} - \frac{1}{20} \text{ or } \frac{12-1}{20} = \frac{11}{20}$$

$$\text{स का अनुपात} = \frac{4}{20} + \frac{1}{20} \text{ or } \frac{5}{20}$$

∴ अ, ब व स का नया अनुपात = 4 : 11 : 5

(iii)

$$\text{अ का नया अनुपात} = \frac{4}{7} - \left(\frac{2}{7} \text{ x } \frac{1}{2}\right) \text{ or } \frac{3}{7}$$

$$\text{ब का नया अनुपात} = \frac{3}{7} - \left(\frac{2}{7} \text{ x } \frac{1}{2}\right) \text{ or } \frac{2}{7}$$

$$\text{स का अनुपात} = \frac{2}{7}$$

∴ अ, ब तथा स का नया अनुपात = 3 : 2 : 2

(iv) 01.01.2008 से 30.06.2008 तक लाभ हानि अनुपात की गणना

$$\text{आर का नया अनुपात} = \frac{17}{33} - \left(\frac{17}{33} \text{ x } \frac{5}{17}\right) \text{ or } \frac{12}{33}$$

$$\text{एस का नया अनुपात} = \frac{16}{33} - \left(\frac{16}{33} \text{ x } \frac{1}{4}\right) \text{ or } \frac{12}{33}$$

$$\text{टी का अनुपात} = \frac{5}{33} + \frac{4}{33} \text{ or } \frac{9}{33}$$

∴ नया अनुपात = 12 : 12 : 9 or 4 : 4 : 3

अंतिम अनुपात की गणना

$$\text{आर का नया अनुपात} = \frac{4}{11} - \left(\frac{4}{11} \text{ x } \frac{1}{12}\right) \text{ or } \frac{11}{33}$$

$$\text{एस का नया अनुपात} = \frac{4}{\quad} - \left(\frac{4}{\quad} \text{ x } \frac{1}{\quad}\right) \text{ or } \frac{11}{\quad}$$

11 11 12 33

टी का अनुपात = $\frac{3}{11} + \frac{1}{33} + \frac{1}{33}$ or $\frac{11}{33}$

∴ आर, एस व टी का नया अनुपात = 1 : 1 : 1

(v)

राम का नया अनुपात = $\frac{3}{5} - (\frac{1}{4} \times \frac{2}{3})$ or $\frac{18 - 5}{30} = \frac{13}{30}$

मोहन का नया अनुपात = $\frac{2}{5} - (\frac{1}{4} \times \frac{1}{3})$ or $\frac{24 - 5}{60} = \frac{19}{60}$

सोहन का अनुपात = $\frac{1}{4}$

∴ राम, मोहन तथा सोहन का नया अनुपात = 26 : 19 : 15

(vi)

पी का नया अनुपात = $\frac{7}{12} - \frac{1}{12}$ or $\frac{6}{12}$

क्यू का नया अनुपात = $\frac{5}{12} - \frac{1}{8}$ or $\frac{40 - 12}{96} = \frac{28}{96}$

आर का नया अनुपात = $\frac{1}{12} + \frac{1}{8}$ or $\frac{8 + 12}{96} = \frac{20}{96}$

∴ पी, क्यू व आर का नया अनुपात = 48 : 28 : 20 or 12 : 7 : 5

(vii)

पी का नया अनुपात = $\frac{7}{10} - (\frac{7}{10} \times \frac{1}{7})$ or $\frac{6}{10}$

क्यू का नया अनुपात = $\frac{3}{10} - (\frac{3}{10} \times \frac{1}{3})$ or $\frac{2}{10}$

आर का अनुपात = $\frac{1}{10} + \frac{1}{10}$ or $\frac{2}{10}$

∴ पी, क्यू तथा आर का नया अनुपात = 6 : 2 : 2 or 3 : 1 : 1

टिप्पणी

३.४.१.२. ख्याति का मूल्यांकन एवं समायोजन

ख्याति एक ऐसा चुम्बक है जो ग्राहकों को उस व्यापार की ओर आकर्षित करता है जिससे वह व्यापार दूसरों की तुलना में अधिक लाभ अर्जित करता है। लाभ की अधिकता अच्छे नाम, स्वामी या प्रबंधक की प्रतिष्ठा, ग्राहकों से अनुकूल सम्बंध व्यवसाय के स्थान की अनुकूलता, एकाधिकार तथा उत्पादन एवं विक्रय की कार्यकुशलता से उत्पन्न होती है। ख्याति एक अदृश्य सम्पत्ति है जिसका वर्णन आसानी से किया जा सकता है परन्तु इसे परिभाषित करना कठिन है। यह मूल्यवान सम्पत्ति होते हुए भी इसे तब तक बहियों में नहीं दिखाते जब तक कि इसके लिए भुगतान न किया जाय।

ख्याति का मूल्यांकन : निम्नलिखित परिस्थितियों में ख्याति का मूल्यांकन किया जाता है -

1. जब फर्म में साझेदार प्रवेश करे।
2. जब साझेदार सेवानिवृत हो या मर जाय।
3. जब व्यापार बेचा जा रहा हो।
4. जब दो व्यापारों को शामिल (Merged) किया जा रहा हो।
5. जब साझेदार अपना लाभ हानि अनुपात बदल लें।
6. जब साझेदारी फर्म को कम्पनी में बदला जाय।

ख्याति के मूल्यांकन की विधियां (Methods of Valuation of Goodwill) : ख्याति के मूल्यांकन के लिए औसत लाभ विधि **(Average Profit Method)** तथा अधिलाभ विधि (Super Profit Method) का ही अधिकांषतः प्रयोग किया जाता है।

(i) **औसत लाभ विधि (Average Profit Method):** औसत लाभ विधि में दो प्रकार से ख्याति का मूल्यांकन किया जाता है।

(अ) वर्षों की खरीद विधि (Years Purchase Method) : इस विधि में यह माना जाता है कि व्यापार कितने वर्षो तक औसत लाभ अर्जित करेगा। जितने वर्षो तक लाभ अर्जित किया जाता है उतने वर्षों के क्रय मूल्य के बराबर ख्याति का मूल्य माना जाता है।

उदाहरण (Illustration) : २१

अ तथा ब एक फर्म में साझेदार हैं। उन्होंने ०१.०१.२००८ को स को साझेदारी में प्रवेश दिया। पिछले चार वर्षो के फर्म के लाभ क्रमश: ५०,००० रु. (जिसमें १०,००० रु. असामान्य लाभ शामिल है), ६५,००० रु. (५,००० रु. असामान्य हानि घटाने के बाद), ४०,००० रु. (१६,००० रु. फर्म के कारखाने का बीमा प्रीमियम जो अभी देना है उसे बिना घटाये) तथा ५०,००० रु. है। ख्याति का मूल्यांकन पिछले चार वर्षो के औसत लाभ के तीन वर्षो के क्रय के बराबर किया जाता है। (A and B are partners in a firm. They wish to admit C as a partner on 1.1.2008. Firms profit for the last 4 years has been Rs. 50,000 (including abnormal gain Rs. 10,000), Rs. 65,000 (after charging abnormal loss of Rs. 5,000), Rs. 40,000 (excluding

टिप्पणी

Rs. 16,000 as insurance premium on firms property now to be incurred) and Rs. 50,000, respectively. Goodwill is to be valued on the basis of three years purchase of the average profits for the last four years).

हल (Solution) :

Calculation of correct adjusted profit and average profit :

I Year = Rs. 50,000 – Abnormal Gain Rs. 10,000 or	Rs. 40,000
II Year = Rs. 65,000 + Abnormal Loss Charged Rs. 5,000 or	Rs. 70,000
III Year = Rs. 40,000 – Insurance premium Rs. 16,000 or	Rs. 24,000
IV Year = Rs. 50,000 + Nil – Nil or	Rs. 50,000
Total four years profits	Rs. 1,84,000

$$\therefore \text{Average profit} = \frac{\text{Rs. } 1{,}84{,}000}{4} \text{ or Rs. } 46{,}000$$

$$\therefore \text{Goodwill} = \text{Average profit x } 3$$

$$= \text{Rs. } 46{,}000 \text{ x } 3 \text{ or Rs. } 1{,}38{,}000$$

(ब) भारित औसत लाभ विधि (Weighted Average Profit Method) : यदि संस्था के लाभ लगातार बढ़ रहे हो या घट रहे हो तो साधारण औसत की तुलना में भारित औसत लाभ का प्रयोग करना उचित रहता है। इस दशा वर्तमान वर्षों को अधिक भार प्रदान किया जाता है।

उदाहरण (Illustration) : २२

31 मार्च 2008 को एक्स लिमिटे ने अ का व्यापार खरीदने का प्रस्ताव किया। इस उद्देष्य के लिये ख्याति का मूल्यांकन पिछले चार वर्षों के भारित औसत लाभों के तीन वर्षों के क्रय के बराबर किया जायेगा। इन वर्षों के लाभ तथा उनसे सम्बंधित उचित भार जिनका प्रयोग करना है निम्नलिखित थे – (X Ltd. proposed to purchase the business carried by A on 31st March, 2008. Goodwill for this purpose is agreed to be valued at three years purchase of the weighted average of last four years. The appropriate weighted to be used and the profits for these years were) :

Years	Weighs	Profits Rs.
2004–2005	1	20,200
2005–2006	2	24,800
2006–2007	3	20,000
2007–2008	4	30,000

टिप्पणी

खातों की जांच करने पर निम्नलिखित सामग्री ज्ञात हुई – (On scrutiny of the accounts the following matters are revealed) :

१. 1 दिसम्बर, 2006 को प्लांट की भारी मरम्मत पर 6,000 रु. व्यय किये जिसे आगम व्यय माना गया। ख्याति की गणना के लिए इसे पूंजीगत व्यय मानने तथा घटती हुई शेष विधि से 10 प्रतिषत वार्षिक ह्रास का समायोजन करने पर सहमति हुई (On 1st December, 2006 a major repair was made in respect of the plant incurring Rs. 6,000 which amount was charged to revenue. The said sum is agreed to be capitalised for goodwill calculation subject to adjustment of yearly depreciation of 10% p.a. on reducing balance method).

२. वर्ष २००५-०६ का अंतिम रहतिया २,४०० रु. से अधिमूल्यांकित था। (The closing stock for the year of 2005–06 was over valued by Rs. 2,400).

३. ख्याति के मूल्यांकन के लिए 4,800 रु. वार्षिक प्रबंधकीय लागत के वसूल करने है। 'अ' के व्यवसाय की ख्याति का मूल्यांकन कीजिये। (To cover management cost an annual charge of Rs. 4,800 should be made for the purpose of goodwill valuation. Compute the value of goodwill of the business of "A").

हल (Solution) :

Calculation of future maintainable profits

	Year			
	2004–05	2005-06	2006-07	2007-08
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
Profit	20,200	24,800	20,000	30,000
Add : Major repair of Plant Capitalised	–	–	6,000	–
Over Valuation of Opening Stock	–	–	2,400	–
	20,200	24,800	28,400	30,000
Less : Depreciation on capitalised value of major repair of Plant	–	–	(200)	(580)
Managerial Remuneration	(4,800)	(4,800)	(4,800)	(4,800)
Overvaluation of Closing Stock	–	(2,400)	–	–
Net Profit	15,400	17,600	23,400	24,620

टिप्पणी

Calculation of Weighted Average Profit :

Years	Net Profit	Weights	Products
	Rs.		Rs.
2004–2005	15,400	1	15,400
2005–2006	17,600	2	35,200
2006–2007	23,400	3	70,200
2007–2008	24,620	4	98,480
		10	2,19,280

Weighted average Profit = Rs. 2,19,280 / 10 or Rs. 21,928

∴ Goodwill = Rs. 21,928 x 3 or Rs. 65,784

(ii) **अधि लाभ विधि (Super Profit Method) :** इस विधि में ख्याति के मूल्यांकन के लिए अधिलाभ की गणना की जाती है। अधिलाभ की गणना करने के लिए भविष्य में प्राप्त होने वाले लाभों/औसत लाभों में से अनुमानित सामान्य लाभों को घटाते है। भविष्य में प्राप्त होने वाले लाभ का गणना करने के लिये वर्तमान लाभ में वे व्यय जोड़े जायेंगे जो भविष्य में नहीं होंगे तथा वे व्यय घटाये जायेंगे जिनके खर्च होने की संभावनाऐं है। लाभ में से वे आयें घटायी जायेगी जो भविष्य में नहीं होगी तथा वे आयें जोड़ी जायेगी जो भविष्य में अर्जित होगी। सामान्य लाभ ज्ञात करने के लिए व्यापार में विनियोजित पूंजी ज्ञात करके उस पर इसी प्रकार का व्यापार जिस दर से लाभ कमाता है वह दर लागू कर सामान्य लाभ ज्ञात करेंगे। अधिलाभों के आधार पर ख्याति की गणना निम्नलिखित विधियों से की जा सकती है -

(अ) वर्षों के क्रय के आधार पर (On the basis of years of Purchase).

(आ) पूंजीकृत पद्धति (Capitalised Method). (ई) वर्षिक वृति पद्धति (Annuity Method).

उदाहरण (Illustration) : 23

निम्नलिखित विधियों से ख्याति की गणना कीजिये – (Calculate goodwill from the following methods) :

(i) वर्षिक वृति पद्धति (Annuity Method).

(ii) अधिलाभों के 5 वर्षों की क्रय विधि तथा (Five Years Purchase of Super Profit Method and).

(iii) नीचे दी गई सूचनाओं से भावी लाभों की पूंजीकृत पद्धति (Capitalisation of Future Profit Method from the details given here under) :

(a) विनियोजित पूंजी (Capital Employed) Rs. 1,50,000

(b) सामान्य प्रत्याय की दर (Normal rate of return) 10%

(c) 1 रु. का 5 वर्षों के लिए 10 प्रतिषत की दर से वार्षिकी का वर्तमान मूल्य (Present value of annuity of Re. 1 for five years at 10%) 3.78

(d) पांच वर्षों का लाभ (Net Profits for five years) :

	I Year	II Year	III Year	IV Year	V Year
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
शुद्ध लाभ (Net Profit)	14,400	15,400	16,900	17,400	17,900

शुद्ध लाभ में औसत आधार पर १,००० रु. का गैर आवर्ति लाभ शामिल है जिसमें से ६०० रु. वार्षिक का गैर आवर्ति लाभ ही शामिल करने की प्रवृति पाई गयी। (The net profits included non-recurring profits on an average basis of Rs. 1,000 out of which it was deemed that even non recurring profits had a tendency of appearing at the rate of Rs. 600 p.a).

हल (Solution) :

Calculation of Weighted Average Profit

Years	Profits	Weights	Product
	Rs.		Rs.
1	14,400	1	14,400
2	15,400	2	30,800
3	16,900	3	50,700
4	17,400	4	69,600
5	17,900	5	89,500
		15	2,55,000

$$\text{Weighted average profit} = \frac{\text{Total of Product}}{\text{Total of weight}} \text{ or } \frac{\text{Rs. 2,55,000}}{15} \text{ or Rs. 17,000}$$

Future Maintainable Profit = weight average profit – Non recurring income

टिप्पणी

= Rs. (17,000 – 400) or Rs. 16,600

Super Profit = Future maintainable profit – Normal profit

= Rs. 16,600 – (Rs. 1,50,000 @ 10%) or Rs. 1,600

(i) Goodwill as per annuity method = Rs.1,600 x 3.78 or Rs. 6,048

(ii) Goodwill as per five years purchase of super profit = Rs. 1,600 x 5 or Rs. 8,000

(iii) Goodwill as per Capitalisation of super profits :

$$\text{Value of business} = \frac{\text{Future Profit}}{\text{Normal rate of return}} \times 100$$

$$= \frac{\text{Rs. } 16{,}600}{10} \times 100 \text{ or Rs. } 1{,}66{,}000$$

Goodwill = Value of business – Capital emplyed

= Rs. 1,66,000 – Rs. 1,50,000 or Rs. 16,000

OR

$$\text{Goodwill} = \frac{\text{Super Profit}}{\text{Normal rate of return}} \times 100$$

$$= \frac{\text{Rs. } 1{,}600}{10} \times 100$$

$$= \text{Rs. } 16{,}000$$

ख्याति का लेखांकन (Accounting for Goodwill)

I. **जब नया साझेदार निजी तोर पर पुराने साझेदारों को ख्याति की राषि नकद भुगतान करे** : इस दषा में फर्म की बहियों में कोई लेखांकन नहीं होगा क्योंकि राषि व्यापार में आयी ही नहीं थी।

II. **जब नया साझेदार अपने हिस्से की ख्याति की राषि रोकड़ लाये** : इस दषा निम्नलिखित लेखा प्रविष्टियां की जायेगी –

(i) ख्याति की राषि रोकड़ में लाने पर (On bringing amount of goodwill in cash) :

Cash/Bank A/c Dr.

To New Partner's Capital / Current A/c

(Being goodwill brought in by new partner)

(ii) पुराने साझेदारों में ख्याति की राषि बांटने पर (On distribution of goodwill in old partners) :

टिप्पणी

New Partner's Capital / Current A/c Dr.

To Old Partners Capital / Current A/c

(Being goodwill credited to old partners capital / current account in sacrificing ratio)

(iii) यदि पुराने साझेदार ख्याति की राषि का आहरण करले (In case amount of goodwill being withdrawn by old partners) :

Old partners capital / current A/c Dr.

To Cash/Bank A/c

(Being amount of goodwill withdrawn by old partners)

यदि फर्म की बहियों में पहले से ही ख्याति खाता विद्यमान है तथा नया साझेदार ख्याति की राशि रोकड़ में लाये तो सर्वप्रथम विद्यमान ख्याति खाते को निम्नलिखित प्रविष्टि द्वारा अपलिखित किया जायेगा उसके बाद उपरोक्त तीनों प्रविष्टियां होगी। ख्याति खाता बन्द करने की निम्नलिखित प्रविष्टि होगी -

Old partners capital / current A/c Dr.

To Goodwill A/c

(Being old goodwill account exists in the books is written off in old partners in their old profit sharing ratio)

(III) यदि नया साझेदार अपने हिस्से की ख्याति का कुछ भाग ही रोकड़ में लाये –इस दषा में निम्नलिखित प्रविष्टियां होगी –

अपने हिस्से की ख्याति का एक हिस्सा रोकड़ में लाने पर -

Cash/Bank A/c Dr.

To New Partner's Capital / Current A/c

(Being partly goodwill brought in by new partner in cash)

नये साझेदार के हिस्से की पूरी ख्याति की राशि पुराने साझेदारों में त्याग के अनुपात में बांटने पर -

New partner capital / current A/c Dr.

To Old partners capital / current A/c

(Being the share of new partner in firm's goodwill credited to old partners in their sacrificing ratio)

ख्याति की राशि आहरित करने पर

Old partners capital / current A/c Dr.

To Bank A/c

(Being amount of goodwill withdrawn by old partners)

(iv) जब नया साझेदार ख्याति की राषि नकद न लाये

टिप्पणी

यदि नया साझेदार अपने हिस्से की ख्याति की राशि रोकड़ लाने में असमर्थ हो तो निम्नलिखित प्रविष्टि द्वारा पुराने साझेदार अपने त्याग के अनुपात में जमा कर दिये जायेंगे तथा नये साझेदार का पूंजी / चालू खाता नाम कर दिया जायेगा –

New partners capital / current A/c Dr.

To Old partners capital / current A/c

(Being the share of new partner in firms goodwill credited to old partners capital / current account in their sacrificing ratio)

(v) जब नया साझेदार अपने हिस्से की ख्याति नकद के अतिरिक्त सम्पत्तियों में लाये

इस दशा में जो सम्पत्तियां लाया है उन्हें नाम तथा व्यापारी का पूंजी/चालू खाता जमा किया जायेगा इसके लिए निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टियां होगी –

(i) नये साझेदार द्वारा सम्पत्ति लाने पर (For assets brought by the New Partner) :

Respective Assets Dr.

To New partner's capital / current A/c

(Being various assets brought by new partner for his share of goodwill and capital)

(ii) नये साझेदार के ख्याति के हिस्से का समायोजन करने पर (For adjustment of new partner's share of Goodwill) :

New partners capital / current A/c Dr.

To old partners capital / current A/c

(Being share of goodwill of new partner credited to old partners capital / current account in their sacrificing ratio)

उदाहरण (Illustration) : २४

(प) एम तथा यू एक फर्म में साझेदार है तथा लाभ हानि २:१ के अनुपात में बांटते है। उन्होंने जे को १/३ हिस्से के लिए साझेदार बनाया। जे अपना हिस्सा एम से प्राप्त करेगा फर्म की ख्याति ३०,००० रु. मूल्यांकित हुई। जे अपने हिस्से की ख्याति की राशि रोकड़ लाया। निम्नलिखित परिस्थितियों में जर्नल प्रविष्टियां कीजिये – (M and U are partners in a firm sharing profits and losses in the ratio of 2 : 1. They admit J as a partner for 1/3 share. J acquires his share from M. The goodwill of the firm has been valued at Rs. 30,000. J brings necessary cash as his share of firm’s goodwill. Pass necessary journal entries in the following cases) :

(अ) बहियों में ख्याति विद्यमान नहीं है तथा ख्याति की राषि व्यापार में ही रखी जाय। (When no goodwill appears in the books and the amount of goodwill is retained in the firm).

टिप्पणी

(आ) बहियों में ख्याति विद्यमान नहीं है तथा ख्याति की राषि का ४० प्रतिषत भाग ही साझेदारों द्वारा आहरण किया जाय। (When no goodwill appears in the books and the amount of goodwill is withdraw by the partners to the extent of 40% of what is credited to them).

(इ) बहियों में ख्याति २१,००० रु. दिखलाई हुई हो। (When goodwill appears in the books at Rs. 21,000).

(ii) यदि इसी प्रष्न में जे अपना हिस्सा एम तथा यू से ३:२ में प्राप्त करे तो विभिन्न परिस्थितियों में आपके हल में क्या अन्तर आयेगा। (In above question if J acquire his share from M and U in the ratio of 3 : 2, what changes will take place in your solution in different cases).

हल (Solution) :

(i) (अ) **Journal**

			Rs.	Rs.
	Cash A/c	Dr.	10,000	
	To J's Capital A/c			10,000
	(Being the share of goodwill brought in by J)			
	J's Capital A/c	Dr.	10,000	
	To M's capital A/c			10,000
	(Being share of J's goodwill credited to M's capital account)			

(i) (आ) **Journal**

			Rs.	Rs.
	Cash A/c	Dr.	10,000	
	To J's Capital A/c			10,000
	(Being the share of goodwill brought in by J)			
	J's Capital A/c	Dr.	10,000	
	To M's capital A/c			10,000
	(Being share of J's goodwill credited to M's capital account)			
	M's capital A/c	Dr.	4,000	
	To Cash A/c			4,000
	(Being 40% of goodwill withdraw by M)			

(i) **(इ)** **Journal**

टिप्पणी

		Rs.	Rs.
	M's Capital A/c Dr.	14,000	
	U's Capital A/c Dr.	7,000	
	To Goodwill A/c		21,000
	(Being goodwill account written off in old partners in their old P & L ratio)		

		Rs.	Rs.
	Cash A/c Dr.	10,000	
	To J's Capital A/c		10,000
	(Being goodwill brought in by J)		
	J's Capital A/c Dr.	10,000	
	To M's Capital A/c		10,000
	(Being share of J's goodwill credited to M's capital account)		

(ii) Calculation of sacrificing ratio of M and U

Sacrificing by M = $\frac{1}{3} \times \frac{3}{5}$ or $\frac{3}{15}$

Sacrificing by U = $\frac{1}{3} \times \frac{2}{5}$ or $\frac{2}{15}$

Calculation of new ratio of M, U and J

New ratio of M = $\frac{2}{3} - \frac{3}{15}$ or $\frac{10-3}{15} = \frac{7}{15}$

New ratio of U = $\frac{1}{3} - \frac{2}{15}$ or $\frac{5-2}{15} = \frac{3}{15}$

Ratio of J = 1/3

∴ New ratio of M, U and J = 7 : 3 : 5

(अ) **Journal**

		Rs.	Rs.
	Cash A/c Dr.	10,000	
	To J's Capital A/c		10,000

	(Being the share of goodwill brought in by J)		
	J's Capital A/c Dr.	10,000	
	To M's capital A/c		6,000
	To U's capital A/c		4,000
	(Being share of J's goodwill credited to M and U in their sacrificing ratio)		

(आ) **Journal**

		Rs.	Rs.
	Cash A/c Dr.	10,000	
	To J's Capital A/c		10,000
	(Being the share of goodwill brought in by J)		
	J's Capital A/c Dr.	10,000	
	To M's capital A/c		6,000
	To U's capital A/c		4,000
	(Being share of J's goodwill credited to M and U in their sacrificing ratio)		
	M's Capital A/c Dr.	2,400	
	U's Capital A/c Dr.	1,600	
	To Cash A/c		4,000
	(Being 40% of the credited amount of goodwill withdrawn by M & U)		

(इ) **Journal**

		Rs.	Rs.
	M's Capital A/c Dr.	14,000	
	U's Capital A/c Dr.	7,000	
	To J's Capital l A/c		21,000
	(Being goodwill account written off in old partners in their old P & L ratio)		
	Cash A/c Dr.	10,000	
	To J's Capital A/c		10,000
	(Being the share of goodwill brought in by J)		
	J's Capital A/c Dr.	10,000	
	To M's capital A/c		6,000

	To U's capital A/c (Being share of J's goodwill credited to M and U in their sacrificing ratio)		4,000

उदाहरण (Illustration) : २५

एक्स तथा वाई एक फर्म में साझेदार है तथा लाभ हानि ३:२ के अनुपात में बांटते है। उनकी पूंजी क्रमश: ६०,००० रु. तथा ४०,००० रु. है। इन्होंने जेड़ को प्रवेश दिया जो फर्म के लाभों में १/६ भाग लेगा। जेड़ अपनी पूंजी के लिए २५,००० रु. लाया। उपरोक्त सूचनाओं के आधार पर ख्याति की राशि ज्ञात कीजिये। उनका नया अनुपात ज्ञात करने की गणना को भी प्रदर्शित कीजिये ? (X and Y are partners in a firm sharing profits and losses in the ratio of 3 : 2. Their capital are Rs. 60,000 and Rs. 40,000 respectively. They admit Z as a new partner who gets 1/6 share in the profits of the firm. Z brings Rs. 25,000 as his capital. Find out the amount of goodwill on the basis of the above information. Also show the calculation to find out their new profit sharing ratio).

हल (Solution) :

Calculation of new profit sharing ratio :

Let total ratio = 1

Share of Z = 1/6

∴ Remaining ratio = 1 – 1/6 or 5/6

∴ New ratio of A = $\frac{3}{5} \times \frac{5}{6}$ or $\frac{3}{6}$

∴ New ratio of B = $\frac{2}{5} \times \frac{5}{6}$ or $\frac{2}{6}$

∴ New ratio of C = $\frac{1}{6}$

∴ New ratio of A, B and C = 3 : 2 : 1

Calculation of amount of goodwill :

Z's brought for his 1/6 share of profit = Rs. 25,000

∴ Capital of firm = Rs. 25,000 x 6 or Rs. 1,50,000

∴ Goodwill = Firm's total capital – Capital of A, B and C

= Rs. 1,50,000 – (Rs. 60,000 + Rs. 40,000 + Rs. 25,000)

= Rs. 25,000

उदाहरण (Illustration) : २६

अक्षय तथा मनीष जो कि २:१ के अनुपात में लाभ हानि बांटते है, ३१ मार्च २००९ को उनका चिट्ठा निम्नलिखित था – (The balance sheet of Akshay and Manish who share profits and losses in the ratio of 2 : 1, as on 31.03.2009 was as follows) :

	Rs.		Rs.
Creditors	50,000	Bank	25,000
Reserves	20,000	Debtors	60,000
Capital A/c's :		Stock	40,000
Akshay	1,70,000	Tangible fixed Assets	2,00,000
Manish	1,00,000	Advertisement Expenses	15,000
	3,40,000		3,40,000

इन्होंने हेमन्त को प्रवेश दिया तथा लाभों में १/४ भाग दिया। हेमन्त अपनी पूंजी के १,२०,००० रु. लाया। ख्याति का लेखा करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टि दीजियsA (They admit Hemant as partner with 1/4 share in the profits of the firm. Hemant brings Rs. 1,20,000 as his capital. Give the necessary journal entry to record the goodwill).

हल (Solution) :

Calculation of hidden goodwill :

	Rs.
Net worth of new firm on the basis of capital brought by Hemant (Rs. 1,20,000 x 4)	4,80,000
Less : Net worth as per above balance sheet (Rs. 1,70,000 + Rs. 1,00,000 + Rs. 20,000 – Rs. 15,000)	2,75,000
	2,05,000
Less : Capital brought by Hemant	1,00,000
Value of goodwill	1,05,000

$\therefore$ Share of Hemant in firm's goodwill = Rs. 1,05,000 x $\frac{1}{4}$ = Rs. 26,250

Journal

		Rs.	Rs.
	Cash A/c Dr.	1,20,000	
	To Hemant's Capital A/c		1,20,000
	(Being cash brought by Hemant for his capital)		

टिप्पणी

	Hemant's Capital A/c Dr.	26,250	
	To Akshay's Capital A/c		17,500
	To Minish's Capital A/c		8,750
	(Being Hemant's share of goodwill credited to Akshay and Manish capital account in their sacrificing ratio)		

३.४.१.३ सम्पत्तियों तथा दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन (Revaluation of Assets and Liabilities) :

किसी साझेदार के प्रवेश के समय व्यापार में विद्यमान सम्पत्तियों तथा दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन करना आवश्यक होता है। सम्पत्तियों व दायित्वों के मूल्यों में होने वाले परिवर्तन से उत्पन्न लाभ या हानि पर केवल पुराने साझेदारों का ही अधिकार होता है जिसे पुराने साझेदारों में पुराने लाभ हानि अनुपात में बांट दिया जाता है। सम्पत्तियों का मूल्य बढ़ने तथा दायित्वों का मूल्य घटने से लाभ होता है और दायित्वों का मूल्य बढ़ने तथा सम्पत्तियों का मूल्य घटने से हानि होती है। इसके लिए पुनर्मूल्यांकन खाता या लाभ हानि समायोजन खाता बनाया जाता है। यदि किसी सम्पत्ति या दायित्व का लेखा बहियों में नहीं किया हुआ है तो इस खाते के माध्यम से किया जाता है। सम्पत्तियों तथा दायित्वों के पुनर्मूल्यांकन के सम्बन्ध में निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टियां की जाती है।

(i) सम्पत्तियों का मूल्य बढ़ने पर (For increase in the value of Assets) :

Respective Assets A/c Dr.

To Revaluation A/c

(Being increase in the value of Assets)

(ii) सम्पत्तियों का मूल्य कम होने पर (For decrease in the value of Assets) :

Revaluation A/c Dr.

To Respective Assets A/c

(Being decrease in the value of Assets)

(iii) दायित्वों तथा प्रावधानों का मूल्य बढ़ने पर (For increase in the value of Liabilities and Provisions) :

Revaluation A/c Dr.

To Respective Liabilities A/c

To Respective Provisions A/c

(Being increase in the value of liabilities & provision)

(iv) दायित्वों एवं प्रावधानों का मूल्य कम होने पर (For decrease in the value of Liabilities and Provisions) :

Respective Liabilities A/c Dr.

Respective Provisions A/c Dr.

To Revaluation A/c

(Being decrease in the value of liabilities & provision)

(v) लेखांकित न हुई सम्पत्ति को लेखांकित करने पर (For recording of unrecorded Assets) :

Respective Unrecorded Assets A/c Dr.

To Revaluation A/c

(Being present value of unrecorded asset brought into account)

(vi) लेखांकित न हुए दायित्वों को लेखांकित करने पर (For recording of unrecorded Liability) :

Revaluation A/c Dr.

To Respective Unrecorded Liability A/c

(Being present value of unrecorded liability brought into account)

(vii) सम्पत्ति को अपलिखित करने पर (On written off of Asset) :

Revaluation A/c Dr.

To Respective Assets A/c

(Being assets written off)

(viii) पुनर्मूल्यांकन खाते के जमा के शेष को हस्तांतरित करने पर (For transfer of credit balance of revaluation Account) :

Revaluation A/c Dr.

To Old Partners Capital/Current A/c

(Being revaluation profit credited to old partners capital/current account in their old profit sharing ratio).

(ix) पुनर्मूल्यांकन खाते के नाम शेष को हस्तांतरित करने पर (For transfer of debit balance of revaluation Account) :

Old Partners Capital/Current A/c Dr.

To Revaluation A/c

(Being revaluation loss debited to old partners capital/current account in their old profit sharing ratio).

सम्पत्तियों तथा दायित्वों के मूल्य परिवर्तित न करने हो (Acounts of Assets and Liabilities not to be changed) : यदि किसी साझेदार के प्रवेश के समय विद्यमान साझेदार सम्पत्तियों तथा दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन तो करना चाहते हो परन्तु इन सम्पत्तियों और दायित्वों के पुस्तक मूल्य को बदलना नहीं चाहते हो तो

टिप्पणी

स्मरणार्थ पुनर्मूल्यांकन खाता बनाया जाता है। इसे भी उसी प्रकार बनाया जाता है जिस प्रकार पुनर्मूल्यांकन खाता बनाया जाता है परन्तु इसकी पुस्तकों में प्रविष्टि नहीं की जाती है तथा पुनर्मूल्यांकन का लाभ हानि पुराने साझेदारों में पुराने लाभ हानि अनुपात में बांट दिया जाता है। इसके तुरन्त बाद विपरीत प्रविष्टि द्वारा नये साझेदार सहित सभी साझेदारों में नये लाभ हानि अनुपात में यह राशि बांट दी जाती है। इसके लिए निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टियां की जाती है –

(i) यदि पुनर्मूल्यांकन से लाभ हो (Increase of Profit on revaluation) :

Memorandum Revaluation A/c Dr.

To Old Partners Capital/Current A/c

(Being Profit on revaluation transferred to old partners capital/current account in their old profit sharing ratio)

(ii) विपरीत प्रविष्टि के लिए (For Reversing Entry) :

All Partners Capital/Current A/c Dr.

To Memorandum Revaluation A/c

(Being memorandum revaluation account is closed by debiting all partners in their new profit sharing ratio)

(iii) यदि पुनर्मूल्यांकन की हानि हो (In case of loss on Revaluation) :

Old Partners Capital/Current A/c Dr.

To Memorandum Revaluation A/c

(Being loss on revaluation transferred to old partners capital/current account in their old profit sharing ratio)

(iv) विपरीत प्रविष्टि के लिए (For Reversing Entry) :

Memorandum Revaluation A/c Dr.

To All Partners Capital/Current A/c

(Being memorandum revaluation account is closed by crediting all partners in their new profit sharing ratio)

३.४.१.४ संचित लाभों का समायोजन (Adjustment of Retained Profits) :

साझेदारी फर्मों द्वारा अर्जित समस्त लाभ साझेदारों के पूंजी खातों में हस्तांतरित नहीं करके उसका कुछ भाग संचय में हस्तांतरित कर दिया जाता है। ऐसा लाभ संचित लाभ या अवितरित लाभ कहलाता है। इसी प्रकार चिट्ठे में कोई अवितरित हानि भी विद्यमान हो सकती है। ऐसे संचित लाभ हानियों पर केवल पुराने साझेदारों का ही अधिकार

होता है। अतः किसी साझेदार के प्रवेश के समय इन्हें पुराने साझेदारों में पुराने लाभ हानि अनुपात में बांट दिया जाता है। इनके लेखांकन के लिए निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टियां की जाती है -

(i) संचय तथा अन्य संचित लाभों के हस्तांतरण के लिए (For transfer of Reserves and other accumulated profits) :

Reserve/Excessive worksmen compensation Reserve/P&L/Joining Life Policy Reserve /

Reserve Fund/Extention Reserve A/c Dr.

To Old Partners Capital / Current A/c

(Being reserves and P& L Account transfer to old partners capital account)

(ii) संचित हानियों के हस्तांतरण के लिए (For transfer of accumulated losses) :

Old Partners Capital / Current A/c Dr.

To Profit and Loss A/c

To Deferred Revenue Expenditure

(Being accumulated losses transferred to old partners capital account)

उदाहरण (Illustration) : २७

सुभद्रा तथा लक्ष्मी जो कि लाभ हानि ३:२ के अनुपात में बांटती है उनका ३० जून २००९ कों चिट्ठा निम्नलिखित था - (On 30th June, 2009 the Balance Sheet of Subhadra and Laxmi who share profit and loss in the ratio of 3:2 was as follows) :

	Rs.		Rs.
Creditors	90,000	Goodwill	20,000
Capital A/c's :		Plant	45,000
Subhadra	1,00,000	Furniture & Fitting	37,500
Laxmi	75,000	Stock	57,500
		Bills Receivables	10,000
		Debotrs	55,000
		Cash at Bank	40,000
	2,65,000		2,65,000

१ जुलाई २००९ को वे परमेश्वरी को निम्नलिखित शर्तों पर प्रवेश देने को सहमत हुई – (On 1st July, 2009 they agreed to admit Permeshwari on the following terms) :

(i) नया लाभ हानि अनुपात २:२:१ होगा (That the new profit sharing ratio shall be 2:2:1).

टिप्पणी

(ii) परमेश्वरी अपनी पूंजी के लिए ५०,००० रु. नकद लायेगी तथा फर्म में अपने हिस्से की ख्याति भी चुकायेगी। इस उद्देश्य के लिए ख्याति का मूल्यांकन गत चार वर्षों के औसत लाभों के दो वर्षों के क्रय के बराबर होगा। ३० जून को समाप्त गत चार वर्षों के लाभ क्रमश: २५,००० रु., २२,५०० रु., २५,००० रु. तथा २७,५०० थे। (That Permeshwari is to bring her capital of Rs. 50,000 in cash and to pay her goodwill in the firm. Goodwill for this purpose is to be valued at 2 years purchases of average of the previous 4 years profit. The profits for the previous 4 years ending 30th June every year are as under) :–

Rs. 25,000; Rs. 22,500; Rs. 25,000 and Rs. 27,500.

(iii) अन्य सम्पत्तियां निम्न प्रकार से पुनर्मूल्यांकन हुई – (That the other assets be revalued as under) :–

प्लांट ५२,५०० रु., फर्निचर व फिटिंग ३२,००० रु., स्टॉक ६३,००० रु., तथा देनदार ५०,००० रु. (Plant Rs. 52,500; Furniture and Fitting Rs. 32,000; Stock Rs. 63,000 and Debtors Rs. 50,000).

(iv) ख्याति, रोकड़ तथा बैंक शेष के अतिरिक्त अन्य सम्पत्तियों का मूल्य नहीं बदलना है। आवष्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिये तथा नई फर्म का चिट्ठा बनाइये। (That the values of assets except goodwill, Cash and Bank shall remain uncharged).

Give necessary journal entries and Balance Sheet of the newly constituted firm :

हल (Solution) :

1. Calculation of Goodwill :

$$\text{Average Profit} = \frac{\text{Rs. } (25,000 + 22,500 + 25,000 + 27,500)}{4} \text{ or Rs. } 25,000$$

Goodwill = Average Profit x 2 or Rs. 25,000 x 2 = Rs. 50,000

Permeshwari's Share of goodwill = 50,000 x 1/5 or Rs. 10,000

Calculation of Sacrificing Ratio :

$$\text{Subhadra} = \frac{3}{5} - \frac{2}{5} \text{ or } \frac{1}{5}$$

$$\text{Laxmi} = \frac{2}{5} - \frac{2}{5} \text{ or NIL}$$

BANK ACCOUNT

		Rs.				Rs.
	To Balance b/d	40,000		By Balance c/d		1,00,000
	To Permishwari's Capital A/c	60,000				
		1,00,000				1,00,000

Memorandum Revaluation Account

		Rs.			Rs.
To Furniture & Fitting A/c		5,500	By Plant A/c		7,500
To Provision for D.D. A/c		5,000	By Stock A/c		5,500
To Partners Capital A/c :	Rs.				
S	1,500				
L	1,000	2,500			
		13,000			13,000
To Plant A/c		7,500	By Furniture & Fittings A/c		5,500
To Stock A/c		5,500	By Provision for D.D. A/c		5,000
			By Partners Capital A/c	Rs.	
			S	1,000	
			L	1,000	
			P	500	2,500
		13,000			13,000

Partners Capital Accounts

	S Rs.	L Rs.	P Rs.		S Rs.	L Rs.	P Rs.
To Goodwill A/c	12,000	8,000	—	By Balance b/d	1,00,000	75,000	—
To S's Capital A/c	—	—	10,000	By Cash A/c	—	—	60,000
To M. Revaluation	1,000	1,000	500	By P's Capital A/c	10,000	—	—
To Balance c/d	98,500	67,000	49,500	By M. Revaluation	1,500	1,000	—
	1,11,500	76,000	60,000		1,11,500	76,000	60,000

टिप्पणी

Journal Entries

			Rs.	Rs.
(i)	Cash A/c	Dr.	60,000	
	To Permeshwari Capital A/c			60,000
	(Being Capital and goodwill brought by Permeshwari in Cash)			
(ii)	Permeshwari's Capital A/c	Dr.	10,000	
	To Subhadra's Capital A/c			10,000
	(Being goodwill credited)			
(iii)	Memorandum Revaluation A/c	Dr.	10,500	
	To Furniture and Fixtures A/c			5,500
	To Provision for doubtful debts A/c			5,000
	(Being value of Furniture & Fitting and debtors decrease)			
(iv)	Stock A/c	Dr.	5,500	
	Plant A/c	Dr.	7,500	
	To Memorandum Revaluation A/c			13,000
	(Being value of Stock and Plant increased)			
(v)	Memorandum Revaluation A/c	Dr.	2,500	
	To Subhadra's Capital A/c			1,500
	To Laxmi's Capital A/c			1,000
	(Being revaluation profit transferred)			
(vi)	Furniture and Fittings A/c	Dr.	5,500	
	Provision for doubtful debts A/c	Dr.	5,000	

	.		Rs.	Rs.
	To Memorandum Revaluation A/c			10,500
	(Being reverse of decrease in value of asset)			
(vii)	Memorandum Revaluation A/c Dr.		13,000	
	To Stock A/c			5,500
	To Plant A/c			7,500
	(Being reverse of increase in value of Asset)			
			Rs.	Rs.
(viii)	Subhadra's Capital A/c Dr.		1,000	
	Laxmi's Capital A/c Dr.		1,000	
	Permeshwari Capital A/c Dr.		500	2,500
	To Memorandum Revaluation A/c			
	(Being profit on revaluation reversed and charged to all partners)			
(ix)	Subhadra's Capital A/c Dr.		12,000	
	Laxmi's Capital A/c Dr.		8,000	
	To Goodwill A/c			20,000
	(Being goodwill Account written off on the admission of Permeshwari)			

Balance Sheet

	Rs.		Rs.
Capital A/c's :		Plant	45,000
Subhadra	98,500	Furniture and Fittings	37,500
Laxmi	67,000	Stock	57,500
Permeshwari	49,500	Bills Receivable	10,000
Creditors	90,000	Debtors	55,000
		Bank	1,00,000
	3,05,000		3,05,000

टिप्पणी

३.४.१.५ संयुक्त बीमा पॉलिसियों का समायोजन (Ajustment of Joint Life Insurance Policy) :

यदि पुराने साझेदारों के जीवन पर बीमा पॉलिसियां ली हुई है तथा उन पर चुकाया गया प्रीमियम लाभ हानि खाते में लिखा गया है तो नये साझेदार के प्रवेश के समय इन पॉलिसियों के समर्पण मूल्य का लाभ केवल पुराने साझेदारों को ही मिलना चाहिये। विभिन्न परिस्थितियों में लेखांकन इस प्रकर होगा –

(१) यदि उस तिथि को संयुक्त बीमा पॉलिसी का खाता बहियों में नहीं दिखाया हुआ हो (If joint life policy account is not appearing in the books on that date) :

New Partner Capital A/c Dr. (Share of new partner in surrender value)

To Sacrificing Partners Capital A/c

(Being share of new partner in the surrender value of joint life policy credited to Sacrificing partners in their sacrificing ratio)

OR

(i) Joint life policy A/c Dr.

To Old Partners Capital A/c (In old ratio)

(Being surrender value transferred)

(ii) All partners capital A/c Dr. (Including new)

To Joint Life Policy A/c

(Being surrender value of JLP written off)

(२) यदि संयुक्त बीमा पॉलिसी खाता पुस्तकों में उस तिथि को दिखाया हुआ हो तथा साझेदार इसे नयी फर्म में नहीं दिखाना चाहते हो (If joint life policy is appearing in the books on that date but the partners decide not to show joint life policy in the books of new firm) :

(i) संयुक्त बीमा पॉलिसी खाते को अपलिखित करने पर (For Written off of Joint Life Policy Account) :

Old Partners Capital A/c Dr.

To Joint Life Policy A/c

(Being joint life policy account written off in old ratio)

(ii) संयुक्त बीमा पॉलिसी के समर्पण मूल्य में नये साझेदार के हिस्से के लिए (For new partners share in surrender value of Joint Life Policy) :

New Partner Capital A/c Dr.

To Sacrificing Partners Capital A/c

(Being new partners share in surrender value of joint life policy credited to sacrificing partners in their sacrificing ratio)

(३) यदि संयुक्त बीमा पॉलिसी उस तिथि को बहियों में नहीं दिखाई गई हो परन्तु साझेदार नई फर्म में संयुक्त बीमा पॉलिसी का समर्पण मूल्य दिखाना चाहते हो – (If the joint life policy is not appearing in the books on that date but partners decide to show the surrender value of joint life policy in the books of new firm) :

Joint Life Policy A/c Dr.

To Old Partners Capital A/c (In old ratio)

(Being surrender value of JLP taken into account)

(४) यदि संयुक्त बीमा पॉलिसी खाता तथा संयुक्त बीमा पॉलिसी संचय खाता पुस्तकों में विद्यमान हो परन्तु साझेदार नई फर्म में इन्हें नहीं रखना चाहते हो (If the joint life Policy Account and joint life policy reserve account are appearing in the books on that date but the partners decide not to show these accounts in the books of new firm) :

(i) संयुक्त बीमा पॉलिसी खाता तथा संयुकत बीमा पॉलिसी संचय खाता अपलिखित करने पर – (For Written off of Joint Life Policy Account and Joint Life Policy Reserve Account) :

Joint Life Policy Reserve A/c Dr.

To Joint Life Policy A/c

(Being JLP account and JLPR account closed)

(ii) संयुक्त पॉलिसी खाते में नये साझेदार के हिस्से से – (For new partner's share in Joint Life Policy) :

New Partner's Capital A/c Dr.

To Sacrificing Partners Capital A/c

(Being new partner's share in surrender value of joint life policy credited to sacrificing partners in their sacrificing ratio)

(५) यदि उस तिथि को संयुक्त बीमा पॉलिसी खाता विद्यमान हो तथा साझेदार इसे नई फर्म की बहियों में दिखाना चाहते हो (If joint life policy account is appearing in the books on that date and partners decide to show in the books of new firm) :

No Entry

(६) यदि उस तिथि को संयुक्त बीमा पॉलिसी खाता तथा संयुक्त बीमा पॉलिसी संचय खाता विद्यमान हो परन्तु साझेदार संयुक्त बीमा पॉलिसी खाता नई फर्म की बहियों में दिखाना चाहते है। (If joint life policy account and joint life policy reserve account is appearing in the

टिप्पणी

books on that date and partners decide to show joint life policy account in the books of new firm)

Joint Life Policy Reserve A/c Dr.

To Old Partner's Capital A/c

(Being joint life policy reserve account written of in old ratio)

यदि साझेदार अपना लाभ हानि अनुपात परिवर्तित कर ले तो संयुक्त बीमा पॉलिसी के समर्पण मूल्य का लेखा निम्नलिखित प्रकार से होगा -

(१) यदि उस तिथि को संयुक्त बीमा पॉलिसी खाता विद्यमान न हो (If joint life policy account is not appearing in the books on that date) :

Gaining Partners Capital A/c Dr.

To Sacrificing Partners Capital A/c

(Being surrender value of JLP adjusted)

OR

(i) Joint life policy A/c Dr.

To All Partner Capital A/c (Old Ratio)

(Being surrender value of JLP transferred)

(ii) All Partners Capital A/c Dr.

To Joint Life Policy A/c

(Being surrender value of JLP written off)

(२) यदि संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी उस तिथि को पुस्तकों में विद्यमान हो परन्तु साझेदार उसे नयी फर्म में दिखाना नहीं चाहते हो (If joint life policy is appearing in the books on that date but the partners decide not to show joint life policy in the books of new firm) :

All Partners Capital A/c Dr.

To Joint Life Policy A/c

(Being joint life policy account written off in new ratio)

(३) यदि संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी तथा संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी संचय खाता उस तिथी को विद्यमान हो (If joint life policy and joint life policy reserve account are appearing in the books on that date) :

Joint Life Policy Reserve A/c Dr.

To All Partners Capital A/c

(Being Joint Life Policy Reserve Account transferred in old ratio)

टिप्पणी

(४) यदि उस तिथि को संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी तथा संयुक्त बीमा पॉलिसी संचय खाता विद्यमान हो परन्तु साझेदार उसे नयी फर्म में नहीं दिखाना चाहते हो –

(i) संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी तथा संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी संचय खाता बन्द करने पर – (For close of Joint Life Policy and Joint Life Policy Reserve Account) :

Joint Life Policy Reserve A/c Dr.

To Joint Life Policy A/c

(Being above accounts close due to change in profit sharing ratio)

(ii) समर्पण मूल्य के समायोजन के लिए (For adjustment of surrender value) :

Gaining Partners Capital A/c Dr.

To Sacrificing Partners Capital A/c

(Being surrender value of JLP adjusted through capital Account)

(५) यदि उस तिथि को संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी बहियों में विद्यमान न हो परन्तु साझेदार नई फर्म में संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी दिखाना चाहते हो – (If joint life policy is not appearing in the books on that date but partners decide to show joint life policy in the new firm) :

Joint Life Policy A/c Dr.

To All Partners Capital A/c

(Being surrender value credited in old P&L ratio)

(६) यदि उस तिथि को संयुक्त बीमा पॉलिसी खाता विद्यमान हो ओर साझेदार उसे नई फर्म में दिखाना चाहते हो (If joint life policy account is appearing in the books on that date and the partners decide to show it in the books of new firm) :

No Entry

३.४.१.६ पूंजी का समायोजन (Adjustment of Capital) :

यदि नये साझेदार के प्रवेश के समय सभी साझेदार पूंजी का समायोजन करने का निर्णय लेते है तो समायोजन निम्नलिखित दो तरीकों से किया जा सकता है -

(i) नये साझेदार की पूंजी के आधार पर पुराने साझेदारों की पूंजी का समायोजन (Adjustment of old partners' capital on the basis of new partner's capital).

(ii) पुराने साझेदारों की पूंजी के आधार पर नये साझेदार की पूंजी का समायोजन (Adjustment of new partner's capital on the basis of old partner's capital).

टिप्पणी

(i) नये साझेदार की पूंजी के आधार पर पुराने साझेदारों की पूंजी का समायोजन (Adjustment of Old Partner's Capital on the basis of New Partner's Capital) : इसमें नये साझेदार के लाभ के हिस्से तथा उसके द्वारा दी जाने वाली पूंजी के आधार पर फर्म की पूंजी ज्ञात की जाती है। इसके बाद नये लाभ हानि अनुपात में सभी साझेदारों की पूंजी निर्धारित की जाती है। विद्यमान पूंजी यदि निर्धारित पूंजी से कम हो ता उस साझेदार से मंगवायी जायेगी और अधिक होने पर भुगतान किया जायेगा। यदि चालू खाते खोलने का लिखा हो तो अन्तर की राषि चालू खाते में हस्तांतरित कर दी जायेगी।

(ii) पुराने साझेदारों की पूंजी के आधार पर नये साझेदार की पूंजी का समायोजन (Adjustment of New Partner's Capital on the basis of Old Partners Capital) : कभी कभी नये साझेदार द्वारा मंगवाई जाने वाली पूंजी की गणना पुराने साझेदारों की समायोजित पूंजी के आधार पर की जाती है जिसकी गणना पुनर्मूल्यांकन का लाभ हानि, संचित लाभ हानि, ख्याति का समायोजन करने के बाद ज्ञात हो। यह संयुक्त पूंजी शेष अनुपात (1. नये साझेदार का हिस्सा) के बराबर होगी। इसकी गणना निम्नलिखित सूत्र से होगी –

$$\text{Total Capital of Firm} = \frac{\text{Combined Capital of Old Partners after adjustments}}{1 - \text{New Partners Share of Profit}}$$

$$\text{Capital of New Partner} = \text{Total Capital of Firm x New Partner's Share of Profit}$$

उदाहरण **(Illustration) : २८**

मोहन तथा चन्द्र एक फर्म में साझेदार है लाभ हानि २:१ के अनुपात में बांटते है। ३१ मार्च २००९ को उनका चिट्ठा निम्नलिखित था – (Mohan and Chandra are partners in a firm sharing profits and losses in the ratio of 2 : 1. The balance sheet of the firm as on 31.03.2009 was as follows) :

	Rs.			Rs.
Creditors	7,000	Bank		5,020
Provision for Investments	2,000	Bills Receivable		12,500
Works men Compensation Fund	6,000	Debtors	20,000	
General Reserve	10,500	Less : Provision	2,500	17,500
Capital A/c's :		Stock		15,000
Mohan	30,000	Investments		25,000
Chandra	24,500	Goodwill		4,980
	80,000			80,000

इस तिथि को वीरेन्द्र को फर्म में प्रवेष लाभ हानि में २/५ भाग के लिए दिया गया। प्रवेष के समय निम्नलिखित पुनर्मूल्यांकन किये गये। (On the above date, Virendra is admitted for 2/5 share in the profits and losses of the firm. Following revaluation were made at the time of admission):

टिप्पणी

1. वीरेन्द्र को पूंजी के लिए ५०,००० रु. लाने है। (Virendra is required to bring in Rs. 50,000 as capital).
2. उसकी ख्याति की गणना १२,००० रु. की गई। (His goodwill was calculated at Rs. 12,000).
3. मोहन तथा चन्द्रा ने किराया क्रय पद्धति पर एक मशीन १५,००० रु. में खरीदी जिस पर ५०० रु. चुकाये गये। मशीन तथा न चुकाया गया दायित्व चिट्ठे में प्रदर्शित नहीं है।` (Mohan and Chandra purchased a machinery on hire purchase system for Rs. 15,000 of which only Rs. 500 are to be paid. Both machinery and unpaid liability did not appear in the balance sheet).
4. मोहन तथा चन्द्रा के जीवन पर ७५,००० रु. की संयुक्त बीमा पॉलिसी ली गई है। प्रवेश की तिथि को पॉलिसी का समर्पण मूल्य १२,००० रु. है। (There was a joint life policy on the lives of Mohan and Chandra for Rs. 75,000. Surrender value of the policy on the date of admission amounted to Rs. 12,000).
5. ५०० रु. की उपार्जित आय बहियों में नहीं दर्शायी गई है। (Accrued income not appeared in the books was Rs. 500).
6. विनियोगों का बाजार मूल्य २२,५०० रु. है। (Market value of investments is Rs. 22,500).
7. क्षतिपूर्ति का अनुमानित दावा ७५० रु. (Claim on account of compensation is estimated at Rs. 750).
8. एक पुराना ग्राहक राज जिसका खाता डूबत ऋण के रूप में अपलिखित कर दिया गया उसने १,७५० रु. पूर्ण भुगतान में चुकाने का वादा किया। (Raj, an old customer, whose account was written off as bad debts, has promised to pay Rs. 1,750 in settlement of the full claim).
9. डूबत ऋण के लिए आवश्यक प्रावधान ३,००० रु. (Provision for bad debts is required at Rs. 3,000).

वीरेन्द्र के प्रवेष के बाद पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूंजी खाते तथा चिट्ठा बनाइये। (Prepare Revaluation Account, Partners Capital Account and Balance Sheet after the admission of Virendra).

टिप्पणी

हल **(Solution) :**

Revaluation Account

	Rs.		Rs.
To Creditors A/c	500	By Machinery A/c	15,000
To Provision for Investments A/c	500	By Joint Life Policy A/c	12,000
Rs. (25,000 –22,500 –2,000)		By Accrued Income A/c	500
To Provision for Bad debts A/c	500		
To Partners Capital A/c :			
Mohan	17,333		
Chandra	8,667		
	27,500		27,500

Partners Capital Accounts

	M Rs.	L Rs.	V Rs.		M Rs.	L Rs.	V Rs.
To Goodwill A/c	3,320	1,660	—	By Balance b/d	30,000	24,500	—
To Mohan's Cap. A/c	—	—	8,000	By General Res. A/c	7,000	3,500	—
To Chandra's Cap. A/c	—	—	4,000	By Revaluation A/c	17,333	8,667	—
To Balance c/d	62,513	40,757	38,000	By Worksmen Compensation Fund A/c	3,500	1,750	—
				By Virendra's Cap. A/c	8,000	4,000	—
				By Bank a/c	—	—	50,000
	65,833	42,417	50,000		65,833	42,417	50,000

Balance Sheet

	Rs.			Rs.
Creditors	7,500	Bank		55,020
Provision for Investments	2,500	Bills Receivable		12,500
Worksmen Compensation Fund	750	Debtors	20,000	
Capital A/c's :		Less : Provision	3,000	17,000
Mohan	62,513	Accrued Income		500
Chandra	40,757	Joint Life Policy		12,000
Virendra	38,000	Stock		15,000
		Investments		25,000
		Machinery		15,000
	1,52,020			1,52,020

Bank Account

		Rs.			Rs.
	To Balance b/d	5,020		By Balance c/d	55,020
	To Virendra's Capital A/c	50,000			
		55,020			55,020

उदाहरण (Illustration) : २९

राजू तथा कल्पना साझेदार है और लाभ हानि ३:२ के अनुपात में बांटते है। ०१.०४.२००९ को जयश्री को लाभ में १/३ भाग के लिए साझेदार बनाया उन्होंने ५,००० रु. प्रब्याजी के तथा आनुपातिक पूंजी का भुगतान किया। राजू तथा कल्पना की पूंजी को भी लाभ हानि अनुपात में समायोजित करना है। जयश्री के प्रवेश के पूर्व राजू तथा कल्पना का चिट्ठा निम्नलिखित था - (Raju and Kalpna are partners in a firm sharing profits and losses in the ratio of 3:2. On 01.04.2009 Jayshree comes in for one third share paying Rs. 5,000 premium and proportionate capital. Capital of Raju and Kalpna are also to be adjusted in profit sharing ratio. The balance sheet of Raju and Kalpna before Jayshree comes in stands as below) :

	Rs.		Rs.
Creditors	12,000	Bank	6,000
Outstanding Expenses	5,000	Debtors	40,000
Reserves	10,000	Stock	15,000
Capital A/c's :		Furniture	2,000

टिप्पणी

Raju	29,000	Machinery	32,000
Kalpna	39,000		
	95,000		95,000

मशीन का मूल्यांकन ३०,००० रु., स्कन्ध २०,००० रु. तथा देनदार ३८,००० रु. निर्धारित हुए। १०,००० रु. की जीवन बीमा पॉलिसी बहियों में नहीं दिखायी गई है। प्रब्याजी को अपलिखित किया गया। जयश्री के प्रवेश पर पॉलिसी का समर्पण मूल्य ३,००० रु. है। १,००० रु. का लेनदार कई वर्षो से देय था परन्तु उसका पता नहीं लगा। दूसरी तरफ एक ५०० रु. के व्ययों का संदिग्ध दायित्व दायित्वों में बदल गया जो कि बहियों में लेखांकित नहीं है। संचय खाते को बहियों में नहीं दिखाना है। (Machinery is valued at Rs. 30,000, Stock at Rs. 20,000. Debtors are considered worth Rs. 38,000. A life policy of Rs. 10,000 was not shown in the books. Premium were written off. Surrender value of policy is Rs. 3,000 at the time of admission of Jayshree. One trade creditor for Rs. 1,000 is due for many years and he is not traceable. On the other hand one contingent liability for expenses Rs. 500 has matured and it is not recorded in the books. Reserve account is not to be shown in accounts).

जयश्री के प्रवेष के पश्चात लाभ हानि समायोजन खाता तथा चिट्ठा बनाइये। (Prepare profit and loss adjustment account and balance sheet after admission of Jayshree).

हल (Solution) :

Profit and Loss Adjustment Account

	Rs.		Rs.
To Machinery A/c	2,000	By Stock A/c	5,000
To Provision for Bad debts A/c	2,000	By Creditors A/c	1,000
To Outstanding Expenses A/c	500	By Life Polices A/c	3,000
To Partners Capital A/c :			
Raju	2,700		
Kalpna	1,800		
	9,000		9,000

Calculation of New Ratio :

Ratio after Jayshree's admission = $1 - \frac{1}{3}$ or $\frac{2}{3}$

$\therefore$ New Ratio of Raju = $\frac{3}{5} \times \frac{2}{3}$ or $\frac{2}{5}$

$\therefore$ New Ratio of Kalpna = $\frac{2}{\ } \times \frac{2}{\ }$ or $\frac{4}{\ }$

5 3 1

5

∴ New Ratio of Raju, Kalpna and Jayshree = $\frac{6 + 4 + 5}{15}$ or 6:4:5

Partners Capital Accounts

	R Rs.	K Rs.	J Rs.		R Rs.	K Rs.	J Rs.
To R&K's Capital A/c	—	—	5,000	By Balance b/d	29,000	39,000	—
To Bank A/c	—	11,800	—	By Reserve A/c	6,000	4,000	—
To Balance c/d	52,500	35,000	43,750	By P&L Adjustment A/c	2,700	1,800	—
				By J's Capital A/c	3,000	2,000	—
				By Bank a/c	11,800	—	48,750
	52.500	46,800	48,750		52,500	46,800	48,750

Calculation of Firms and Partners Capital in P&L Ratio :

Firms Capital = (Raju's balance + Kalpna's balance) x 3/2

$= \frac{(\text{Rs. } 40{,}700 + \text{Rs. } 46{,}800) \times 3}{2}$ or Rs. 1,31,250

∴ Capital of Raju = Rs. 1,31,250 x $\frac{6}{15}$ or Rs. 52,500

∴ Capital of Kalpna = Rs. 1,31,250 x $\frac{4}{15}$ or Rs. 35,000

∴ Capital of Jayshree = Rs. 1,31,250 x $\frac{5}{15}$ or Rs. 43,750

Total amount paid by Jayshree = Rs. (43,750 + 5,000) or Rs. 48,750

Balance Sheet

	Rs.			Rs.
Creditors	11,000	Bank		54,750
Outstanding Expenses	5,500	Debtors	40,000	
Capital A/c's :		Less : Provision	2,000	38,000
Raju	52,500	Stock		20,000
Kalpna	35,000	Life Policy		3,000
Jayshree	43,750	Furniture		2,000
		Machinery		30,000
	1,47,750			1,47,750

उदाहरण (Illustration) : ३०

शिव तथा आनन्द एक फर्म में साझेदार है तथा लाभ हानि ४:१ के अनुपात में बांटते है। ३१ मार्च २००९ को उनका चिट्ठा निम्नलिखित था – (Shiv and Anand are partners in a firm sharing profits and losses in the ratio of 4:1. Their balance sheet as on 31st March, 2009 is as follows) :

	Rs.		Rs.
Creditors	25,000	Bank	40,000
Bills Payable	5,000	Debtors	30,000
Reserves	20,000	Bills Receivable	10,000
Capital A/c's :		Stock	40,000
Shiv	25,000	Furniture	20,000
Anand	65,000		
	1,40,000		1,40,000

वे किशोर को १ अप्रेल २००९ से साझेदार लेने के लिए निनलिखित शर्त पर सहमत हुए - (They agree to take Kishore as a partner with effect from 1st April, 2008 on the following terms) :

(i) शिव, आनन्द तथा किशोर लाभ हानि ५:३:२ के अनुपात में बाटेंगे। (Shiv, Anand and Kishore will share profits and losses in the ratio of 5:3:2).

(ii) किशोर २०,००० रु. ख्याति के तथा ५०,००० रु. पूंजी के लाया। (Kishore will bring Rs. 20,000 as premium for goodwill and Rs. 30,000 as capital).

(iii) आधे संचय का साझेदारों द्वारा आहरण किया जायेगा। (Half of the reserve is to be withdrawn by the partners).

(iv) सम्पत्तियों का पुनर्मूल्यांकन इस प्रकार हुआ – (The assets will be revalued as follows) :

फर्निचर ३०,००० रु., स्टॉक ३९,५०० रु. तथा देनदार २८,५०० रु. (Furniture Rs. 30,000; Stock Rs. 39,500 and Debtors Rs. 28,500).

(v) १२,००० रु. के लेनदार अपना दावा २,००० रु. तक छोड़ने के लिए सहमत हुए। (A creditor for Rs. 12,000 has agreed to forgo his claim by Rs. 2,000).

(vi) उपरोक्त समायोजन करने के पश्चात किशोर की पूंजी के आधार पर षिव तथा आनन्द के पूंजी खातों को समायोजित किया जायेगा और परिस्थिति के अनुसार रोकड़ मंगवायी जायेगी अथवा रोकड़ निकाल ली जायेगी। (After making the above adjustments, the capital accounts of Shiv and Anand should be adjusted on the basis of Kishore's capital, by bringing cash or withdrawing cash, as the case may be).

आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिये तथा १ अप्रले, २००९ को फर्म का चिट्ठा बनाइये। (Pass necessary journal entries and prepare the balance sheet of the new firm as on 1st April, 2009).

हल (Solution) :

Revaluation Account

	Rs.		Rs.
To Stock A/c	500	By Furniture A/c	10,000
To Provision for Bad debts A/c	1,500	By Creditors A/c	2,000
To Partners Capital A/c's :			
Shiv	8,000		
Anand	2,000		
	12,000		12,000

Calculation of sacrificing / gain Ratio :

Shiv = $\frac{4}{5} - \frac{5}{10}$ or $\frac{3}{10}$ (Sacrificing)

Anand = $\frac{1}{5} - \frac{3}{10}$ or $\frac{1}{10}$ i.e. (Gaining)

Here old partners Anand is gaining 1/10 share in new ratio therefore he should bring Rs. 10,000 (because Kishore bring Rs. 20,000 for 2/10 share) for goodwill.

टिप्पणी

Journal

		Rs.	Rs.
	Bank A/c Dr.	50,000	
	To Kishore's Capital A/c		50,000
	(Being cash brought by Kishore for capital and goodwill		
	Kishore's Capital A/c Dr.	20,000	
	To Shiv's Capital A/c		20,000
	(Being goodwill transferred to Shiv's Capital Account)		
	Anand's capital A/c Dr.	10,000	
	To Shiv's Capital A/c		10,000
	(Being adjustment made for amount of goodwill due to acquiring 1/10 share by Anand from Shiv)		
	Reserve A/c Dr.	20,000	
	To Shiv's Capital A/c		16,000
	To Anand's Capital A/c		4,000
	(Being reserve transferred to partners capital account)		
	Shiv's Capital A/c Dr.	8,000	
	Anand's Capital A/c Dr.	2,000	
	To Bank A/c		10,000
	(Being half of the transferred reserve withdrawn by the partners)		
	Furniture A/c Dr.	10,000	
	Creditors A/c Dr.	2,000	
	To Revaluation A/c		12,000
	(Being value of furniture increased and Creditors decreased)		
	Revaluation A/c Dr.	2,000	
	To Stock A/c		500
	To Provision for Bad debts A/c		1,500
	(Being value of stock and debtors decreased)		

	Revaluation A/c	Dr.	10,000	
	To Shiv's Capital A/c			8,000
	To Anand's Capital A/c			2,000
	(Being revaluation profit transferred)			
	Bank A/c	Dr.	4,000	
	To Shiv's Capital A/c			4,000
	(Being cash brought by Shiv to make his capital in P&L ratio)			
	Anand's Capital A/c	Dr.	14,000	
	To Bank A/c			14,000
	(Being cash paid to Anand to make his capital in P&L ratio)			

Partners Capital Accounts

	S Rs.	A Rs.	K Rs.		S Rs.	A Rs.	K Rs.
To Shiv's Capital Ac	—	10,000	20,000	By Balance b/d	25,000	65,000	—
To Bank A/c	8,000	2,000	—	By Bank A/c	—	—	50,000
To Bank A/c (BF)	—	14,000	—	By Kishore's Capital A/c	20,000	—	—
To Balance c/d	75,000	45,000	30,000	By Anand's Capital A/c	10,000	—	—
				By Reserve A/c	16,000	4,000	—
				By Revaluation A/c	8,000	2,000	—
				By Bank A/c (B.F.)	4,000	—	—
	83,000	71,000	50,000		83,000	71,000	50,000

Balance Sheet as on 1st April, 2008

	Rs.		Rs.

टिप्पणी

Bills Payable	5,000	Bank	70,000
Creditors	23,000	Debtors (Rs. 30,000 – Rs. 1,500)	28,500
Capital A/c's :		Bills Receivable	10,000
Shiv	75,000	Stock	39,500
Anand	45,000	Furniture	30,000
Kishore	30,000		
	1,78,000		1,78,000

३.५ साझेदार की सेवानिवृति (Retirement of Partner)

सेवानिवृति तब कही जायेगी जब कोई एक साझेदार पुरानी साझेदारी से अलग हो जाय। इस दशा में पुरानी साझेदारी समाप्त हो जाती है और शेष साझेदार अपने व्यापार को चालू रखें तो नई साझेदारी अस्तित्व में आ जायेगी। सेवानिवृत होने वाला साझेदार सेवानिवृति से पूर्व किये गये फर्म के कार्यों के लिए तीसरे पक्ष के प्रति उत्तरदायी होगा। वह सेवानिवृति के बाद के कार्यों के लिए भी तीसरे पक्ष के प्रति उत्तरदायी माना जायेगा यदि उसने या शेष साझेदारों ने इस सम्बन्ध में सार्वजनिक सूचना नहीं दी है।

३.५.१ साझेदार के सेवानिवृत होने पर उत्पन्न होने वाली लेखा सम्बंधी समस्याऐं (Accounting Problems Arising at the time of Retirement of a Partner) :

साझेदार के सेवानिवृत होने पर निम्नलिखित समस्याऐं उत्पन्न होती है –

1. नये लाभ हानि अनुपात की गणना (Calculation of new profit sharing ratio)
2. ख्याति का समायोजन (Adjustment of goodwill)
3. सम्पत्तियों एवं दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन (Revaluation of Assets and Liabilities)
4. संचित लाभों का समायोजन (Adjustment of Retained Profits)
5. जीवन बीमा पॉलिसियों का समायोजन (Adjustment of Life Insurance Policies)
6. चालू वर्ष के लाभ के हिस्से का समायोजन (Adjustments of shares in current year's profits)
7. सेवानिवृत होने वाले साझेदार को भुगतान (Payment to Retiring Partners)
8. पूंजी का समायोजन (Adjustment of Capital)

३.५.१.१. नये लाभ हानि अनुपात की गणना (Calculation of New Profit Sharing Ratio) :

नया लाभ हानि का अनुपात ज्ञात करना विभिन्न प्रकार के लेखांकन के लिए आवश्यक है। किसी साझेदार के सेवानिवृत हो जाने पर शेष विद्यमान साझेदारों का लाभ का हिस्सा बढ़ जाता है। अतः नये अनुपात तथा पुराने अनुपात का अन्तर लाभ अनुपात (Gain Ratio) कहलाता है। यदि विद्यमान साझेदारों के मध्य कोई लिखित या

मौखिक समझौता नहीं हो तो यह माना जाता है कि शेष साझेदारों के अनुपातों में वृद्धि उनके पुराने लाभ हानि अनुपात में ही होगी।

नये लाभ हानि के अनुपात की गणना निम्नलिखित प्रकार से होगी -

उदाहरण (Illustration) : ३२

(अ) अ, ब, स साझेदार है लाभ हानि २:३:१ के अनुपात में बांटते है। 'ब' व्यापार से सेवानिवृत हुआ। नया लाभ हानि अनुपात तथा लाभ का अनुपात ज्ञात कीजिये। (A, B and C are partners sharing profits and losses in the ratio of 2 : 3 : 1. B retire from business calculate new profit sharing ratio and gaining ratio).

(ब) अ, ब तथा स साझेदार है लाभ हानि २:३:१ के अनुपात में बांटते है। ब सेवानिवृत हुआ तथा उसका हिस्सा अ तथा स ने १:२ में लिया। नया लाभ हानि अनुपात तथा लाभ का अनुपात ज्ञात कीजिये। (A, B and C are partners sharing profit and losses in the ratio of 2 : 3 : 1. B retires and his share taken by A and C in the ratio of 1 : 2. Calculate new profit sharing ratio and gain ratio).

(स) अ, ब तथा स साझेदार है लाभ हानि २:३:१ के अनुपात में बांटते है। ब सेवानिवृत हुआ और यह तय किया गया कि अ तथा स के बीच लाभ हानि का अनुपात वही रहेगा जो वर्तमान में ब तथा स के मध्य था। नया लाभ हानि अनुपात तथा लाभ का अनुपात ज्ञात कीजिये। (A, B and C are partners sharing profits and losses in the ratio of 2 : 3 : 1. B retires and it is decided that the profit sharing ratio between A and C will be the same as existing between B and C. Calculate new profit sharing ratio and gain ratio).

(द) अ, ब तथा स साझेदार है, लाभ हानि २:३:१ के अनुपात में बांटते है। ब सेवानिवृत हुआ तथा अपने हिस्से का १/५ भाग 'अ' के पक्ष में समर्पित किया तथा शेष स के पक्ष में समर्पित किया। नया लाभ हानि का अनुपात तथा लाभ का अनुपात ज्ञात कीजिये। (A, B and C are partners sharing profits and losses in the ratio of 2 : 3 : 1. B retires and surrender 1/5 of his share in favour of A and remaining in favour of C. Calculate new profit sharing ratio and the gaining ratio).

हल (Solution) :

(a) अ, ब तथा स का पुराना अनुपात = 2 : 3 : 1

ब की सेवानिवृति के बाद अ तथा स का अनुपात = 2 : 1

अ का लाभ अनुपात = $\frac{2}{3} - \frac{2}{6}$ or $\frac{4-2}{6} = \frac{2}{6}$ or $\frac{1}{3}$

स के लाभ का अनुपात = $\frac{1}{\;} - \frac{1}{\;}$ or $\frac{2-1}{\;} = \frac{1}{\;}$

3 6 6 6

$\therefore$ Gaining ratio between A and C = 2 : 1

(b) New ratio = Old Ratio + Retiring partners share acquired

$$\text{New ratio of A} = \frac{2}{3} + \left(\frac{3}{6} \times \frac{1}{3}\right) \text{ or } \frac{2}{6} + \frac{3}{18} = \frac{6+3}{18} \text{ or } \frac{9}{18}$$

$$\text{New ratio of C} = \frac{1}{6} + \left(\frac{3}{6} \times \frac{2}{3}\right) \text{ or } \frac{1}{6} + \frac{6}{18} = \frac{3+6}{18} \text{ or } \frac{9}{18}$$

$\therefore$ New ratio between A and C = 1 : 1

Calculation of gaining ratio :

$$\text{Gaining ratio of A} = \frac{3}{6} \times \frac{1}{3} \text{ or } \frac{3}{18}$$

$$\text{Gaining ratio of C} = \frac{3}{6} \times \frac{2}{3} \text{ or } \frac{6}{18}$$

$\therefore$ Gaining ratio between A and C = 1 : 2

(c) Ratio between B and C = 3 : 1

$\therefore$ New ratio between A and C = 3 : 1

Calculation of gaining ratio :

$$\text{Gaining ratio of A} = \frac{3}{4} - \frac{2}{6} \text{ or } \frac{18-8}{24} = \frac{10}{24}$$

$$\text{Gaining ratio of C} = \frac{1}{4} - \frac{1}{6} \text{ or } \frac{6-4}{24} = \frac{2}{24}$$

$\therefore$ Gaining ratio between A & C = 5 : 1

(d)

$$\text{New ratio of A} = \frac{2}{6} + \left(\frac{3}{6} \times \frac{1}{5}\right) \text{ or } \frac{2}{6} + \frac{3}{30} = \frac{10+3}{30} \text{ or } \frac{13}{30}$$

$$\text{New ratio of C} = \frac{1}{6} + \left(\frac{3}{6} \times \frac{4}{5}\right) \text{ or } \frac{1}{6} + \frac{12}{30} = \frac{5+12}{30} \text{ or } \frac{17}{30}$$

$\therefore$ New ratio between A & C = 13 : 17

$$\text{Gaining ratio of A} = \frac{13}{30} - \frac{2}{6} \text{ or } \frac{13-10}{30} = \frac{3}{30}$$

Gaining ratio of C = $\frac{17}{30} - \frac{1}{6}$ or $\frac{17-5}{30} = \frac{12}{30}$

∴ Gaining ratio between A & C = 3 : 12

३.५.१.२ ख्याति का समायोजन (Adjustment of Goodwill) :

इस स्थिति में भी ख्याति का मूल्यांकन उसी प्रकार होगा जिस प्रकार साझेदार के प्रवेश के समय हुआ था। जब कोई साझेदार सेवानिवृत होता है तो शेष साझेदारों को भविष्य में मिलने वाला लाभ का हिस्सा बढ़ जाता है। अतः सेवानिवृत होने वाले साझेदार के हिस्से की ख्याति की क्षतिपूर्ति भी शेष साझेदारों को अपने लाभ के अनुपात (Gain Ratio) में करनी होगी क्योंकि उन्होंने अतिरिक्त लाभ का हिस्सा प्राप्त किया है।

लेखांकन (Accounting) :

I. यदि फर्म की बहियों में पहले से ही ख्याति खाता विद्यमान है (If goodwill account is already appearing in the books of firm) : इस दशा में निम्नलिखित प्रविष्टि द्वारा ख्याति खाता बन्द कर देंगे

All partners Capital/Current A/c Dr.

To Goodwill A/c

(Being existing balance of goodwill written off in old ratio)

II. यदि ख्याति खाता फर्म की बहियों में विद्यमान नहीं है (If goodwill account is not appearing in the books of firm) : इस दषा में सेवानिवृत होने वाले साझेदार के हिस्से की ख्याति उसके पूंजी/चालू खाते में जमा कर देंगे तथा यह राषि लाभ प्राप्त करने वाले साझेदारों के पूंजी/चालू खातों में उनके लाभ प्राप्ति अनुपात (Gain Ratio) में नाम कर देंगे। इसके लिए निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि होगी –

Gaining partners Capital/Current A/c Dr.

To Retiring partners Capital/Current A/c

(Being the amount adjusted for goodwill on retirement)

उदाहरण (Illustration) : ३३

(i) पी, क्यू तथा आर साझेदार है। लाभ हानि ४:५:६ के अनुपात में बांटते है। क्यू सेवानिवृत हुआ तथा अपना हिस्सा पी तथा क्यू के पक्ष में २:१ के अनुपात में समर्पित किया। पहले से ही पुस्तकों में विद्यमान ख्याति ४५,००० रु. है तथा फर्म की ख्याति का मूल्यांकन १,३५,००० रु. हुआ। ख्याति के समायोजन के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिये। (P, Q and R are partners sharing profits and losses in the ratio of 4 : 5 : 6. Q retires and surrender his share in favour of P and Q in the ratio of 2 : 1. Goodwill already appeared in the books are Rs. 45,000 and goodwill of the firm valued Rs.

1,35,000. Give the necessary journal entries to adjust goodwill).

(ii) पी, क्यू तथा आर साझेदार है। लाभ हानि ४:३:२:१ के अनुपात में बांटते है। क्यू सेवानिवृत हुआ। पी, आर तथा एस ने तय किया कि वे लाभ हानि ३:२:१ के अनुपात में बांटेंगे। फर्म की ख्याति का मूल्यांकन १,५०,००० रु. हुआ तथा पुस्तकों में पहले से ही विद्यमान ख्याति ५०,००० रु. है। फर्म की बहियों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिये। (P, Q, R and S are partners sharing profits and losses in the ratio of 4:3:2:1. Q retires and P,R and S decide to share profits and losses in the ratio of 3:2:1. Goodwill of the firm is valued at Rs. 1,50,000 and goodwill already appears in the books at Rs. 50,000. Give necessary journal entries in the books of firm).

(iii) राम, श्याम तथा मोहन साझेदार है। लाभ हानि २:१:२ के अनुपात में बांटते है। श्याम सेवानिवृत हुआ तथा अपना लाभ का हिस्सा ९,००० रु. राम तथा मोहन को बेच दिया। राम ने ६,००० रु. तथा मोहन ने ३,००० रु. चुकाये। श्याम की सेवानिवृति के बाद वर्ष का लाभ ३०,००० रु. हुआ। आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिये। (Ram, Shyam and Mohan are partners sharing profits and losses in the ratio of 2:1:2. Shyam retires selling his share of profit to Ram and Mohan for Rs. 9,000. Rs. 6,000 being paid by Ram and Rs. 3,000 paid by Mohan. The profit for the year after Shyam's retirement was Rs. 30,000. Give necessary journal entries).

(iv) अ, ब तथा स साझेदार है। लाभ हानि ५:३:२ के अनुपात में बांटते है। फर्म की बहियों की ख्याति खाता १,००,००० रु. विद्यमान है। ख्याति का मूल्यांकन १,५०,००० रु. हुआ। अ तथा स ने ब से क्रमशः २/१० तथा १/१० भाग प्राप्त किया। ब की सेवानिवृति पर ख्याति का समायोजन करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिये।(A, B and C are partners sharing profits and losses in the ratio of 5:3:2. The goodwill account exists in the firm's books at Rs. 1,00,000. Goodwill has been valued at Rs. 1,50,000. A and C acquires from B 2/10 and 1/10 shares respectively. Pass necessary journal entries to make adjustment of goodwill at the time of B's retirement).

हल (Solution) :

(i) Journal

			Rs.	Rs.
	P's Capital A/c	Dr.	12,000	
	Q's Capital A/c	Dr.	15,000	
	R's Capital A/c	Dr.	18,000	
	To Goodwill A/c			45,000
	(Being existing goodwill written off)			
	P's Capital A/c	Dr.	30,000	
	R's Capital A/c	Dr.	15,000	
	To Q's Capital A/c			45,000
	(Being Q's share of goodwill adjusted in P and R's capital account in their gaining ratio.)			

Calculation of Q's share of goodwill :

$$= \text{Rs. } 1{,}35{,}000 \times \frac{5}{15} \text{ or Rs. } 45{,}000$$

Calculation of new ratio :

$$\text{New ratio of P} = \frac{4}{15} + (\frac{5}{15} \times \frac{2}{3} \text{ or } \frac{4}{15} + \frac{10}{45} = \frac{22}{45}$$

$$\text{New ratio of R} = \frac{6}{15} + (\frac{5}{15} \times \frac{1}{3}) \text{ or } \frac{6}{15} + \frac{5}{45} = \frac{23}{45}$$

∴ New ratio between P and R = 22 : 23

Calculation of gain ratio :

$$\text{Gaining ratio of P} = \frac{22}{45} - \frac{4}{15} \text{ or } \frac{22-12}{45} = \frac{10}{45}$$

$$\text{Gaining ratio of Q} = \frac{23}{45} - \frac{6}{15} \text{ or } \frac{23-18}{45} = \frac{5}{45}$$

∴ Gaining ratio between P and Q = 2 : 1

(ii) Journal

			Rs.	Rs.
	P's Capital A/c	Dr.	20,000	
	Q's Capital A/c	Dr.	15,000	
	R's Capital A/c	Dr.	10,000	
	S's Capital A/c	Dr.	5,000	
	To Goodwill A/c			50,000
	(Being old goodwill A/c written off)			
	P's Capital A/c	Dr.	15,000	
	R's Capital A/c	Dr.	20,000	
	S's Capital A/c	Dr.	10,000	
	To Q's Capital A/c			45,000
	(Being Q's share of goodwill adjusted in P, R & S's gain ratio.)			

Calculation of gain ratio :

$$\text{Gain ratio of P} = \frac{3}{} - \frac{4}{} \text{ or } \frac{30-24}{} = \frac{6}{}$$

टिप्पणी

6 10 60 60

Gain ratio of R = $\frac{2}{6} - \frac{2}{10}$ or $\frac{20-12}{60} = \frac{8}{60}$

Gain ratio of S = $\frac{1}{6} - \frac{1}{10}$ or $\frac{10-6}{60} = \frac{4}{60}$

∴ Gain ratio of P, R and S = 3 : 4 : 2

Q's share in firm's goodwill = Rs. 1,50,000 x $\frac{3}{10}$ or Rs. 45,000

(iii) Journal

		Rs.	Rs.
	Ram's Capital A/c Dr.	6,000	
	Mohan's Capital A/c Dr.	3,000	
	To Shyam's Capital A/c		9,000
	(Being Shyam's share of goodwill adjusted assuming that his share of profit is equal to goodwill)		
	P & L Appropriation A/c Dr.	30,000	
	To Ram's Capital A/c		16,000
	To Mohan's Capital A/c		14,000
	(Being profit distributed in partners in their new profit sharing ratio)		

Calculation of new profit sharing ratio :

New Ratio of Ram = $\frac{2}{5} + (\frac{1}{5} \times \frac{2}{3})$ or $\frac{2}{5} + \frac{2}{15} = \frac{8}{15}$

New Ratio of Mohan = $\frac{2}{5} + (\frac{1}{5} \times \frac{1}{3})$ or $\frac{2}{5} + \frac{1}{15} = \frac{7}{15}$

∴ New ratio of Ram and Mohan = 8 : 7

(iv) Calculation of new ratio :

New ratio of A = $\frac{5}{10} + \frac{2}{10}$ or $\frac{7}{10}$

New ratio of C = $\frac{2}{10} + \frac{1}{10}$ or $\frac{3}{10}$

∴ New ratio between A and C = 7 : 3

			Rs.	Rs.
	A's Capital A/c	Dr.	50,000	
	B's Capital A/c	Dr.	30,000	
	C's Capital A/c	Dr.	20,000	
	To Goodwill A/c			1,00,000
	(Being goodwill account written off)			
	A's Capital A/c	Dr.	30,000	
	C's Capital A/c	Dr.	15,000	
	To B's Capital A/c			45,000
	(Being B's share of goodwill adjusted in the gain ratio of A & C)			

३.५.१.३. सम्पत्तियों तथा दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन (Revaluation of Assets and Liabilities) : सम्पत्तियों तथा दायित्वों का सेवानिवृति के समय वर्तमान मूल्य ज्ञात करने के लिए पुनर्मूल्यांकन करना आवष्यक होता है। पुनर्मूल्यांकन का लाभ हानि पुराने साझेदारों (सेवानिवृत होने वाले साझेदार सहित) में पुराने लाभ हानि अनुपात में बांटकर उनके पूंजी/चालू खातों में हस्तांतरित कर दिया जाता है। इसका लेखांकन साझेदार के प्रवेष के समय पेज ७४ पर जिस प्रकार दोनों विधियों से समझाया गया है उसी प्रकार होगा।

३.५.१.४. संचित लाभों का समायोजन (Adjustment of Retained Profits)

गतवर्षों के संचित लाभ (संचय, लाभ हानि खाता आदि) यदि वितरित नहीं किये गये है तो वे सेवानिवृत होने वाले साझेदार सहित पुराने साझेदारों में उनके पुराने लाभ हानि अनुपात में उनके पूंजी/चालू खातों में हस्तांतरित कर दिये जायेंगे। इसका लेखांकन करने के लिए निम्नलिखित जर्नल प्रविष्ठि की जाती है –

Reserves A/c Dr.

Profit and Loss A/c Dr.

To old partners Capital/Current A/c

(Being retained profits distributed in old partners in their old profit sharing ratios)

संचित हानि होने पर निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि की जायेगी –

Old partners Capital/Current A/c Dr.

टिप्पणी

To Profit and Loss A/c

(Being retained loss distributed in old partners in their old profit sharing ratio)

३.५.१.५ जीवन बीमा पॉलिसियों का समायोजन (Adjustment of Life Insurance Policies)

संयुक्त एवम् व्यक्तिगत जीवन बीमा पॉलिसियां जब तक परिपक्व नहीं होती तब तक उनका कुछ समर्पण मूल्य होता है। इन पर चुकाया गया प्रीमियम यदि फर्म के लाभों में से भुगतान किया गया है तो गत वर्षों में तो साझेदारों में वितरित होने वाला लाभ कम हुआ था। अतः सेवानिवृति पर सेवानिवृत होने वाला साझेदार इस समर्पण मूल्य में अपना हिस्सा प्राप्त करने का अधिकारी है। यदि फर्म की बहियों में समर्पण मूल्य लेखांकित किया हुआ है तो ओर कोई भी लेखांकन करने की आवष्यकता नहीं है क्योंकि इसका लाभ साझेदारों को पहले ही मिल चुका है। जीवन बीमा पॉलिसियों का समायोजन करने के लिए निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टियां की जाती है –

I. जब बीमा पॉलिसी बहियों में विद्यमान न हो – (When Life Policy not appeared in the books of Accounts) :

(i) पॉलिसी का समर्पण मूल्य लेखांकित करने के लिए – (For recording of Surrender value of Policy) :

Joint Life Policy / Life Policies A/c Dr.

To All Partners Capital A/c (Old Ratio)

(Being surrender value of life policy credited to all partners capital account)

(ii) पॉलिसियों का समर्पण मूल्य अपलिखित करने के लिए – (For write off of surrender value of Life Policies) :

Remaining Partners Capital / Current A/c Dr.

To Joint Life Policy / Life Policies A/c (New Ratio)

(Being surrender value of policies written off)

वैकल्पिक लेखांकन (Alternative Accounting) :

Remaining Partners Capital / Current A/c Dr. (Gain Ratio)

To Retiring Partners Capital / Current A/c

(Being retiring partners share in surrender value of policy credited by debiting to gaining partners)

II. जब जीवन बीमा पॉलिसी बहियों में विद्यमान हो – (If Life Insurance Policy appeared in the books of Accounts) :

No Entry

III. जब जीवन बीमा पॉलिसी तथा जीवन बीमा पॉलिसी संचय खाता बहियों में विद्यमान हो – (If Life Insurance Policy and Life Insurance Policy Reserve Account are appearing in the books of accounts) :

Life Policy Reserve A/c Dr.

To All Partners Capital A/c

(Being Life Policy Reserve Account transferred in old ratio)

IV. यदि जीवन बीमा पॉलिसी तथा जीवन बीमा पॉलिसी संचय खाता बहियों में विद्यमान हो परन्तु साझेदारों ने यह तय किया हो कि इन खातों को नई फर्म की बहियों में नहीं दिखना है। (If Life Insurance Policy and Life Insurance Policy reserve account are appearing in the books of accounts but partners decide not to show these accounts in the books of new firm) :

(i) जीवन बीमा पॉलिसी तथा जीवन बीमा पॉलिसी संचय खाते को अपलिखित करने पर (For write off of Life Policy and Life Policy Reserve Account) :

Life Policy Reserve A/c Dr.

To Life Policy A/c

(Being life policy and life policy reserve account are closed at the time of retirement)

(ii) जीवन बीमा पॉलिसी के समर्पण मूल्य में सेवानिवृत होने वाले साझेदार के हिस्से का समायोजन (For adjustment of retiring partners share in surrender value of Life Insurance Policy) :

Remaining Partners Capital A/c Dr. (Gain Ratio)

To Retiring Partners Capital A/c

(Being retiring partners share in surrender value of life policy credited by debiting gaining partners).

V. जब जीवन बीमा पॉलिसीयां बहियों में विद्यमान न हो परन्तु साझेदार इनका समर्पण मूल्य नई फर्म की बहियों में दिखाना चाहते हो – (When life insurance policy is not appearing in the books of accounts but partners decide to show the surrender value in the books of accounts of new firm) :

Life Policy A/c Dr.

To All Partners Capital A/c

(Being surrender value credited in old profit sharing ratio)

VI. जब जीवन बीमा पॉलिसी बहियों मं विद्यमान हो परंतु साझेदार उसके समर्पण मूल्य को नई फर्म की बहियों में नहीं दिखाना चाहते हो – (When life insurance policy is appearing in the books of accounts but partners decide not to show surrender value of life insurance policy in the books of accounts of new firm) :

Remaining Partners Capital A/c Dr. (New Ratio)

To Life Policy A/c

(Being book value of life policy written off in new ratio)

6. चालू वर्ष के लाभ के हिस्से का समायोजन (Adjustment of Share in Current Year's Profit) :

यदि साझेदार चालू वर्ष के अंतिम खाते बनाने के बाद सेवानिवृत होता है तो उसे उसके हिस्से का चाूल वर्ष का लाभ दे दिया जाता है परन्तु यदि वर्ष के मध्य में साझेदार सेवानिवृत हो तो उसे चालू वर्ष के लाभ का हिस्सा निम्नलिखित विधियों से ज्ञात करके दिया जाता है -

(i) उसे चालू वर्ष के लाभ के हिस्से के स्थान पर अतिरिक्त ब्याज दिया जा सकता है।

(ii) उसका उस अवधि का चालू वर्ष का लाभ का हिस्सा गत वर्ष के लाभ के आधार पर ज्ञात किया जायेगा।

(iii) उसका उस अवधि का चालू वर्ष का लाभ का हिस्सा कुछ गत वर्षों के औसत लाभ के आधार पर ज्ञात किया जायेगा।

(iv) उसका चालू वर्ष का लाभ का हिस्सा उस अविध तक के अंतिम खाते बनाकर ज्ञात किया जायेगा।

३.५.१.६ सेवानिवृत होने वाले साझेदार को भुगतान (Payment to Retiring Partner)

सेवानिवृत होने वाले साझेदार को भुगतान साझेदारी संलेख में किये गये प्रावधानों के अनुसार होता है। यदि साझेदारी संलेख न हो तो या तो सेवानिवृत होने वाले साझेदार को तुरन्त भुगतान कर दिया जाता है या ब्याज सहित किश्तों में या सेवानिवृत होने वाले साझेदार सहमत हो तो बिना ब्याज किश्तों में भुगतान कर दिया जाता है। साझेदारी अधिनियम १९३२ की धारा ३७ के प्रावधानों के अनुसार या तो सेवानिवृत होने वाला साझेदार देय राशि पर ६ प्रतिशत वार्षिक ब्याज तब तक प्राप्त करने का अधिकारी है जब तक पूरा भुगतान नहीं हो जाता या लाभ में हिस्सा जिसे उसका कोष प्रयोग करके अर्जित किया गया है, इन दोनों में से जो अधिक हो प्राप्त करने का अधिकारी है। सेवानिवृत होने वाले साझेदार को भुगतान करने के लिए निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टियां की जाती है -

(i) जब देय राषि का तुरन्त भुगतान हो (When due amount paid immediately) :

Retiring Partner Capital A/c Dr.

To Bank A/c

(Being paid to retiring partner against account)

(ii) जब देय राषि का कुछ हिस्सा तुरन्त चुकाया जाय तथा शेष किष्तों में चुकाये – (When partly due amount paid immediately and remaining in instalments) :

Retiring Partner Capital A/c Dr.

To Bank A/c

To Retiring Partner's Loan A/c

(Being balance of retiring Partners Capital Account adjusted)

(iii) जब ऋण पर ब्याज देय हो (In case interest due on Loan) :

Interest on Loan A/c Dr.

To Retiring Partners Loan A/c

(Being interest due on loan)

(iv) किष्त का भुगतान करने के लिए (For payment of instalment) :

Retiring Partner's Loan A/c Dr.

To Bank A/c

(Being instalment paid against retiring partners loan)

३.५.१.७ पूंजी का समायोजन (Adjustment of Capital) :

साझेदार के सेवानिवृत होने के बाद शेष साझेदारों की पूंजी का समायोजन निम्नलिखित में से किसी एक तरीक से किया जायेगा -

(i) सेवानिवृत होने वाले साझेदार को रोकड़ में इस प्रकार भुगतान किया जाय कि शेष साझेदार अपनी पूंजी नये अनुपात में समायोजित करके रोकड़ लाये।

(ii) जब फर्म की कुल पूंजी दी हुई हो।

(iii) जब फर्म की कुल पूंजी दी हुई नहीं हो।

उदाहरण (Illustration) : ३४

पी, क्यू तथा आर लाभ हानि अपनी पूंजी के अनुपात में बांटते है। ३१.०३.२००९ को उनका चिट्ठा निम्नलिखित था – (On 31.03.2009 the Balance Sheet of P, Q and R sharing profits and losses in the ratio of their capital stood as follows) :

		Rs.		Rs.
Creditors		2,00,000	Bank	1,00,000
Capital A/c's :	Rs.		Debtors	2,00,000
P	3,00,000		Stock	1,00,000
Q	2,00,000		Machinery	2,00,000
R	1,00,000	6,00,000	Land & Building	2,00,000
		8,00,000		8,00,000

३१.०३.२००९ को पी ने सेवानिवृत होने की इच्छा व्यक्त की तथा शेष साझेदारों ने व्यापार चालू रखा। यह सहमति हुई कि इस तिथि को सम्पत्तियों तथा दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन निम्नलिखित आधारों पर किया जाय

– (On 31.03.2009 P desired to retire from the firm and the remaining partners decide to carry on. It was agreed to revalue assets and liabilities on that date on the following basis) :

1. भूमि भवन को ३० प्रतिशत बढ़ाया जाय। (Land and Building be appreciated by 30%).
2. मशीन को २० प्रतिशत से ह्रसित किया जाय। (Machinery be depreciated by 20%).
3. अंतिम रहतिये का मूल्यांकन ८० प्रतिशत पर किया जाय। (Closing stock to be valued at 80%).
4. संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान ५ प्रतिशत किया जाय। (Provision for doubtful debts to be made at 5%).
5. लेनदारों का पुराना जमा का शेष १०,००० रु. वापस लिखना है। (Old credit balance of sundry creditors Rs. 10,000 be written back).
6. साझेदारों की संयुक्त बीमा पॉलिसी समर्पित की गई तथा ६०,००० रु. रोकड़ प्राप्त हुए। (Joint life policy of the partners be surrendered and cash obtained Rs. 60,000).
7. पूरी फर्म की ख्याति १,८०,००० रु. मूल्यांकित हुई। (Goodwill of the entire firm be valued at Rs. 1,80,000).
8. क्यू तथा आर का भावी लाभ हानि अनुपात बराबर होगा। (Future profit sharing ratio of Q and R will be equal).
9. फर्म की कुल पूंजी उतनी ही होगी जितनी सेवानिवृति से पूर्व थी। व्यक्तिगत पूंजी उनके लाभ हानि अनुपात में होगी। (The total capital of the firm is to be the same as before retirement. Individual capital be in their profit sharing ratio).
10. पी को देय राषि का निपटारा निम्न प्रकार होगा। (Amount due to P is to be settled on the following basis) :

५० प्रतिशत सेवानिवृति के समय तथा शेष ५० प्रतिशत एक वर्ष के भीतर। पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूंजी खाते तथा ३१ मार्च, २००९ का चिट्ठा बनाइये। (50% on retirement and remaining 50% within one year. Prepare Revaluation Account, Partners Capital Account and Balance Sheet as on 31st March, 2009).

हल (Solution) :

Revaluation Account

	Rs.		Rs.
To Machinery A/c	40,000	By Land & Building A/c	60,000
To Closing Stock A/c	20,000	By Creditors A/c	10,000
To Provision for D.D.	10,000		
	70,000		70,000

Partners Capital Account

Particulars	P Rs.	Q Rs.	R Rs.	Particular	P Rs.	Q Rs.	R Rs.
To P's Capital A/c	—	30,000	60,000	By Balance b/d	3,00,000	2,00,000	1,00,000
To P's Loan A/c	2,10,000	—	—	By Joint Life Policy A/c	30,000	20,000	10,000
To Bank A/c	2,10,000	—	—	By Q's Capital A/c	30,000	—	—
To Balance c/d	—	3,00,000	3,00,000	By R's Capital A/c	60,000	—	—
				By Bank A/c	—	1,10,000	2,50,000
	4,20,000	3,30,000	3,60,000		4,20,000	3,30,000	3,60,000

Bank Account

		Rs.			Rs.
	To Balance b/d	1,00,000		By P's Capital A/c	2,10,000
	To JLP A/c	60,000		By Balance c/d	3,10,000
	To Q's Capital A/c	1,10,000			
	To R's Capital A/c	2,50,000			
		5,20,000			5,20,000

Balance Sheet

	Rs.			Rs.
Creditors	1,90,000	Bank		3,10,000
P's Loan A/c	2,10,000	Debtors	2,00,000	
Capital A/c's :		Less : Provision	10,000	1,90,000
Q	3,00,000	Stock		80,000
R	3,00,000	Machinery		1,60,000
		Land & Building		2,60,000
	10,00,000			10,00,000

टिप्पणी

Calculation of gain ratio :

$$\text{Gain ratio of Q} = \frac{1}{2} - \frac{2}{6} \text{ or } \frac{3-2}{6} = \frac{1}{6}$$

$$\text{Gain ratio of R} = \frac{1}{2} - \frac{1}{6} \text{ or } \frac{3-1}{6} = \frac{2}{6}$$

$\therefore$ Gain ratio = 1 : 2

Share of P's goodwill = Rs. 1,80,000 x $\frac{3}{6}$ or Rs. 90,000

उदाहरण (Illustration) : ३५

अ, ब तथा स साझेदार है तथा लाभ हानि ५:३:२ के अनुपात में बांटते है। ३१.१२.२००९ को उनका चिट्ठा निम्नलिखित था – (A, B and C are in partnership sharing profits and losses in the ratio of 5 : 3 : 2. Their balance sheet on 31.12.2009 was as under) :

		Rs.		Rs.
Creditors		30,000	Bank	10,000
Bank Loan		40,000	Debtors	50,000
Capital A/c's :	Rs.		Stock	50,000
A	50,000		Fixed Assets	80,000
B	40,000			
C	30,000	1,20,000		
		1,90,000		1,90,000

०१.०१.२०१० को अ सेवानिवृत होना चाहता है। ब तथा स २:१ के अनुपात में व्यापार चालू रखने पर सहमत हुए। ०१.०१.२००७ को संयुक्त बीमा पॉलिसी १,००,००० रु. की ली गई तथा ३१.१२.२००९ को उसका समर्पण मूल्य २५,००० रु. था। अ की सेवानिवृति पर ख्याति का मूल्यांकन १,००,००० रु. तथा स्थाई सम्पत्तियां १,१०,००० रु. पर मूंल्यांकित हुई परन्तु ब तथा स सम्पत्तियों की इस वृद्धि को चिट्ठे में दिखाना उचित नहीं समझते। वे इस पर भी सहमत हुए कि इतनी राशि रोकड़ लायी जाय कि अ के दावे का ५० प्रतिशत रोकड़ में भुगतान कर दिया जाय तथा २५,००० रु. बैंक शेष रहे और उनकी पूंजी आनुपातिक हो जाय (On 01.01.2010, A wants to retire, B and C agreed to continue at 2 : 1. Joint life policy was taken on 01.01.2007 for Rs. 1,00,000 and its surrender value as on 31.12.2008 was Rs. 25,000. For the purpose of A's

retirement goodwill was valued at Rs. 1,00,000 and fixed asset was valued at Rs. 1,10,000. But B and C did not prefer to show such increase in assets in the balance sheet. They also agreed to bring necessary cash to discharge 50% of the A's claim, to have Rs. 25,000 bank balance and to make their capital proportionate.

आवष्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिये, खाते बनाइये तथा पुनर्गठित फर्म का चिट्ठा बनाइये। (Pass necessary journal entries, prepare ledger accounts and draft the balance sheet of the reconstituted firm).

हल (Solution) :

Calculation of gain ratio :

Gain ratio of B = $\frac{2}{3} - \frac{3}{10}$ or $\frac{20-9}{30} = \frac{11}{30}$

Gain ratio of C = $\frac{1}{3} - \frac{2}{10}$ or $\frac{10-6}{30} = \frac{4}{30}$

$\therefore$ Gain ratio = 11 : 4

Calculation of share of A in increased value of assets :

$= \frac{5}{10}$ x (Value of goodwill + Surrender Value of JLP + increased value of fixed assets)

$= \frac{5}{10}$ x (Rs. 1,00,000 + Rs. 25,000 + Rs. 30,000) or Rs. 77,500

Calculation of capital of reconstructed firm :

= Total Assets + Additional Cash required – Bank Loan – Creditors – 50% of Final Balance of A's Capital Account

= Rs. (1,90,000 + 15,000 – 40,000 – 30,000 – (50,000 + 77,500] ÷ 2)

= Rs. 71,250

B's Capital = Rs. 71,250 x 2/3 or Rs. 47,500

C's Capital = Rs. 71,250 x 1/3 or Rs. 23,750

Partners Capital Account

Particulars	A Rs.	B Rs.	C Rs.	Particular	A Rs.	B Rs.	C Rs.

टिप्पणी

To A's Capital A/c	—	56,833	20,667	By Balance b/d	50,000	40,000	30,000
To Bank A/c	63,750	—	—	By B's Capital A/c	56,833	—	—
To A's Loan A/c	63,750	—	—	By C's Capital A/c	20,667	—	—
To Balance c/d	—	47,500	23,750	By Bank A/c	—	64,333	14,417
	1,27,500	1,04,333	44,417		1,27,500	1,04,333	44,417

Balance Sheet

		Rs.		Rs.
Creditors		30,000	Bank	25,000
Bank Loan A/c		40,000	Debtors	50,000
A's Loan		63,750	Stock	50,000
Capital A/c's :	Rs.		Fixed Assets	80,000
B	47,500			
C	23,750	71,250		
		2,05,000		2,05,000

उदाहरण (Illustration) : ३६

अ तथा ब बराबर लाभ हानि बांटने वाले साझेदार है। समझौते के अनुसार अ सेवानिवृत हुआ तथा स १ जनवरी २०१० को लाभों में १/३ भाग के आधार पर फर्म में शामिल हुआ। ३१.१२.२००९ को फर्म का चिट्ठा निम्नलिखित था – (A and B are equal partners. A by agreement retires and C join the firm on the basis of ⅓ share of profit on 1st January, 2010. The Balance Sheet of the firm as on 31.12.2009 were) :

	Rs.		Rs.
Capital A/c's :		Goodwill	10,000
A	1,04,000	Fixed Assets	1,20,000
B	1,02,000	Stock	60,000
Provision for depreciation	12,000	Debtors	40,000
Creditors	20,000	Bank	8,000
	2,38,000		2,38,000

ख्याति तथा स्थायी सम्पत्तियों का मूल्यांकन क्रमश: ३०,००० रु. तथा १,४०,००० रु. हुआ तथा यह सहमति हुई कि स के प्रवेश से पूर्व इसे लेखांकित कर लिया जाय। पर्याप्त राशि मंगवायी जाय कि अ का भुगतान

टिप्पणी

हो जाय तथा ५,००० रु. बैंक में रोकड़ शेष रहे। ब तथा स इतनी राशि उपलब्ध करवाये कि उनकी पूंजी लाभ हानि अनुपात में हो जाय। आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिये तथा स के प्रवेश के बाद का चिट्ठा बनाइये। (Goodwill and Fixed Assets valued at Rs. 30,000 and Rs. 1,40,000 respectively and it was agreed to be written up accordingly before admission of C as partner. Sufficient money is to be introduced so as to enable A to be paid off and leave Rs. 5,000 cash at bank. B and C are to provide such sum as to make their capitals proportionate to their share of profit. Show the Journal Entries required and prepare the Balance Sheet after admission of "C").

हल (Solution) :

Journal Entries

				Rs.	Rs.
	B's Capital A/c	Dr.		5,000	
	C's Capital A/c	Dr.		10,000	
	To A's Capital A/c				15,000
	(Being A's share of goodwill adjusted in B & C Capital A/c's)				
	A's Capital A/c	Dr.		5,000	
	B's Capital A/c	Dr.		5,000	
	To Goodwill A/c				10,000
	(Being goodwill account written off)				
	Fixed Assets A/c	Dr.		32,000	
	To Revaluation A/c				32,000
	(Being value of fixed assets increased)				
	Revaluation A/c	Dr.		32,000	
	To A's Capital A/c				16,000
	To B's Capital A/c				16,000
	(Being revaluation profit transferred)				
	A's Capital A/c	Dr.		1,30,000	
	To Bank A/c				1,30,000
	(Being paid to A against claim)				
	Bank A/c	Dr.		1,27,000	
	To B's Capital A/c				42,000
	To C's Capital A/c				85,000

टिप्पणी

			Rs.	Rs.
	(Being cash brought by B and C to make their capital in P & L ratio)			

Partners Capital Account

		A Rs.	B Rs.	C Rs.			A Rs.	B Rs.	C Rs.
	To Goodwill A/c	5,000	5,000	—		By Balance c/d	1,04,000	1,02,000	—
	To A's capital A/c	—	5,000	10,000		By B & C Capital	15,000	—	—
	To Cash A/c	1,30,000	—	—		By Revaluation A/c	16,000	16,000	—
	To Balance c/d	—	1,50,000	75,000		By Cash A/c (Balancing Figure)	—	42,000	85,000
		1,35,000	1,60,000	85,000			1,35,000	1,60,000	85,000

Calculation of Capital of B and C in new firm :

Capital of firm = Present value of Assets – Present Value of Liabilities

= Rs. (1,40,000 + 60,000 + 40,000 + 5,000) – Rs. 20,000

= Rs. 2,25,000

New P & L Ratio of B & C = 2 : 1

$\therefore$ Capital of B will be Rs. 2,25,000 x $\frac{2}{3}$ = Rs. 1,50,000

$\therefore$ Capital of C will be Rs. 2,25,000 x $\frac{1}{3}$ = Rs. 75,000

Bank Account

		Rs.			Rs.
	To Balance b/d	8,000		By A's Capital A/c	1,30,000
	To B's Capital A/c	42,000		By Balance c/d	5,000
	To C's Capital A/c	85,000			
		1,35,000			1,35,000

Balance Sheet as on 01.01.2010

		Rs.		Rs.
Capital A/c's :	Rs.		Fixed Assets	1,40,000
B	1,50,000		Stock	60,000
C	75,000	2,25,000	Debtors	40,000
Creditors		20,000	Bank	5,000
		2,45,000		2,45,000

उदाहरण (Illustration) : ३७

अ, ब तथा स लाभ हानि ४:२:१ के अनुपात में बांटते है। ३१.१२.२००९ को उनका चिट्ठा निम्नलिखित था – (The following is the balance sheet as on 31.3.2009 of A, B and C who share profits in the ratio of 4 : 2 : 1 respectively).

		Rs.		Rs.
Bills Payable		3,000	Bank	1,000
Creditors		15,000	Debtors	11,000
General Reserve		10,500	Stock	15,000
Capital A/c's :	Rs.		Motor Vehicle	10,000
A	30,000		Plant & Machinery	26,500
B	20,000		Land and Building	20,000
C	15,000	65,000	Goodwill	10,000
		93,500		93,500

उक्त विधि को अ सेवानिवृत हुआ तथा निम्नलिखित व्यवस्था पर सहमति हुई – (On the above date A retired and the following arrangements were agreed upon) :

(i) फर्म की ख्याति २४,००० रु. मूल्यांकित हुई। (Goodwill of the firm be valued at Rs. 24,000).

(ii) इन सम्पत्तियों व दायित्वों का मूल्यांकन इस प्रकार किया गया – स्कन्ध १२,००० रु., देनदार १०,५०० रु., भूमि व भवन २२,६०० रु., प्लांट तथा मशीनरी २५,००० रु. तथा लेनदार १४,००० रु. (These assets and Liabilities be revalued as under : (Stock Rs. 12,000, Debtors Rs. 10,500, Land and Building Rs. 22,600, Plant and Machinery Rs. 25,000 and Creditors Rs. 14,000).

ब तथा स क्रमश: २०,००० रु. तथा ५,००० रु. व्यापार में लाये। अ को १६,२०० रु. तुरंत भुगतान किया तथा शेष राशि तीन समान वार्षिक किस्तों में ९ प्रतिशत वार्षिक ब्याज सहित चुकाई। (B and C to introduce

टिप्पणी

Rs. 20,000 and Rs. 5,000 respectively in to the business. A sum of Rs. 16,200 be paid to A immediately and the balance be paid in three equal annual instalments together with interest at 9% p.a.).

उपरोक्त व्यवहारों को लेखांकित करने के लिए जर्नल में प्रविष्टियां कीजिये तथा अ के सेवानिवृत होने के बाद फर्म का चिट्ठा बनाइये। अ का ऋण खाता तब तक बनाइये जब तक पूरा भुगतान न हो जाय। (Give journal entries to record the above transactions and prepare balance sheet of the firm after A's retirement. Also show A's loan account until it is paid off).

हल (Solution) :

Revaluation Account

	Rs.			Rs.
To Stock A/c	3,000	By Land and Building A/c		2,600
To Provision for D.D. A/c	500	By Creditors A/c		1,000
To Plant and Machinery A/c	1,500	By Partners Capital A/c :		1,400
			Rs.	
		A	800	
		B	400	
		C	200	
	5,000			5,000

Journal

			Rs.	Rs.
	A's Capital A/c	Dr.	5,714	
	B'c Capital A/c	Dr.	2,857	
	C'c Capital A/c	Dr.	1,429	
	To Goodwill A/c			10,000
	(Being goodwill account written off)			
	General Reserve A/c	Dr.	10,500	
	To A's Capital A/c			6,000
	To B'c Capital A/c			3,000
	To C's Capital A/c			1,500
	(Being general reserve transferred)			
	Revaluation A/c	Dr.	5,000	
	To Stock A/c			3,000
	To Provision for doubtful debts A/c			500
	To Plant and Machinery A/c			1,500
	(Being value of above assets decreased)			

			Rs.	Rs.
	Land and Building A/c	Dr.	2,600	
	Creditors A/c	Dr.	1,000	

	To Revaluation A/c (Being value of building increase and value of creditors decreased)			3,600
	A's Capital A/c Dr. B'c Capital A/c Dr. C'c Capital A/c Dr. To Revaluation A/c (Being revaluation loss transferred)		800 400 200	1,400
	B'c Capital A/c Dr. C'c Capital A/c Dr. To A's Capital A/c (Being A's share of goodwill adjusted)		9,143 4,571	13,714
	Bank A/c Dr. To B's Capital A/c To C's Capital A/c (Being Cash brought in by B & C)		25,000	20,000 5,000
	A's Capital A/c Dr. To Bank A/c To A's Loan A/c (Being settlement of A's account by payment to him and transfer to his loan account)		34,057	7,057 27,000

A's Loan Account

		Rs.			Rs.
	To Bank A/c	11,430		By A's Capital A/c	27,000
	To Balance c/d A/c	18,000		By Interest A/c	2,430
		29,430			29,430
	To Bank A/c	10,620		By Balance b/d	18,000
	To Balance c/d A/c	9,000		By Interest A/c	1,620
		19,620			19,620
	To Bank A/c	9,810		By Balance b/d	9,000
				By Interest A/c	810
		9,810			9,810

Partners Capital Account

		A	B	C			A	B	C
		Rs.	Rs.	Rs.			Rs.	Rs.	Rs.
	To Goodwill A/c	5,714	2,857	1,429		By Balance b/d	30,000	20,000	15,000
	To Revaluation A/c	800	400	200		By Gen. Res. A/c	6,000	3,000	1,500
	To A's Capital A/c	—	9,143	4,571		By B's & C's A/c	13,714	—	—
	To Bank A/c	16,200	—	—		By Bank A/c	—	20,000	5,000

टिप्पणी

	To Loan A/c	27,000	—	—						
	To Balance c/d	—	30,600	15,300						
		49,714	43,000	21,500				49,714	43,000	21,500

Balance Sheet

		Rs.			Rs.
Bills payable		3,000	Bank		9,800
Creditors		14,000	Debtors	11,000	
A's Loan A/c		27,000	Less Pro. for D.D.	500	10,500
Capital A/c's	Rs.		Stock		12,000
B	30,600		Motor Vehicle		10,000
C	15,030	45,900	Plant & Machinery		25,000
			Land and Building		22,600
		89,900			89,900

Bank Account

		Rs.			Rs.
	To Balance b/d	1,000		By A's Capital A/c	16,200
	To B's Capital A/c	20,000		By Balance c/d	9,800
	To C's Capital A/c	5,000			
		26,000			26,000

३.६ साझेदार की मृत्यु (Death of a Partner) :

साझेदार की मृत्यु पर साझेदारी समाप्त हो जाती है परन्तु सामान्यतया शेष साझेदार व्यापार चालू रखते है। मृतक साझेदार के उत्तराधिकारी का हिस्सा उसी प्रकार ज्ञात किया जाता है जिस प्रकार सेवानिवृत होने वाले साझेदार का हिस्सा ज्ञात करते है। इन दोनों में प्रमुख अन्तर यही है कि सेवानिवृति योजना बनाकर एक निर्धारित तिथि को सामान्यतया लेखा वर्ष के अन्त में की जाती है जबकि मृत्यु वर्ष के दौरान कभी भी हो सकती है। इसी प्रकार सेवानिवृति में भुगतान सेवानिवृत होने वाले साझेदार को किया जाता है जबकि मृत्यु पर भुगतान मृतक साझेदार के कानूनी उत्तराधिकारी को किया जाता है।

३.६.१ साझेदार की मृत्यु पर उत्पन्न होने वाली लेखांकन सम्बंधी समस्याऐं

1. नये लाभ हानि अनुपात की गणना (Calculation of new profit sharing ratio).
2. ख्याति का समायोजन (Adjustment of goodwill).
3. सम्पत्तियों तथा दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन (Revaluation of assets and liabilities).
4. संचित लाभों का समायोजन (Adjustment of retained profits).
5. जीवन बीमा पॉलिसियों का समायोजन (Adjustment of life insurance policies).
6. चालू वर्ष के लाभ के हिस्से का समायोजन (Adjustment of share in current years profit).

टिप्पणी

7. पूंजी पर ब्याज, वेतन, बोनस तथा कमीषन आदि का समायोजन (Adjustment of interest on capital, salary, bonus and commission, etc).
8. आहरण तथा आहरण पर ब्याज का समायोजन (Adjustment of drawings and interest on drawings).
9. कानूनी उत्तराधिकारी को भुगतान (Payment to legal representative).

शेष सभी लेखांकन सम्बंधी वे ही समस्याऐं है जो सेवानिवृति की स्थिति में समझाई जा चुकी है परन्तु साझेदारों के जीवन पर ली गई बीमा पॉलिसियों के सम्बंध में अन्तर है साझेदारों के जीवन पर संयुक्त तथा व्यक्तिगत बीमा पॉलिसियां ली जा सकती है। बीमा पॉलिसियां लेने का उद्देश्य यह होता है कि यदि किसी साझेदार की मृत्यु हो जाय तो उसके कानूनी उत्तराधिकारी को भुगतान करने के लिए तरल कोष पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहे और व्यापार की कार्यशील पूंजी पर विपरीत प्रभाव न पड़े और व्यापार में तरल कोषों का अभाव न हो।

३.६.१.१ जीवन बीमा पॉलिसियों का लेखांकन (Accounting of Life Insurance Policies) :

३.६.१.१.१. संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी (Joint Life Policy)

यदि फर्म ने अपने साझेदारों के जीवन पर संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी ले रखी है तो किसी भी साझेदो की मृत्यु पर उस पॉलिसी की राशि फर्म को प्राप्त हो जायेगी जिसे सभी साझेदारों में उनके लाभ हानि अनुपात में बांट दिया जायेगा। इन पर चुकाये गये प्रीमियम के सम्बंध में निम्नलिखित स्थितियां उत्पन्न हो सकती है -

(i) संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी पर चुकाया गया प्रीमियम व्यापार का व्यय माना जाय।

(ii) संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी पर चुकाया गया प्रीमियम व्यापार का विनियोग माना जाय।

(ii) संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी पर चुकाया गया प्रीमियम व्यापार का विनियोग माना जाय तथा उसी राषि का संचय बनाया जाय।

(i) संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी पर चुकाया गया प्रीमियम व्यापार का व्यय माना जाय (Premium paid on joint life insurance policy treating as business expenses).

इस दशा में चुकाया गया प्रीमियम लाभ हानि खाते में हस्तांतरित कर दिया जाता है और जब भी किसी साझेदार की मृत्यु हो जाती है तो पॉलिसी की राशि देय हो जाती है। इस राशि को सभी साझेदारों में उनके लाभ हानि अनुपात में बांट दिया जाता है। इस प्रकार के व्यवहारों के लिए निम्नलिखित लेखा प्रविष्टियां की जाती है -

1. बीमा प्रीमियम की भुगतान करने पर (For payment of insurance premium) :

Premium on Joint Life Policy A/c Dr.

To Bank A/c

(Being insurance premium paid on Joint Life Policy)

2. बीमा प्रीमियम को हस्तांतरित करने पर (For transfer of insurance premium) :

टिप्पणी

Profit and Loss A/c Dr.

To Premium on Joint Life Policy A/c

(Being premium on Joint Life Policy transferred to P & L A/c)

3. साझेदार की मृत्यु पर पॉलिसी की राषि देय होने पर – (For policy amount becomes due on the death of a partner) :

Insurance Company A/c Dr.

To Joint Life Policy A/c

(Being claim due to insurance company)

4. पॉलिसी की राषि का वितरण करने पर (For distribution of policy amount) :

Joint Life Policy A/c Dr.

To All Partners Capital A/c

(Being amount distributed to all partners in old ratio)

5. पॉलिसी की राषि प्राप्त होने पर – (For receiving of policy amount) :

Bank A/c Dr.

To Insurance Company A/c

(Being amount received from insurance company)

(ii) संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी पर चुकाये गये प्रीमियम को व्यापार का विनियोग मानने पर (Premium paid on joint life insurance policy treating as investment of business).

इस विधि में बीमा पॉलिसी का समर्पण मूल्य चिट्ठे में दर्शाया जाता है। यहां समर्पण मूल्य का आशय उस धन राशि से है जिसका भुगतान बीमा कम्पनी द्वारा पॉलिसी परिपक्व होने से पूर्व फर्म द्वारा पॉलिसी समर्पित करने पर किया जाता है। इस सम्बंध में निम्नलिखित प्रविष्टियां की जाती है –

1. बीमा प्रीमियम का भुगतान करने पर (For payment of insurance premium) :

Joint Life Policy A/c Dr.

To Bank A/c

(Being insurance premium paid on Joint Life Policy)

2. बीमा प्रीमियम का हस्तांतरण करने पर (For transfer of insurance premium) :

Profit and Loss A/c Dr.

To Joint Life Policy A/c

(Being the balance in excess of surrender value transferred)

3. साझेदार की मृत्यु पर पॉलिसी की राषि देय होने पर – (For policy amount becomes due

टिप्पणी

on the death of a partner) :

Insurance Company A/c Dr.

To Joint Life Policy A/c

(Being claim due to insurance company)

4. संयुक्त बीमा पॉलिसी खाते का शेष हस्तांतरित करने पर – (For transfer of the balance of Joint Life Insurance Policy account) :

Joint Life Policy A/c Dr.

To All Partners Capital A/c

(Being the balance of joint Life Policy Account transferred to all partners capital account in their old profit sharing ratio)

5. पॉलिसी की राषि प्राप्त होने पर –(For receiving of policy amount) :

Bank A/c Dr.

To Insurance Company A/c

(Being amount received from insurance company)

(iii) संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी पर चुकाया गया प्रीमियम फर्म का विनियोग माना जाय तथा उसी राषि से संचय का निर्माण किया जाय (Premium paid on joint life insurance policy treating as investment of business and creating reserve for the same amount)

इस विधि में बीमा पॉलिसी का समर्पण मूल्य चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में तथा उसके बराबर राशि का संचय लाभ हानि खाते से बनाकर उसे दायित्व पक्ष में दर्शाया जाता है। इन व्यवहारों को लेखांकित करने के लिए निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टियां की जाती है –

1. बीमा प्रीमियम का भुगतान करने पर (For payment of insurance premium) :

Joint Life Policy A/c Dr.

To Bank A/c

(Being insurance premium paid on Joint Life Policy)

2. राषि को संचय में हस्तांतरित करने पर (For amount transfer to reserve account) :

Profit and Loss A/c Dr.

To Joint Life Policy Reserve A/c

(Being amount transferred to Joint Life Policy reserve Account)

3. समर्पण मूल्य से अधिक चुकाये गये प्रीमियम का हस्तांतरण (For transfer of premium in excess of surrender value) :

Joint Life Policy Reserve A/c Dr.

टिप्पणी

To Joint Life Policy A/c

(Being transfer of excess premium over surrender value)

4. साझेदार की मृत्यु पर बीमा राषि देय होने पर (For policy amount becomes due on death of a partner) Insurance Company A/c Dr.

To Joint Life Policy A/c

(Being claim due to insurance company)

5. संयुक्त बीमा पॉलिसी संचय खाते को हस्तांतरित करने पर – (For transfer of Joint Life Insurance Policy Reserve Account) :

Joint Life Policy Reserve A/c Dr.

To Joint Life Policy A/c

(Being Joint Life Policy reserve account transferred)

6. संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी खाते का शेष वितरित करने पर (For distribution of balance of Joint Life Insurance Policy account) :

Joint Life Policy A/c Dr.

To All Partners Capital A/c (Old ratio)

(Being balance of Joint Life Policy distributed)

7. पॉलिसी की राषि प्राप्त होने पर (For receiving the policy amount) :

Bank A/c Dr.

To Insurance Company

(Being amount received from insurance company)

उदाहरण (Illustration) : ३८

अ, ब तथा स साझेदार है लाभ हानि २:२:१ के अनुपात में बांटते है। फर्म में साझेदारों के जीवन पर ८०,००० रु. की एक संयुक्त बीमा पॉलिसी ले रखी है। प्रथम वार्षिक प्रीमियम ०१.०१.२००६ को ७,००० रु. चुकाया। १५.०८.२००८ को ब की मृत्यु हो गई तथा ३१.०८.२००८ को पूरे दावे की राशि प्राप्त हो गई। आपको जर्नल प्रविष्टियां करनी है यदि - (A, B and C are partners sharing profits and losses in the ratio of 2 : 2 : 1. The firm has taken joint Life insurance policy of Rs. 80,000 on the lives of partners. The first annual premium paid on 01.01.2006 amounted to Rs. 7,000. On 15.08.2008 B dies and full claim is received on 31.08.2008. You are require to make journal entries if) :

(i) फर्म प्रीमियम को लाभ हानि खाते में ले जाती है। (Firm has charged the premium to P & L Account)

(ii) पॉलिसी का समर्पण मूल्य निम्नलिखित है – (The surrender value of the policy is as follows) :

वर्ष 2006 के अंत में शून्य, 2007 के अंत में 3,000 रु. तथा 2008 के अंत में 7,000 रु. (at the end of 2006 Rs. NIL, at the end of 2007 Rs. 3,000 and at the end of 2008 Rs. 7,000)

(iii) संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी संचय खाता रखा गया है। (Joint life policy reserve account is maintained).

Solution : (i)

Journal

2006			Rs.	Rs.
01.01	Premium on Joint Life Insurance Policy A/c	Dr.	7,000	
	To Bank A/c			7,000
	(Being premium paid on Joint Life Insurance Policy)			
31.12	Profit & Loss A/c	Dr.	7,000	
	To Premium on Joint Life Insurance Policy A/c			7,000
	(Being premium transferred to P & L Account)			
2007				
01.01	Premium on Joint Life Insurance Policy A/c	Dr.	7,000	
	To Bank A/c			7,000
	(Being premium paid on Joint Life Insurance Policy)			
31.12	Profit & Loss A/c	Dr.	7,000	
	To Premium on Joint Life Insurance Policy A/c			7,000
	(Being premium transferred to P & L Account)			
2008				
01.01	Premium on Joint Life Insurance Policy A/c	Dr.	7,000	
	To Bank A/c			7,000
	(Being premium paid on Joint Life Insurance Policy)			
	Profit & Loss A/c	Dr.	7,000	
	To Premium on Joint Life Insurance Policy A/c			7,000
	(Being premium transferred to P & L Account)			
15.08	Life Insurance Corporation A/c	Dr.	80,000	
	To A's Capital A/c			32,000
	To B's Capital A/c			32,000
	To C's Capital A/c			16,000
	(Being amount of policy distributed in P&L ratio)			
31.08	Bank A/c	Dr.	80,000	
	To Life Insurance Corporation A/c			80,000
	(Being amount received from LIC)			

टिप्पणी

(ii) Journal

2006		Rs.	Rs.
01.01	Joint Life Insurance Policy A/c Dr.	7,000	
	To Bank A/c		7,000
	(Being premium paid on Joint Life Insurance Policy)		
31.12	Profit & Loss A/c Dr.	7,000	
	To Joint Life Insurance Policy A/c		7,000
	(Being premium on Joint Life Insurance Policy transferred)		
2007			
01.01	Joint Life Insurance Policy A/c Dr.	7,000	
	To Bank A/c		7,000
	(Being premium paid on Joint Life Insurance Policy)		
31.12	Profit & Loss A/c Dr.	4,000	
	To Joint Life Insurance Policy A/c		4,000
	(Being the balance in excess of surrender value transferred)		
2008			
01.01	Joint Life Policy A/c Dr.	7,000	
	To Bank A/c		7,000
	(Being premium paid on Joint Life Insurance Policy)		
15.08	Life Insurance Corporation A/c Dr.	80,000	
	To Joint Life Insurance Policy A/c		80,000
	(Being claim due to LIC)		
15.08	Joint Life Insurance Policy A/c Dr.	70,000	
	To A's Capital A/c		28,000
	To B's Capital A/c		28,000
	To C's Capital A/c		14,000
	(Being balance of JLP account transferred in Profit sharing ratio)		
31.08	Bank A/c Dr.	80,000	

	To Life Insurance Corporation A/c		80,000
	(Being amount received from LIC)		

(iii) Journal

2006		Rs.	Rs.
01.01	Joint Life Policy A/c Dr.	7,000	
	To Bank A/c		7,000
	(Being premium paid on Joint Life Policy)		
31.12	Profit & Loss A/c Dr.	7,000	
	To Joint Life Policy Reserve A/c		7,000
	(Being amount transferred to Joint Life Policy Reserve Account)		

2006		Rs.	Rs.
31.12	Joint Life Insurance Policy Reserve A/c Dr.	7,000	
	To Joint Life Insurance Policy A/c		7,000
	(Being Joint Life Policy Account transferred)		
2007			
01.01	Joint Life Insurance Policy A/c Dr.	7,000	
	To Bank A/c		7,000
	(Being premium paid on Joint Life Insurance Policy)		
31.12	Profit & Loss A/c Dr.	7,000	
	To Joint Life Insurance Policy Reserve A/c		7,000
	(Being amount transferred to Joint Life Insurance Policy Account)		
31.12	Joint Life Insurance Policy Reserve A/c Dr.	4,000	
	To Joint Life Insurance Policy A/c		4,000
	(Being transfer of excess premium over surrender value)		
2008			
01.01	Joint Life Insurance Policy A/c Dr.	7,000	

	To Bank A/c		7,000
	(Being premium paid on Joint Life Insurance Policy)		
15.08	Life Insurance Corporation A/c Dr.	80,000	
	To Joint Life Insurance Policy A/c)		80,000
	(Being amount due to LIC)		
15.08	Joint Life Insurance Policy Reserve A/c Dr.	3,000	
	To Joint Life Insurance Policy A/c		3,000
	(Being balance of JLP Reserve Account transferred)		
15.08	Joint Life Insurance Policy A/c Dr.	73,000	
	To A's Capital A/c		29,200
	To B's Capital A/c		29,200
	To C's Capital A/c		14,600
	(Being balance of Joint Life Insurance Policy Account transferred)		
31.08	Bank A/c Dr.	80,000	
	To Life Insurance Corporation A/c		80,000
	(Being amount received from LIC)		

३.६.१.१.२. व्यक्तिगत जीवन बीमा पॉलिसियां (Individual Life Insurance Policies)

इस स्थिति में फर्म प्रत्येक साझेदार के जीवन पर अलग-अलग जीवन बीमा पॉलिसी लेती है।

(i) यदि फर्म द्वारा चुकाया गया प्रीमियम फर्म के व्यापार का खर्चा माना जाय - इस दशा में व्यवहारों का लेखांकन करने के लिए निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टियां की जायेगी -

1. बीमा प्रीमियम का भुगतान करने पर (For payment of insurance premium) :

Premium on Individual Policies A/c Dr.

To Bank A/c

(Being insurance premium paid on individual policies)

2. बीमा प्रीमियम को हस्तांतरित करने पर (For transfer of insurance premium) :

Profit and Loss A/c Dr.

To Premium on Individual Policies A/c

(Being insurance premium transferred to P & L Account)

3. जब साझेदार की मृत्यु पर पॉलिसी की राषि देय होने पर (When insurance policy

becomes due on death of a partner) :

Insurance Company A/c Dr.

To Deceased Partner Policy A/c

(Being amount due to insurance company)

4. मृतक साझेदार की पॉलिसी की राषि तथा शेष साझेदारों की पॉलिसियों के समर्पण मूल्य का वितरण करने पर – (For distribution of deceased partner policy amount and surrender value of remaining partners policies) :

Deceased Partner Policy A/c Dr.

Life Policies A/c Dr.

To All Partners Capital / Current A/c

(Being surrender value of existing policies and policy amount of deceased partner distributed in old profit sharing ratio)

5. पॉलिसी की राषि प्राप्त होने पर (For receiving of policy amount) :

Bank A/c Dr.

To Insurance Company A/c

(Being amount received from insurance company)

यदि साझेदार यह निर्धारित करे कि पॉलिसियों का समर्पण मूल्य पुस्तकों में नहीं दिखाना है तो मृतक साझेदार की पॉलिसी का वितरण करने के बाद शेष साझेदारों की पॉलिसियों का समर्पण मूल्य समायोजित करने के लिए निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि की जायेगी –

Remaining Partners Capital / Current A/c Dr. (Gain Ratio)

To Decreased Partners Capital / Current A/c (His share in Life Polices)

(Being deceased partners share in life policies credited to his capital / current account by debiting remaining partners capital / current account in gain ratio)

(ii) जब व्यक्तिगत पॉलिसियों पर चुकाया गया बीमा प्रीमियम व्यापार का विनियोग माना जाय – इस दशा में व्यक्तिगत पॉलिसियों का समर्पण मूल्य चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में दर्शाया जायेगा। किसी साझेदार की मृत्यु पर उसकी पॉलिसी की राशि में से उसका समर्पण मूल्य घटाकर शेष राशि पुराने साझेदारों में उनके लाभ हानि अनुपात में वितरित कर दी जायेगी। इन व्यवहारों के लेखांकन के लिए निम्नलिखित प्रविष्टियां की जायेगी –

1. बीमा प्रीमियम का भुगतान करने पर (For payment of insurance premium) :

Individual Policies A/c Dr.

To Bank A/c

(Being insurance premium paid on individual policies)

टिप्पणी

2. बीमा प्रीमियम का हस्तांतरण करने पर (For transfer of insurance premium) :

Profit and Loss A/c Dr.

To Individual Policies A/c

(Being balance in excess of surrender value transferred)

3. साझेदार की मृत्यु पर पॉलिसी की राषि देय होने पर – (For policy amount becomes due on the death of a partner) :

Insurance Company A/c Dr.

To Individual (Deceased Partner) Policy A/c

(Being claim due to insurance company)

4. मृतक साझेदार की पॉलिसी खाते का शेष वितरित करने पर (For distribution of the balance of deceased partners' policy A/c) :

Individual (Deceased Partner) Policy A/c Dr.

To All Partners Capital A/c

(Being the balance of deceased partner policy account transferred to all partners capital account in their old profit sharing ratio)

5. पॉलिसी की राषि प्राप्त होने पर – (For receiving of policy amount) :

Bank A/c Dr.

To Insurance Company A/c

(Being amount received from insurance company)

The surrender value of remaining partners policy will appear on the assets side of Balance Sheet.

उदाहरण (Illustration) : ३९

अ, ब तथा स साझेदार है। लाभ हानि क्रमश: ३:२:१ के अनुपात में बांटते है। फर्म ने प्रत्येक साझेदार के जीवन का बीमा करवा रखा है। अ का ६०,००० रु., ब का ८०,००० रु. तथा स का १,००,००० रु.। प्रीमियम लाभ हानि खाते से वसूल किया जाता है। ३१.०३.२००८ को प्रत्येक पॉलिसी का समर्पण मूल्य बीमित राशि का ४० प्रतिशत था। अ तथा ब ने निर्धारित किया कि वे भविष्य का लाभ हानि बराबर बाटेंगे। स ३१.०३.२००८ को मर गया। वर्ष २००८ की जर्नल प्रविष्टियां दीजिये। (A, B and C were partners sharing profits and losses in the ratio of 3 : 2 : 1 respectively. The firm had insured the partners lives severally, A for Rs. 60,000; B for Rs. 80,000 and C for Rs. 1,00,000. The premium were charged to profit and loss account. The surrender value of each policy as on 31.03.2008 is 40% of the sum assured. A

and B decide to share the profits and losses equally in future. C dies on 31.03.2008. Give journal entries for 2008).

हल (Solution) :

Journal

2008			Rs.	Rs.
31.03	Insurance Company A/c	Dr.	1,00,000	
	To C's Policy A/c			1,00,000
	(Being claim due to insurance company)			
	A's Policy A/c	Dr.	24,000	
	B's Policy A/c	Dr.	32,000	
	C's Policy A/c	Dr.	1,00,000	
	To A's Capital A/c			78,000
	To B's Capital A/c			52,000
	To C's Capital A/c			26,000
	(Being C's policy and surrender value of A&B's policies credited in old partners)			

Alternative Method :

2008			Rs.	Rs.
31.03	Insurance Company A/c	Dr.	1,00,000	
	To C's Policy A/c			1,00,000
	(Being claim due to insurance company)			
	C's Policy A/c	Dr.	1,00,000	
	To A's Capital A/c			50,000
	To B's Capital A/c			33,333
	To C's Capital A/c			16,667
	(Being C's policy distribute in old partners)			
	A's Capital A/c	Dr.	—	
	B's Capital A/c	Dr.	9,333	
	To C's Capital A/c			9,333
	(Being share of C in surrender value of A & B's policies adjusted in their gain ratio)			

टिप्पणी

उदाहरण (Illustration) : ४०

पी, क्यू तथा आर साझेदार है, लाभ हानि २:२:१ के अनुपात में बांटते है। फर्म ने प्रत्येक साझेदार के जीवन पर पॉलिसियां ले रखी है। ३१.०३.२००८ को बीमा पॉलिसियों का समर्पण मूल्य क्रमश: ६,००० रु., ८,००० रु. तथा १०,००० रु. चिट्ठे में दिखाया गया है। प्रत्येक परिस्थिति में समर्पण मूल्य बीमित राशि के ४० प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करता है। क्यू तथा आर ने भविष्य में लाभ बराबर बांटने का निश्चय किया। पी की मृत्यु ३१.०३.२००८ को हो गई। ३१.०३.२००८ को आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिये। (P, Q and R were partners sharing profits and losses in the ratio of 2 : 2 : 1. The firm had insured the partners lives separately, The surrender value of life policies appearing in the balance sheet as on 31.03.2008 were Rs. 6,000, Rs. 8,000 and Rs. 10,000. The surrender value represents 40% of the sum assured in each case. Q and R decide to share equally in future. P dies on 31.03.2008. Give the necessary journal entries on 31.03.2008).

हल (Solution) :

2008		Rs.	Rs.
31.03	Insurance Company A/c Dr.	15,000	
	To P's Policy A/c		15,000
	(Being claim due to insurance company)		
	P's Policy A/c Dr.	9,000	
	To P's Capital A/c		3,600
	To Q's Capital A/c		3,600
	To R's Capital A/c		1,800
	(Being balance of P's policy transferred to partners capital account in 2 : 2 : 1)		

मृतक साझेदार के हिस्से का निपटारा (Disposal of Deceased Partner's Share) :

मृतक साझेदार के कानूनी उत्तराधिकारी को देय राशि का निपटारा साझेदारी संलेख के प्रावधानों के अनुसार किया जाता है। निम्नलिखित में से किसी भी विधि से भुगतान किया जा सकता है -

1. एक मुष्त भुगतान विधि (Lump sum payment Method), 2. किस्तों में भुगतान विधि (Instalment payment Method), 3. वार्षिकी विधि (Annuity Method)

1. एक मुष्त भुगतान विधि (Lump Sum Payment Method) :

यदि फर्म के पास पर्याप्त मात्रा में कोष विद्यमान हो तो मृतक साझेदार को देय राशि का एक साथ भुगतान कर दिया जाता है। इसके लिए निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है -

टिप्पणी

Deceased Partners Capital A/c Dr.

To Bank A/c

(Being amount paid to legal representative of deceased partner against account)

2. किस्त भुगतान विधि (Instalment Payment Method) :

यदि फर्म को वित्तीय कठिनाई लगे तो मृतक को देय राशि उसके ऋण खाते में हस्तांतरित कर दी जाती है। इस पर समय समय पर ब्याज जमा कर दिया जाता है। ऋण का भुगतान ब्याज सहित किस्तों में कर दिया जाता है।

3. वार्षिकी पद्धति (Annuity Method) :

इस विधि के अनुसार मृतक की विधवा या आश्रितों को कृछ वर्षों तक या जीवनकाल तक वार्षिकी का भुगतान किया जाता है। मृतक के पूंजी खाते का शेष वार्षिकी उचंती खाते में हस्तांतरित कर दिया जाता है। निर्धारित दर से बकाया वार्षिकी उचंती खाते के शेष पर ब्याज के जमा कर दिये जाते है और जितना वार्षिकी का भुगतान हुआ है उसे नाम कर दिया जाता है। अंतिम भुगतान के बाद इस खाते में कोई शेष रहे तो उसे विद्यमान साझेदारों में उनके लाभ हानि अनुपात में बांट दिया जाता है।

उदाहरण (Illustration) : ४१

अ, ब तथा स साझेदार है तथा लाभ हानि ३:२:१ के अनुपात में बांटते है। ३१.१२.२००८ को उनका चिट्‌ठा निम्नलिखित था – (A, B and C are partners sharing profits and losses in the ratio of 3:2:1. Their balance sheet as on 31.12.2008 was as follows) :

		Rs.		Rs.
Capital A/c's :	Rs.		Fixed Assets	40,000
A	16,000		Current Assets	68,000
B	12,000		Joint Life Policy	6,000
C	10,000	38,000		
Current A/c's :				
A	4,000			
B	3,000			
C	1,000	8,000		
Reserves		18,000		
P&L A/c Opening :	6,000			
Profit for 2008	14,000	20,000		
Creditors		30,000		
		1,14,000		1,14,000

३१ मार्च २००९ को ब की मृत्यु हो गई। उसको देय राशि का भुगतान कर दिया गया। वर्ष २००९ के लिए वर्ष २००८ के आनुपातिक लाभ को काम में लिया जाय। वर्ष २००८ में २००० रु. के डूबत ऋणों को समायोजित किया जाय। ख्याति की गणना चार वर्षों के औसत लाभ के तीन वर्षों के क्रय के आधार पर की जाय। ३३,००० रु. की संयुक्त बीमा पॉलिसी साझेदारों के जीवन पर ली गई। वर्ष २००५, २००६, २००७ के लाभ क्रमशः १६,००० रु., २०,००० रु, १२,००० रु. थे। ब के कानूनी उत्तराधिकारी को देय राशि की गणना

टिप्पणी

कीजिये। सभी साझेदारों के आवश्यक खाते बनाइये। (B died on 31.03.2009. His account has to be settled and paid. For the year 2009, proportionate profit of 2008 are to be taken into account. For 2008, a bad debts of Rs. 2,000 has to be adjusted. Goodwill has to be calculated at three times of the four years average profits. A policy is taken on the joint life of partners for Rs. 33,000. The profit for 2005, 2006 and 2007 were Rs. 16,000, Rs. 20,000 and Rs. 12,000. Calculate the amount payable to B's heirs. Show the necessary ledger accounts of all the partners).

हल (Solution) :

Calculation of Goodwill :

$$\text{Adjusted average profit} = \frac{[\text{Rs. } 16,000 + 20,000 + 12,000 + (\text{Rs. } 14,000 - \text{Rs. } 2,000)]}{4}$$

= Rs. 15,000

Goodwill = Rs. 15,000 x 3 or Rs. 45,000

Share of B = Rs. 45,000 x $\frac{2}{6}$ or Rs. 15,000 borne by A & C in their gain ratio i.e. 3:1

Calculation of B's Share of Profit in 2009 :

= Profit for 2008 x $\frac{3}{12}$ x $\frac{2}{6}$ or Rs. 12,000 x $\frac{3}{12}$ x $\frac{2}{6}$ = Rs. 1,000

Note : Distributable amount of Joint Life Policy = Maturity Value – Surrender Value

= Rs. 33,000 – Rs. 6,000 or Rs. 27,000

Partners Capital Account

Particulars	A Rs.	B Rs.	C Rs.	Particular	A Rs.	B Rs.	C Rs.
To B's Legal Heirs A/c	—	52,000	—	By Balance b/d	16,000	12,000	10,000
To Balance c/d	16,000	—	10,000	By B's Current A/c	—	40,000	—
	16,000	52,000	10,000		16,000	52,000	10,000

Partners Current Account

Particulars	A Rs.	B Rs.	C Rs.	Particular	A Rs.	B Rs.	C Rs.
To B's Current A/c	11,250	—	3,750	By Balance b/d	4,000	3,000	1,000
To B's Capital A/c	—	40,000	—	By Reserve A/c	9,000	6,000	3,000
To Balance c/d	24,250	—	7,750	By P&L A/c	9,000	6,000	3,000
				By Joint Life Policy A/c	13,500	9,000	4,500
				By A's Current A/c	—	11,250	—
				By C's Current A/c	—	3,750	—
				By P&L A/c	—	1,000	—
	35,500	40,000	11,500		35,500	40,000	11,500

Balance Sheet as on 31.03.2009

		Rs.		Rs.
Capital A/c's :	Rs.		Fixed Assets	40,000
A	16,000		Current Assets	99,000
C	10,000	26,000	Rs. (68,000 – 2,000 + 33,000)	
Current A/c's :			Profit & Loss A/c	1,000
A	24,250			
C	7,750	32,000		
Creditors		30,000		
B's Legal Heirs A/c		52,000		
		1,40,000		1,40,000

उदाहरण (Illustration) : ४२

अ, ब तथा स एक फर्म में साझेदार है तथा लाभ हानि ३:४:३ के अनुपात में बांटते है। ३१ मार्च २००८ को फर्म का चिट्ठा निम्नलिखित था – (A, B and C were Partners in a firm sharing Profits and Losses in the ratio of 3:4:3. The Balance Sheet of firm as on 31st March, 2008 was as under) :

		Rs.		Rs.
Capital A/c's	Rs.		Fixed Assets	1,00,000
A	48,000		Stock	30,000
B	64,000		Debtors	60,000
C	48,000	1,60,000	Bank	30,000
Reserve		20,000		
Creditors		40,000		
		2,20,000		2,20,000

फर्म ने १,००,००० रु. की संयुक्त बीमा पॉलिसी ले रखी है तथा उस पर आवधिक चुकाया जाने वाला प्रीमियम लाभ हानि खाते से वूसल किया जाता है। स की मृत्यु ३० सितम्बर २००८ को हा गई। शेष साझेदारों तथा स के कानूनी उत्तराधिकारी के मध्य निम्नलिखित सहमति हुई – (The firm had taken a Joint Life Policy for Rs. 1,00,000; the Premium Periodically Paid was charged to Profit and Loss Account. Partner C died on 30th September, 2008. It was agreed between the Surviving Partner and the Legal representatives of C that) :

(i) फर्म की ख्याति ६०,००० रु. ली जाय (Goodwill of the firm will be taken at Rs. 60,000).

(ii) स्थायी सम्पत्तियां २०,००० रु. से अपलिखित की जाय (Fixed Assets will be written down by Rs. 20,000).

(iii) लाभों के स्थान पर स की ३१ मार्च २००८ की अपनी पूंजी पर २५ प्रतिशत वार्षिक की दर से चुकाया जायेगा। (In lieu of Profits, C should be paid at the rate of 25% per annum on his Capital as on 31 March 2008).

टिप्पणी

पॉलिसी की राशि प्राप्त हो गई तथा कानूनी उत्तराधिकारी का चुका दिया गया। १०,००० रु. ह्रास लगाने के पश्चात (३० सितम्बर तक ६,००० रु. के ह्रास पर सहमति हुई) ३१ मार्च २००९ को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ ४८,००० रु. था। (Policy amount was received and the legal heirs were paid off. The Profits for the year ended. 31st March 2009, after charging depreciation of Rs. 10,000 (depreciation up to 30th September was agreed to be Rs. 6,000) were Rs. 48,000)

साझेदारों के आहरण खाते निम्नलिखित शेष दर्षाते है। (Partner's Drawings Accounts Showed balance as under) :

अ ने १८,००० रु. पूरे वर्ष समान रूप से निकाले (A Rs. 18,000 drawn evenly over the year)

ब ने २४,००० रु. पूरे वर्ष समान रूप से निकाले (B Rs. 24,000 drawn evenly over the year)

स ने २०,००० रु. मृत्यु की तिथि तक (C Rs. 20,000 up to the date of death)

उपरोक्त के आधार पर स के कानूनी उत्तराधिकारी को देय राषि ज्ञात कीजिये यह मानते हुए कि उन्होंने संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी के हिस्से के अतिक्ति कुछ नहीं चुकाया। (On the basis of the above figures, please indicate the entitlement of the legal heirs of C, assuming that they had not been paid anything other then the share in the Joint Life Policy).

हल (Solution) :

Revaluation Account

	Rs.			Rs.
To Fixed Assets A/c	20,000	By Partners Capital A/c	Rs.	
		A	6,000	
		B	8,000	
		C	6,000	20,000
	20,000			20,000

Partners Capital Account

	A Rs.	B Rs.	C Rs.		A Rs.	B Rs.	C Rs.
To C's Cap. A/c	7,714	10,286	—	By Balance b/d	48,000	64,000	48,000
To Revaluation A/c	6,000	8,000	6,000	By Reserve A/c	6,000	8,000	6,000

To Drawings A/c	9,000	12,000	20,000	By A & B A/c	—	—	18,000
To Bank A/c	—	—	30,000	By P&L A/c	—	—	6,000
To C's Executor A/c	—	—	52,000	By Joint Life Policy A/c	30,000	40,000	30,000
To Balance c/d	61,286	81,714	—				
	84,000	1,12,000	1,08,000		84,000	1,12,000	1,08,000

Calculation of C's share of goodwill :

= Rs. 60,000 x $\frac{3}{10}$ or Rs. 18,000 adjusted in A and B in their gaining ratio i.e. 3:4

Calculation of C's Share in Profit upto date of death :

= Rs. 48,000 x $\frac{25}{100}$ x $\frac{6}{12}$ or Rs. 6,000

Calculation of current years Profit for first 6 and last 6 months :

		Rs.
Profit after depreciation		48,000
Add : Depreciation written off		10,000
Profit before depreciation		58,000
	First 6 Months	Next 6 Months
	Rs.	Rs.
Profit	29,000	29,000
Less : Depreciation w/o	6,000	4,000
	23,000	25,000

Calculation of entitlement of C's Legal heirs :

	I Alternative	II Alternative
	Rs.	Rs.
Amount payable	52,000	52,000
Add : Int. @ 6 % For 6 months or	1,560	
Proportionate Profit (Rs. 25,000 x 52,000 / 1,95,000)		6,667
	53,560	58,667

Legal heirs can claim Rs. 6,667.

टिप्पणी

उदाहरण (Illustration) : ४३

अ, ब तथा स एक फर्म में साझेदार है तथा लाभ हानि ३:२:१ के अनुपात में बांटते है। अ की मृत्यु १ जून २००५ को ही गई। साझेदारी संलेख में यह प्रावधान है कि मृतक की विधवा को २,००० रु. वार्षिक तथा वार्षिक शेष पर १२ प्रतिशत वार्षिक की दर से ब्याज का भुगतान हो। मृतक की विधवा को वार्षिकी तथा ब्याज का भुगतान उसके जीवन पर्यनत किया जाय। अ की मृत्यु के समय उसे देय कुल राशि २०,००० रु. थी। प्रथम वार्षिकी ३१ दिसम्बर २००५ को चुकायी गई। ३१ दिसम्बर २००८ का चतुर्थ किश्त प्राप्त करने के बाद अ की विधवा की भी मृत्यु हो गई। अंतिम समायोजन तथा राशि का बंटवारा दिखाते हुए आवश्यक खाते बनाइये। (A, B and C were partners in a firm sharing profits and losses in the ratio of 3:2:1. A died on 01.06.2005. Partnership deed provided for the payment of an annuity of Rs. 2,000 p.a. together with interest @ 12% p.a. on a yearly balances to the widow of the deceased partner. Annuity and interest were to be paid during the life of the widow of the deceased partner. At the time of the death of A, total amount payable was Rs. 20,000. First annuity was paid on 31st December, 2005. After receiving the fourth instalment on 31st December 2008 A's widow also died. Prepare necessary account showing the final adjustment and the division of the amount).

हल (Solution) :

Annuity Suspense Account

2005		Rs.	2005		Rs.
31.12	To Bank A/c	3,400	01.06	By A's Capital A/c	20,000
31.12	To Balance c/d	18,000	31.12	By Interest A/c	1,400
		21,400			21,400
2006			2006		
31.12	To Bank A/c	4,160	01.01	By Balance b/d	18,000
31.12	To Balance c/d	16,000	31.12	By Interest A/c	2,160
		20,160			20,160
2007			2007		
31.12	To Bank A/c	3,920	01.01	By Balance b/d	16,000
31.12	To Balance c/d	14,000	31.12	By Interest A/c	1,920
		17,920			17,920
2008			2008		
31.12	To Bank A/c	3,680	01.01	By Balance b/d	14,000
31.12	To B's Capital A/c	8,000	31.12	By Interest A/c	1,680
31.12	To C's Capital A/c	4,000			
		15,680			15,680

३.७ स्व मूल्यांकन मापदण्ड (Self Assesment Test)

परीक्षा के प्रश्न (Examination Question) :

1. शाखा खातों से आप क्या समझते हैं तथा विभिन्न प्रकार की शाखाओं का वर्णन कीजिये ? (Explain the meaning of 'Branch Accounts' and describe various types of branches ?)
2. 'विभागीय व्यापार एवं लाभ-हानि खाते बनाते समय अप्रत्यक्ष खर्चों का विभाजन आवश्यक है।' ऐसे खर्चों का वर्णन कीजिये तथा उन आधारों को बतलाइये जिन पर उनका विभाजन किया जाता है। ('While preparing Departmental Trading and Profit and Loss Account, the apportionment of indirect expenses is necessary' Discuss such expenses and the bases on which their apportionment is made.)
3. अ विभाग द्वारा ब विभाग को माल का हस्तांतरण विक्रय मूल्य पर किया गया है जिसमें लागत पर 25% लाभ शामिल है। विभाग ब को 12,000 रु. मूल्य के ऐसे अंतिम स्टॉक में सम्मलित न वसूल हुए लाभ की राशि ज्ञात कीजिये। (The goods are transferred from Deparment 'A' to department 'B' at selling Price Which includes a profit of 25% on cost. Find out the amount of unrealised profit on such closing stock valued at Rs. 12,000 in department 'B'.)
4. साझेदारी फर्मों में लाभ विभाजन से पूर्व साझेदारों के पूंजी खातों पर ब्याज तथा साझेदारी वेतन का क्या औचित्य हैं ? (What is the justification for allowing interest on partner's capitals and salaries to partners before appropriation of profits in partnership firms?
5. फर्म के लेखे बन्द करने के पश्चात् इनमें समायोजन करने की आवश्यकता कब और क्यों पड़ जाती हैं। काल्पनिक कारण बताते हुए इनके समायोजन की विधि समझाइये। (When and Why does it become necessary to make adjustment after the firm's books are closed. Taking some imaginary reasons explain the method of making these adjustments.)
6. ख्याति किसे कहते हैं। इसके मूल्यांकन की विविध पद्धतियों का उदाहरण सहित वर्णन कीजिये। (What is goodwill ? Illustrate the various methods by which it is computed.)
7. किसी साझेदार की मृत्यु पर फर्म की ओर से उसकी विधवा को दी जाने वाले वार्षिकी से आप क्या समझते हैं। इसका लेखांकन कैसे किया जाता है ? (What do you mean by an Annuity granted by the firm to the widow of a deceased partner. How is it accounted for ?)

टिप्पणी

8. खण्डेलवाल ब्रदर्स उदयपुर अपनी अजमेर शाखा को बिक्री पर 20% की दर से लाभ जोड़कर माल भेजते हैं। शाखा में प्राप्त नकद राशि मुख्यालय भेजी जाती है। फुटकर खर्चों को छोड़कर जिनका भुगतान शाखा करती है, अन्य खर्चों का भुगतान मुख्यालय द्वारा चैक से किया जाता है।

निम्नलिखित जानकारी से शाखा के माध्यम से होने वाले लाभ की गणना यह मानते हुए करिये कि शाखा के पास वर्ष के अन्त में बीजक मूल्य पर 14,000 रु. का रहतिया था तथा फर्नीचर पर ह्रास की गणना 10% वार्षिक की दर से की जाती है। व्यापारिक तथा लाभ हानि खाता बनाकर परिणामों की पुष्टि करो।

Khandelwal Brothers Udaipur send goods to its Ajmer Branch at Invoice Price calculated to give profit at 20% on Sales. Cash received in Branch is sent to H.O. Expenses other than petty items are paid by H.O. vide cheques. Calculate the Profit through the Branch from the following particulars assuming that the Stock with the Branch was valued at Rs. 14,000 (I.P.) at the year end and the Depreciation on Furniture is written off at 10% p.a. confirm the results by preparing Trading, Profit & Loss Account.

Opening balances: Stock Rs.15,000 (I.P.) Debtors Rs. 9,000, Petty cash Rs. 400 and Furniture Rs. 1,200, goods sent to branch Rs. 80,000 (I.P.) Returns by debtors Rs. 1,000, Cash received from Debtors 29,480, Cash sales Rs. 50,000 Credit sales Rs. 30,000, Goods returned to H.O. by branch Rs. 1,000, Discount to Debtors Rs. 30, Cheques sent for rent Rs. 1,200, Salary Rs. 2,400, Stationery Rs. 300 and Petty cash expenses paid by branch Rs. 280.

(Ans. : Closing balance of Drs. 8,490, Petty Cash Rs. 120, Profit Rs. 10,670, G.P. Rs. 15,000; N.P. Rs. 10,670 Goods sent net at cost Rs. 63,200 and sales net Rs. 79,000.)

9. एक मुख्य कार्यालय अपने माल का विक्रय मूल्य लागत के 200% पर निर्धारित करता है। शाखा को माल, विक्रय मूल्य से 25% कम पर भेजा जाता है तथा अन्य व्यापारियों को विक्रय मूल्य से 20% कम पर। निम्नलिखित तथ्यों से मुख्य कार्यालय व शाखा का लाभ पृथक-पृथक ज्ञात कीजिये।

A head office fixes selling price for its goods at 200 percent of the cost. Goods are sent to branch at 25 percent less than the selling price and to other dealers at 20 percent less han the selling price. Calculate the profit at the head office and at branch separately.

	H.O. Rs.	Kota Rs.
Opening Stock	30,000	5,400
Purchases	2,40,000	
Goods sent to Branch	67,500	
Goods sent to other dealers	72,000	
Sales to customers	1,80,000	90,000
Expenses	40,000	4,000

(Ans. : Branch Profit Rs. 18,500, H.O. Profit Rs. 99,500).

10. बताइये निम्नलिखित व्यवहारों को अपनी पुस्तकों में लिखने के लिये मुख्यालय तथा शाखा कार्यालय क्या जरनल प्रविष्टियाँ करेंगें ? (Suggest necessary Journal Entries tobe passed in the books of the Head Office and the Branches for the following transactions) :

(i) मुख्यालय के आदेशानुसार 500 रु. का माल कोलकाता शाखा द्वारा रंगून शाखा को भेजा गया।(Goods amounting to Rs. 500 transferred from Kolkata Branch to Rangoon Branch under instructions of the H.O).

(ii) कोलकाता शाखा की स्थिर संपत्ति के मुख्यालय की बहियों में खोले गये खातों पर 3,000 रु. ह्रास। (Depreciation of Branch Fixed Assets at Kolkata Branch Rs. 3,000 when such accounts are opened at the Head Office).

(iii) रंगून शाखा द्वारा 26 दिसंबर को मुख्यालय भेजी गई राशि 3,000 रु. मुख्यालय 4 जनवरी को पहुंची। (A remittance of Rs. 3,000 made by Rangoon Branch to H.O. on 26 December reached the H.O. on 4th January next year).

(iv) मुख्यालय द्वारा 5,000 रु. का माल रंगून शाखा को 26 दिसंबर को भेजा गया जो वहां 15 जनवरी को पहुंचा। (Goods Rs. 5,000 sent by H.O. to Rangoon Branch on 20 December reached there on 15 Jan. next year).

11. लन्दन शाखा के दिसंबर 2008 के निम्नलिखित तलपट को बदलिये। शाखा का प्रधान कार्यालय जयपुर में है।

	Dr. Pounds	Cr. Pounds
Stock in hand	800	—
Purchases and sales	2,300	8,000
Goods received from H.O.	2,000	—
Debtors and Creditors	1,500	1,000
B/R and B/P	400	350
Salaries and Wages	275	—
Rent, Rates and Taxes	400	—
Sundry Charged	500	—
Furniture	500	—
Cash at Bank	2,975	—
Jaipur Account	—	2,300
Rs.	11,650	11,650

टिप्पणी

31 दिसम्बर 2008 को शाखा में स्कंध 1,200 पौंड था। जयपुर की बहियों में शाखा खाते का नाम का शेष, 37,000 रु. था। शाखा के फर्नीचर का खरीदने की तिथि को मूल्य 10,000 रु. माना गया था। 31 दिसम्बर 2007 को विनिमय दर 19 रु. थी। 31 दिसम्बर 2008 को यह दर 17 रु. थी। 2008 की औसत दर 18 रु. मानी गई। यह भी ज्ञात हुआ कि मुख्य कार्यालय से कुल 39,000 रु. का माल शाखा को भेजा गया जिसमें से 3,000 रु. का माल शाखा कार्यालय द्वारा 2009 में प्राप्त किया गया। इसी प्रकार शाखा द्वारा दिसम्बर 2005 में मुख्यालय को भेजी गई 200 पौंड की राशि भी मुख्यालय में जनवरी 2009 में प्राप्त की गई। इसकी वसूली 3,400 रु. हुई।

(Stock at the branch on 31st December, 2008 was Pounds 1,200. The Branch Account in Jaipur books showed a debit balance of Rs. 37,000. The Branch Furniture was valued at Rs. 10,000 on the date of purchase. The rate of exchange on 31st December, 2007 was Rs. 19. This rate was Rs. 17 on 31st December, 2008. The average rate for 2008 was Rs. 18. This was also known that the head office had sent goods to branch costing Rs. 39,000 out of which, goods worth Rs. 3,000 were received by the branch in 2009. Similarly, the head office also received Pound 200 sent by the branch in December 2008 in January, 2009. It was realised at Rs. 3,400).

(अ) मुख्यालय की बहियों में परिवर्तित तलपट बनाकर शाखा के लाभ-हानि की गणना कीजिए। विनिमय में अन्तर को लाभ-हानि खाते में ले जाइये। (Calculate the profit or loss of the branch after preparing the converted trial balance. Transfer the balance of exchange suspense if any to Profit and Loss Account).

(आ) विदेशी मुद्रा में शाखा के लाभ-हानि की गणना करने के पश्चात् परिवर्तित तलपट बनाकर परिणामों की जांच कीजिए। (Calculate the branch profit or loss in Foreign Curency and then verify the result by preparing the converted trial balance thereafter).

(Ans : Exchange suspense on total convertion Rs. 9,075 (Cr.); Exchange suspense if P&L is prepared in Foreign Currency Rs. 7,075 (Cr.); Net Profit including exchange suspence Rs. 59,725.)

12. टिन तथा टाय लिमिटेड के सम्बन्ध में 31.12.2008 को समाप्य वर्ष से सम्बन्धित निम्नांकित सूचना से टिन विभाग तथा टॉय विभाग का व्यापारिक व लाभ-हानि खाता स्तंभीय आधार पर तैयार करो : (Prepare the Trading and Profit Loss Account of Tin and Toy Departments from the following particulars related to Tin and Toy Limited for the year ended on 31.12.2008).

Opening Stock : Toys Rs. 5,000, Tins Rs. 15,000, Raw material issued to Tin Deptt. Rs. 36,000, Stock consumed Rs. 9,000; wages : Toys Rs. 3,000, Tins Rs. 6,000. Advertisement Rs. 1,500, Packing expenses Tyos Rs. 600. Office expenses Rs. 4,800, Depreciation : Factory Equipment Rs. 3,200 Building Rs. 1,600, Sales : Tins Rs. 90,000, Toys Rs. 18,000, Closing Stock : Toys Rs. 6,000, Tins Rs. 12,000.

अन्य सूचना (Other information)

(i) इकाई का एक मात्र कच्चा माल टिन की चदरें हैं जो टिन बनाने में प्रयुक्त होती हैं तथा कतरन से खिलौने बनते हैं। टिन विभाग द्वारा टॉय विभाग को भेजे गये स्क्रेप का मूल्य 2,000 रु. (The only raw material used by the unit is the Tin sheets used in preparing Tins and the bitends are used for Toy making. The scrap sent by the Tin Deptt. to Toy Deptt. was valued at Rs. 2,000.)

(ii) खिलौना विभाग में किसी संयंत्र का प्रयोग नहीं होता। कुल परिसर का 1/8 भाग खिलौना विभाग में प्रयुक्त होता है। (The Toy making department does not require any equipment. Only 1/8 of the total premises is occupied by the Toys department.)

(Ans : G.P. Tins Rs. 38,500 and Toys Rs. 13,500; N.P. Tins Rs. 28,650, Toys Rs. 11,650, assuming that stores are consumed in proportion to Raw material and advertisement and office expenses are based on sales.)

13. अ, ब तथा स साझी हैं। 1 अप्रेल, 2007 को उनके पूंजी खातों में क्रेडिट शेष क्रमशः 50,000 रु., 40,000 रु. तथा 10,000 रु. थे। साझेदारी संलेख में व्यवस्था है कि :- (A, B and C are partners on 1st April, 2007 their capital account showed credit balance of Rs. 50,000; Rs. 40,000 and Rs. 10,000 respectively. The partnership agreement provided that) :

(अ) स को 5,000 रु. वार्षिक वेतन के क्रेडिट किये जायें। (C is credited with an annual salary of Rs. 5,000).

(आ) साझेदारी पूंजियों पर 10 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज लगाया जाय। (Interest @ 10% p.a. be allowed on partnership capital).

(इ) स को अतिरिक्त पारिश्रमिक 20,000 रु. से अधिक ऐसे लाभ के 10 प्रतिशत के बराबर दिया जाय जो स के वेतन, साझेदारी पूंजी पर ब्याज तथा इसी परिच्छेद के अनुसार स को प्राप्य अतिरिक्त पारिश्रमिक देने के बाद बचे। (C to get extra remuneration of 10% on such net profit over

and above Rs. 20,000 as it remains after deducting C's Salary, Interest on partnership capital and the extra remuneration as provided in this paragraph itself).

(ई) ब को ऐसे शुद्ध लाभ का 1/3 भाग कमीशन के रूप में दिया जाय तो उपरोक्त (अ), (आ) तथा (इ) में लिखित राशियाँ तथा (ई) में लिखित स्वयं ब का कमीशन घटाने के बाद शेष रहे। (B to get a commission equal to 1/3 of the net profit as it remains after providing for the amounts given in (a), (b) and (c) above and after deducting the commission to B himself under this paragraph (d)).

(उ) उपरोक्त सभी समायोजन करने के उपरान्त शेष लाभ को अ, ब तथा स में क्रमशः 3:2:1 के अनुपात में बांट दिया जाय। फर्म के लाभ का वितरण दर्शाइये जो 31 मार्च, 2008 को समाप्त वर्ष के लिए उपरोक्त सभी समायोजन करने से पूर्व 48,200 रु. था। (The profit remaining after making all the above adjustments be divided amongst A, B and C in proportions of 3:2:1).

Show the appropriation of the firm's profit which before making all the above said adjustments was Rs. 48,200 for the year ended 31st March, 2008.

(Ans. : Extra remuneration to C Rs. 1,200; Commission to B Rs. 8,000; Partners Shares A Rs. 12,000; B Rs. 8,000 and C Rs. 4,000).

14. अरूण, वरूण एवं तरूण ने 1 जनवरी 2006 को क्रमशः 50,000 रु., 30,000 रु. तथा 20,000 रु. की स्थायी पूंजियों के आधार पर व्यापार प्रारम्भ किया। साझेदारी संलेख के अनुसार स्थायी पूंजिको पर 10 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज देने, अरूण को 5,000 रु. वार्षिक वेतन, वरूण को 3,000 रु. वार्षिक मकान भत्ता तथा तरूण को 1,200 रु. वार्षिक वाहन भत्ता देने का प्रावधान था। (Arun, Varun and Tarun, started business on 1st January, 2006 with fixed capitals of Rs. 50,000; Rs. 30,000 and Rs. 20,000 respectively. As per the partnership deed, there were provisions to pay an annual partnership salary of Rs. 5,000 to Arun, an annual house rent allowance of Rs. 3,000 to Varun and an annual conveyance allowed of Rs. 1,200 to Tarun).

31 दिसम्बर 2008 को यह ज्ञात हुआ कि साझेदार बिना समझौते की उपरोक्त शर्तों का पालन किये फर्म का लाभ बांटते रहे हैं। उन्होंने लाभ का वितरण निम्नलिखित अनुपातों में किया।

प्रथम वर्ष 2:1:1 द्वितीय वर्ष 3:2:1 तथा तृतीय वर्ष 1:1:1, यह भी ज्ञात हुआ कि प्रारम्भ से ही अरूण की निजी बीमा पॉलिसी का 100 रु. मासिक प्रीमियम फर्म द्वारा चुकाया जाता रहा है तथा यह साझेदार के खाते में कभी भी डेबिट नहीं किया गया।

(It was noted on 31st December, 2008 that the partners have been distributing firm's profits without fulfiling the above terms of the agreement. They distributed the profit in the following proportions First year 2:1:1, Second year 3:2:1, Third year 1:1:1 it was also noticed that the firm has been paying an insurance premium of Rs. 100 per month on the private policy of Arun and it was never debited to his account).

2009 के प्रारम्भ में आवश्यक समायोजन प्रविष्टि द्वारा उपरोक्त भूल का सुधार कीजिये। (Correct the above omissions with the help of necessary adjustment entry).

(Ans. : Tarun Dr. Rs. 3,900; Arun Cr. Rs. 2,400 and Varun Cr. Rs. 1,500.)

15. एक फर्म के सम्बन्ध में निम्नलिखित जानकारी उपलब्ध है :-

(i) विनियोजित पूंजी (Capital employed) Rs. 5,00,000

(ii) लाभार्जन की सामान्य दर (Normal rate of return) 10%

(iii) पांच वर्ष के कार्य परिणाम (Working results for five years):
2004 Rs. 65,000 (Profit), 2005 Rs. 73,500 (Profit), 2006 Rs. 7,000 (Loss), 2007 Rs. 95,000 (Profit) and 2008 Rs. 86,000 (Profit)

(iv) उपरोक्त कार्य परिणाम 2,500 रु. वार्षिक दर से प्रबंध व्यय घटाने से पूर्व के हैं। (The above working results are before charging managerial remuneration @ Rs. 2,500 per year.)

निम्नलिखित आधारों पर ख्याति की गणना करो। (Value the goodwill on the following bases) :-

(अ) पांच वर्षों की औसत लाभों के दो वर्षो का क्रय (Two year's purchase of last 5 years' average profits.)

(आ) अधिलाभ के दो वर्षो का क्रय (Two years purchase of super profits)

(इ) अधिलाभों का पूंजीकरण (Capitalisation of super profits)

(Ans. – (अ) 1,20,000 रु. (आ) 20,000 रु. (इ) 1,00,000 रु.)

16. एक्स तथा वाई एक फर्म में 2:1 के साझेदार हैं। 31 दिसम्बर 2007 को उनका स्थिति विवरण निम्नलिखित

टिप्पणी

था :- (X and Y are partners in a firm sharing in proportions of 2:1. Their balance sheet as on 31.12.2007 was as follows) :-

	Rs.		Rs.
Creditors	14,500	Cash in hand	4,300
General Reserve	6,000	Prepaid Expenses	700
B/P	2,000	B/R	6,500
Bank Loan	2,500	Debtors	10,000
Capital A/cs :		Stock	5,000
X	25,000	Machinery	10,000
Y	15,000	Buildings	20,000
		Furniture	2,500
		Goodwill	6,000
	65,000		65,000

अतिरिक्त जानकारी (Additional Information)

(i) फर्म की ख्याति का मूल्य 36,000 रु. आंका गया तथा जेड अपना हिस्सा रोकड़ देगा। नई फर्म में साझेदारों का अनुपात 3:2:1 रखना तय किया गया। (Goodwill of the firm was valued at Rs. 36,000 and Z is to pay his share of goodwill. The shares of the partners in the new firm were tobe 3:2:1.)

(ii) संदिग्ध ऋणों के लिए 1,000 रु. का प्रावधान करना है। (Provision for doubtful debts is tobe made for Rs. 1,000.)

(iii) पूर्वदत्त व्ययों को आगे नहीं ले जाना है। (Prepaid expenses are not tobe carried forward.)

(iv) संयंत्र को 10 प्रतिषत से अपलिखित करो जबकि भवन को 20 प्रतिषत से बढ़ाओ। (Depreciate Machinery by 10% while increase the value of Building by 20%.)

(v) फर्निचर का मूल्य 2,000 आंका गया। (Furniture was valued at Rs. 2,000.)

(vi) स्कंध का मूल्य घटाकर 4,500 रु. कर दिया गया। (Stock was reduced to Rs. 4,500.)

(vii) जेड फर्म में इतनी पूंजी लावे कि उसका हिस्सा फर्म की कुल पूंजी का 1⁄6 हो जाय। (Z is to bring so much capital in the firm so that his capital becomes 1/6 of the firm's total capital.)

(viii) आवष्यक खाते खोलो तथा 1 जनवरी 2008 को फर्म का स्थिति विवरण बनाओ। (Open necessary accounts and prepare the Balance Sheet of the firm as on 1st January, 2008.)

(Ans. : Profit on revaluation Rs. 300; amount brought by Z for his capital Rs. 15,260; Balance Sheet total Rs. 74,560).

17. निम्नलिखित वैकल्पिक परिस्थितियों में नई फर्म के साझेदारों के लाभ हानि अनुपात ज्ञात करो। यदि पी, क्यू तथा आर की फर्म में उनका वर्तमान लाभ-हानि अनुपात 5:3:2 हो तथा क्यु फर्म छोड़े। (Calculate the profit and loss sharing ratios of partners in the new firm in the following alternative situations if the present ratio of P, Q and R in a firm is 5:3:2 and Q leaves the firm) :–

(i) क्यू का भाग पी तथा आर खरीद लें। (P and R acquire the share of Q).

(ii) पी तथा आर द्वारा क्यू के लाभ में हिस्से के लिए क्रमषः 6,000 रु. तथा 3,000 रु. ख्याति पेटे देना स्वीकार करना। (If P and R agree to pay Rs. 6,000 and Rs. 3,000 to Q in respect of goodwill in lieu of Q's share in the firm's profits).

(iii) क्यू के भाग में 1/5 पी ले तथा शेष आर द्वारा लिया जाय। (If P acquire 1/5 and the remaining portion of Q is acquired by R.)

(iv) क्यू अपने भाग का 2/3 पी को तथा शेष आर को देता है। (Q gives 2/3rd of his share to P and remainder to R).

(v) पी तथा आर द्वारा क्यू का भाग समान अनुपात में खरीदा जाय। (Q's share is acquired in equal proportions by P & R.)

(Ans. : (i) 5:2 (ii) 7:3 (iii) 7:3 (iv) 7:3 (v) 13:7)

18 पी, क्यू तथा आर साझेदार थे, लाभ हानि 5:3:2 के अनुपात में बांटते थे। 31 मार्च 2008 को उनका

. चिट्ठा निम्नलिखित था - (P, Q and R were partners sharing profits and losses in the ratio of 5:3:2 respectively. On 31.03.2008 their balance sheet stood as follows) :

		Rs.		Rs.
Creditors		27,500	Goodwill	12,500
General Reserve		15,000	Building	65,000
Capital A/c's : Rs.			Machinery	75,000
P	75,000		Stock	30,000
Q	62,500		Debtors	20,000
R	37,500	1,75,000	Cash at Bank	15,000
		2,17,500		2,17,500

01.08.2008 को आर की मृत्यु हो गई। यह तय हुआ कि - (R died on 01.08.2008. It was agreed that) :–

(i) ख्याति का मूल्यांकन पिछले चार वर्षों के औसत लाभ के 2½ वर्ष की खरीद के बराबर किया जाय। जो निम्नलिखित थे – (Goodwill be valued at 2½ years purchase of the average profits for the last four year's which were) : (2004–05 Rs. 32,500, 2005–06 Rs. 30,000, 2006–07 Rs. 40,000, 2007–08 Rs. 37,500).

(ii) मशीन 70,000 रु. पर तथा भवन 82,500 रु. पर मूल्यांकित किया जाय। (Machinery be valued at Rs. 70,000 and Building be valued at Rs. 82,500)

(iii) 1 अप्रेल 2008 से मृत्यु की तिथि तक आर के हिस्से का लाभ ज्ञात करने के लिए यह माना जाय कि चालू वर्ष में वही लाभ होता जो कि 2007-08 में हुआ था। (For the purpose of calculating R's share in the profit for the period from 1st April 2008 till the date of his death it be assumed that profit for this year would be same as had been earned in the year 2007–08).

(iv) आर के कानूनी उत्तराधिकारी को 10,500 रु. तुरन्त चुका दिये तथा शेष राशि 10: वार्षिक ब्याज वाले ऋण खाते में हस्तांतरित कर दी गई। (A sum of Rs.

10,500 be paid immediately to R's executors and the balance be transferred to a loan account carrying interest @ 10% per annum).

ऊपर लिखे गये व्यवहारों का लेखा करने के लिए जर्नल प्रविष्ठियां कीजिये तथा आर का पूंजी खाता बनाइये। (Pass the necessary journal entries to record the above mentioned transactions and prepare Rs' Capital Account).

(Ans. : Valuation of goodwill Rs. 87,500, and Amount payable to executors of R Rs. 50,000.)

टिप्पणियां लिखिये (Write Short Notes) -

(i) साझेदारों के त्याग का अनुपात (Sacrifice ratio of partners.)

(ii) नये साझेदार द्वारा अपने हिस्से की ख्याति न लाने पर ख्याति के लिए समायोजन (Adjustment for goodwill without bringing cash by new partner for goodwill).

(iii) पुनर्मूल्यांकन खाता या लाभ हानि समायोजन खाता (Revaluation Account or Profit & Loss Adjustment Account)

(iv) स्मरणार्थ पुनर्मूल्यांकन खाता (Memorandum Revaluation Account.)

टिप्पणी

आवंटन (Assignment) :

1\. विदेशी शाखा की राशियों को देश की मुद्रा में बदलने के लिए किन नियमों का पालन किया जाता है ? (What are the important rules for converting the amounts of foreign branch into home currency ?)

2\. देश में स्थित एक स्वतन्त्र शाखा के लेखे प्रधान कार्यालय में किस प्रकार सम्मिलित किये जाते हैं ? आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिये। (How are the accounts of an independent banch situated in the same country incorporated in the Head Office Books ? Give necessary journal entries for the same.)

3\. वेतन, ब्याज तथा लाभ वितरण के संबंध में स्पष्ट समझौते के अभाव में साझेदारी फर्म के लाभ का वितरण किस प्रकार किया जाता हैं ? इस संबंध में भारतीय साझेदारी अधिनियम की व्यवस्था समझाइये। (How is the profit of a partnership firm appropriated in the absence of a specific agreement in respect of salary, interest and profit-sharing-ratio? Explain the provisions of Indian partnership Act in this respect.)

4\. किसी साझेदार को 'लाभ के हिस्से के आश्वासन से आपका क्या अभिप्राय हैं। आश्वासन की विभिन्न व्यवस्थाओं को उदाहरण देकर समझाइये। (What do you mean by 'guarantee of a profit share' to a partner? Explain and illustrate the various arrangements of guarantees.)

5\. आप ख्याति को किस प्रकार परिभाषित करेंगे। साझेदार के प्रवेश पर इसका लेखांकन जर्नल प्रविष्टियों के माध्यम से समझाइये। (How would you define goodwill ? Illustrate with the help of journal entries, its treatment at the time of admission of a partner.)

6\. मल्टीचेन्ड स्टोर्स लि. दिल्ली की दो शाखायें चैन्नई तथा लखनऊ में हैं। इनको लागत में 25% जोड़कर माल भेजा जाता है। 31.12.2008 को समाप्त वर्ष के लिए लखनऊ शाखा से सम्बन्धित निम्नांकित जानकारी से स्कंध देनदार पद्धति से लाभ-हानि की गणना करने के लिए आवश्यक खाते तैयार करो। (Multichend Stores Ltd. of Delhi operates two Branches at Chennai and Lucknow. Goods are sent to them by adding 25% in the cost. Prepare necessary accounts for the year ending on 31.12.2008 from the following particulars under Stock and Debtors method):

Opening balances : Stock (I.P.) Rs. 30,000, Debtors Rs. 10,000, Petty cash Rs. 50, Goods consigned to Lucknow Branch at (I.P.) Rs. 3,25,000, Returns by Lucknow Branch Rs. 10,000 (I.P.), Cash sales Rs. 1,00,000, Cr. Sales Rs. 1,75,000, goods pilfered (at I.P.) Rs. 2,000, Loss by fire (at I.P.) Rs. 5,000; insurance claim against loss by fire received at H.O. Rs. 3,000, amount sent by H.O. for branch petty cash expenses Rs. 34,000, bad debts at branch Rs. 500, goods transferred to Chennai Branch by Lucknow branch under instructions from H.O. Rs. 15,000 (I.P.) (This remained in transit upto the end of the year), Insurance charges paid by H.O. Rs. 500, Returns by Debtors to Lucknow Branch Rs. 500, Closing balances : Petty cash Rs. 230, Debtors Rs. 14,000.

(Ans. : Closing stock at branch Rs. 48,500 (I.P.) G.P. Rs. 54,900, N.P. Rs. 17,480 after adjusting actual loss by fire remaining uncovered by claim Rs. 1,000)

7. एक व्यापारी के मुख्य कार्यालय तथा शाखा के द्वारा अपनी स्वयं की बहियां रखी जाती हैं तथा प्रत्येक स्वयं अपना लाभ-हानि खाता बनाते हैं। दोनों बहियों में 31 दिसम्बर, 2008 का लाभ ज्ञात करने के पश्चात् निम्नलिखित शेष थे। निम्नलिखित समायोजनों के लिए दोनों बहियों में रोजनामचा प्रविष्टियां दीजिये तथा 31 दिसम्बर 2008 को व्यापार का स्थिति विवरण बनाइये। (A trader maintains separate books of his Head Office and at his Branch and both the offices prepare their own Profit & Loss Accounts. Both the books disclosed the following balances on 31 December, 2008 after ascertaining the Profits for the year ended 31 December, 2008. Pass necessary Journal Entries for the following adjustments and prepare a Balance Sheet as on 31 December, 2008).

	Head Office		Branch Office	
	Dr. Rs.	Cr. Rs.	Dr. Rs.	Cr. Rs.
Capital	—	1,00,000	—	—
Fixed Assets	36,000	—	16,000	—
Stock	34,200	—	10,740	—
Debtors and Creditors	7,820	3,960	4,840	1,920
Cash	10,740	—	1,420	—
Profit & Loss Account	—	14,660	—	3,060
Branch Office Current Account	29,860	—	—	—
Head Office Current Account	—	—	—	28,020
	1,18,620	1,18,620	33,000	33,000

अतिरिक्त सूचनाऐं **(Additional Information) :**

1. एक 1,000 रु. का चैक 31.12.2008 को शाखा द्वारा भेजा गया जो अगले वर्ष देरी से मुख्यालय पंहुचा। (A cheque of Rs. 1,000 sent by the branch on 31.12.2008 did not reach the Head Office till late in the next month).
2. 440 रु. का माल मुख्यालय द्वारा शाखा को फरवरी 2009 में प्राप्त हुआ। (Goods for Rs. 440 sent by the Head Office to the Branch were received at the Branch in February 2009).
3. मुख्यालय ने शाखा से 300 रु. प्रसाशनिक व्ययों के वसूल किये। (Head Office has to recover Rs. 300 from the branch against Administration charges).
4. 400 रु. का माल मुख्यालय द्वारा शाखा को भेजा गया जो रास्ते में खो गया। यह माल बीमित नहीं था। शाखा ने इसके लिए मुख्यालय को जमा नहीं किया। यह तय किया गया कि शाखा इसके लिए जिम्मेदार नहीं है। (Goods worth Rs. 400 sent by H.O. by Branch were lost in transit. These were not insured. Branch has not credited the H.O. Account for this. It was decided that Branch was not responsible for this).
5. शाखा की स्थायी सम्पत्तियों पर 250 रु. ह्रास लगाना है। शाखा की इन सम्पत्तियों का खाता मुख्यालय की बहियों में है। अन्य स्थायी सम्पत्तियों पर ह्रास उचित रूप से लेखांकित है। (Depreciation Rs. 250 is tobe charged on Branch Fixed Assets. Accounts of these Fixed Assets of the Branch are in H.O. Books. Depreciation of other Fixed Assets has been property accounted for).
6. अन्त में शाखा की बहियों में विद्यमान शाखा का लाभ मुख्यालय की पुस्तकों में हस्तांतरित कर दिया गया। (Branch Profit finally remaining in Branch books is tobe transfereed to Head Office Books).

   (Ans : Banch Profit Rs. 2,510; H.O. Profit Rs. 14,560; Balance Sheet Total Rs. 1,22,950)

8. जोधपुर निवासी मनील के विभागीय व्यापार के बारे में निम्नलिखित जानकारी से उसका व्यापारिक खाता स्तम्भीय रूप से तैयार कीजिये। उक्त अवधि में क्रय मूल्य 25,500 रु. लगा तथा यह ज्ञात है कि सकल लाभ की दर सभी विभागों में समान है। (From the following information about departmental business of Maneel of Jodhpur, prepare his Trading Account in Columnar form. The total cost of Purchases in the period was Rs. 25,500)and it is known that the rate of gross profit is the same for all the three departments.)

	Departments		
	A	B	C
Purchases (in Pieces)	200	1,400	400
Sales (in Pieces)	180	1,500	450
Opening Stock (in Pieces)	100	400	50
Selling price per unit	Rs. 15	Rs. 18	Re. 6

(Ans : Gross Profit A Rs. 450; B Rs. 4,500 and C Rs. 450)

9. 'एक्स' तथा 'वाई' ने साझेदारी बनाई। लाभ हानि 2:1 में बांटते हैं। शर्तों के अनुसार उपार्जित लाभ बांटा जाना था परन्तु हमेशा रोकड़ लाभ की गणना की गई। अब यह आकांक्षा की गई कि रोकड़ आधार पर रखे खातों को उपार्जन आधार में बदला जाय। विवरण निम्नलिखित है - (X and Y formed partnership sharing Profit/Losses in the ratio of 2:1. The term was to distribute mercantile profit but cash profit has been calculated all through. Now it is desired to convert cash basis accounts into mercantile basis accounts. The details are as follows) :

Particulars	Cash Profit	Outstanding Income at the end	Outstanding Expenses at the end
	Rs.	Rs.	Rs.
I Year	10,000	1,000	500
II Year	12,000	3,000	1,000
III Year	18,000	2,000	800

परिवर्तन प्रविष्टि कीजिये (Pass conversion entry).

(Ans. : Debit outstanding income Rs. 2,000, credit Outstanding Expenses A/c, X's and Y's Capital A/c Rs. 800, Rs. 800 and Rs. 400 respectively.)

10 राम और मोहन एक फर्म के लाभ हानि को 3:2 के अनुपात में बांटते हैं। उन्होंने हरी को साझेदार बनाया।

टिप्पणी

. निम्नलिखित वैकल्पिक परिस्थितियों में फर्म के नये लाभ हानि अनुपात की गणना करो :- (Ram and Mohan share profits and losses of a firm in proportions of 3:2. They admit Hari into their firm. Calculate the partner's profit and loss sharing ratios under the following alternative situations) :-

(i) हरी अपना 1/4 भाग राम और मोहन से उनके पूर्वानुपात में प्राप्त करे। (Hari obtains his 1/4 share from Ram and Mohan in their old proportions.)

(ii) वह अपना 1/ भाग केवल राम से ही प्राप्त करे। (He obtains his 1/4 share from Ram only.)

(iii) वह अपना 1/4 भाग केवल मोहन से प्राप्त करे। (He obtains his 1/4 share from Mohan only.)

(iv) हरी अपना 1/4 भाग दोनों से प्राप्त करे तथा शेष लाभ में राम व मोहन का अनुपात समान हो। (Hari obtains his 1/4 share from both and Ram and Mohan share the balance of profit equally.)

(v) हरी अपना 1/4 भाग राम व मोहन से समान अनुपात में प्राप्त करे। (Hari obtains his 1/4 share from Ram and Mohan in equal proportions.)

(vi) हरी अपना 1/4 भाग दोनों से प्राप्त करे तथा शेष लाभ राम व मोहन 2:1 के अनुपात में बांटें। (Hari obtains his 1/4 share from both and Ram and Mohan share the balance of profit in proportions of 2 : 1.)

(vii) राम अपने हिस्से का 1/2 तथा मोहन अपने हिस्से का 1⁄4 भाग हरी को दें। (Ram gives 1/2 of his share and Mohan 1/4 of his share to Hari.)

(viii) राम अपने भाग में से 1/⁄6 तथा मोहन अपने भाग में से 1/12 देकर हरी को 1/4 की पूर्ति करें। (Ram gives 1/6 out of his share and Mohan gives 1/12 out of his share in order to make up the 1/4 share of Hari.)

(Ans. – (i) 9:6:5, (ii) 7:8:5, (iii) 12:3:5, (iv) 3:3:2, (v) 19:11:10, (vi) 2:1:1, (vii) 3:3:4, (viii) 26:19:15)

11. ए, बी तथा सी की फर्म से बी के संबंध विच्छेद करने पर निम्नलिखित वैकल्पिक परिस्थितियों में ख्याति के समायोजन से संबंधित जरनल प्रविष्टियां कीजिये : (Pass necessary journal entries to make adjustment for Goodwill at the time of B's leaveing the firm of A,B,C)

(i) अ, ब तथा स का अनुपात 2:1:1 हैं। ख्याति का मूल्य 10,000 रु. आंका गया, अ तथा स, ब

का भाग समान अनुपात में खरीदते हैं। पहले से ख्याति खाता खुला हुआ नहीं है। (The ratio of A,B and C is 2:1:1. Goodwill is valued at Rs. 10,000. A and C acquire B's share in equal proportions. Goodwill account does not exist in the firm).

(ii) अ,ब तथा स का अनुपात 5:3:2 है। ख्याति खाता फर्म में 10,000 रु. से खुला हुआ है। ख्याति का मूल्यांकन 15,000 रु. पर किया गया है। अ तथा स, ब से क्रमशः 2/10 तथा 1/10 हिस्से खरीदते है। (The ratio of A,B and C is 5:3:2. The goodwill account exists in the firm's books at Rs. 10,000. Goodwill has been valued at Rs. 15,000. A and C acquire from B, 2/10 and 1/10 share respectively).

(iii) अ, ब तथा स के अनुपात 4:3:2 हैं। अ तथा स ने अपना भावी अनुपात 2:1 रखना तय किया है। ख्याति का मूल्य 18,000 रु. आंका गया। ख्याति का समायोजन किया गया। (The ratio of A,B and C is 4:3:2. A and C have agreed to keep their future ratio at 2:1. Goodwill has been valued at Rs. 18,000. Adjustment for goodwill was made)

(iv) अ, ब तथा स का अनुपात 2:1:1 हैं। ब के अवकाश ग्रहण के उपरान्त अ तथा स का अनुपात समान हो जावेगा। फर्म में ख्याति खाता 15,000 रु. से खुला हुआ है। अवकाश ग्रहण के समय ब को उसके हिस्से की ख्याति पेटे 10,000 रु. क्रेडिट करने का निश्चय किया गया है। (The ratio of A, B and C is 2:1:1. After B retires, A and C will share in equal proportions. The goodwill account exists in the firm at Rs. 15,000. At the time of his retirement, B is agreed to be credited with Rs. 10,000 for goodwill).

(v) अ, ब तथा स के अनुपात 3:2:1 हैं। फर्म की बहियों में ख्याति खाता 10,000 रु. पर विद्यमान है। अ तथा स, ब का हिस्सा प्राप्त करने की एवज में क्रमशः 4,000 रु. तथा 2,000 रु. देने को सहमत हो गये है। (The ratio of A,B and C is 3:2:1. The goodwill account exists in the firm's books at Rs. 10,000. A and C have agreed to give Rs. 4,000 and Rs. 2,000 respectively in lieu of acquiring B's share)

टिप्पणी

(Ans. (i) New ratio 5:3 A and C Dr. Rs. 1,250 and Rs. 1,250 respectively and B's Capital A/c Cr. Rs. 2,500, (ii) Write off goodwill account in old ratio. A and C Dr. Rs. 3,000 and Rs. 1,500 respectively, B Credited Rs. 4,500. (iii) A and C Dr. Rs. 4,000 and Rs. 2,000 respectively, B Credited Rs. 6,000, gain ratio 2:1, (iv) Write off goodwill account in old ratio. C's A/c Dr. 10,000, B Cr. Rs. 10,000, (v) Write off goodwill account in old ratio. A and C Dr. Rs. 4,000 and Rs. 2,000 respectively, B Credit Rs. 6,000).

इकाई ४ शिक्षण के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आपकों ज्ञात होगा कि -

* साझेदरी फर्म का विघटन क्या है तथा किन-किन परिस्थितियों में एक फर्म का विघटन किया जा सकता है।
* साझेदारी फर्म के विघटन पर उसकी बहियां किस प्रकार बन्द की जाती है।
* साझेदारी फर्म के विघटन पर हिसाब का निबटारा किस प्रकार किया जाता है।
* गार्नर बनाम मर्रे का नियम क्या है तथा भारत के संदर्भ में वह कितना उपयोगी है।
* वसूली खाते तथा पुनर्मूल्यांकन खाते में क्या अन्तर है।
* फर्म के विघटन पर सम्पत्तियों की वसूली धीरे धीरे हो तो भुगतान किस प्रकार किये जाते है।
* साझेदारों को पूंजी का पुनर्भुगतान विभिन्न विधियों में किस प्रकार किया जाता है।
* साझेदारी फर्म अपना व्यापार अन्य फर्म या कम्पनी को बेच दे तो विक्रेता की बहियों में लेखांकन किस प्रकार होता है।
* क्रय प्रतिफल क्या है, इसका निर्धारण किस प्रकार होता है तथा क्रेता की बहियों में लेखा किस प्रकार किया जाता है।
* फर्मों का एकीकरण क्या है तथा एकीकरण की दशा में लेखांकन प्रक्रिया क्या होती है।

संरचना (Structure)]

४.१ साझेदारी फर्मों का विघटन

४.१.१ साझेदारी फर्मों के विघटन का अर्थ

४.१.२ साझेदारी फर्मों के विघटन के प्रकार

४.१.३ स्म्पत्तियों की वसूली तथा लेनदारों को भुगतान

४.१.४ निपटारे का क्रम

४.१.५ फर्म की बहियां बन्द करना

४.१.५.१ वसूली खाता

टिप्पणी

४.१.५.१.१ वसूली व भुगतान के पश्चात अवशिष्ट शेष हस्तांतरि करना

४.१.५.१.२ विभिन्न सम्पत्तियों तथा दायित्वों को हस्तांतरित करना।

४.१.५.२ साझेदारों के खाते बन्द करना

४.१.५.२.१ जब सभी साझेदार सक्षम हो

४.१.५.२.२ जब एक या अधिक साझेदार अक्षम हो जाय

४.१.५.२.३ जब फर्म के सभी साझेदार अक्षम हो जाय

४.१.५.३ पुनर्मूल्यांकन खाते तथा वसूली खात में अन्तर

४.२ सम्पत्तियों की धीरे धीरे वसूली तथा राशि का क्रमिक वितरण

४.२.१ भुगतान का क्रम

४.२.२ साझेदारों में राशि के क्रमिक वितरण का आधार

४.२.२.१ अधिकतम पूंजी पद्धति

४.२.२.२ अधिकतम हानि पद्धति

४.३ व्यवसाय की बिक्री

४.३.१ क्रय प्रतिफल का निर्धारण

४.३.२ विक्रेता फर्म की बहियों में लेखांकन

४.३.२.१ वसूली खाता तैयार करना

४.३.२.२ क्रेता कम्पनी से प्राप्त प्रतिभूतियों का बंटवारा

४.३.२.३ साझेदारों के खाते तथा अन्य खाते

४.३.३ क्रेता कम्पनी की पुस्तकों में लेखा

४.४ फर्मों का एकीकरण

४.१ साझेदारी फर्मों का विघटन (Dissolution of Partnership Firm)

४.१.१ साझेदारी फर्मों के विघटन का अर्थ Meaning of Dissolution of Partnership Firm)

एक फर्म के सभी साझेदारों के बीच साझेदारी समाप्त हो जाय तथा फर्म के कारोबार को बन्द करने या उसे बेच देने का निर्णय किया जाय तो उसे फर्म का विघटन अथवा समापन कहते हैं। फर्म का समापन साझेदारी के समापन से भिन्न होता है। निम्नलिखित परिस्थितियों में फर्म तथा साझेदारी दोनों का समापन हो जाता है।

४.१.२ साझेदारी फर्मों के विघटन के प्रकार (Types of Dissolution of Partnership Firm)

फर्म के समापन की विभिन्न परिस्थितियों को वैधानिक भाषा में तीन शीर्षकों के अन्तर्गत बांट सकते हैं-

(१) ऐच्छिक विघटन (Voluntary Dissolution) : इसमें साझेदार चाहें तो फर्म को समाप्त कर सकते हैं और चाहें तो भविष्य में भी कारोबार चालू रख सकते हैं। अतः यह ऐच्छिक समापन कहलाता है।

(i) जब सभी साझेदार व्यापार समाप्त करने के लिये सहमत हो जायें।

(ii) ऐच्छिक साझेदारी (Partnership at will) को समाप्त करने के लिये किसी साझेदार ने नोटिस जारी कर दिया हो।

(iii) निश्चित अवधि के लिये बनाई गई साझेदारी की अवधि समाप्त हो गई हो।

(iv) विशिष्ट उद्‌देश्य के लिये स्थापित की गई साझेदारी का उद्‌देश्य पूरा हो चुका हो।

(v) किसी साझेदार की मृत्यु हो जाय।

(vi) कोई साझेदार दिवालिया हो जाय।

(२) अनिवार्य विघटन (Compulsory dissolution) : निम्नलिखित चार परिस्थितियों में साझेदार चाहें या नहीं, फर्म का समापन अनिवार्यत; करना ही पड़ता है :-

(i) जब फर्म में एक के अतिरिक्त अन्य सभी या सबके सब साझेदार दिवालिये घोषित किये जा चुके हों।

(ii) यदि किसी कारणवश फर्म का व्यापार अवैध घोषित हो चुका हो।

(iii) यदि कोई साझेदार किसी शत्रु देश का नागरिक मान लिया जाय।

(iv) साझेदारों की संख्या वैधानिक सीमा से अधिक हो जाय अर्थात् बैकिंग व्यवसाय में लगी फर्मों में दस से अधिक तथा अन्य फर्मों में बीस से अधिक साझेदार होने पर फर्म के अनिवार्य समापन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

(३) न्यायालय द्वारा विघटन (Dissolution by Court) : इसमें न्यायालय को हस्तक्षेप करने के लिए किन्हीं साझेदारों की ओर से प्रार्थना पत्र दिया जाता है तथा प्रार्थना पत्र में उल्लेखित घटना की जांच के उपरांत यदि न्यायालय उचित समझे तो किसी फर्म के समापन का आदेश दे सकता है। ये घटनाएं निम्नलिखित हो सकती हैं :-

(i) किसी साझेदार के पागल हो जाने पर।

(ii) आवेदक के अतिरिक्त अन्य किसी साझेदार का व्यापार चलाने के लिए स्थायी रूप से असमर्थ हो जाने पर।

(iii) आवेदक के अतिरिक्त अन्य किसी साझेदार द्वारा अपना हिस्सा बेच देने पर।

(iv) आवेदक के अतिरिक्त किसी साझेदार का आचरण फर्म को हानि पहुँचाने वाला माना जाने पर।

(v) आवेदक के अतिरिक्त अन्य साझेदार द्वारा जानबूझ कर लगातार साझेदारी संलेख की अवहेलना करते रहने पर।

(vi) फर्म के भविष्य में केवल हानि उठाने की ही सम्भावना हो।

उपरोक्त में से फर्म के समापन का कारण जो भी रहा हो, व्यावहारिक दृष्टि से दो बातें सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं :-

१. फर्म के चिठ्ठे के दायित्व पक्ष में दर्शाये गये विभिन्न पक्षकारों के दावों का भुगतान करने में फर्म की सम्पत्तियों का प्रयोग करना।।
२. फर्म की बहियाँ बंद करना।

४.१.३ सम्पत्तियों की वसूली तथा लेनदारों को भुगतान (Realisation of assets and clearance of liabilities)

जब सम्पत्तियां एवं दायित्व चालू व्यापार के क्रेता को सामुहिक रूप में दिये जायँ अथवा सम्पत्तियों को एक एक कर बेचें और लेनदारों के दावों का भुगतान करें, तो पुस्तक मूल्य और वास्तविक मूल्य का अंतर लाभ हानि के रूप में सामने आता है। यह भी संभव है कि चालू व्यापार का क्रेता सम्पत्तियों के वास्तविक मूल्य के अतिरिक्त ख्याति अथवा व्यापारिक चिन्ह एवं एकस्व अधिकार (Trade marks and Patents Rights) के लिये भी कुछ भुगतान करने को राजी हो जाय। यदि ये सम्पत्तियां बहियों में अंकित न हों तो इनकी एवज में मिलने वाली राशि भी वसूली लाभ के रूप में सामने आयेगी। यह भी संभव है कि भूतकाल में अपनाई गई दूषित ह्रास नीति के कारण या

टिप्पणी

चल सम्पत्तियों के अधिमूल्यांकन (over valuation) नीति के कारण इनके पुस्तक मूल्य अधिक अंकित हों और वसूली कम हो तो यह हानि भी साझेदारों को ही सहन करनी होगी। यही बात दायित्वों के लिए भी कही जा सकती है। वास्तविक भुगतान अंकित मूल्य के बराबर तथा कम या अधिक भी करना पड़ सकता है। इस कारण भी वसूली संबंधी लाभ हानि का प्रश्न सामने आ सकता है।

कई बार चालू व्यापार का क्रेता उसके कुछ दायित्वों एवं सम्पत्तियों को लेने से इन्कार कर देता है तथा उनका तुरन्त निपटारा करने में हानि होने की संभावना दिखाई देती है तो साझेदार स्वयं भी किन्हीं सम्पत्तियों को लेने तथा दायित्वों को चुकाने को राजी हो जाते हैं।

कभी कभी फर्म के लेनदार स्वयं ही फर्म की सम्पत्तियां अपने दावों के बदले लेना स्वीकार कर लेते हैं। कई बार कुछ सम्पत्तियां पहले से ही लेनदार के पास गिरवी रखी हुई होती हैं।

इस प्रकार फर्म के विघटन के समय फर्म की सम्पत्तियों एवं दायित्वों का निपटारा, विभिन्न रूपों में किया जा सकता है। वसूली के परिणाम स्वरूप होने वाले लाभ हानि का बंटवारा फर्म के साझेदार में करना लेखांकन की दृष्टि से सर्वाधिक महत्व की बात मानी जा सकती है।

४.१.४ खातों के भुगतान / निपटारें का क्रम (Order of settlement of accounts)

वसूली से प्राप्त तथा पहले से विद्यमान राशि के निबटारे के लिए साझेदारी समझौते में किये गये प्रावधान सर्वोपरी माने जाते हैं। समझौते की अनुपस्थिति में साझेदारी अधिनियम की व्यवस्था लागू होती है। अधिनियम में दी गई व्यवस्था के अन्तर्गत विभिन्न पक्षों को निम्नलिखित क्रम से उत्तरोत्तर भुगतान प्राप्त करने का अधिकार दिया गया है :-

(i) सर्वप्रथम भुगतान फर्म के बाह्य लेनदारों को किया जाता है जिनमें सरकारी तथा अर्द्ध सरकारी विभाग, फर्म के व्यापारिक लेनदार तथा साझेदारों के अतिरिक्त अन्य ऋणदाता सम्मिलित हैं।

(ii) बाह्य पक्षों के दावों का पूर्ण भुगतान करने के पष्चात् साझेदारों द्वारा फर्म को दिये गये ऋण, ब्याज सहित लौटाये जावेंगे।

(iii) इसके पष्चात् साझेदारों के पूंजी तथा चालू खातों के जमा शेषों का भुगतान किया जावेगा।

(iv) उपरोक्त तीनों श्रेणियों का भुगतान करने के पष्चात अवषिष्ट राषि पूर्व काल के अतिरिक्त लाभ अथवा वसूली पर होने वाला लाभ मानकर भागीदारों को उनके लाभ हानि अनुपात में वितरित की जा सकती है।

इसके विपरीत यदि फर्म के पास दायित्वों के भुगतान के लिए सम्पत्तियां अपर्याप्त हों तो जब तक एक भी साझेदार सक्षम है, उसे लेनदारों का दावा पूरा करने के लिए बाध्य किया जा सकता है। साझेदार के ऋण खातों के संबंध में दो नियम विशेष रूप से हैं :

१. साझेदार के दिवालिया हो जाने के पश्चात उसकी 'पूंजी की न्यूनता' का निर्धारण करते समय उसके द्वारा फर्म को दिये

गये तथा फर्म से लिए गये दोनों प्रकार के ऋण उसके पूंजी खाते में हस्तांतरित करना आवश्यक हो जाता है तथा दिवालिया घोषित होने पर उसके खातों पर ब्याज की गणना नहीं करनी चाहिये।

२. जो साझेदार सक्षम हों उनके ऋण खाते पूंजी खातों से पृथक रखे जाने चाहिये तथा इन पर भुगतान पूंजी खाते से पहले होने चाहिये।

यदि एक से अधिक साझेदारों ने फर्म को ऋण दिया हो तथा उन सबके ऋणों का पूरा भुगतान करने के लिए सम्पत्तियाँ पर्याप्त नहीं हो तो उपलब्ध राशि ऋण की राशि के अनुपात में वितरित की जायेगी। इसी प्रकार यदि सभी साझेदारों को पूंजी लौटाने के लिए सम्पत्तियां पर्याप्त नहीं हों तो पूंजी की देय रकम के अनुपात में उपलब्ध रकम वितरित की जायेगी।

फर्म के लेनदार तथा साझेदारों के निजी लेनदार - फर्म की सम्पत्तियों में से भुगतान पाने का पहला अधिकार फर्म के लेनदारों को है। उन्हें पूरा भुगतान मिलने के बाद साझेदार को फर्म की सम्पत्तियों में से जो कुछ मिले उसका उपयोग साझेदार अपने निजी लेनदारों को चुकाने के लिए कर सकता है। इसी प्रकार साझेदार की निजी सम्पत्तियों में से पहले उसके निजी लेनदार भुगतान लेंगे। उन्हें पूरा भुगतान मिलने के बाद जो रकम शेष रहे इसका उपयोग फर्म के लेनदारों को भुगतान करने के लिए किया जा सकता है (यदि फर्म की सम्पत्तियाँ अपने लेनदारों को पूरा भुगतान करने के लिए अपर्याप्त हों)।

४.१.५ फर्म की बहियां बन्द करना (Closing the Books of the Firm)

साझेदारी फर्म के विघटन की सभी स्थितियों में फर्म की बहियां बंद करना आवश्यक हो जाता है। केवल एक ऐसी स्थिति की कल्पना की जा सकती है जब फर्म का कोई एक साझेदार फर्म का व्यापार रख ले। साझेदारों की संख्या दो से कम होने के कारण साझेदारी फर्म तो भंग करनी ही पड़ेगी परन्तु लेखांकन की दृष्टि से अन्य साझेदारों का हिसाब चुकता करते हुए एक साझेदार बहियों को चालू रख सकता है।

४.१.५.१ वसूली खाता (Realisation Account)

फर्म के विघटन पर बहियां बंद करने के क्रम में वसूली खाता सर्वाधिक महत्व का माना जाता है। इसके द्वारा विभिन्न सम्पत्तियों व दायित्वों के खाते बंद किये जाते हैं तथा वसूली से होने वाले लाभ-हानि की गणना की जाती है। वसूली खाता दो प्रकार से बनाया जा सकता है :-

(i) विभिन्न सम्पत्ति खातों की वसूली तथा लेनदारों को भुगतान संबंधी प्रविष्टियॉ उन खातों में करते हुए केवल उन खातों के यथार्थ मूल्य तथा अंकित मूल्य का अंतर वसूली खाते में स्थानान्तरित करना।

टिप्पणी

(ii) वसूली योग्य अथवा चालू व्यापार के क्रेता को दिये जाने वाले सम्पत्तियों और दायित्वों के खातों का पुस्तक मूल्य पूरा का पूरा वसूली खाते में स्थानान्तरित करना तथा इनकी वसूली तथा लेनदारों को भुगतान संबंधी प्रविष्टियॉ भी वसूली खाते में ही करना।

वसूली से संबंधित खर्च वसूल की गई राशि में से घटा दिया जाय या वसूली खाते के नाम पक्ष की ओर लिख दिया जाय तो इन दोनों ही स्थितियों में वसूली खाते के दोनों पक्षों का अंतर लाभ-हानि प्रदर्शित करेगा।

नोट :-

फर्म के चिठ्ठे में लिखित सम्पत्तियों एवं दायित्वों के मूल्यों को सामने रखकर वसूली पर होने वाले लाभ–हानि की गणना आसानी से हो जाती है। यदि समापन लेखा वर्ष के अंत में हो रहा हो तो उस समय का चिठ्ठा स्वतः ही उपलब्ध रहता है। इसके विपरीत वर्ष के बीच में समापन हो रहा हो तो उचित होगा कि औपचारिक रूप से अंतिम लेखे तैयार कराये जाये तथा चिठ्ठे के आधार पर वसूली खाता तैयार करवाया जाय।

लेखा प्रविष्टियां (Accounting Entries) :

फर्म के विघटन पर बहियां बंद करने तथा वसूली खाता बनाने के लिए प्रविष्टियां प्रायः दो वैकल्पिक रूपो में की जा सकती हैं -

१. जब वसूली खाते में अन्य खातों के वसूली व भुगतान के पश्चात् अवशिष्ट शेष स्थानान्तरित करने हों।

२. जब वसूली खाते में विभिन्न सम्पत्तियों व दायित्व खातों को स्थानान्तरित करना हो।

४.१.५.१.१. जब वसूली खाते में अन्य खातों के वसूली व भुगतान के पश्चात् अवशिष्ट शेष स्थानान्तरित करने हों -

(i) सम्पत्तियों के विक्रय पर (For sale of asset)

Cash/Bank/Buyer A/c Dr.

To Particular Property A/c

(ii) किसी साझेदार द्वारा कोई सम्पत्ति लेना स्वीकार करने पर (In case any asset taken by the partner)

Partners'Capital or Current A/c Dr.

To Assets A/c

(iii) बाह्य पक्षों के दावों का भुगतान करने पर (For payment of outside liability)

टिप्पणी

Creditors A/c Dr.

To Cash/Bank A/c

(iv) लेनदारों को कोई सम्पत्ति हस्तांन्तरित करने पर (In case any asset transferred to creditor)

Creditors A/c Dr.

To Asset A/c

(v) विभिन्न सम्पत्ति खातों के अंकित मूल्य से वसूली मूल्य अधिक होने पर (In case realisable value of asset is mroe than its book value)

Asset A/c Dr. (आधिक्य राशि से)

To Realisation A/c

(vi) अंकित मूल्य से वसलूी मूल्य कम होने पर (In case realised value is less than its book value)

Realisation A/c Dr. (कमी की राशि से)

To Asset A/c

(vii) लेनदारों खातों में भुगतान के उपरान्त जमा पक्ष से नाम पक्ष का योग कम होने पर (For transfer of credit balance of creditors account after payment to creditors)

Creditors A/c Dr.

To Realisation A/c

(viii) लेनदार खातें में नाम पक्ष से जमा पक्ष का योग अधिक होने पर (For transfer of debit balance of creditors account after payment to creditors)

Realisation A/c Dr.

To Creditors A/c

(ix) सम्पत्ति की वसूली तथा लेनदार का भुगतान अंकित मूल्य के बराबर होने पर कोई भी भुगतान के अतिरिक्त प्रविष्टि नहीं की जावेगी।

(x) वसूली या भुगतान से संबंधित व्यय फर्म या किसी साझेदार द्वारा करने पर (In case realisation expenses paid by firm or by any partners)

टिप्पणी

Reaslisation A/c Dr.

To Cash/Bank/Paying Partner's Capital / Current A/c

४.१.५.१.२. जब वसूली खाते में विभिन्न सम्पत्ति तथा दायित्व खातों को स्थानान्तरित करना हो

(i) विभिन्न सम्पत्ति खाते बंद करने के लिए (For transfer of various assets account)

Realisation A/c Dr.

To Various Assets A/c (at book value)

नोट : रोकड़ एवं बैंक शेष खातों को वसलूी खातें में नहीं ले जाया जाता क्योंकि इनकी कोई वसूली नहीं होती।

(ii) संपत्ति खातों से संबंधित प्रावधान खाते बंद करने के लिए जैसे ह्रास के लिए या संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान (for transfer of provisions relating to the assets)

Various Provisions A/c Dr.

To Realisation A/c

(Being Prov. for D.D., Prov. for depn., Investment fluct. Res., JLP reserve & other provisions transferred)

(iii) बाह्य पक्षों के प्रति दायित्व सम्बन्धी खातों को बन्द करने के लिए (For transfer of outside liabilities account)

Creditors A/c Dr.

Bills Payable A/c Dr.

Bank Loans A/c Dr.

Outstanding Expenses A/c Dr.

To Realisation A/c

(iv) सम्पत्तियों की बिक्री पर (For sale of assets)

Cash/Bank A/c Dr.

To Realisation A/c

(v) किसी साझेदार द्वारा कोई संपत्ति लिये जाने पर (In case assets taken by

टिप्पणी

partnters)

Partners Capital or Current A/c Dr.

To Realisation A/c

(vi) लेनदारों का भुगतान करने पर (For payments to creditors)

Realisation A/c Dr.

To Cash/Bank A/c (Actual payment)

(vii) किसी लेनदार को कोई संपत्ति दिये जाने पर संपत्ति के स्वीकृत मूल्य की सीमा तक लेनदार का भुगतान हो जावेगा। लेनदार के दावे का जितना भाग चुकता माना जावेगा उसके लिए कोई भी प्रविष्टि करने की आवश्यकता नहीं है। बकाया भुगतान करने पर (vi) की भांति प्रविष्टि होगी। इसके विपरीत लेनदार का पूर्ण भुगतान होकर आधिक्य फर्म को लौटाया जाये तो आधिक्य लौटाने पर (iv) की भांति प्रविष्टि होगी।

(viii) किसी साझेदार द्वारा कोई दायित्व लिये या चुकाये जाने पर (In case any liability paid by partners or taken by partners)

Realisation A/c Dr.

To Partners Capital or Current A/c

(ix) किसी ग्राहक द्वारा चालू व्यापार लिये जाने पर या फर्म के कम्पनी में बदलने पर क्रय प्रतिफल से (In case business purchase by buyer or firm converted into company)

Buyer/Company A/c Dr.

To Realisation A/c

(x) वसूली सम्बन्धी व्यय फर्म या साझेदार द्वारा चुकाये जाने पर (In case realisation expenses paid by firm or partners)

Realisation A/c Dr.

To Cash/Bank/Partner Capital / Current A/c

नोट : कभी कभी प्रश्नों में किसी साझेदार को एक निश्चित राशि देना तय करके समापक नियुक्त कर दिया जाता है तब उपरोक्त प्रविष्टि की ही भांति वसलूी खाता नाम तथा समापन का कार्य करने वाले साझेदार का खाता जमा किया जावेगा तथा साझेदार द्वारा समापन व्यय किये जाने पर फर्म में कोई प्रविष्टि नहीं होगी।

(xi) साझेदार को समापन कार्य के लिए नियुक्त करने पर (In case partner appoint for dissolution work)

Realisation A/c Dr.

To Partners Capital A/c

(xii) साझेदार के ऋण का भुगतान करने पर (For payment of partners loan)

Partners Loan A/c Dr.

To Bank A/c

(xiii) वसूली के लाभ का हस्तांतरण करने पर (For transfer of realsiation profit)

Realisation A/c Dr.

To Partners Capital / Current A/c

(xiv) वसूली की हानि हस्तांतरित करने पर (For transfer of realisation loss)

Partners Capital / Current A/c Dr.

To Realisation A/c

(xv) चालू खातों को बन्द करने पर (For closing of current account)

(a) जब चालू खातों का जमा का शेष हो (When current account has credit balance) :

Partners Current A/c Dr.

To Partners Capital A/c

(b) जब चालू खाते का नाम का शेष हो (When current account has debit balance) :

Partners Capital A/c Dr.

To Partners Current A/c

उपरोक्त दोनो पद्धतियों से प्रविष्टियॉं करने पर फर्म की बहियों में खुले विभिन्न सम्पत्तियों एवं दायित्वों के खाते बंद हो जावेंगे तथा वसूली खाते का जमा पक्ष नाम पक्ष से अधिक होने पर लाभ तथा नाम पक्ष जमा पक्ष से अधिक होने पर हानि होगी जो सामान्य लाभ-हानि की ही भांति साझेदारों के पूंजी या चालू खाते में उनके लाभ-हानि विभाजन अनुपात में स्थानान्तरित कर दी जायेगी।

समापन की दषा में ख्याति का लेखा

फर्म के समापन की दषा में ख्याति का मूल्यांकन करने की कोई आवष्यकता नहीं होती है। चिठ्ठे में यदि ख्याति की कोई रकम दी हुई हो तो उसे अन्य सम्पत्तियों की तरह ही वसलूी खाते में हस्तान्तरित कर दिया जायेगा।

टिप्पणी

यदि फर्म का व्यवसाय किसी साझेदार ने खरीदना स्वीकार किया है तथा वह ख्याति के लिए भी भुगतान करना स्वीकार करता है तो ख्याति की निर्धारित रकम से उसका पूंजी खाता नाम तथा वसूली खाता जमा करेंगें। यदि अन्य किसी व्यक्ति या संस्था को (कम्पनी आदि को) फर्म का व्यवसाय नकद बेचा जा रहा हो तो ख्याति के लिए प्राप्त रकम से रोकड़ या बैंक खाता नाम करेंगे तथा वसूली खाता जमा करेंगे।

बहियों में नहीं लिखे हुए (UnrecordeD) सम्पत्तियों तथा दायित्वों का लेखा

कुछ सम्पत्तियॉ भौतिक रूप से होते हुए भी कई बार बहियों में लिखी हुई नहीं होती है जैसे पूर्णतः अपलिखित की हुई स्थाई सम्पत्तियॉ जो अभी भी कार्यषील स्थिति में हैं या जिन्हें बेचने से कुछ रुपया मिल सकता है। इसी प्रकार कुछ दायित्व भी हो सकते हैं जो पहले बहियों में नहीं लिखे गये हैं परन्तु अब उनका भुगतान करना होगा जैसे छूट पर भुनाये गये प्राप्य विपत्र, गारन्टी अनुबंध तथा मुकदमे आदि के सम्बन्ध में उत्पन्न हुए दायित्व जो अभी तक केवल संदिग्ध दायित्व (Contingent Liability) ही माने गये थे। इन सम्पत्तियों तथा दायित्वों का बहियों में कोई खाता न होने के कारण इनका पुस्तक–मूल्य वसूली खाते में हस्तान्तरित करने का कोई प्रष्न ही उत्पन्न नहीं होता है। इनके सम्बन्ध में प्रविष्टियॉ निम्नलिखित प्रकार से करेंगे :–

(i) सम्पत्ति की बिक्री से प्राप्त रकम से रोकड़ या बैंक खाता नाम तथा वसूली खाता जमा। यदि किसी साझेदार ने ऐसी सम्पत्ति ली है तो रोकड़ या बैंक के बजाय उसका पॅूजी खाता या चालू खाता नाम करेंगे।

(ii) ऐसे दायित्व का भुगतान करने पर वसूली खाता नाम तथा रोकड़ या बैंक को जमा करेंगे। यदि किसी साझेदार ने ऐसे दायित्व का भुगतान करना स्वीकार किया हो तो रोकड़ या बैंक के बजाय उसका पॅूजी खाता या चालू खाता जमा करेंगे।

निश्चित समय के लिए की गई साझेदारी का समय पूर्व समापन

यदि किसी साझेदार ने फर्म में शामिल होते समय ख्याति के लिए कोई रकम अन्य साझेदारों को इस आधार पर दी हो कि साझेदारी एक निश्चित समय तक रहेगी तो ऐसी साझेदारी का समय पूर्व समापन हो जाने पर वह साझेदार अन्य साझेदारों से ख्याति के लिए दी गई रकम का कुछ भाग वापस लेने का अधिकारी हो सकता है। इस रकम का निर्धारण चुकाई गई रकम, निर्धारित अवधि तथा अन्य सम्बन्धित तथ्यों को ध्यान में रखकर किया जायेगा। फर्म के समापन के लेखे बनाते समय इसकी प्रविष्टि निम्नलिखित प्रकार से करेंगे -

जो साझेदार रकम वापस पाने का अधिकारी है उसका पूंजी खाता या चाूल खाता जमा तथा अन्य साझेदारों के पूंजी खाते या चालू खाते नाम करेंगे। अन्य साझेदार इस रकम का नुकसान अपने लाभ-विभाजन अनुपात में सहन करेंगे।

भारतीय साझेदारी अधिनियम १९३२ की धारा ५१ में इस आशय का प्रावधान है। इस धारा के अनुसार फर्म का समापन किसी साझेदार की मृत्यु होने, या रकम मांगने वाले साझेदार के स्वयं के दुराचरण (Misconduct) के कारण हुआ हो या साझेदारों ने ऐसा समझौता कर लिया हो कि कोई रकम देय नहीं होगी तो वह साझेदार ऐसी कोई रकम पाने का अधिकारी नहीं होगा।

उदाहरण (Illustration) : 1

टोम, डिक तथा हेरी की साझेदारी फर्म का ३० जून २००८ को समाप्त वित्तीय वर्ष का स्थिति-विवरण निम्नलिखित था - (Following was the Balance Sheet of the partnership firm of Tom, Dick and Heri for the financial year ended on 30 June, 2008).

	Rs.			Rs.
Trade Creditors	18,000	Cash in hand		17,250
Provision for Depreciation	18,000	Cash at Bank		2,750
Staff P.F. Deposits	10,000	Bills Receivable	Rs.	6,000
Loan Creditors	16,000	Sundry Debtors	18,000	
Tom's Loan	10,000	Less: Prov. for discount	900	17,100
Outstanding Salary Bills	4,000	Stock		20,900
Capital : Tom	60,000	Furniture		14,000
Dick	48,000	Machinery		26,000
Heri	2,000	Building		60,000
		Patents		5,000
		Loan to Heri		4,000
		Goodwill		13,000
	1,86,000			**1,86,000**

टोम तथा डिक ने एक निजी कम्पनी की स्थापना करने का प्रस्ताव रखा जो सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया परन्तु हेरी ने कम्पनी के साथ अपना संबंध रखने से मना कर दिया। निम्नलिखित अतिरिक्त जानकारी को ध्यान में रखते हुए दोनों पद्धतियों से आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टियां दीजिये तथा वसूली खाता बनाइये - (Tom and Dick proposed to form a company which was unanimously accepted but Heri refused to keep any relation with the company. From the following information, pass necessary jounal entries and prepare the Realisation account under both the methods).

(i) ९,००० रु. के व्यापारिक लेनदारों ने अपने सम्पूर्ण भुगतान में १२,००० रु. का स्टॉक लेना स्वीकार किया। शेष व्यापारिक लेनदारों का ५ प्रतिशत बट्टे पर नकद भुगतान कर दिया गया। (Trade creditors for Rs. 9,000 agreed to accept stock amounting to Rs. 12,000 in full settlement. Remaining trade creditors were paid cash at 5% discount).

(ii) ऋणदाता लेनदारों का १० प्रतिशत वाषिक दर से ६ माह का ब्याज उपार्जित हो गया था। टोम तथा डिक ने आधे आधे लेनदार (ब्याज का समायोजन करने के पश्चात) अपने जिम्मे ले लिये। (6 months' interest at 10% p.a. had accrued on the loan creditors. Tom and Dick took charge of the creditors in

equal proportions).

(iii) फर्म के कर्मचारियों को कम्पनी में नियुक्ति दे दी गई अतः उनका बकाया वेतन तथा जमा भविष्य निधि कम्पनी के जिम्मे डाल दिये गये। (Firms employees were appointed in the company so company was made responsible for their outstanding salary and P.F. deposits).

(iv) प्राप्य बिलों पर दातव्य तिथि से पूर्व भुगतान करने के लिये ६ प्रतिशत की छूट देनी पड़ी तथा अन्य देनदारों पर औसतन ४ प्रतिशत नकद बट्टा काटा गया। (Bills receivables were collected at a rebate of 6% for early payment and on an average, cash discount of 4% was allowed on debtors).

(v) कम्पनी ने शेष स्कंध पुस्तक मूल्य पर, मशीनरी १० प्रतिशत कम मूल्य पर तथा भवन २० प्रतिशत अधिक मूल्य पर लेना तय किया। (The Co. agreed to takeover the remaining Stock at book value, Machinery at 10% less and Buildings at 20% higher value).

(vi) फर्म की ख्याति का मूल्यांकन २०,००० रु. पर किया गया। इसके बदले कम्पनी ने अपने पूर्ण प्रदत्त अंष अंकित मूल्य पर फर्म को दिये। इसमें से आधे अंष २० प्रतिषत प्रीमियम पर रोकड़ के बदले बेचे दिये गये तथा शेष अंषों को इसी बढ़ी हुई दर पर टोम तथा डिक ने आधा आधा बांट लिया। (Goodwill of the firm was valued at Rs. 20,000 and the company allotted its shares at face value to the firm as fully paid in lieu of goodwill. Half of the shares were sold for cash at 20% higher than the face value and the remaining shares were takenover by Tom and Dick in equal proportions at this increased rate).

(vii) फर्नीचर हेरी को १२,००० रु. पर देना तय किया गया तथा पेटेन्टस को मूल्यहीन माना गया। (Furniture was agreed to be given to Heri at Rs. 12,000 and patents were deemed to be valueless).

(viii) फर्म को तथा फर्म द्वारा साझीदारों के ऋणों पर बकाया ब्याज न लेने देने का समझौता हो गया। (An agreement was made not to pay or receive interest accrued on partners loans to and from the firm).

(ix) ३८० रु. का एक मरम्मत का बकाया बिल चुकाया गया जिसका लेखा फर्म की बहियों में होने से रह गया था। (An outstanding bill for repairs for Rs. 380 was paid which had remained unrecorded in the firm's books).

(x) समापन सम्बन्धी कार्य का दायित्व डिक पर डाला गया तथा इसके लिए १,००० रु. का पारिश्रमिक देना तय किया गया। डिक ने समापन के वास्तविक खर्च का भुगतान करना तय किया जो ९०० रु. लगे। (Dick was allotted the work of dissolution for an agreed remuneration of Rs. 1,000. Dick agreed to bear the actual expenses of dissolution which amounted to Rs. 900).

(xi) कम्पनी ने देय भुगतान नकद में कर दिया। (Company paid the amount due in cash).

हल (Solution) :

First Method

JOURNAL

		Rs.	Rs.
Cash A/c	Dr.	5,640	
Realisation A/c	Dr.	360	
To Bills Receivable A/c			6,000
(Being B/R retired at 6% rebate)			
Cash A/c	Dr.	17,280	
Provision for discount A/c	Dr.	900	
To Sundry Debtors A/c			18,000
To Realisation A/c			180
(Being payment received at 4% discount)			

		Rs.	Rs.
Creditors A/c	Dr.	18,000	
To Stock A/c			9,000
To Cash A/c			8,550
To Realisation A/c			450
(Being Creditors paid off partly in cash at 95% and the rest in the form of stock at 75%)			
Purchasing Co. A/c	Dr	1,24,300	
To Stock A/c			8,900
To Machinery A/c			23,400
To Building A/c			72,000
To Goodwill A/c			20,000
(Being various assets taken over at the stated values)			
Building A/c	Dr.	12,000	
Goodwill A/c	Dr.	7,000	
Provision for depreciation A/c	Dr.	18,000	

टिप्पणी

To Realisation A/c		37,000
(Being profit of Rs. 12,000 on Building Rs. 7,000 on Goodwill and Depreciation Account transferred to Realisation Account)		
Realisation A/c Dr.	5,600	
To Stock A/c		3,000
To Machinery A/c		2,600
(Being loss on Stock and Machinery transferred)		
Staff P.F. Deposits A/c Dr.	10,000	
Outstanding staff Salary A/c Dr.	4,000	
To Purchasing Co. A/c		14,000
(Being liabilities taken over)		
Realisation A/c Dr.	800	
To Loan Creditors A/c		800
(Being interest due on loan)		
Loan Creditors A/c Dr.	16,800	
To Tom's Capital A/c		8,400
To Dicks'Capital A/c		8,400
(Being loan Creditors taken over)		

	Rs.	Rs.
Heri's Capital A/c Dr.	12,000	
To Furniture A/c		12,000
(Being Furniture taken over by Heri)		
Realisation A/c Dr.	7,000	
To Furniture A/c		2,000
To Patents A/c		5,000
(Being loss on Furniture and Patents transferred)		
Realisation A/c Dr.	1,380	
To Cash A/c		380
To Dick's Capital A/c		1,000
(Being realisation expenses and outstanding bill cleared)		
Cash A/c Dr	90,300	

टिप्पणी

Shares in Purchasing Co. A/c	Dr	20,000	
To Purchasing Co. A/c			1,10,300
(Being cash and shares received from purchasing co.)			
Cash A/c	Dr	12,000	
Tom's Capital A/c	Dr	6,000	
Dick's Capital A/c	Dr	6,000	
To Shares in purchasing Co. A/c			24,000
(Being disposal of shares)			
Shares in Purchasing Co. A/c	Dr	4,000	
To Realisation A/c			4,000
(Being profit on shares credited)			
Cash A/c	Dr	4,000	
To Loan to Heri A/c			4,000
(Being receipt from Heri)			
Tom's Loan A/c	Dr	10,000	
To Cash A/c			10,000
(Being Loan paid off)			
Realisation A/c	Dr	26,490	
To Tom's Capital A/c			8,830
To Dick's Capital A/c			8,830
To Heri's Capital A/c			8,830
(Being realisation profit credited)			
Cash A/c	Dr	1,170	
To Hery's Capital A/c			1,170
(Being Cash received from Hery)			

			Rs.	Rs.
	Tom's Capital A/c Dr.		71,230	
	Dick's Capital A/c		60,230	
	To Cash A/c			1,31,460
	(Being Partners paid off)			

Dr Realisation Account Cr.

	Rs.		Rs.
To Bill Receivable (Loss) A/c	360	By Provision for discount A/c	180
To Loan Creditors (Interest) A/c	800	By Creditors A/c	450
To Stock A/c	3,000	By Shares in Purchasing Co.	4,000
To Machinery A/c	2,600	By Building A/c	12,000
To Furniture A/c	2,000	By Goodwill A/c	7,000
To Patents A/c	5,000	By Prov. for Depn. A/c	18,000
To Cash A/c	380		
To Dick's Capital A/c	1,000		
To Partners Capital A/cs :			
Rs.			
Tom 8,830			
Dick 8,830			
Hery 8,830	26,490		
	41,630		**41,630**

Partners Capital Accounts

	Tom Rs.	Dick Rs.	Heri Rs.		Tom Rs.	Dick Rs.	Heri Rs.
To Furniture A/c	—	—	12,000	By Realisation A/c	60,000	48,000	2,000
To Shares in Purchasing				By Loan Crs. A/cs	8,400	8,400	—
Co. A/c	6,000	6,000	—	By Realisation A/c			
To Cash A/c	71,230	60,230	—	(Expenses)	—	1,000	—
				By Realisation A/c			
				(Profit)	8,830	8,830	8,830
				By Cash A/c	—	—	1,170
				(Balaning Figure)			
	77,230	**66,230**	**12,000**		**77,230**	**66,230**	**12,000**

Second Method

JOURNAL

Date	Particulars		L F	Dr.	Cr.
				Rs.	Rs.
	Realisation A/c	Dr.		1,62,000	
	To Bills Receivable A/c				6,000
	To Patent A/c				5,000
	To Goodwill A/c				13,000
	To Sundry Debtors A/c				18,000
	To Stock A/c				20,900
	To Furniture A/c				14,000
	To Machinery A/c				26,000
	To Building A/c				60,000
	(Being above aseets transferred to Realisation Account at book values)				
	Trade Creditors A/c	Dr.		18,000	
	Provision for Depreciation A/c	Dr.		18,000	
	Staff P.F. Deposit A/c	Dr.		10,000	
	Loan Creditors A/c	Dr.		16,000	
	Outstanding Staff Salary A/c	Dr.		4,000	
	Provision for discount A/c	Dr.		900	
	To Realisation A/c				66,900
	(Being Outside Liabilities transferred)				
	Purchasing Co. A/c	Dr.		1,24,300	
	To Realisation A/c				1,24,300

टिप्पणी

	(Being some assets taken over by the Co. at an agreed valuation)			
	Realisation A/c Dr.		14,000	
	To Purchasing Co. A/c			14,000
	(Being staff P.F. and Outstanding staff salary taken over by the Co.)			
	Cash A/c Dr.		22,920	
	To Realisation A/c			22,920
	(Being realisation of Rs. 5,640 from B/R and Rs. 17,280 from Debtors)			
	Realisation A/c Dr.		1,000	
	To Dick's Capital A/c			1,000
	(Being realisation remuneration Allowed)			

Date	Particulars	L F	Dr.	Cr.
			Rs.	Rs.
	Realisation A/c Dr.		8,930	
	To Cash A/c			8,930
	(Being Rs. 8,550 paid to Creditors and Rs. 380 for Repairs Bills)			
	Realisation A/c Dr.		16,800	
	To Tom's Capital A/c			8,400
	To Dick's Capital A/c			8,400
	(Being loan Creditors taken over by the partners together with interest)			
	Cash A/c Dr.		90,300	
	Share in Purchasing Co. A/c Dr.		20,000	
	To Purchasing Co. A/c			1,10,300
	(Being Purchase consideration received)			
	Cash A/c Dr.		12,000	
	Tom's Capital A/c Dr.		6,000	
	Dick's Capital A/c Dr.		6,000	
	To Shares in Purchasing Co. A/c			20,000

	To Realisation A/c (Being half of shares sold away and rest distributed between partners at 120%)			4,000
	Cash A/c Dr. To Loan to Heri A/c (Being Cash Received from Heri)		4,000	4,000
	Heri's Capital A/c Dr. To Realisation A/c (Being Furniture taken over by Heri)		12,000	12,000
	Tom's Loan A/c Dr. To Cash A/c (Being Tom's Loan Paid off)		10,000	10,000
	Realisation A/c Dr. To Tom's Capital A/c To Dick's Capital A/c To Hery's Capital A/c (Being realisation profit distributed in equal ratio)		26,490	8,830 8,830 8,830

Date	Particulars		L F	Dr.	Cr.
				Rs.	Rs.
	Cash A/c	Dr.		1,170	
	To Hery's Capital A/c				1,170
	(Being Cash received from Heri)				
	Tom's Capital A/c	Dr.		71,230	
	Dick's Capital A/c	Dr.		60,230	
	To Cash A/c				1,31,460
	(Being paid to Partners against Capital balances)				

नोट :-

(i) लेनदारों को १२,००० रु. के अंकित मूल्य के स्टॉक देने की कोई प्रविष्टि नहीं होगी।

(ii) पेटेन्टस के मूल्यहीन होने के कारण हस्तान्तरण के अलावा कोई प्रविष्टि नहीं होगी।

(iii) **Calculation of assets taken by Purchasing Companey :**

	Rs.
Stock	8,900
Machinery	23,400
Building	72,000
Goodwill	20,000
	1,24,300

Dr. **Realisation Account** **Cr.**

	Rs.		Rs.
To B.R A/c	6,000	By Trade Creditors A/c	18,000
To Patent A/c	5,000	By Provision for depreciation A/c	18,000
To Goodwill A/c	13,000	By Staff P.F. Deposit A/c	10,000
To Debtors A/c	18,000	By Loan Creditors A/c	16,000
To Stock A/c	20,900	By Outstanding Staff Salary A/c	4,000
To Furniture A/c	14,000	By Provision for Discount A/c	900
To Machinery A/c	26,000	By Purchasing Co. (Assets taken	
To Building A/c	60,000	over) A/c	1,24,300
To Purchasing Co. A/c	14,000	By Cash (Assets realised) A/c	22,920
(Liabilities taken)		By Shares of Purchasing Co. A/c	
To Dick's Cap. A/c (Expenses)	1,000	(Profit on sale of shares)	4,000
To Cash A/c	8,930	By Heri's Cap. A/c (Furniture)	12,000
To Tom's Cap. A/c (Shares)	8,400		
To Dick's Cap. A/c (Shares)	8,400		
To Tom's Cap. A/c	8,830		
To Dick's Cap. A/c	8,830		
To Hery's Cap. A/c	8,830		
	2,30,120		**2,30,120**

उदाहरण (Illustration) : २

एक्स, वाई तथा जेड़ १९६५ से व्यापार चला रहे है, ३० जून, २००८ को साझेदारी को भंग करने का निर्णय किया तब उनका चिट्ठा निम्नलिखित था – (X, Y and Z carrying on business since 1965 decided to dissolve their partnership on 30th June, 2008 when their Balance Sheet was as under) :–

	Rs.		Rs.
Creditors	34,000	Cash	25,000
Capital A/c's :		Debtors	62,000
X	1,20,000	Stock	37,000
Y	90,000	Tools	8,000
Z	60,000	Motor Car	12,000
		Machinery	60,000
		Freehold Building	1,00,000
	3,04,000		**3,04,000**

टिप्पणी

वाई तथा जेड व्यापार को चालू रखने के लिए नई साझेदारी बनाने पर सहमत हुए तथा यह सहमति हुई कि वे पुरानी फर्म से निम्नलिखित सम्पत्तियां उनके सामने प्रदर्शित मूल्य पर प्राप्त करे। (Y and Z agreed to form a new partnership to carry on the business and it is agreed that they shall acquire from the old firm the following assets at amount shown here under) :–

	Rs.		Rs.
Stock	40,000	Machineries	78,000
Tools	5,000	Freehold Building	84,000
Motor Car	25,000	Goodwill	60,000

एक्स, वाई तथा जेड के साझेदारी संलेख में व्यवस्था थी कि व्यापारकि लाभ या हानियां ३:२:१ के अनुपात में विभाजित की जाय तथा पूंजीगत लाभ तथा हानियां उनकी पूंजी के अनुपात में विभाजित की जाय। (The partnership agreement of X, Y and Z provided that trading profits and losses shall be devided in the ratio of 3:2:1 and that capital profits or losses shall be divided in proportion of their capital).

देनदारों से ५९,००० रु. वसूल हुए तथा लेनदारों को देय भुगतान में ७२० रु. का बट्टा अर्जित हुआ। (Debtors realise Rs. 59,000 and discount amounting to Rs. 720 are secured on payment due to creditors).

इन व्यवहारों का प्रभाव बतलाते हुए एक्स, वाई तथा जेड के आवश्यक खाते बनाइये तथा वाई एवं जेड का प्रारंभिक चिट्ठा बनाइये जो एक्स को भुगतान करने के लिए आवश्यक रोकड़ 3:2 के अनुपात में लायेंगे। (Prepare the necessary accounts of X, Y and Z giving effect to these transactions and prepare the opening Balance Sheet of Y and Z who bring the necessary cash in the ratio of 3:2 to pay to X).

हल (Solution) :

वसूली खाते से होने वाला लाभ या हानि व्यापारिक लाभ नहीं है, अतः उसे साझेदारों की पूंजी के अनुपात (१२:९:६ या ४:३:२) में बांटा जायेगा।

Realisation Account

	Rs.		Rs.
To Debtors A/c	62,000	By Creditors A/c	34,000
To Stock A/c	37,000	By Cash A/c	59,000
To Tools A/c	8,000	By M/s. X and Y A/c	2,92,000
To Motor Car A/c	12,000		
To Machinery A/c	60,000		
To Freehold Building A/c	1,00,000		
To Cash A/c	33,280		

To Partners Capital A/c : Rs. X 32,320 Y 24,240 Z 16,160	72,720		
	3,85,000		**3,85,000**

Partners Capital Account

	X Rs.	Y Rs.	Z Rs.		X Rs.	Y Rs.	Z Rs.
To Cash A/c	1,52,320	—	—	By Balance b/d	1,20,000	90,000	60,000
To Balance c/d	—	1,75,200	1,16,800	By Realisation A/c	32,320	24,240	16,160
				By Cash A/c	—	60,960	40,640
	1,52,320	**1,75,200**	**1,16,800**		**1,52,320**	**1,75,200**	**1,16,800**

Cash Account

		Rs.			Rs.
	To Balance b/d	25,000		By Creditors A/c	33,280
	To Realisation A/c	59,000		By Balance c/d	50,720
		84,000			84,000
	To Balance b/d	50,720		By X Capital A/c	1,52,320
	To Y & Z Capital A/c	1,01,600			
	(Balancing Figure)				
		1,52,320			**1,52,320**

Balance Sheet of X and Y as on 30th June, 2008

	Rs.		Rs.
Capital A/c's :		Goodwill	60,000
X	1,75,200	Freehold Building	84,000
Y	1,16,800	Machineries	78,000
		Motor Car	25,000
		Tools	5,000
		Stock	40,000
		Cash	—
	2,92,000		**2,92,000**

टिप्पणी

Calculation of amount bring by Y and Z

Y should brings = Rs. 1,01,600 x 3/5 or Rs. 60,960

Z should brings = Rs. 1,01,600 x 2/5 or Rs. 40,640

४.१.५.२ साझेदारों के खाते बन्द करना (Closing of the Partners' Accounts)

वसूली खाता तैयार होने के साथ ही साथ फर्म की बहियों में लिखित सम्पत्ति खाते और बाह्य पक्षों के प्रति दायित्व खाते बन्द हो जाते हैं। साझेदारों के पूंजी खाते, चालू खाते, ऋण खाते, अवितरित लाभ-हानि खाते शेष रह जाते हैं। इनका अन्तिम निपटारा करने के लिए आवश्यक नकद तथा बैंक शेष एवं सम्पत्तियों की बिक्री पर प्राप्त प्रतिभूतियां या तो बेच दी जाती हैं या साझेदारों में उनकी बकाया पूंजी के अनुपात में बांट दी जाती है।

जब तक फर्म में एक भी साझेदार सक्षम रहता है, बाह्य पक्षों के दावें शत प्रतिशत चुकाना वैधानिक तौर पर अनिवार्य माना जाता है क्योंकि फर्म और साझेदार बाह्य जगत के लिए पृथक व्यक्ति नहीं माने जाते। किन्हीं साझेदारों की आर्थिक अक्षमता का प्रभाव अन्य साझेदारों पर पड़ता है। यदि सारे साझेदार अक्षम हो जाये तो फर्म के लेनदारों को फर्म में उपलब्ध सम्पत्तियों से ही संतोष करना पड़ता है। यह फर्म के दिवालिया होने की स्थिति है। अतः अन्तिम रूप से बहियां बन्द करने की व्यवस्था का अध्ययन तीन शीर्षकों के अन्तर्गत करना उचित होगा :-

(१) जब सारे साझेदार सक्षम हों।

(२) जब एक या अधिक (परन्तु कम से कम एक को छोड़कर) साझेदार अक्षम हो जायें।

(३) जब फर्म के सभी साझेदार अक्षम हो जायें।

४.१.५.२.१ जब सभी साझेदार सक्षम हों (When all the Partners are Solvent)

इस स्थिति में बाह्य पक्षों के दावों का भुगतान करने में कोई कठिनाई नहीं आती। वसूली व भुगतान के फलस्वरूप उत्पन्न लाभ-हानि साझेदारों के पूंजी खातों में (यदि कोई पूंजी खाते स्थायी पद्धति पर रखे गये हों तो चालू खातों में) उनके लाभ-हानि अनुपात में बांट दिये जाते हैं। यदि फर्म की बहियों में पूर्वकाल के अवितरित लाभ-हानि खाते विद्यमान हों तो उन्हें भी उपरोक्त प्रकार से साझेदारों के खातों में हस्तांतरित कर दिया जाता है। साझेदारों द्वारा फर्म से लिए गये ऋण लौटा दिये जाते हैं तथा फर्म को दिये गये ऋणों का भी भुगतान प्राप्त कर लिया जाता है। इन पर कोई ब्याज उपार्जित (accured) हो गया हो तो वसूली खाते के माध्यम से समायोजित किया जा सकता है। सभी साझेदारों के सक्षम होने की स्थिति में किसी भी खाते पर बकाया भुगतान प्राप्त करने में कठिनाई नहीं होती। पूर्वकाल में किये गये अधिक आहरण (drawings) के कारण अथवा फर्म द्वारा उठाई गई हानियों के कारण किन्हीं साझेदारों के खातों में नाम का शेष हो गया हो अथवा वसूली की हानि अधिक होने से यह स्थिति उत्पन्न हो गई हो तो उस साझेदार से राशि लाने को कहा जा सकता है।

उदाहरण (Illustration) : ३

आस, डंकी और जेबरा ३:२:१ के अनुपात में लाभ-हानि बांटने वाले साझेदार थे। उनकी फर्म के समापन पर सम्पत्तियों की वसूली और बाह्य लेनदारों का भुगतान करने के पश्चात् निम्नलिखित स्थिति आंकी गई - (Ass, Donkey and Zebra were partners sharing profits and losses in proportions of 3:2:1. On the dissolution of their firm, following was their position after all the assets were realised and outside liabilities were paid off).

	Rs.		**Rs.**
Ass's Loan	10,000	Cash in hand and at Bank	13,000
(Accrued Interest Rs. 600)		Zebra's Loan	8,000
Ass's Current A/c	5,000	(Accrued Interest Rs. 450)	

	Rs.		**Rs.**
Zebra's Current A/c	3,000	Donkey's Current A/c	2,500
General Reserve	12,000	Loss on realisation	16,500
Capital Account's :		(before adjusting Intt. on Loan)	
Ass	10,000	Shares (at market price to be	
Donkey	5,000	retained by Ass & Zebra in	
Zebra	5,000	equal ratio)	10,000
	50,000		**50,000**

हल (Solution) :

Dr. **Realisation Account** **Cr.**

	Rs.		**Rs.**
To Balance b/d	16,500	By Interest on Loan to Zebra A/c	450
To Interest on Loan from Ass A/c	600	By Partners Current A/c's: Rs.	
		Ass 8,325	
		Donkey 5,550	
		Zebra 2,775	16,650
	17,100		**17,100**

टिप्पणी

Dr. Partners Loan Account Cr.

	A Rs.	Z Rs.		A Rs.	Z Rs.
To Balance b/d	—	8,000	By Balance b/d	10,000	—
To Realisation A/c	—	450	By Realisation A/c	600	—
To Cash A/c	10,600	—	By Cash A/c	—	8,450
	10,600	**8,450**		**10,600**	**8,450**

Partners Current Accounts

	A Rs.	D Rs.	Z Rs.		A Rs.	D Rs.	Z Rs.
To Balance b/d	—	2,500	—	By Balance b/d	5,000	—	3,000
To Realisation A/c	8,325	5,550	2,775	By General Reserve	6,000	4,000	2,000
To Partners Capital A/c's	2,675	—	2,225	By Partners Cap. A/c	—	4,050	—
	11,000	**8,050**	**5,000**		**11,000**	**8,050**	**5,000**

Partners Capital Accounts

	A Rs.	D Rs.	Z Rs.		A Rs.	D Rs.	Z Rs.
To Shares A/c	5,000	—	5,000	By Balance b/d	10,000	5,000	5,000
To Current A/c	—	4,050	—	By Current A/c's	2,675	—	2,225
To Cash A/c	7,675	950	2,225				
	12,675	**5,000**	**7,225**		**12,675**	**5,000**	**7,225**

Dr. Cash and Bank Account Cr.

	Rs.			Rs.
To Balance b/d	13,000	By Ass's Loan A/c		10,600
To Zebra's Loan A/c	8,450	By Partner's Capital A/cs	Rs.	
		Ass	7,675	
		Donkey	950	
		Zebra	2,225	10,850
	21,450			**21,450**

४.१.५.२.२ जब एक या अधिक साझेदार अक्षम हो जाये

फर्म के समापन पर वसूली के लाभ-हानि का वितरण करने के बाद यदि एक साझेदार के पूंजी खाते का नाम शेष आता है तो वह यह रकम निजी साधनों से लाकर फर्म को देता है। परन्तु ऐसा साझेदार यदि दिवालिया हो तो फर्म को वह पूरी रकम या उसका अंश चुकाने में असमर्थ होगा। इस कारण फर्म को जो हानि होगी उसे अन्य साझेदार किस अनुपात में सहन करेंगे यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। इसका समाधान निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है : (i) साझेदारी अनुबन्ध में जो आधार निर्धारित किया गया हो उसके अनुसार, लाभ-विभाजन अनुपात या अन्य कोई भी आधार हो सकता है। (ii) साझेदारी अनुबन्ध में इस पर कोई स्पष्ट प्रावधान नहीं हो तो गार्नर बनाम मर्रें (Garner v/s Murray) के निर्णय के अनुसार समाधान होगा।

गार्नर बनाम मर्रें का विवाद :

गार्नर बनाम मर्रे का निर्णय इंग्लैण्ड में दिया गया था। यह भारत में लागू होता है या नहीं यह प्रष्न विवादास्पद है। बहुमत इस पक्ष में हैं कि अनुबन्ध में स्पष्ट व्यवस्था न होने पर यह निर्णय भारत में भी लागू होगा। लेखांकन की दृष्टि से इस निर्णय के प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित हैं :–

(i) वसूली की हानि को दिवालिये साझेदार सहित सभी साझेदारों में उनके लाभ-विभाजत अनुपात में बांटा जाना चाहिये।

(ii) प्रत्येक सक्षम (Solvent) साझेदार वसूली की हानि का अपना भाग नकद लायेगा।

(iii) दिवालिया साझेदार के पूंजी खाते में नाम शेष (हानि) को अन्य साझेदारों में उनके पूंजी अनुपात में बांट दिया जायेगा।

पूंजी अनुपात का अर्थ (Meaning of Capital Ratio)

गार्नर बनाम मर्रें के मुकदमें के निर्णय के अनुसार पूंजी अनुपात में हानि का वितरण करने के लिए 'पूंजी अनुपात' का अर्थ निम्नलिखित है :–

(i) जब पूंजी खाते स्थिर (Fixed) हों तो उन खातों के प्रारम्भिक शेष (समापन से पूर्व अन्तिम चिट्ठे में शेष) से पूंजी अनुपात निर्धारित करेंगे (इस उद्देश्य के लिये चालू खातों के शेषों पर कोई ध्यान नहीं दिया जायेगा।)

(ii) जब पूंजी खाते परिवर्तनशील (fluctuating) हों तो संचय, अवितरित लाभ, पूंजी पर ब्याज, आहरण व इस पर ब्याज (समापन की तिथि तक) आदि के समायोजन करने के बाद (परन्तु वसूली के लाभ-हानि वितरित करने से पूर्व) पूंजी खातों के जो शेष हा उससे पूंजी अनुपात निर्धारित करेंगे।

गार्नर बनाम मर्रे विवाद के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं का विवेचन :

(i) **सक्षम साझेदारों से वसूली खाते की हानि नकद मंगवाना** — इसमें न्यायाधीश का आशय केवल यही था कि सक्षम साझेदारों के पूंजी खातों के शेष पुनः वे ही हो जायं जो वसूली से ठीक पहले थे। अतः जब तक प्रश्न

टिप्पणी

में गार्नर बनाम मर्रे के फैसले को लागू करने का स्पष्ट आदेश न हो, नकद राशि मंगवाना आवश्यक नहीं है

(ii) **अक्षम साझेदार की न्यूनता को सक्षम साझेदारों द्वारा पूंजी अनुपात में सहन करना** — यह निर्णय तत्कालीन मान्यता से भिन्न था। लोग सामान्य हानि की ही भांति इस हानि का भी वितरण लाभ हानि अनुपात में कर दिया करते थे। निर्णय में नया दृष्टिकोण दिया गया। न्यायाधीश का कथन था कि समापन के समय प्रश्न हानि बांटने का न होकर उपलब्ध राशि विभिन्न दावेदारों में बांटने का रहता है। यदि विभिन्न पक्षों के दावों की तुलना में उपलब्ध राशि कम हो तो सामान्य ज्ञान के अनुसार उसे दावों के अनुपात में ही बाँट दिया जावेगा। फलस्परूप कमी भी स्वतः दावों के अनुपात में ही बंट जावेगी। निर्णय में अक्षम साझेदार की न्यूनता साझेदारों के पूँजी अनुपातों में बांटने की बात केवल लेखांकन की दृष्टि से ही नहीं कही गई थी। इसमें व्यावहारिकता भी अधिक थी।

(iii) **निर्णय लागू किये जाने की अनिवार्यता-** यह न्यायालय का निर्णय था न कि अधिनियम की व्यवस्था। अतः साझेदारों में स्पष्ट समझौते के अभाव में अक्षम साझेदार की न्यूनता सहन करने के प्रश्न पर विवाद उठने की स्थिति में ही यह निर्णय लागू होता है। दूसरे शब्दों में साझेदार यदि चाहें तो अपने समझौते में अक्षम साझेदार की न्यूनता बांटने के लिए लाभ हानि अनुपात को उपयुक्त बतावें तो इसका यही उचित आधार होगा। वे अन्य किसी आधार को भी स्वीकार कर सकते हैं। फिर भी विद्वान न्यायाधीश द्वारा गहन विचार के उपरान्त प्रस्तुत किए जाने के कारण यह निर्णय काफी लोकप्रिय हो गया है। अतः प्रश्न में अक्षम साझेदार की न्यूनता अन्य सक्षम साझेदारों द्वारा सहन करने के बारे में कोई निर्देश न दिये गये हों तो विद्यार्थियों को गार्नर बनाम मर्रे के निर्णय के अनुसार ही अक्षम साझेदार की कमी सहन करनी चाहिये।

(iv) **स्थिर पद्धति पर रखे गये पूंजी खातों की दशा में निर्णय की व्यवस्था -** स्पष्ट है कि गार्नर बनाम मर्रे के विवाद में न्यायाधीश के सामने जो तथ्य उपस्थित किये गये उसमें मामला परिवर्तनशीन पद्धति पर रखे गये पूंजी खातों का ही था अतः स्थिर पद्धति वाले पूंजीखातों की समस्या पर विचार ही नहीं किया गया। निर्णय में चूंकि दिवालिये की न्यूनता सक्षम साझेदारों की पूंजियों के आधार पर बांटने की बात कही गई थी अतः परम्परागत पूंजी खातों के स्थिर पद्धति पर होने की दशा में साझेदारों के चालू खातों के शेषों पर ध्यान नहीं दिया जाता है। स्थिर पूंजियों के अनुपात में ही न्यूवता का वितरण कर दिया जाता है। यह व्यवस्था अधिक सुविधापूर्ण अवश्य है परन्तु गार्नर बनाम मर्रें के निर्णायक विद्वान न्यायाधीश द्वारा प्रस्तुत तर्क के विपरीत है। 'उपलब्ध सम्पत्ति बांटने का आधार अन्तिम पूंजी को मानने' के तर्क के आधार पर तो स्थिर पूंजी खातों में चालू खातों का तथा विद्यमान अवितरित लाभ हानि की राशियों का समायोजन करने के उपरान्त ज्ञात पूंजी खातों के शेषों के अनुपात में अक्षम साझेदार की न्यूनता का वितरण किया जाना चाहिये। विद्यार्थियों को हमारा परामर्श परम्परा को मानने का ही है तदनुसार अन्तिम निर्धारित पूंजी अनुपात (last agreed capital ratio) ज्ञात करते समय यदि पूंजी खाते परिवर्तनशील हों तो अवितरित लाभ हानि का बंटवारा करने के पश्चात् लेकिन वसूली खाते के लाभ हानि बांटने से पूर्व पूंजी खातों के शेषों को आधार मानना चाहिये तथा स्थिर पूंजी खातों की दशा में बिना कुछ भी समायोजन किये सीधे स्थिर पूंजी खातों के अन्तिम शेषों को ही इसका आधार बना लेना चाहिये।

(v) **किसी सक्षम साझेदार के पूंजी खाते का नाम शेष होने की दशा में** — उक्त मुकदमें का निर्णय करते समय यह स्थिति भी सामने नहीं थी परन्तु निर्णय में सक्षम साझेदारों की पूंजी के शेषों का अनुपात निकालने की बात कही गई थी अतः केवल जमा के शेष वाले सक्षम साझेदारों की पूंजियों के शेषों का ही अनुपात निकाला जाना चाहिये और केवल ऐसे साझेदार ही अक्षम साझेदार की न्यूनता बांटेंगे। पहले से ही नाम के शेष की पूंजी वाला साझेदार इस हानि को बांटने से बच जावेगा।

(vi) **एक से अधिक दिवालिये साझेदार -** निर्णय की भावना को ध्यान में रखते हुए सभी दिवालिये साझेदारों की कुल न्यूनता, अन्य ऐसे साझेदार अपनी अन्तिम निर्णित पूंजियों के अनुपात में भुगतेंगे जिनके जमा के शेष हों।

(vii) **दिवालिये साझेदार के अतिरिक्त अन्य साझेदारों के पूंजी खातों के नाम के शेष होना -** यह एक ऐसी विचित्र स्थिति है जो निर्णय की परिधि से बाहर ही रह जाती है। निर्णय में अक्षम साझेदार की न्यनता सक्षम साझेदारों की अन्तिम निर्धारित पूंजियों के अनुपात में बांटने की बात कही गई थी जबकि इस काल्पनिक परिस्थिति में माना गया है कि दिवालिये को छोड़कर अन्य साझेदार सक्षम तो हैं परन्तु सभी के पूंजी खाते नाम के शेष दर्शाते हैं। अतः उनकी पूंजियों का अनुपात इस कार्य के लिए उपयोगी नहीं माना जा सकता। इस परिस्थिति में साझेदारों के लाभ हानि विभाजन का अनुपात ही एक मात्र विकल्प रह जाता है।

उदाहरण (Illustration) : 4

लखपति, धनवान, गरीब और भिखारी बराबरी के साझेदार थे। उनकी फर्म के समापन पर सम्पत्तियों की वसूली तथा दायित्वों के भुगतान के पश्चात उनकी स्थिति निम्नलिखित थीः- (Millionere, Rich, Poor and Begger were equal partners. On dissolution of their firm, their position after realization of assets and payment of liabilities was as follows)

	Rs.		**Rs.**
Undistibuted Profits	20,000	Cash in Hand	22,000
Partners Current A/cs :		Loan to Begger	8,000
Millionere	19,000	Partners Current A/c's :	
Rich	7,000	Poor	35,000
Millioner's Loan	10,000	Begger	20,000
Partners Capital A/cs :		Realisation Loss	48,000
Millionere	30,000		
Rich	24,000		
Poor	18,000		
Begger	5,000		
	1,33,000		**1,33,000**

टिप्पणी

भिखारी को दिवालिया घोषित किया जा चुका है। अन्य तीनों साझेदार पूर्णतया सक्षम हैं। गार्नर बनाम मर्रे के नियमानुसार खाते बनाइये। (Begger has been declared insolvent. All the other three partners are fully solvent. Prepare Accounts according to Garner v/s Murray).

(i) साझेदारों के पूंजी खाते तथा चालू खाते बनाइये तथा उन्हें बंद कीजिये। (Prepare and close the Partners Capital and Current Account).

(ii) यदि साझेदारों के पूंजी खाते प्रारम्भ से ही परिवर्तनशील पद्धति पर रखे गये होते तो हल किस प्रकार भिन्न होता। साझेदारों के पूंजी खाते तैयार कीजिये। (If the capital accounts of the partners had been kept on fluctuating basis from the very beginning, in what respect the solution would have been different ? Prepare the capital accounts of the partners).

हल (Solution) :

(i) यदि पूंजी खाते स्थिर आधार पर रखे गये हो –

Dr. Partner's Current Accounts Cr.

	M Rs.	R Rs.	P Rs.	B Rs.		M Rs.	R Rs.	P Rs.	B Rs.
To Balance b/d	—	—	35,000	20,000	By Balance b/d	19,000	7,000	—	—
To Realisation A/c	12,000	12,000	12,000	12,000	By Cash A/c	12,000	12,000	12,000	—
To Capital A/cs	24,000	12,000	—	—	By P&L A/c	5,000	5,000	5,000	5,000
					By B's Cap.A/c	—	—	—	27,000
					By Ps' Capital A/c	—	—	30,000	
	36,000	**24,000**	**47,000**	**32,000**		**36,000**	**24,000**	**47,000**	**32,000**

Dr. Partner's Capital Account Cr.

	M Rs.	R Rs.	P Rs.	B Rs.		M Rs.	R Rs.	P Rs.	B Rs.
To B's Current A/c	—	—	—	27,000	By Balance b/d	30,000	24,000	18,000	5,000
To B's Loan A/c	—	—	—	8,000	By M Capital A/c	—	—	—	12,500
To P's Current A/c	—	—	30,000	—	By R Capital A/c's	—	—	—	10,000
To B's Capital A/c	12,500	10,000	7,500	—	By P Capital A/c	—	—	—	7,500
To Cash A/c	41,500	26,000	—	—	By Partner Current A/c	24,000	12,000	—	—
					By Cash A/c	—	—	19,500	—
	54,000	**36,000**	**37,500**	**35,000**		**54,000**	**36,000**	**37,500**	**35,000**

नोट :–

i. भिखारी की पूंजी की न्यनूता ३०,००० रु. को लखपति, धनवान एवं गरीब अपनी स्थाई पूंजी अनुपात ५:४:३ में भुगतेंगे।

ii. यदि पूंजी खाते परिवर्तनषील पद्धति से रखे गये हो : यदि साझेदारों के पूंजी खातों को परिवर्तनषील विधि से रखा गया होता तो समापन से पूर्व उनके खातों का निम्नलिखित शेष रहता :

	M Rs.	R Rs.	P Rs.	B Rs.
Balance of Capital Accounts	30,000	24,000	18,000	5,000
Add : Undistributed Profits	5,000	5,000	5,000	5,000
Adjustment of Current Accounts	(+)19,000	(+)7,000	(–)35,000	(–)20,000
	(+)54,000	(+)36,000	(–)12,000	(–)10,000

चूंकि गरीब के पूंजी खाते का डेबिट शेष है अतः वह भिखारी की पूंजी की न्यूनता को सहन नहीं करेगा। भिखारी की पूँजी की न्यूनता ३०,००० रु. को लखपती एवं धनवान ३ : २ अनुपात में सहेंगे।

Partner's Capital Accounts

Particulars	M Rs.	R Rs.	P Rs.	B Rs.	Particulars	M Rs.	R Rs.	P Rs.	B Rs.
To Balance b/d	—	—	17,000	15,000	By Balance b/d	49,000	31,000	—	—
To Realisation A/c	12,000	12,000	12,000	12,000	By P&L A/c	5,000	5,000	5,000	5,000
To B's Loan A/c	—	—	—	8,000	By Cash A/c	12,000	12,000	12,000	—
To B's Cap. A/c	18,000	12,000	—	—	By M Cap. A/c	—	—	—	18,000
To Cash A/c	36,000	24,000	—	—	By R Cap. A/c	—	—	—	12,000
					By Cash A/c	—	—	12,000	—
	66,000	**48,000**	**29,000**	**35,000**		**66,000**	**48,000**	**29,000**	**35,000**

टिप्पणी

उदाहरण (Illustration) : ५

अ, ब तथा स एक फर्म के लाभ हानि को २:१:२ के अनुपात में बांटते थे। ३१ दिसम्बर २००८ को उनका स्थिति विवरण निम्नलिखित था :- (A, B and C were partners in a firm sharing profits and losses in proportions of 2:1:2. Their balance sheet on 31 December, 2008 was as follows) :–

		Rs.			Rs.
P.F.		1,500	Cash in hand and at Bank	Rs.	1,500
Workers Saving A/c		1,000	Investments		10,000
Investment Fluctuation Reserve		1,000	Debtors	15,000	
Firm Extension Reserve		5,000	Less : Provision	1,500	13,500
Creditors	10,000		Furniture		2,500
Less : Res.for discount	500	9,500	Stock		10,000
A's Loan A/c		5,000	Machinery		25,000
A's Capital A/c		50,000	Trade Mark		5,000
C's Capital A/c		2,000	B's Capital A/c		5,000
			Profit & Loss A/c		2,500
		75,000			**75,000**

इस तिथि को स को दिवालिया करार दे दिया गया। विभिन्न सम्पत्तियों की वसूली तथा दायित्वों का भुगतान इस प्रकार किये गये :- (On this date, C was declared as insolvent. The various assets were realized and liabilities paid off as follows) :–

(i) देनदारों को २५० रु. की छूट दी गई तथा १,००० रु. डूब गये। (Rs. 250 was allowed as discount to debtors and debtors worth Rs. 1,000 proved bad.)

(ii) आधा स्कंध १० प्रतिषत कम मूल्य पर लेनदारों को दे दिया गया तथा शेष लेनदारों का भुगतान चैक द्वारा कर दिया गया। (Half of the Stock was given to Creditors at 10% less than the book value of stock and the balance of the creditors were paid through cheque.)

(iii) विनियोगों से ९,५०० रु. वसूल हुए, फर्निचर अ द्वारा लिया गया, संयंत्र को १२,५०० रु. में नीलाम कर दिया गया; व्यापारिक चिन्ह २५ प्रतिषत कम मूल्य पर ब द्वारा रख लिया गया तथा शेष स्कंध पुस्तक मूल्य पर बेच दिया गया। (Investments were realized at Rs. 9,500, Furniture was taken by A, Machinery was auctioned for Rs. 12,500, B kept the trade marks at 25% less than the book value and the balance of the stock was sold at book value.)

(iv) १,००० रु. ऐसी सम्पत्तियों से वसूल हुए जिन्हें पुस्तकों में नहीं दर्षाया गया था। (Rs. 1,000 were realized from assets not shown in the books.)

(v) वसूली व्यय २,००० रु. हुए। (Realisation expenses amounted to Rs. 2,000.)

वसूली खाता, साझेदारों के पूंजी खाते तथा नकद व बैंक खाता यह मानते हुए बनाइये कि ब अपना वैधानिक दायित्व चुकाने के लिए पूर्णतया सक्षम है। (Prepare Realisation Account, Partner's Capital Account and the Cash and Bank Account assuming that B is fully competent to pay his legal dues).

हल (Solution) :

Realisation Account

		Rs.			Rs.
To Sundry Assets A/c :	Rs.		By Provident Fund A/c		1,500
Investment	10,000		By Provision for Bad Debts A/c		1,500
Debtors	15,000		By Workers Saving A/c		1,000
Furniture	2,500		By Investment Flu. Fund A/c		1,000
Stock	10,000		By Creditors A/c		10,000
Machinery	25,000		By Bank A/c:	Rs.	
Trade Mark	5,000	67,500	Debtors	13,750	
To Reserve for Dis. on Creditors A/c		500	Stock	5,000	
To Bank (Creditors) A/c		5,500	Machinery	12,500	
To Bank (PF & Saving A/cs) A/c		2,500	Investment	9,500	
To Bank (Realisation Expenses) A/c		2,000	Sundry Assets	1,000	41,750
			By B's Capital A/c (Trade Mark)		3,750
			By A's Capital A/c (Furniture)		2,500
			By Partners Capital A/c :	Rs.	
			A's Capital	6,000	
			B's Capital	3,000	
			C's Capital	6,000	15,000
		78,000			78,000

Cash and Bank Account

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	1,500	By Realisation A/c	5,500
To Realisation A/c	41,750	By Realisation A/c	2,500
To B's Capital A/c	11,250	By Realisation A/c	2,000
		By A's Loan A/c	5,000
		By A's Capital A/c	39,500
	54,500		**54,500**

Partners Capital Accounts

	A	B	C		A	B	C
	Rs.	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.	Rs.
To Balance b/d	—	5,000	—	By Balance b/d	50,000	—	2,000
To Realisation A/c	2,500	3,750	—	By Firm Extension			
To P&L A/c	1,000	500	1,000	Reserve A/c	2,000	1,000	2,000
To Realisation A/c	6,000	3,000	6,000	By Bank A/c	—	11,250	—
To C's Capital A/c	3,000	—	—	By A's Capital A/c	—	—	3,000
To Bank A/c	39,500	—	—				
	52,000	**12,250**	**7,000**		**52,000**	**12,250**	**7,000**

टिप्पणियाँ :-

(i) लेनदारों को दिये गये स्कंध के मूल्य १०,००० रु. x ½ x 90/100 = 4,500 रु. के लिए कोई प्रविष्टि नहीं की गई है। लेनदारों को शेष भुगतान वसूली खाते में दर्षाया गया है।

(ii) पुस्तकों में न लिखी गई सम्पत्तियों की वसूली अन्य वसूली के साथ ही दर्शाई गई है।

(iii) भविष्य निधि तथा कर्मचारी बचत खाता फर्म के लेनदार होते हैं। उनका भुगतान किया गया है। विकास संचिति अवितरित लाभ का शेष है जो साझेदारों में लाभ हानि अनुपात में बांट दिया गया है।

(iv) स के पूंजी खाते की न्यूनता अकेला अ सहन करेगा क्योंकि अवितरित लाभ में ब के हिस्से के 1,000 रु. लिखने पर भी ब के पूंजी खाते का नाम का शेष है।

(v) प्रश्न में गार्नर बनाम मर्रे का फैसला लागू करने का उल्लेख न होने से सक्षम साझेदारों से वसूली की हानि के बराबर रोकड़ राशि मंगवाने का प्रावधान लागू नहीं किया गया है लेकिन दिवालिये साझेदार की पूंजी की हानि सहन करने का आधार सक्षम साझेदारों की पूंजी के शेष को ही माना गया हैं। इसका कारण यह है कि दिवालिये साझेदार की न्यूनता गार्नर बनाम मर्रे के फैसले के अनुसार सक्षम साझेदारों द्वारा अपनी वसूली की हानि के हस्तांतरण से पूर्व की पूंजियों के शेषों के अनुपात में ही सहन की जाती है चाहे उक्त निर्णय का पालन करने का संकेत साझेदारी समझौते में हो या नहीं।

उदाहरण (Illustration) : 6

अ, ब, स तथा द साझेदार है, लाभ हानि ४:३:२:१ के अनुपात में बांटते हैं। ३० जून, २००८ को उनकी स्थिति निम्नलिखित थी - (A, B, C and D are partners, sharing profits and losses in the ratio of 4:3:2:1. Their position on 30.06.2008 was as follows) :

		Rs.		Rs.
Capital A/c's :			Sundry Assets	32,000
	A	11,000	Loss to date	15,000
	B	11,000	B's Drawings	4,000
	C	6,000	D's Drawings	1,000
	D	4,000		
Creditors		20,000		
		52,000		52,000

१०,००० रु. के उधार क्रय का लेखा बहियों में नही हुआ था जबकि माल स्कन्ध में शामिल था। इस तिथि को उन्होंने फर्म का विघटन करने का निर्णय किया। सम्पत्तियों से वसूली २७,००० रु. हुई। अ तथा ब दोनों दिवालिये है। ब की निजी सम्पत्तियां ८,००० रु. तथा निजी दायित्व ७,००० रु. के है। द की निजी सम्पत्तियां ६,००० रु. तथा निजी दायित्व १,००० रु. है। यह मानते हुए कि सभी व्यवहार समय पर पूरे हो गये, सम्बन्धित खाते बनाइये। ब तथा द की सम्पत्तियों की वसूली क्रमश ४,००० रु. व ५,००० रु. हुई। साझेदारी संलेख के अनुसार दिवालिये साझेदार की हानि सक्षम साझेदार अपने लाभ हानि विभाजन अनुपात में बांटेंगे।

Credit purchase worth Rs. 10,000 were omitted from the books. However goods were included in stock. They decided to dissolve the firm on that date. The assets realised Rs. 27,000. A and B both are insolvent. B's private assets amounted to Rs. 8,000 and his private liabilities were Rs. 7,000. D's private assets are Rs. 6,000 and his private liabilities were Rs. 1,000. Show the relevant accounts assuming that all the transactions are put through on that date. B's estate realised Rs. 4,000 and D's estate realised Rs. 5,000. Partnership deed provides that deficiency of insolvent partners borne by solvent partners in their priofit sharing ratio.

टिप्पणी

हल (Solution) :

Realisation Account

	Rs.			Rs.
To Sundry Assets	32,000	By Creditors A/c Rs. (20,000+ 10,000)		30,000
To Cash A/c	30,000	By Cash A/c		27,000
		By Partners Capital A/c :	Rs.	
		A	2,000	
		B	1,500	
		C	1,000	
		D	500	5,000
	62,000			**62,000**

Cash Account

	Rs.		Rs.
To Realisation A/c	27,000	By Realisation A/c	30,000
To C's Capital A/c	2,000		
To D's Capital A/c	1,000		
	30,000		**30,000**

Partners Capital Account

Particulars	A	B	C	D	Particulars	A	B	C	D
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
To P&L Adjustment A/c	4,000	3,000	2,000	1,000	By Balance b/d	11,000	11,000	6,000	4,000
To Drawings A/c	—	4,000	—	1,000	By C's Capital A/c	667	1,333	—	—
To P&L A/c	6,000	4,500	3,000	1,500	By D's Capital A/c	333	667	—	—
To Realisation A/c	2,000	1,500	1,000	500	By Cash A/c	—	—	2,000	1,000
To A's Capital A/c	—	—	667	333					
To B's Capital A/c	—	—	1,333	667					
	12,000	**13,000**	**8,000**	**5,000**		**12,000**	**13,000**	**8,000**	**5,000**

टिप्पणी

जो लेनदार लेखांकित नहीं है उन्हें लाभ हानि समायोजन खाते के माध्यम से बहियों में लिया गया। वैकल्पिक तौर पर सीधा साझेदारों के पूंजी खातों को उनके लाभ हानि अनुपात में नाम कर लेनदारों को बहियों में लिया जा सकता है।

४.१.५.२.३ जब फर्म के सभी साझेदार अक्षम हों जाय (When all the partners of firm are in the position of Insolvency)

समापन के समय यदि फर्म के सभी साझेदार आर्थिक दृष्टि से अक्षम हो गये हों तो स्थिति जटिल हो सकती है। यदि फर्म की सम्पत्तियों से इतनी राशि वसूल हो जाय कि सारे लेनदारों के दावे पूरे किये जा सकें तो केवल साझेदारों के खातों का निपटारा ही शेष रह जाता है परन्तु इसके विपरीत उपलब्ध सम्पत्तियों की वसूली से इतनी राशि भी प्राप्त न हो जिससे लेनदारों का भुगतान पूरा किया जा सके तो लेनदारों को उपलब्ध राशि से संतोष करना पड़ेगा और उनके दावों का कुछ भाग बकाया (un paid) रह जावेगा और साझेदारों के ऋण खातों पर या पूंजी खातों पर फर्म से कुछ भी नहीं मिलेगा।

सभी साझेदारों के दिवालिया घोषित हो जाने से उनके निजी लेनदारों को चुकाने के पश्चात् अवशिष्ट थोड़ा बहुत आधिक्य भले ही फर्म में प्राप्त किया जाय अन्यथा फर्म की कमी पूरी करने के लिए वांछित राशि जुटाने की आशा उनसे नहीं की जा सकती अतः यदि फर्म के पास उपलब्ध राशि लेनदारों के लिए भी अपर्याप्त हो तो उपर लिखे अनुसार लेनदारों को उनके दावों तथा उपलब्ध राशि के अनुपात में भुगतान किया जायेगा। इसके विपरीत लेनदारों को चुकाने के पश्चात भी कुछ राशि अवशिष्ट रहे तो यह देखना होगा कि किन्हीं साझेदारों ने पूंजी के अतिरिक्त फर्म को कुछ ऋण तो नहीं दिये हैं। पूंजी लौटाने की अपेक्षा ऋणों के ब्याज सहित भुगतान को प्राथमिकता दी जावेगी। यदि राशि पूरे ऋण चुकाने के लिए अपर्याप्त हो तो विभिन्न साझेदारों के ऋण खातों की बकाया राशियों के अनुपात में उन्हें उपलब्ध राशि का भुगतान कर दिया जावेगा। इस स्थिति में ऋण खातों पर कुछ भाग बकाया (unpaid) रह जावेगा तथा किसी भी साझेदार के पूंजी खाते पर कुछ भी नहीं लौटाया जा सकेगा।

इससे कुछ अधिक अनुकूल स्थिति में लेनदारों के अतिरिक्त साझेदारों के ऋणों का भी पूरा पूरा भुगतान किया जा सकता है तदुपरान्त अवशिष्ट राशि कम रह जाय और किसी साझेदार के पूंजी खाते का अन्तिम रूप से नाम का शेष है परन्तु वह कुछ भी लाने में असमर्थ है तत्पश्चात जमा शेष वाले साझेदारों को उनके बकाया शेषों के अनुपात में उपलब्ध राशि बांट दी जावेगी।

अन्तिम रूप से सभी खातों के शेष एक विशेष तौर पर खोले गये ''बिना चुकाई गई राशि का खाता'' (Amount Unpaid Account) में स्थानान्तरित कर दिये जाते हैं। इस प्रकार अन्य सभी खाते तो बन्द होते ही हैं यह नया खाता भी स्वयं बन्द हो जाता है।

टिप्पणी

उदाहरण (Illustration) : ७

अ,ब तथा स समान साझेदार थे। ३१ दिसम्बर २००८ को फर्म का विघटन किया गया तब उनका चिट्ठा निम्नलिखित था – (A,B and C were equal Partners. Their Balance Sheet on 31.12.2008 Stood as under, when the firm was dissolved) :

	Rs.		Rs.
Creditors	32,000	Machinery	12,000
A's Capital	4,000	Furinture	3,000
B's Capital	3,000	Debtors	5,000
		Stock	4,000
		Bank	2,800
		C's Capital	12,200
	39,000		**39,000**

सम्पत्तियों की वसूली निम्नलिखित हुई – (The assets realised as under) :

मशीनरी ६,००० रु., फर्नीचर १,००० रु., देनदार ४,००० रु., स्कन्ध ३,००० रु.। वसूली व्यय १,४०० रु. (Machinery Rs. 6,000, Furniture Rs. 1,000, Debtors Rs. 4,000 and Stock Rs. 3,000. The expenses of realisation came to Rs. 1,400).

अ की निजी सम्पत्तियां उसके निजी दायित्व चुकाने के लिए पर्याप्त नहीं हैं जबकि ब तथा स की निजी सम्पत्तियों में क्रमशः २,४०० रु. व ३,००० रु. का आधिक्य हैं। फर्म की बहियां बन्द करने के लिए आवश्यक खाते बनाइये। (A's personal properties are not sufficient to pay his personal liabilities. Whereas in B's and C's private estate there is a surplus of Rs. 2,400 and Rs. 3,000 respectively. Show necessary accounts closing the books of firm).

हल (Solution) :

Realisation Account

	Rs.			
To Machinery A/c	12,000	By Bank A/c		14,000
To Furniture A/c	3,000	Rs. (6,000 + 1,000 + 4,000 +3,000)		
To Debtors A/c	5,000	By Partner's Capital A/c	Rs.	
To Stock A/c	4,000	A	3,800	
To Bank A/c	1,400	B	3,800	
		C	3,800	11,400
	25,400			**25,400**

Creditors Account

		Rs.			Rs.
	To Bank A/c	20,800		By Balance b/d	32,000
	To Amount not paid or Deficiency A/c	11,200			
		32,000			**32,000**

Bank Account

		Rs.			Rs.
	To Balance b/d	2,800		By Realisation A/c	1,400
	To Realisation A/c	14,000		By Creditors A/c	20,800
	To B's Capital A/c	2,400		(Balancing Figure)	
	To C's Capital A/c	3,000			
		22,200			**22,200**

Partners Capital Account

	A Rs.	B Rs.	C Rs.		A Rs.	B Rs.	C Rs.
To Balance b/d	–	–	12,200	By Balance b/d	4,000	3,000	–
To Realisation A/c	3,800	3,800	3,800	By Bank A/c	–	2,400	3,000
To Amount unpaid or Deficiency A/c	200	1,600	–	By Amount unpaid or Deficiency A/c	–	–	13,000
	4,000	**5,400**	**16,000**		**4,000**	**5,400**	**16,000**

Amount unpaid or Deficiency Account

		Rs.			Rs.
	To C's Capital A/c	13,000		By Creditors A/c	11,200
				By A's Capital A/c	200
				By B's Capital A/c	1,600
		13,000			**13,000**

टिप्पणी

४.१.५.३ पुनर्मूल्यांकन खाते तथा वसूली खाते में अन्तर (Difference between Revaluation Account and Realisation Account)

क्रम सं.	अन्तर का आधार	पुनर्मूल्यांकन खाता	वसूली खाता
१.	बनाने की आवष्यकता	नये साझेदार के प्रवेष, साझेदार के अवकाष ग्रहण करने, साझेदार की मृत्यु होने तथा फर्मों का एकीकरण व संविलियन होने पर (यदि पुरानी बहियॉ चालू रखी जायं) बनाया जाता है।	फर्म के विघटन, कम्पनी का व्यवसाय बेचने आदि पर बनाया जाता है
२.	बनाने की विधि	सम्पत्तियॉ तथा दायित्वों के पुस्तक मूल्य तथा वर्तमान में निर्धारित मूल्य का अन्तर इसमें हस्तान्तरित करते हैं।	इसे दोनों ही रीतियों से बनाया जा सकता है। सामान्यतः सम्पत्तियों व दायित्वों के पुस्तक मूल्य इस खाते में हस्तांतरित किये जाते हैं।
३.	अन्य नाम	इसे लाभ–हानि समायोजन खाता भी कहते हैं।	इसे समापन खाता भी कहते हैं।
४.	हानि विभाजन	इसमें हानि का विभाजन साझेदारों के आपसी ठहराव के अनुसार करते हैं। यदि ठहराव हो तो कोई एक साझेदार भी पूरी हानि सहन कर सकता है।	इसका लाभ अथवा हानि फर्म में लाभ हानि विभाजन अनुपात में सभी साझेदारों मे बांटा जाता है।
५.	हानि की रकम नकद लाना	इसकी हानि की रकम नकद लाने की स्थिति उत्पन्न नहीं होती है।	गार्नर बनाम मर्रे के मुकदमें का निर्णय लागू होने पर वसूली की हानि नकद लानी होती है।
६.	फर्म का अस्तित्व	इसके बनाने के बाद फर्म के संगठन में परिवर्तन आ जाता है।	इसके बनाने के बाद फर्म का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है।

४.२ सम्पत्तियों की धीरे-धीरे वसूली तथा राशि का क्रमिक वितरण (Gradual realization of assets and piecemeal distribution of amounts)

पिछले में पृष्ठों में फर्म के विघटन का विवेचन करते समय यह माना गया कि सभी सम्पत्तियों की वसूली एक साथ हो जाती है तथा लेनदारों एवं साझेदारों को भुगतान भी तत्काल ही कर दिया जाता है। यह मान्यता व्यावहारिक नहीं है क्योंकि व्यवहार में सम्पत्तियों को धीरे-धीरे उचित समय आने पर ही बेचा जाता है जिससे अधिक से अधिक वसूली की जा सके। बेचनें में शीघ्रता करने से अधिक हानि होने का भय भी रहता है। समापन कार्य का अंतिम परिणाम सभी सम्पत्तियों की वसूली एवं सभी दायित्वों के भुगतान हो जाने के बाद ही ज्ञात हो सकता है लेकिन प्राप्त रोकड़ राशि का वितरण विभिन्न पक्षों में वसूली के साथ ही कर दिया जाता है।

४.२.१ भुगतान का क्रम (Order of Payment)

वसूली सम्बन्धी व्यय घटाने के पश्चात् उपलब्ध राशि विभिन्न पक्षों को निम्नलिखित क्रम से भुगतान की जाती है :-

(i) सुरक्षित लेनदारों के दावों का निपटारा : सुरक्षित लेनदारों से अभिप्राय फर्म के उन लेनदारों से है जिनके पास फर्म की संपत्ति जमानत के रूप में विद्यमान है। जमानत के रूप में दी गई संपत्ति का मूल्य उक्त लेनदारों के कुल दावे की राशि के बराबर, या उससे अधिक या कम हो सकता है। प्रथम दो स्थितियों में लेनदारों पूर्ण सुरक्षित लेनदार माना जाता है जबकि अंतिम स्थिति में उसे अंशतः सुरक्षित लेनदार कहते हैं। स्पष्टतः पूर्णतया सुरक्षित लेनदार सर्वप्रथम अपना भुगतान प्राप्त कर लेते हैं। उनका दावा पूर्णतः भुगतान हो जाने के बाद अवशिष्ट राशि फर्म को वापस मिल जाती है। इससे ठीक विपरीत अंशतः सुरक्षित लेनदार अपने पास विद्यमान जमानत के मूल्य तक अपने दावे का भुगतान प्राप्त कर लेते हैं तथा शेष दावे के लिए ये भी फर्म के असुरक्षित लेनदारों के ही समान फर्म की संपत्तियों से होने वाली वसूली में से भुगतान की आशा करते हैं।

(ii) प्राथमिकता वाले लेनदारों का पूर्व भुगतान : असुरक्षित लेनदारों में से कुछ लेनदारों को अन्य लेनदारों की तुलना में भुगतान में प्राथमिकता दी जाती है। उन्हें पूर्वाधिकारी लेनदार (Preferential creditors) कहते हैं। इनके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :- केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों को देय कर, स्थानीय सत्ताओं तथा अर्द्ध सरकारी संस्थाओं को देय बकाया राशि, दिवालिया अधिनियम के अन्तर्गत निर्धारित सीमाओं तक कर्मचारियों का वेतन, किराया आदि। पर्याप्त राशि उपलब्ध होने की अवस्था में इनको पूरा भुगतान करने के बाद ही असुरक्षित लेनदारों के दावों पर विचार किया जा सकता है। इसके विपरीत यदि कुल उपलब्ध राशि इनके लिए भी अपर्याप्त रहे तो इन्हें इनके दावों के अनुपात में भुगतान कर दिया जाता है तथा अन्य लेनदारों को भुगतान करने का प्रश्न ही नहीं उठता।

(iii) असुरक्षित लेनदारों को उनके दावों का भुगतान : जब तक किसी विशेष लेनदारों को किसी विशिष्ट संपत्ति पर प्रभार (Specific charge) या सभी संपत्तियों पर समान प्रभार (floating charge) न सौंपा गया हो, तो उन्हें फर्म के असुरक्षित लेनदारों की श्रेणी में रखा जाता हैं तथा साझेदारों के ऋण अथवा पूंजी पर कोई भी राशि लौटाने से पूर्व इनका पूरा भुगतान किया जाता है। इनके कुल दावों की तुलना में राशि अपर्याप्त होने की स्थिति में इनको भी इनके दावों के अनुपात भुगतान किया जाता है।

(iv) साझेदारों से ऋण : इसके पश्चात् साझेदारों से प्राप्त किये गये ऋण का भुगतान किया जाता है। यदि एक से अधिक साझेदारों से ऋण लिये गये हों और राशि अपर्याप्त हो तो इन्हें भी भुगतान ऋणों की राशि के अनुपात में किया जाता है।

(v) साझेदारों को उनकी पूंजी लौटाना : भुगतान क्रम में साझेदारों की पूंजी लौटाने का कार्य सबसे अंत में होता है। विभिन्न साझेदारों को उनके पूंजी खातों पर देय अंतिम राशि की गणना करते समय उनके पूंजी खातों के शेषों में निम्नलिखित मदों का समायोजन करना आवश्यक होता है :-

(i) अवितरित लाभ जैसे सामान्य संचिति, लाभ हानि खाते का जमा का शेष तथा अन्य संचितियाँ आदि।
(ii) लाभ हानि खाते का नाम का शेष (यदि पहले हस्तान्तरित न किया गया हो।)
(iii) साझेदारों के आहरण तथा चालू खातों के शेष।
(iv) पूंजी खातों पर देय ब्याज तथा आहरण खातों पर वसूली योग्य ब्याज की राशि।
(v) संपत्तियों की वसूली पर होने वाले लाभ अथवा हानि।

टिप्पणी

फर्म के विघटन की तिथि पर बहियों में दर्शाये गये पूंजी खातों के शेषों में उपरोक्त के लिए आवश्यक समायोजन करने के बाद साझेदारों को अंतिम रूप से देय या उनसे प्राप्य राशियां ज्ञात हो जाती हैं। उपलब्ध राशि का वितरण साझेदारों में करने के लिए कोई सर्वसम्मत या परम्परागत ऐसी विधि अपनानी होती है जो न्याय संगत हो तथा साझेदारों में कोई विवाद भी उत्पन्न न हो।

४.२.२ साझेदारों में राशि के क्रमिक वितरण का आधार (Basis of gradual distribution of cash amongst the partners)

शेष रकम को साझेदारों में लाभ-हानि अनुपात में बांटना उचित नहीं हैं, क्योंकि यदि आरम्भ से ही उनकी पूंजी लाभ-हानि अनुपात में समायोजित न हो तो अन्त में न चुकाई जा सकने वाली राशियां, लाभ-हानि अनुपात में नहीं होंगी। इसी प्रकार साझेदारों में, उपलब्ध रोकड़ को उनके पूंजी अनुपात में भी नहीं बांटा जा सकता है क्योंकि ऐसा करने पर अतंतः न चुकाई जाने वाली राशियां पूंजी अनुपात में रह जायेंगी। अतः इस समस्या के हल हेतु एक विशेष विधि अपनानी होगी जिससे अन्त में वसूली की हानि (Realisation Loss) को साझेदार, लाभ-हानि विभाजन अनुपात में सहन करें तथा एक बार भुगतान के बाद उनसे रकम वापस मंगवानी न पड़े। यदि किसी फर्म के साझेदारों के पूंजी अनुपात तथा लाभ विभाजन अनुपात समान हैं तो उपलब्ध रकम का वितरण किसी भी अनुपात में किया जा सकता है परन्तु दोनों भिन्न-भिन्न होने पर उपलब्ध रकम का वितरण निम्नलिखित में से किसी एक रीति द्वारा किया जाना चाहिये।

४.२.२.१ अधिकतम पूंजी पद्धति (Surplus Capital Method)

इस रीति के अन्तर्गत साझेदारों की पूंजी लौटाते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि लाभ-विभाजन अनुपात के अनुसार एक साझेदार की पूंजी दूसरे साझेदार की पूंजी की तुलना में कितनी अधिक है। इसके लिए प्रत्येक साझेदार को देय अंतिम पूंजी के शेष में उसके लाभ विभाजन अनुपात का भाग दिया जायेगा। जिसका भागफल न्यूनतम आये उसे आधार मानते हुए प्रत्येक साझेदार की पूंजी का आधिक्य ज्ञात किया जाता है। जिस साझेदार की पूंजी का आधिक्य हो उसे पहले भुगतान किया जायेगा। जब प्रत्येक साझेदार की पूंजी लाभ-विभाजन अनुपात में रह जाय तब वितरण लाभ-विभाजन अनुपात में किया जायेगा। उदाहरण के लिए 'अ' की पूंजी ७,५०० रु., 'ब' की पूंजी ६,००० रु. तथा 'स' की पूंजी २,००० रु. है। उनका लाभ-विभाजन अनुपात २ : २ : १ है।

'स' की पूंजी भी न्यूनतम है तथा लाभ अनुपात भी कम है। इसे आधार मानने पर लाभ - विभाजन अनुपात के अनुसार 'ब' की पूंजी ४,००० रु. तथा 'अ' की पूंजी ४,००० रु. होगी। आधिक्य पूंजी निम्नलिखित है :-

	A (Rs.)	B Rs.	C Rs.
Actual Balance	7,500	6,000	2,000
Adjustment of capital on the basis of C	4,000	4,000	2,000
Surplus Capitals	3,500	2,000	—

टिप्पणी

'अ' तथा 'ब' के बीच तुलना करने पर यह ज्ञात होता है कि दोनों का अनुपात समान होने के कारण 'अ' का आधिक्य 'ब' की अपेक्षा १,५०० रु. अधिक है। 'ब' तथा 'स' को पूंजी लौटाने के पहले 'अ' की पूंजी का आधिक्य १,५०० रु. जो 'ब' के आधिक्य से भी अधिक है, पहले चुकाया जायेगा फिर 'अ' तथा 'ब' का पूरा आधिक्य चुकाने के बाद तीनों को २:२:१ के अनुपात में भुगतान मिलना प्रारम्भ हो जावेगा। आधिक्य पूंजी का भुगतान हो जाने के बाद तीनों के पूंजी खातों के शेष लाभ-विभाजन अनुपात में हो जावेंगे। इसके बाद वितरण करने में कोई कठिनाई नहीं होगी क्योंकि अब वितरण लाभ-विभाजन अनुपात में किया जावेगा।

अर्थात साझेदारों के ऋणों का पूरा भुगतान कर देने के पश्चात सम्पत्तियों की शेष वसूली में से प्रथम १,५०० रु. 'अ' को चुकाये जायेंगे। अगली वसूली में से प्रथम ४,००० रु. तक की वसूली 'अ' तथा 'ब' में बराबर (२:२) के अनुपात में वितरित की जायेगी। इसके बाद होने वाली वसूली तीनों साझेदारों में २:२:१ के अनुपात में वितरित की जायेगी।

यदि इस उदाहरण में प्रथम वसूली के समय २,५०० रु. प्राप्त हों तो अ को १,५०० रु. + ५०० रु. = २,००० रु. तथा ब को ५०० रु. प्राप्त होंगे। द्वितीय वसूली में ४,००० रु. प्राप्त होने पर क्रमशः अ, ब और स को १,९०० रु. (१,५०० रु. + ४०० रु.); १,९०० रु. (१,५०० रु. + ४०० रु.) तथा २०० रु. प्राप्त होंगे। इससे भिन्न यदि इसी फर्म में प्रथम वसूली से ५,५०० रु. प्राप्त हों तो अ तथा ब को क्रमशः ३,५०० रु. तथा २,००० रु. प्राप्त होंगे।

उदाहरण (Illustration) : ८

अ, ब तथा स साझेदार है **२:१:१** के अनुपात में लाभ-हानि बांटते है। फर्म के समापन की तिथि को उनका चिट्ठा इस प्रकार था : (A, B and C are partners share Profits and Losses in proportions of 2:1:1. On the date of dissolution their Balance Sheet was as follows) :

		Rs.		**Rs.**
Creditors		14,000	Sundry Assets	40,000
Capital A/c's :				
A	10,000			
B	10,000			
C	6,000	26,000		
		40,000		40,000

सम्पत्तियों से ३४,००० रु. वसूल हुए जो १४,००० रु.; १०,००० रु. तथा १०,००० रु. की किस्तों में प्राप्त हुए। अधिकतम पूंजी विधि से वसूली की राशि का विवरण पत्रक बनाइये। (The assets realized Rs. 34,000 which were received in instalments of Rs. 14,000 Rs. 10,000 and Rs. 10,000. Show distribution of proceeds of realization according to surplus capital method).

टिप्पणी

हल (Solution) :

Statement Showing Distribution of Proceeds

Liabilities and Capital / Particulars	Creditors	A	B	C
	Rs.	**Rs.**	**Rs.**	**Rs.**
Amount due	14,000	10,000	10,000	6,000
First Instalment of Rs. 14,000 paid to creditors	14,000	—	—	—
Balance due	Nil	10,000	10,000	6,000
Second Instalment of Rs. 10,000				
Rs. 4,000 paid to B		—	4,000	—
Balance due		10,000	6,000	6,000
Rs. 2,000 paid to B and C in the ratio of 1 : 1		—	1,000	1,000
Balance due		10,000	5,000	5,000
Rs. 4,000 paid to partners in proportions of 2 : 1: 1		2,000	1,000	1,000
Balance due		8,000	4,000	4,000
Third Instalment of Rs. 10,000 distributed in partners in the ratio of 2 : 1 : 1		5,000	2,500	2,500
Balance unpaid or loss realisation bear in the				
ratio of 2 : 1 : 1		**3,000**	**1,500**	**1,500**

कार्य टिप्पणी (Working notes) :

Calculation of Surplus Capital

	A	B	C
Profit sharing ratio	2	1	1
	Rs.	Rs.	Rs.
Balance of Capital	10,000	10,000	6,000
Proportionate Capital (Taking A as the basis)	10,000	5,000	5,000
Excess Capital	—	5,000	1,000
Proportionate capital between B and C (Taking "C" as basis)	—	1,000	1,000
Excess of B's Capital	—	4,000	—

इसमें सबसे पहले ब को ४,००० रु. का भुगतान होगा इसके बाद अगले २,००० रु. ब तथा स में बराबर बांटे जायेंगे। इसके बाद वसूल हुई राशि तीनों साझेदारों में २:१:१ के अनुपात में बांटी जायेगी।

साझेदारों को अन्तिम रूप से देय कुल राशि की गणना करते समय उनके पूंजी खातों में अवितरित लाभ-हानि खातों का समायोजन कर देना चाहिए। यह इससे पूर्व स्पष्ट किया जा चुका है कि जब तक साझेदार सक्षम हों उनके द्वारा फर्म को दिये गये अथवा फर्म से लिये गये दोनों प्रकार के ऋणों को पूंजी खातों में स्थानान्तरित नहीं किया जाना चाहिए। साझेदारों के ऋण खातों पर लेन देन पहले किया जायेगा इसके बाद ही पूंजी खातों के लिए भुगतान करना प्रारम्भ किया जा सकता है। साझेदारों के ऋण खातों को पूंजी खातों में केवल तभी हस्तांतरित किया जाना चाहिए जब साझेदार दिवालिया हो चुका हो और उसकी पूंजी की न्यूनता की गणना की जा रही हो।

यदि प्रश्न में कोई सम्पत्ति किन्हीं लेनदारों के पास गिरवी रखी हुई हो तो उससे वसूल राशि में से लेनदार का भुगतान करने पर शेष राशि ही उपलब्ध राशि में शामिल की जावेगी। इसके विपरीत यदि वसूल हुई राशि लेनदार के दावे से कम पाई जाय तो शेष दावे का भुगतान आगामी वसूली होने वाली किश्त में से किया जावेगा।

उदाहरण (Illustration) : ९

अमित, कपिल तथा विपिन साझेदार हैं तथा २:१:१ के अनुपात में लाभ-हानि विभाजित करते हैं। ३१ दिसम्बर २००८ को फर्म का समापन हुआ। उस तिथि को चिट्ठा निम्नलिखित था :- (Amit, Kapil and Vipin were in partnership sharing profits and losses in the ratio of 2:1:1. The firm was dissolved on 31.12.2008. On that date, the Balance Sheet was as under) :

		Rs.		Rs.
Sundry Creditors		5,000	Premises	40,000
Loan (on mortgage of premises)		30,000	Sundry Debtors	60,000
Amit's Loan		15,000	Stock	70,000
General Reserve		10,000	Cash	3,000
Partner’s Capitals A/c's :	Rs.			
Amit	50,000			
Kapil	40,000			
Vipin	23,000	1,13,000		
		1,73,000		**1,73,000**

सम्पत्तियाँ निम्नलिखित प्रकार से शनैः शनैः वसूल की गई। (The assets were realized in piecemeals as follows) :

जून २००९ - भवन के सुरक्षित ऋण के भुगतान के पश्चात् शेष ५,००० रु. प्राप्त हुए। (Rs. 5,000; received after meeting in full the mortage loan).

टिप्पणी

जुलाई २००९ - देनदारों से १५,००० रु. तथा स्टाक से १०,००० रु. (Rs. 15,000 from Debtors; Rs. 10,000 from Stock)

अगस्त २००९ - देनदारों से २०,००० रु. तथा स्टाक से २५,००० रु. (Rs. 20,000 from Debtors; Rs. 25,000 from Stock)

सितम्बर २००९ - देनदारों से १७,००० रु. तथा स्टाक से २०,००० रु. (अन्तिम) (Rs. 17,000 from Debtors; Rs. 20,000 from Stock finally)

कपिल ने शेष स्टॉक ३,००० रु. में ले लिया। (The remaining stock was taken over by Kapil at an agreed value of Rs. 3,000).

विविध लेनदारों को ४,००० रु. पूर्ण भुगतान के रूप में चुकाये गये। (The Sundry creditors were settled for Rs. 4,000).

साझेदारों ने प्राप्त राशि को उसी समय बांटने का निर्णय लिया जब वह वसूल हों (The partners decided to distribute cash as and when realized).

'अधिकतम सापेक्ष पूंजी' विधि का प्रयोग करते हुए रोकड़ वितरण पत्रक बनाइये। (You are required to show the distribution of cash, applying the 'Highest Relative Capital' method).

हल (Solution) :

(i) ऋण के चुकाने के पष्चात् बचे ५,००० रु. को प्रारंभिक शेष ३,००० रु. में जोड़ना होगा।

(ii) साझेदारों की आधिक्य पूंजी की गणना

(Calculation of Surplus Capital)

	Amit	Kapil	Vipin
	Rs.	Rs.	Rs.
Capital (After adjustment of Reserve)	55,000	42,500	25,500
Profit Sharing ratio	2	1	1
Proportionate Capitals taking Vipin as base	51,000	25,500	25,500
Excess Capital	4,000	17,000	—
Proportionate Capitals between Amit and Kapil			
taking Amit as base	4,000	2,000	—
Excess of Kapil's Capital	—	15,000	—

(iii) प्राप्त रोकड़ में से कपिल को सर्वप्रथम १५,००० रु. प्राप्त होंगे। इसके बाद अगले ६,००० रु. का भुगतान अमित व कपिल में २:१ में किया जायेगा। इसके बाद की वसूली तीनों साझेदारों में २:१:१ में बांटी जायेगी।

अमित के ऋण को चुकाने के बाद जुलाई में बचे १४,००० रु. कपिल को दिये जाय। अगस्त की वसूली में से प्रथम १,००० रु. कपिल को तथा ४,००० रु. अमित एवं २,००० रु. कपिल को देने के पश्चात् शेष ३८,००० रु. को तीनों साझेदारों में लाभ-हानि अनुपात में बांटना है।

Liabilities & Capital / Particulars		S. Crs.	Amit's loan	Amit's capital	Kapil's capital	Vipin's capital
		Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
Amount due		4,000	15,000	55,000	42,500	25,500
	Rs.					
June : Opening Balance	3,000					
Surplus from fully secured Crs.	5,000					
Payment made	8,000	4,000	4,000			
Amount due		—	11,000	55,000	42,500	25,500
Balance Due		Nil	11,000	55,000	42,500	25,500
July :						
Realisation from assets Rs. 25,000						
used for Payment to Amit's Loan & Kapil Capital		—	11,000	—	14,000	—
August : Balance due		—	—	55,000	28,500	25,500
Realisation from assets Rs. 45,000						
used for Payment to partners against Capital		—	—	23,000	12,500	9,500
Balance due				32,000	16,000	16,000

Liabilities & Capital / Particulars	S. Crs.	Amit's loan	Amit's capital	Kapil's capital	Vipin's capital
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
September :					
Realisation from assets Rs. 40,000					
(including stock) used for					
Payment *including stock Rs. 3,000 to partners			20,000	10,000*	10,000
Realisation Loss			12,000	6,000	6,000

टिप्पणी

४.२.२.२ अधिकतम हानि पद्धति (Maximum Loss Method)

इस रीति के अन्तर्गत प्रत्येक वसूली का वितरण करते समय यह माल लिया जाता है कि सम्पत्तियों से या किसी साझेदार से भविष्यि में कुछ भी वसूल नहीं हो सकेगी। इस हानि को साझेदारों के बीच लाभ-विभाजन अनुपात में बाँट देंगे। शेष बची हुई रकम साझेदारों को वितरण में मिलने वाली रकम होगी। यदि वितरण के समय साझेदारों की पूंजी का शेष नाम पक्ष का आ जाय तो उसे अन्य साझेदारों में गार्नर बनाम मर्रे के मुकदमें के निर्णय के अनुसार पूंजी अनुपात में बांट दिया जायेगा। गार्नर बनाम मर्रे का निर्णय लागू न होता हो तो हानि को लाभ-विभाजन अनुपात में बांटेंगे।

पत्रक निर्माण की प्रक्रिया (Procedure for preparation of statement) : इस रीति के अन्तर्गत रोकड़ वितरण पत्रक के निर्माण में निम्नलिखित प्रक्रिया अपनानी चाहिए –

(अ) हस्तस्थ रोकड़ तथा वसूली की राशि को सर्वप्रथम बाह्य ऋणों तथा लेनदारों को चुकाना होगा तथा उसके बाद साझेदारों के ऋणों का भुगतान करना होगा।

(आ) शेष उपलब्ध राषि का वितरण साझेदारों के मध्य करना है इसके लिए साझेदारों के पूंजीखातों के शेष, चालू खातों के शेष (यदि कोई हो) संचय तथा लाभ–हानि खाते के शेषों को समायोजित करके साझेदारों को कुल देय राषि (Amount due) ज्ञात करनी होगी। यदि उपलब्ध राषि साझेदारों को देय राषि के समान हो तो वितरण प्रक्रिया सरल हो जाती है।

(इ) प्रत्येक किस्त से प्राप्त राशि की तुलना साझेदारों को देय कुल राशि से करनी होती है। इस अन्तर को (यह मानते हुए कि भविष्य में सम्पत्तियों से कुछ भी वसूली नहीं होगी) सम्भावित अधिकतम हानि (Probable Maximum Loss) कहेंगे। वास्तविक हानि का पता तो सभी सम्पत्तियों को बेचने के बाद ही लग सकता है।

(ई) इस अधिकतम हानि को सभी साझेदारों में लाभ-हानि विभाजन अनुपात (Profit and Loss Sharing Ratio) में बाँटते हैं। तत्पश्चात् साझेदारों के खातों के शेष उपलब्ध राशि के बराबर होंगें।

(उ) इस हानि (उपरोक्त ई के अनुसार) को बांटने के पश्चात् यदि किसी साझेदार के खाते का शेष नाम का आ जाय तो उसकी पूंजी की हानि को शेष साझेदार 'गार्नर बनाम मर्रे' के नियम के अनुसार पूंजी अनुपात में बाँट लेंगे। इन नियम के लागू न होने की स्थिति में ऐसे साझेदार की पूंजी की हानि को शेष साझेदार लाभ विभाजन अनुपात में सहन करेंगे।

(ऊ) जैसे ही साझेदारों के शेष उपरोक्त प्रक्रिया में घनात्मक (जमा शेष) आ जाते हैं उनको भुगतान कर दिया जायेगा। यह वही राशि होगी जो वसूली से प्राप्त हुई है।

(ए) यदि एक साझेदार के पूंजी खाते के नाम शेष वितरित करने पर दूसरे साझेदार के पूंजी खाते में

नाम शेष हो जाये तो उसकी कमी भी शेष साझेदार उपरोक्त बतलाये गये (उ) के अनुसार सहन कर लेगें।

(ऐ) साझेदारों को भुगतान के पश्चात् पुनः उनके खातों के शेष ज्ञात किये जायेंगे तथा अगली किश्त की प्राप्त राशि से तुलना करके पुनः पिछली प्रक्रिया दोहराई जायेगी।

(ओ) विपरीत सूचना के अभाव में यही माना जायेगा कि गार्नर बनाम मर्रे का नियम लागू होता है।

सावधानियाँ

(१) हस्तस्थ रोकड़ (Cash in hand) को पत्रक बनाते समय की किश्त की भांति समझा जाय।

(२) प्रत्येक किश्त की वसूली में हुए वास्तविक व्यय को घटाकर ही बांटने योग्य राशि ज्ञात होती है।

(३) पत्रक बनाते समय साझेदारों को देय राशि सामान्य संचिति (General Reserve), लाभ-हानि खाता (Profit and Loss Account) आदि के शेषों को समायोजित करके ही ज्ञात करनी चाहिए।

(४) यदि समापन व्यय के लिए एक मुश्त रकम (Lump Sum) अलग रखनी होती होती है तो बांटने योग्य किश्त की राशि उस समय इससे कम कर दी जायेगी। आगे चलकर इस प्रावधान तथा इससे सम्बन्धित वास्तविक व्यय की तुलना करके, अंतर से अंतिम किश्त को समायोजित कर देना चाहिए।

(५) कभी कभी प्रश्न में विभिन्न संपत्तियों से समय समय पर होने वाली वसूली तथा प्रत्येक बार चुकाये गये खर्च के संबंध में विस्तृत विवरण दिया जाता है। इससे उपरोक्त प्रक्रिया में कोई अन्तर नहीं आता। प्रत्येक अवसर पर उपलब्ध राशि की गणना करते समय उस समय विभिन्न संपत्तियों से वसूली गई राशियों के योग में से इससे संबंधित खर्चे घटा दिये जाते हैं। अन्त में वसूली समाप्त होने पर पुस्तक मूल्य में से कुल वसूली घटाने पर तथा ज्ञात शेष हानि में वसूली के खर्चे जोड़ने पर कुल हानि ज्ञात हो जाती है। अन्यथा वितरण पत्रक बनाने की प्रक्रिया में कोई अन्तर नहीं आता।

(६) यदि साझेदारों में कोई अवयस्क साझेदार है तो वह हानियों में हिस्सेदार नहीं होता इसलिए उसे साझेदारों को भुगतान करते समय सर्वप्रथम भुगतान किया जाता है।

उदाहरण (Illustration) : १०

अ, ब तथा स एक फर्म में लाभ हानि वितरण अनुपात ३:२:१ था। ३० जून २००८ को उनका स्थिति विवरण निम्नलिखित था :- (The ratio of sharing profit or loss of A, B and C in the firm was 3 : 2 : 1. Their Balance sheet as on 30 June, 2008 was) :–

टिप्पणी

	Rs.		Rs.
Creditors	2,10,000	Cash in Hand	28,000
Capital A/cs :		Sundry Debtors	2,94,000
A	1,40,000	Stock	1,12,000
B	70,000		
C	14,000		
	4,34,000		**4,34,000**

फर्म द्वारा एक ५,००० रु. का प्राप्तव्य बिल बैंक से कटौती पर भुनाया गया था जिसकी भुगतान तिथि ३० नवम्बर २००८ है। यह निर्णय किया गया कि प्रत्येक माह की वसूली माह के अंत में सुरक्षा का पूर्ण ध्यान रखते हुए उचित क्रम से वितरित कर दी जाय। विभिन्न वसूलियां तथा उन पर वसूली व्यय इस प्रकार हुए :- (The firm had discounted a bills receivable with the bank worth Rs. 5,000, the due date of which was 30 November, 2008. It was decided that each month's collections be distributed in the due order at the end of the month as safely as possible. The various realisations and expenses related to them were as follows) :–

	देनदार तथा स्कंध (Drs. and Stock)	वसूली व्यय (Realisation Expenses)
	Rs.	Rs.
31.07.2008	84,000	7,000
31.08.2008	1,26,000	15,400
30.09.2008	70,000	4,900
31.10.2008	77,000	3,500
30.11.2008	35,500	3,500

सारा स्कंध बेच दिया गया। देनदारों से अब कोई वसूली होने की आशा नहीं है। कटौती पर किये गये प्राप्य विपत्र के स्वीकृतिकर्त्ता ने दातव्य तिथि पर बिल का भुगतान कर दिया। अधिकतम हानि पद्धति के अनुसार राशि के वितरण का पत्रक बनाइये। (The entire stock was disposed off. No further recoveries are expected from the Debtors. The acceptor of the bills receivable under discount paid the amount on the due date. Prepare a statement of distribution of cash under the maximum loss method).

हल (Solution) :

Particulars		Creditors	A	B	C
		Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
Balance	Rs.	2,10,000	1,40,000	70,000	14,000
Cash in hand	28,000				
31.07 Realisation from assets	77,000				
(after deducting exp.)					
Used for payments to Creditors	1,05,000				
		1,05,000	—	—	—
Amount due		1,05,000	1,40,000	70,000	14,000
31.08 Realisation from assets Rs. 1,10,600 used for payments to creditors and retained for contingent liability of bills discontuned Rs. 5,000 and remaining Rs. 600 paid to A against Capital as per W.N. 1)		1,05,000	600	—	—
Amount due		—	1,39,400	70,000	14,000
30.09 Realisation from assets Rs. 65,100 used for payment to partners against capital as per working note - 2)		—	51,995	13,105	—
Amount due		—	87,405	56,895	14,000

Particulars	Creditors	A	B	C
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
31.10 Realisation from assets Rs. 73,500 used for payment to partners as per W.N. - 3)	—	44,916	28,584	—
Amount due	—	42,489	28,311	14,000
30.11 Realisation from assets Rs. 32,000 + Rs. 5,000 provided for contingent liabilities, now not required and paid to partners as per WN-4	—	18,589	12,378	6,033
Realisation Loss	**—**	**23,900**	**15,933**	**7,967**

Working Note :

31.08 Max. Loss = Total amount due to Partner – Available Amount

= Rs. 2,24,000 – Rs. 600 or Rs. 2,23,400

टिप्पणी

	A	B	C
August	**Rs.**	**Rs.**	**Rs.**
Balance due	1,40,000	70,000	14,000
Less : Max. Loss allocated in (3:2:1)			
= 2,24,000 – Rs. 600 or Rs. 2,23,400	(–)1,11,700	(–)74,467	(–)37,233
	28,300	(–) 4,467	(–) 23,233
Adjustment for negative balance borne by A	27,700	(+) 4,467	(+) 23,233
Paid	600	—	—
September			
Balance due	1,39,400	70,000	14,000
Less : Max. Loss allocated in (3:2:1)			
= 2,23,400 – Rs. 65,100 or Rs. 1,58,300			
distribute in 3 : 2 : 1	(–) 79,150	(–) 52,767	(–) 26,383
	60,250	17,233	(–) 12,383
Adjustment for negative balance borne by A & B in			
the ratio of 2 : 1	(–) 8,255	(–) 4,128	(+) 12,383
Paid	51,995	13,105	—
October			
Balance due	87,405	56,895	14,000
Less : Max. Loss = Rs. 158300 – Rs. 73,500 or			
Rs. 84,800 distribute in 3 : 2 : 1	(–) 42,400	(–) 28,267	(–) 14,133
	45,005	28,628	(–) 133
Adjustment of C's deficiency in 2 : 1	(–) 89	(–) 44	(+) 133
Paid	44,916	28,584	—
November			
Amount due	42,489	28,311	14,000

Realisation from Assets Rs. 37,000 including Prov. for B.R. discounted. Max. loss = Rs. 84,800 – Rs. 37,000 = Rs. 47,800 distribute in 3 : 2 : 1	(–) 23,900	(–) 15,933	(–) 7,967
Paid	**18,589**	**12,378**	**6,033**

उदाहरण (Illustration) : ११

अ, ब तथा स एक फर्म के लाभ-हानि को ५ : ३ : २ के अनुपात में बांटने वाले साझेदार थे। ३१ दिसम्बर २००७ को उनकी फर्म का स्थिति-विवरण निम्नांकित था जिस दिन उन्होंने फर्म का विघटन करना स्वीकार किया। (A, B and C were partners sharing the profits and losses in a firm in proportions of 5:3:2. The Balance Sheet of their firm on 31 December, 2007 was as follows, on which date they agreed to dissolve their firm).

	Rs.		**Rs.**
Creditors	5,000	Cash in hand	1,000
Bank overdraft	3,000	B.R.	10,000
Loan from X (mortgaged on stock)	2,000	Stock	9,000
General Reserve	6,000	Debtors	15,000
A's Loan	5,000	Furniture	7,500
B's Loan	2,500	Machinery	10,000
A's Caital A/c	23,500	Buildings	15,000
B's Caital A/c	11,600	Loss for the year	3,000
C's Caital A/c	11,900		
	70,500		**70,500**

सम्पत्तियों की वसूली पर १,५०० रु. व्यय होने का अनुमान था। सम्पत्तियों की वसूली शनैः शनैः इस प्रकार हुई : (The expenses of realization were estimated at Rs. 1,500. The assets were realized gradually as follows) :

(i) १० जनवरी को स्कंध के पुस्तक मूल्य का ५० प्रतिषत वसूल हुआ। (On 10th January, Stock was realized at 50% of book value.)

टिप्पणी

(ii) १५ फरवरी को देनदारों व प्राप्त विपत्रों पर आंशिक भुगतान ६,००० रु. मिला। (On 15th February, Debtors and B/R were partially realized at Rs. 6,000.)

(iii) २० मार्च को संयंत्र ६,००० रु. में बेचा गया। (On 20th March, Machinery was sold at Rs. 6,000.)

(iv) ३१ मार्च को फर्निचर का विक्रय ४,००० रु. पर किया गया। (On 31st March, Furniture was sold for Rs. 4,000.)

(v) ३० अप्रेल को भवन ५,००० रु. में बेच दिया गया। (On 30th April, Building was sold off at Rs. 5,000.)

(vi) १५ मई को शेष में से कुछ देनदार तथा प्राप्य विपत्रों से ९,००० रु. वसूल हुए। (On 15th May, some of the remaining Debtors and B/R realized Rs. 9,000.)

(vii) इसी दिन अ ने १,००० रु. के देनदारे ले लिये। (On very this day, A took the Debtors for Rs. 1,000 on his A/c.)

वास्तविक वसूली व्यय १,७५० रु. हुए। शनैः शनैः वसूल राशि का वितरण बताइये। (Actual realization expenses amounted to Rs. 1,750.) Show the distribution of amounts realized gradually.

हल (Solution) :

Distribution statement of Amounts realized gradually

Liabilities & Capital Particulars		Crs.	Bank over draft	A's Loan	B's Loan	Capital Accounts A	B	C
		Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
Amount due		5,000	3,000	5,000	2,500	23,500	11,600	11,900
Add General Reserve		—	—	—	—	3,000	1,800	1,200
						26,500	13,400	13,100
Less : Loss		—	—	—	—	1,500	900	600
Amount due		5,000	3,000	5,000	2,500	25,000	12,500	12,500
Rs								
10th Jan. Cash in hand	1,000							
Surplus realized from								
Fully secured creditors	2,500							
	3,500							
Less : Provision for	1,500							

expenses Amount available for 2,000 Payment to Creditors & Bank overdraft in 5 : 3	1,250	750					
Amount due	3,750	2,250	5,000	2,500	25,000	12,500	12,500
15th Feb. Realised from Debtors & B/R and paid to Creditors and BOD in 5:3 Rs. 6,000	3,750	2,250					
Amount due	—	—	5,000	2,500	25,000	12,500	12,500
20th March Realised from Machinery Rs. 6,000 and paid to Partners Loan in 2 : 1			4,000	2,000			
	—	—	1,000	500	25,000	12,500	12,500
31st March Realised from Furniture Rs. 4,000 out of which Rs. 1,500 paid for partners Loan in 2:1 and cash remained Rs, 2,500			1,000	500	—	—	—
Amount payable for Rs. Capitals 50,000 Less : Cash available 2,500 Loss on realisation 47,500 Shared in 5 : 3 : 2 amongst Partners					23,750	14,250	9,500

					1,250	— 1,750	3,000
B's deficiency shared by A & Cin 2 : 1 (Original Capital ratio)					1,167	+1,750	583

Liabilities & Capital Particulars	Crs.	Bank over draft	A's Loan	B's Loan	Capital Accounts		
					A	B	C
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
Amount paid					83	—	2,417
Amount due					24,917	12,500	10,083
30th April Realised Rs. 5,000							
From Building.							
Loss on realization = (Total due to							
partners – Amount □ ealized)							
= (Rs. 47500 – Rs. 5000 = Rs. 42500)							
Shared in 5 : 3 : 2 by Partners					21,250	12,750	8,500
					3,667	–250	1,583
B's deficneicy shared by A & Cin 2 : 1					–167	+ 250	–83
Amound paid					3,500	—	1,500
Amount due					21,417	12,500	8,583
15th May Realised from							
Debtors & B/R Rs. 9,000							
Debtors taken by 'A' 1,000							
10,000							
Less Realisation expenses							
excess over the provision 250							
9,750							
Loss on realization							

= Rs. 42,500–Rs.9,750 = Rs.32,750							
Shared by A,B & Cin 5 : 3 : 2					16,375	9,825	6,550
Amount paid					*5,042	2,675	2,033
Loss on realization shared by							
A, B & C in 5 : 3 : 2					16,375	9,825	6,550
* Includes cash Rs. 4,042 and debtors for Rs. 1,000							
Total amount paid to A, B & C					8,625	2,675	5,950

उदाहरण (Illustration) : 12

उदाहरण संख्या ११ की जानकारी तथा उसके हल के अंतर्गत दर्शाई गई नकद की वसूली तथा किए गये भुगतानों के आधार पर वसूली खाता, साझेदारों के खाते तथा रोकड़ खाता तैयार कीजिये। (From the particulars given in Illustration–11 and the realization of cash and payments made as shown under its solution, prepare Realization Account, Partners Capital Accounts and Cash Account).

हल (Solution) :

Partner's Capital Accounts

2008		Rs.	Rs.	Rs.	2008		Rs.	Rs.	Rs.
1 Jan.	To P & L A/c	1,500	900	600	1 Jan.	By Balance b/d	23,500	11,600	11,900
31 Mar.	To Cash A/c	83	—	2,417	1 Jan.	By General Reserve A/c	3,000	1,800	1,200
30 April	To Cash A/c	3,500	—	1,500					
15 May	To Cash A/c	4,042	2,675	2,033					

2008		Rs.	Rs.	Rs.	2008	Rs.	Rs.	Rs.
15 May	To Realisation A/c (Debtors)	1,000						
15 May	To Realisation A/c (Loss)	16,375	9,825	6,550				
		26,500	13,400	13,100		26,500	13,400	13,100

Dr. **Realisation Account** **Cr.**

2008		Rs.	2008		Rs.
1 Jan	To B/R A/c	10,000	1 Jan	By Creditors A/c	5,000

टिप्पणी

"	To Stock A/c	9,000	"	By Bank OD A/c	3,000
"	To Debtors A/c	15,000	"	By Loan From X A/c	2,000
"	To Furniture A/c	7,500	10 Jan.	By Cash (stock) A/c	4,500
"	To Machinery A/c	10,000	15 Feb.	By Cash (Drs. & BR) A/c	6,000
"	To Building A/c	15,000	20 Mar.	By Cash (Machinery) A/c	6,000
10 Jan.	To Cash (Loan from 'X') A/c	2,000	31. Mar.	By Cash (Furniture) A/c	4,000
10 Jan.	To Provision for Exp. A/c	1,500	30 April	By Cash (Building) A/c	5,000
10 Jan.	To Cash (Creditor) A/c	1,250	15 May	By Cash B/R & Debtors A/c	9,000
10 Jan.	To Cash (Bank OD) A/c	750		By 'A' (Debtors) A/c	1,000
15 Feb.	To Cash (Creditors) A/c	3,750	15 May	By Partners Capital A/c :	
"	To Cash (Bank) A/c	2,250		A's Capital	16,375
15 May	To Cash (Realisation Exp.) A/c	250		B's Capital	9,825
				C's Capital	6,550
		78,250			78,250

Cash Account

2008		Rs.	2008		Rs.
1 Jan.	To Balance b/d	1,000	10 Jan.	By Realisation A/c	2,000
10 Jan.	To Realisation A/c	4,500	10 Jan.	By Realisation A/c	1,250
15 Feb.	To Realisation A/c	6,000	10 Jan.	By Realisation A/c	750
20 Mar.	To Realisation A/c	6,000	15 Feb.	By Realisation A/c	3,750
31. Mar.	To Realisation A/c	4,000	15 Feb.	By Realisation A/c	2,250
30 April	To Realisation A/c	5,000	20 Mar.	By A's Loan A/c	4,000
15 May	To Realisation A/c	9,000	20 Mar.	By B's Loan A/c	2,000
			31 Mar.	By A's Loan A/c	1,000
			31 Mar.	By B's Loan A/c	500
			31 Mar.	By A's Capital A/c	83
			31 Mar.	By C's Capital A/c	2,417
			30 April	By A's Capital A/c	3,500
			30 April	By C's Capital A/c	1,500

2008		Rs.	2008		Rs.
			15 May	By A's Capital A/c	4,042
			15 May	By B's Capital A/c	2,675
			15 May	By C's Capital A/c	2,033
			15 May	By Realisation A/c (Exp.)	250
				By Expenses A/c	1,500
		35,500			**35,500**

उदाहरण (Illustration) :१३

अरूण, राजेश तथा संजय साझेदारी में थे, लाभ हानि २:१:१ के अनुपात में बांटते थे। उनका ३१ दिसम्बर २००७ का चिट्ठा निम्नलिखित था जिस दिन उन्होंने फर्म को विघटित करने का निर्णय किया – (Arun, Rajesh and Sanjay were in partnership sharing profits and losses in the ratio of 2:1:1. Their Balance Sheet as on 31st December, 2007 was as under, the date on which they decided to dissolve the firm.)

		Rs.		Rs.
Creditors		15,000	Cash	9,000
Income Tax Payable		4,000	Stock	40,000
Loan from Bank		30,000	Debtors	60,000
(Secured by pledge of Stock)			Furniture	36,000
Loan from Rajesh		11,000	Motor Car	25,000
Capital A/c's :	Rs.			
Arun	40,000			
Rajesh	40,000			
Sanjay	30,000	1,10,000		
		1,70,000		**1,70,000**

(१) बैंक स्कन्ध के निस्तारण से केवल २५,००० रु. वसूल कर सकी। (Bank could realise only Rs. 25,000 on disposal of Stock.)

(२) फर्निचर का अच्छा मूल्य प्राप्त करने के लिए उस पर ३,००० रु. व्यय किये। (A sum of Rs. 3,000 was spent on furniture for getting better Price.)

(३) अन्य सम्पत्तियों की वसूली निम्न प्रकार हुई – (Other assets were realised as follows) :

टिप्पणी

On 1st January, 2008	Rs. 12,000
On 16th January, 2008	Rs. 15,000
On 7th February, 2008	Rs. 10,000
On 10th February, 2008	Rs. 30,000
On 15th February, 2008	Rs. 35,000

साझेदार जब भी रोकड़ उपलब्ध होती हैं अधिकतम पूंजी विधि प्रयोग करते हैं। रोकड़ का वितरण बतलाइये। (The Partners distributed the cash as and when available using highest relative Capital Method. show the distribution of Cash).

हल (Solution) :

Statement showing distribution of Cash

Particulars Liabilities and Capital	Income Tax Payable	Creditors	Bank Loan	Loan from	Capital Accounts		
				Rajesh	Arun	Rajesh	Sanjay
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
Outstanding Balances	4,000	15,000	5,000	11,000	40,000	40,000	30,000
1st January Cash Balance Rs. 9,000 – Exp. on Furniture Rs. 3,000 = Rs. 6,000 used for payment to pref. Crs. and other outside liability in the ratio of 3:1	4,000	1,500	500	–	–	–	–
Amount Due	–	13,500	4,500	11,000	40,000	40,000	30,000
Realisation from assets Rs.12,000 used for payment to outside liability in the ratio of 3:1	–	9,000	3,000	–	–	–	–
Amount Due	–	4,500	1,500	11,000	40,000	40,000	30,000
16th Januray Realisation from assets Rs.15,000 used for payment to outside Liab– –ility and partner Loan	–	4,500	1,500	9,000	–	–	–
Amount Due	–	–	–	2,000	40,000	40,000	30,000

7th January Realisation from assets Rs.10,000, first Rs. 2,000 used for payment to partner Loan and rest paid to partners against Capital as per W.N. 1	–	–	–	2,000	–	8,000	–
Amount Due	–	–	–	–	40,000	32,000	30,000
10th February Realisation From Assets Rs. 30000 used for payment to Partners As per Working Note	–	–	–	–	4,000	(2,000+ 10,000 +2,000) =14,000	(10,000 +2,000) =12,000
Amount Due	–	–	–	–	36,000	18,000	18,000
15th February Realisation from assets Rs. 35,000 used for payment to partners agai– –nst Capital in 2:1:1.	–	–	–	–	17,500	8,750	8,750
Realisation Loss	–	–	–	–	**18,500**	**9,250**	**9,250**

Working Note :

1. Calculation of Payment to Partners against Capital :

	Arun	Rajesh	Sanjay
	Rs.	Rs.	Rs.
Balance Due	40,000	40,000	30,000
Profit Sharing Ratio	2	1	1
Taking Arun's Capital as base	40,000	20,000	20,000
Excess	–	20,000	10,000
Taking Sanjay Capital as base	–	10,000	10,000
Excess	–	10,000	–

बाह्य दायित्व तथा साझेदार का ऋण चुकाने के बाद उपलब्ध पहले १०,००० रु. राजेश को चुकाये जायेंगे। राजेश को चुकाने के बाद उपलब्ध रोकड़ में से प्रथम २०,००० रु. राजेश तथा संजय को १:१ में चुकाये जायेगे। इसके पश्चात् की वसूली सभी साझेदारों को २:१:१ में चुकाने में प्रयुक्त होगी।

टिप्पणी

४.३ परिवर्तन या व्यवसाय की बिक्री (Conversion or Sale of Business)

जब कभी किसी फर्म के साझेदार अपनी फर्म को संयुक्त स्कंध वाली कंपनी (Joint Stock Company) में बदलने अथवा चालू व्यापार के रूप में किसी व्यक्ति, फर्म या कम्पनी को अपना व्यापार बेच देने का निश्चिय करते हैं तो उनकी फर्म की दृष्टि से यह समापन की ही स्थिति मानी जा सकती है। अतः फर्म की बहियां बन्द करने के लिए वसूली खाता खोलने तथा साझेदारों के खाते बन्द करने के लिए लेखांकन प्रविष्टियां उसी प्रकार से की जावेंगी जैसी गत अध्याय के प्रारंभ में फर्म के समापन का विवेचन करते समय समझाई गई थी।

व्यापार बन्द करते समय विभिन्न संपत्तियों की वसूली तथा दायित्वों का भुगतान पृथक पृथक किया जाता है जबकि चालू व्यापार के विक्रय अथवा 'फर्म के कम्पनी में परिवर्तन' पर प्रायः फर्म की संपत्तियां तथा फर्म के दायित्व क्रेता व्यक्ति, फर्म अथवा कम्पनी द्वारा ले लिये जाते हैं तथा इसके उपलक्ष में एक निश्चित राशि पुरानी फर्म के साझेदारों को क्रेता पक्ष की ओर से प्रदान करने का समझोता कर लिया जाता है। इसे 'क्रय प्रतिफल' (Purchase Consideration) कहते हैं। क्रेता व्यक्ति अथवा फर्म द्वारा उक्त क्रय प्रतिफल का भुगतान तुरंत रोकड़ में कर दिया जाता है अथवा किसी भावी तिथि पर करने का वायदा कर लिया जाता है जबकि किसी चालू अथवा नवस्थापित कम्पनी द्वारा फर्म का व्यापार लिये जाने पर क्रय प्रतिफल के उपलक्ष में नकद राशि के अतिरिक्त कम्पनी के अंश तथा ऋणपत्र भी आवंटित किये जा सकते हैं। विक्रेता फर्म के साझेदार कम्पनी से प्राप्त नकद राशि, ऋणपत्र तथा अंशों को फर्म में जमा अपनी पूंजियों की एवज में ले लेते हैं।

४.३.१ क्रय प्रतिफल का निर्धारण (Determination of Purchase Consideration)

फर्म के व्यापार को कंपनी में परिवर्तित किया जाय अथवा किसी अन्य पक्ष को हस्तान्तरित कर दिया जाय, प्रत्येक अवस्था में क्रय प्रतिफल का निर्धारण करना आवश्यक हो जाता है। क्रय प्रतिफल के निर्धारण में फर्म की उन सम्पत्तियों तथा ऐसे दायित्वों को ध्यान में रखा जाता है जो क्रेता को हस्तान्तरित किये जाने हों। इस संबंध में विक्रेता द्वारा अपने व्यापार की ख्याति के लिए जितना मूल्य आंका जाय उसे भी क्रय प्रतिफल में सम्मिलित करना पड़ता है। क्रय प्रतिफल का निर्धारण दो प्रकार से किया जाता है।

(१) एक पूर्व निर्धारित राशि के रूप में (As a lumpsum amount) : इस विधि से क्रय प्रतिफल का निर्धारण करने पर संपत्तियों के शुद्ध मूल्य पर क्रय प्रतिफल का आधिक्य ख्याति माना जा सकता है। इसके विपरित यदि क्रय प्रतिफल संपत्तियों के शुद्ध मूल्य से कम रखा गया हो तो यह कम्पनी के लिए पूंजीगत लाभ तथा विक्रेता फर्म के लिए पूंजीगत हानि होती है।

(२) लिये गये सम्पत्तियों तथा दायित्वों के आधार पर (On the basis of assets and liabilities taken over) : इस पद्धति से क्रय प्रतिफल का निर्धारण करने पर क्रेता द्वारा ली जाने वाली प्रत्येक संपत्ति का मूल्य तथा स्वीकार किये गये दायित्व की राशि तय कर ली जाती है। इसी संदर्भ में ख्याति का भी मूल्य निर्धारित कर लिया

जाता है।

सूत्र : PC = Total value of all the assets (including goodwill) taken over–amount of liabilities taken.

यदि प्रश्न में यह स्पष्ट न किया गया हो कि फर्म के क्रेता द्वारा कितना क्रय प्रतिफल दिया जावेगा तो फर्म की सभी संपत्तियों के कुल मूल्य में से बाह्य पक्षों के दावों को कम करने पर शेष राशि ही क्रय प्रतिफल मानी जावेगी।

नोट –

(१) संपत्तियों में रोकड़ तथा बैंक शेष भी शामिल किये जावेंगे।

(२) बहियों में लिखित ख्याति तथा अन्य अदृष्य संपत्तियों को भी इससे भिन्न समझौते के अभाव में पुस्तक मूल्य पर सम्मिलित किया जावेगा।

(३) केवल बाह्य पक्षों के दायित्व लिये जावेंगे। साझेदारों के फर्म को ऋण अथवा साझेदारों द्वारा फर्म से लिए गये ऋण इस गणना में सम्मिलित नहीं किये जावेंगे।

४.३.२ विक्रेता फर्म की बहियों में लेखांकन (Accounting in the vendor's books)

४.३.२.१ वसूली खाता तैयार करना :

इस संदर्भ में वसूली खाता प्रायः दो वैकल्पिक रूपों में बनाया जा सकता है –

(अ) वसूली खाते में केवल वे सम्पत्तियाँ एवं दायित्व ही अपने पुस्तक मूल्यों पर स्थानान्तरित किये जायं जो क्रेता ने लेना स्वीकार किया हो। वसूली खाते के डेबिट पक्ष में वसूली संबंधी व्यय तथा क्रेडिट पक्ष में क्रय प्रतिफल लिख देने से परिवर्तन (Conversion) से संबंधित लाभ-हानि ज्ञात हो जावेंगें। अन्य संपत्तियां व दायित्व जो क्रेता ने न लिये हों या; तो साझेदारों द्वारा ले लिये जाते हैं या इनकी वसूली व भुगतान कर लिये जाते हैं। इससे होने वाले हानि-लाभ को उपरोक्त परिवर्तन संबंधी हानि-लाभ में सम्मिलित कर साझियों के खातों में हस्तांतरित कर दिया जाता है।

(आ) फर्म के चिट्ठे में लिखित सभी सम्पत्तियां (नकद व बैंक शेष को छोड़कर यदि ये क्रेता द्वारा न लिये गये हों) तथा बाह्य पक्षों के प्रति दायित्व खाते वसूली खाते में हस्तांतरित कर दिये जाते हैं। क्रेता द्वारा निर्धारित क्रय प्रतिफल इस खाते के क्रेडिट पक्ष में तथा वसूली व्यय डेबिट पक्ष में लिखे जाने के साथ-साथ ऐसी अन्य सम्पत्तियों की वसूली तथा अन्य दायित्वों के भुगतान सम्बन्धी प्रविष्टियां भी सामान्य नियमों के अनुसार वसूली खाते में कर दी जाती हैं जिन्हें क्रेता ने न लिया हो। किन्हीं सम्पत्तियों अथवा दायित्वों को किन्हीं साझियों द्वारा लिये जाने पर भी आवश्यक प्रविष्टियां कर दी जानी चाहिये। सूचना के अभाव में सम्पत्तियां व दायित्व साझेदारों द्वारा अपनी पूंजी के अनुपात में लिये जायेंगें। वसूली खाता बनाने के नियम पिछले अध्याय के आरम्भ में स्पष्ट किये जा चुके हैं। वसूली खाते का अन्तर लाभ-हानि के रूप में साझेदारों के खातों में हस्तांतरित कर दिया जाता है।

टिप्पणी

४.३.२.२ क्रेता कम्पनी से प्राप्त प्रतिभूतियों का बंटवारा :

अब एक महत्वपूर्ण समस्या यह है कि कम्पनी द्वारा दिये गये अंशों अथवा ऋण-पत्रों अथवा दोनों को फर्म, साझेदारों में किस प्रकार बांटे। यदि साझेदारों में इस संबंध में कोई प्रसंविदा है तब तो बंटवारा उसी आधार पर हो जायेगा अन्यथा वे पूंजी अनुपात (Capital Ratio) में बांट लेते हैं। पूंजी का यह अनुपात वसूली खाते की लाभ-हानि तथा चिट्ठे में दिये गये संचय (अगर कोई हों) को हस्तांतरित करने के बाद निकाला जाता है। अर्थात् साझेदारों को अन्तिम देय भुगतान (Final Balance due) ही पूंजी अनुपात है। यदि क्रय मूल्य निकालते समय अंश अथवा ऋणपत्र पूरे नहीं आते हैं अथवा साझेदारों में विभाजन पूरे अंशों अथवा ऋण-पत्रों में नहीं हो जाता है तो टुकड़े वाले भाग को साधारणतया रोकड़ द्वारा समायोजित कर दिया जाता है।

४.३.२.३ साझेदारों के खाते तथा अन्य खाते :

साझेदारों के ऋण खाते, चालू खाते एवं पूंजी खातों को बनाने की विधि इससे पूर्व बतलाई जा चुकी है। ऐसी सम्पत्तियों को जिनको कम्पनी ने नहीं लिया है अथवा जिनका कोई मूल्य न हो अथवा वे सम्पत्तियाँ जिनका लेखा नहीं हो लेकिन उनका कुछ मूल्य हो, साझेदारों के पूंजी खातों में लाभ-हानि अनुपात में हस्तान्तरित की जानी चाहिये।

क्रेता कम्पनी से प्राप्त अंश तथा ऋणपत्र का लेखा :

क्रय प्रतिफल के पूर्ण या आंशिक भुगतान के रूप में क्रेता कम्पनी द्वारा विक्रेता फर्म को अपने अंश तथा ऋणपत्र अंकित मूल्य पर या कुछ प्रीमियम लेकर या कुछ बट्टा काटकर भी दिये जा सकते हैं परन्तु प्रीमियम या बट्टे से सम्बन्धित लेखा करने की समस्या क्रेता कम्पनी की बहियां बनाते समय उत्पन्न होती हैं। विक्रेता फर्म की दृष्टि से स्वीकृत मूल्य ही लागत मूल्य है तथा इसी मूल्य पर लेखा किया जावेगा। इन्हें बाजार में लाभ या हानि उठाकर बेचा भी जा सकता है अथवा इन्हें साझेदार भी पूर्वोक्त वर्णित प्रकार से अपनी पूंजियों पर अंतिम प्राप्य राशियों के अनुपात में ले सकते हैं। इतना स्पष्ट है कि फर्म की लागत तथा वास्तविक वसूली मूल्य में अंतर से होने वाले लाभ हानि का वितरण वसूली खाते के माध्यम से या सीधे साझेदारों के खातों में अवश्य किया जाना चाहिये।

रोजनामचा प्रविष्टियाँ :-

(i) संपत्तियों का स्थानान्तरण

Realisation A/c	Dr.	at book values
To Assets A/cs		

(Being assets taken over transferred including cash and bank balances if they are also taken over)

(ii) दायित्वों का स्थानान्तरण

Liabilities A/c Dr. [at book values]
To Realisation A/c
(Being Liabilities taken over transferred)

(iii) क्रय प्रतिफल की राशि

Buyer/Company A/c Dr. [at the amount of purchase consideration]
To Realisation A/c
(Being purchase consideration due)

(iv) क्रेता द्वारा क्रय प्रतिफल का भुगतान करने पर :-

Cash/Shares/Debentures A/c Dr.
To Buyer/Company A/c
(Being receipt of purchase consideration)

नोट : क्रेता द्वारा न लिए गये सम्पत्ति तथा दायित्व के मदों के संबंध में, फर्म के अन्तिम चिट्ठे के विद्यमान अवितरित लाभ हानि के संबंध में तथा साझेदारों के खातों को बंद करने के संबंध में प्रविष्टियां वैसे ही की जावेंगी जैसी फर्म के विघटन के समय की जाती हैं। विगत अध्याय में इनका पूर्ण विवेचन किया जा चुका है।

४.३.३ क्रेता की पुस्तकों में लेखा :

क्रय प्रतिफल का निर्धारण करते समय विक्रेता से प्राप्त सम्पत्तियों एवं दायित्वों के जो मूल्य निर्धारित किये गये हों इन्हीं मूल्यों पर इन मदों का लेखा क्रेता की पुस्तकों में किया जावेगा। विक्रेता से प्राप्त सम्पत्तियों एवं दायित्वों के शुद्ध मूल्य से क्रय प्रतिफल जितना अधिक आंका जाय उतना क्रेता की दृष्टि से ख्याति का मूल्य चुकाना माना जावेगा। इसके विपरीत, क्रय प्रतिफल उक्त शुद्ध मूल्य से कम होने की दशा में यह अन्तर क्रेता के लिये पूंजीगत लाभ माना जाना चाहिये।

वसूली व्यय (Realisation Expenses) :

वसूली व्यय यदि विक्रेता फर्म द्वारा चुकाया जाय तो साधारणतया यह वसूली खाते के नाम पक्ष में लिखा जाता है। कभी कभी एक निश्चित राशि पारिश्रमिक के रूप में तय करके यह कार्य किसी साझेदार को दे दिया जाता

टिप्पणी

है। उस अवस्था में उक्त पारिश्रमिक की राशि ही वसूली खाते के नाम पक्ष में लिखी जावेगी। साझेदार द्वारा चुकायी गयी वास्तविक राशि का लेखा फर्म में नहीं होगा। इससे भिन्न यदि उपरोक्त प्रकार से वसूली कार्य किसी साझेदार के जिम्मे हो और भुगतान उस साझेदार की एवज में फर्म ने किया हो तो यह राशि उक्त साझेदार के खाते में नाम लिखी जावेगी न कि वसूली खाते में। कभी-कभी वसूली व्यय क्रेता कम्पनी के जिम्मे डाला जाता है और कम्पनी इसे क्रय प्रतिफल से अलग चुकाना तय करती है तो यह क्रेता कम्पनी के लिए ख्याति का एक भाग अथवा ऊपर वर्णित पूंजीगत लाभ में कटौती माना जावेगा। फर्म द्वारा चुकाया जाने पर क्रेता कम्पनी को नाम किया जावेगा।

उदाहरण (Illutration) : १४

एल एवं एच साझेदार हैं जो लाभ-हानि विभाजन ३ : २ के अनुपात में करते हैं। उन्होंने ३१ अगस्त २००९ को अपना व्यापार, संगम लि. को बेचने का निर्णय किया। इस तारीख को उनका निम्नांकित चिट्ठा था। (L and H are partners who share profits and losses in 3 : 2 ratio. They decided to sell their business to Sangam Ltd., on 31st August, 2009. Their Balance Sheet on that date was as follows) :

		Rs.		Rs.
Sundry creditors		70,000	Cash Balance	8,000
Loan creditors		27,000	Sundry Debtors	57,000
Reserve Fund		5,000	Bills Receivables	10,000
Capital Accounts :			Stock in trade	36,000
	Rs		Plant and Machinery	16,000
Love	55,000		Land and Building	60,000
Hate	30,000	85,000		
		1,87,000		**1,87,000**

बिक्री की शर्तें निम्न प्रकार हैं (The terms of sale were as under) :-

(i) कम्पनी ने देनदारों के अलावा सभी सम्पत्तियां लेना स्वीकार किया तथा सभी लेनदारों के भुगतान की भी जिम्मेदारी ली। (The company took over all assets except debtors and agreed to pay off all creditors).

(ii) क्रय प्रतिफल १,२०,००० रु. निर्धारित किया गया जिसका आधा भाग नकदी में तथा शेष के बदले कम्पनी के समता अंष देना तय किया गया। (The purchase consideration was fixed at Rs. 1,20,000. Half of it was to be paid in cash and the balance by allotting shares).

(iii) फर्म को देनदारों से ४०,००० रु. वसूल हुए। (The firm collected Rs. 40,000 from the debtors).

(iv) समापन व्यय कम्पनी द्वारा ३,००० रु. चुकाये गये। (The company paid Rs. 3,000 for realization expenses).

(v) भूमि एवं भवन, प्लाण्ट एवं मशीनरी तथा स्टॉक का मूल्य क्रमश १,००,००० रु., २४,००० रु. तथा ४०,००० रु. आंका गया। (Land and building, Plant and Machinery and Stock were to be valued at Rs. 1,00,000, Rs. 24,000 and Rs. 40,000 respectively).

फर्म की पुस्तकों में वसूली खाता तैयार कीजिए तथा पूंजी खाते बनाइये। साझेदार अंशों का बंटवारा लाभ-हानि अनुपात में करते हैं। यह मानकर कि उपरोक्त सभी शर्तें मान ली गई तथा कम्पनी द्वारा प्रस्तुत १० रु. अंकित मूल्य वाले २०,००० समता अंशों में से ५,००० अंश पूर्ण प्रदत्त मानकर विक्रेताओं को आवंटित किये गये तथा शेष इसी दर पर जनता को निर्गमित कर दिये गये हों तो बताइये कि कम्पनी के चिट्ठे में विभिन्न संपत्तियों एवं दायित्वों को किस प्रकार दर्शाया जायेगा। (You are required to show (a) Realisation account and Capital accounts in the books of firm. Shares were to be divided between partners in the profit sharing ratio. Assuming that all the transactions are duly completed and out of 20,000 equity shares of Rs. 10 each offered by the company, 5,000 shares were allotted as fully paid to the vendors in full satisfaction of their claims and the rest of the shares were issued to the public at the same rate; show how the various assets and liabilities will be shown in the opening Balance Sheet of the purchasing company).

हल (Solution)

Realisation Account

		Rs.		**Rs.**
To Cash A/c		8,000	By Sundry Creditors A/c	70,000
To Debtors A/c		57,000	By Loan Creditors A/c	27,000
To B.R. A/c		10,000	By Cash (from debtors) A/c	40,000
To Stock A/c		36,000	By Sangam Ltd.	1,20,000
To Plant & Machinery A/c		16,000		
To Land & Building A/c		60,000		
To Partners Capital accounts :				
	Rs			
L	42,000			
H	28,000	70,000		
		2,57,000		**2,57,000**

Partners Capital Accounts

	L	H		L	H
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
To Shares in Sangam Ltd.	36,000	24,000	By Balance b/d	55,000	30,000
To Cash A/c	64,000	36,000	By Reserve Fund A/c	3,000	2,000
			By Realisation A/c	42,000	28,000
	1,00,000	**60,000**		**1,00,000**	**60,000**

Sangam Ltd. Account

	Rs.		Rs.
To Realisation A/c		By Shares in Sangam Ltd.	60,000
(Purchase Consideration)	1,20,000	By Cash A/c	60,000
	1,20,000		**1,20,000**

hares in Sangam Ltd. Account

	Rs.			Rs.
To Sangam Ltd.	60,000	By Partners Capital Accounts :	Rs.	
		Love	36,000	
		Hate	24,000	60,000
	60,000			**60,000**

Cash Account

	Rs.			Rs.
To Balance b/d	8,000	By Realisation A/c		8,000
To Sangam Ltd.	60,000	By Partners Capital A/c		
To Realisation A/c	40,000		Rs.	
		Love	64,000	
		Hate	36,000	1,00,000
	1,08,000			**1,08,000**

In the books of the company

Balanbce Sheet of Sangam Ltd., As on 31st August, 2008

Liabilities	Rs.	Assets	Rs.
Equity Share Capital	2,00,000	Bank Balance	1,25,000
Sundry Creditors	70,000	Bills Receivables	10,000
Loan Creditors	27,000	Stock in trade	40,000
Security Premium	40,000	Plant and Machinery	24,000
		Land and Building	1,00,000
		Goodwill	38,000
	3,37,000		3,37,000

टिप्पणी

Calculation of Bank Balance

		Rs.
Cash taken over		8,000
Add . Sale of Shares (Face value + Premium)		
(Rs. 1,50,000 + Rs. 30,000)		1,80,000
		1,88,000
	Rs.	
Less : Amount Paid to Firm	60,000	
Expenses Paid	3,000	63,000
		1,25,000

Calculation of Goodwill

Net Value of Assets taken over at market price :	Rs.
Cash	8,000
B/R	10,000
Stock	40,000
Plant and Machinery	24,000
Land and Building	1,00,000
	1,82,000
Less : Creditors and Loan Creditors Rs. (70,000 + 27,000)	97,000
Net Assets	85,000
Goodwill = Purchase consideration—Net Assets	
= Rs. 1,20,000 — Rs. 85,000 =	35,000
Add : Realisation expenses paid by the Co.	3,000
Goodwill	38,000

(iii) फर्म को ६०,००० रु. के क्रय प्रतिफल स्वरूप ५०,००० रु. के अंष दिये गये अतः पूंजी का २०: भाग प्रीमियम है। फर्म के दृष्टिकोण से बाजार मूल्य को ध्यान में रखा गया है जबकि कम्पनी की पुस्तकों में अंष प्रीमियम खाता दर्षाया गया है।

(iv) भारतीय कम्पनी अधिनियम 1956 की व्यवस्था के अनुसार कम्पनियाँ अपना चिट्ठा अनुसूचि ;अपद्ध भाग ;पद्ध के अनुसार बनाती हैं। यहां कम्पनी से संबंधित कुछ मद चिट्ठे में दर्षाना ही लक्ष्य था। चिट्ठें का वैधानिक रूप समझाना नहीं।

उदाहरण (Illustration) : १५

अ, ब तथा स साझेदार थे, लाभ हानि २:२:१ के अनुपात में बांटते थे। विघटन की तिथि को उनका चिट्ठा निम्नलिखित था - (A, B and C were partners sharing profits and losses in the ratio of 2:2:1. Their Balance Sheet on the date of dissolution was as follows):

	Rs.		Rs.
Capital A/c's :		Plant and Machinery	8,000
A	5,000	Motor Car	2,000
B	3,000	Stock	2,800
C	2,000	Debtors	6,000
Partners Current A/c's :		Cash	150
A	500	C's Current A/c	450
B	1,500		
Bank Overdraft	2,400		
Loan	1,000		
Creditors	4,000		
	19,400		**19,400**

एक्स लिमिटेड रोकड़, देनदार तथा मोटर कार के अतिरिक्त सभी सम्पत्तियां १३,००० रु. में लेने पर सहमत हुई। एक्स लिमिटेड क्रय प्रतिफल के बदले ६ प्रतिशत ३,००० रु. के पूर्वाधिकार अंश सम मूल्य पर तथा ५० रु. वाले १०० समता अंश ४० रु. प्रब्याजि पर तथा शेष रोकड़ देने पर सहमत हुई। देनदारों से वसूली ४,२०० रु. तथा लेनदारों को ३,९०० रु. में निबटाया। 'ब' मोटर कार को १,४०० रु. में लेने पर सहमत हुआ तथा 'अ' ने ऋण का भुगतान करने पर सहमति दी। समता अंशों का वितरण पूंजी अनुपात में किया गया तथा पूर्वाधिकार अंश लाभ हानि अनुपात में वितरित किये गये। आवश्यक खाते बनाइये। (X Ltd. agree to take over assets with the exception of debtors, Cash and Motor Car for Rs. 13,000. X Ltd. agree to discharge purchase consideration by issuing Rs. 3,000 6% preference share at par, 100 equity shares of Rs. 50 each at a premium of Rs. 40 per share and the balance in cash. Debtors realised Rs. 4,200 and creditors were settled at Rs. 3,900. B agreed to take over motor car at Rs. 1,400 and A agreed to discharge loan account. Equity shares were distributed in capital ratio and preference shares were distributed in profit sharing ratio. Prepare necessary ledger accounts.

हल (Solution) :

Realisation Account

	Rs.			Rs.
To Plant and Machinery A/c	8,000	By Creditors A/c		4,000
To Stock A/c	2,800	By Loan A/c		1,000
To Motor Car A/c	2,000	By X Ltd.		13,000
To Debtors A/c	6,000	By B's Capital A/c		1,400
To A's Capital A/c	1,000	By Cash A/c		4,200
To Cash A/c	3,900	By Partners Current A/c's	Rs.	
		A	40	
		B	40	
		C	20	100
	23,700			**23,700**

Partners Current Account

Particulars	A	B	C	Particulars	A	B	C
	Rs.	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.	Rs.
To Balance b/d	—	—	450	By Balance b/d	500	1,500	—
To Realisation A/c	—	1,400	—	By Realisation A/c	1,000	—	—
To Realisation A/c	40	40	20	By Partners Capital A/c	—	—	470
To Partners Capital A/c	1,460	60	—				
	1,500	**1,500**	**470**		**1,500**	**1,500**	**470**

Cash Account

		Rs.			Rs.
	To Balance b/d	150		By Realisation A/c	3,900
	To X Ltd.	1,000		By A's Capital A/c	760
	To Realisation A/c	4,200		By Bank A/c	2,400
	To B's Capital A/c	840		(Payment of BOD)	
	To C's Capital A/c	870			
		7,060			7,060

Partners Capital Account

Particulars	A	B	C	Particulars	A	B	C
	Rs.	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.	Rs.
To Partners Current A/c	—	—	470	By Balance b/d	5,000	3,000	2,000
To Preference Share				By Partners Current A/c	1,460	60	—
in X Ltd. A/c	1,200	1,200	600	By Cash A/c	—	840	870
To Eq. Shares in X Ltd.	4,500	2,700	1,800				
To Cash A/c	760	—	—				
	5,460	**3,900**	**2,870**		**5,460**	**3,900**	**2,870**

Calculation of Cash received from X Ltd. against Purchase consideration :

				Rs.
	Purchase Consideration			13,000
	Less : 100 equity shares @ Rs. 50 + 40 Premium each	Rs. 9,000		
	6% Preference Shares	Rs. 3,000		12,000
	Cash Received			1,000

४.४ फर्मों का एकीकरण (Amalgamation of Firms)

दो या अधिक फर्में आपसी प्रतिस्पर्धा को समाप्त करने तथा बड़े पैमाने के व्यवसाय से लाभ उठाने के लिये अपने पृथक अस्तित्व को समाप्त करके एक नई फर्म की स्थापना कर लेती हैं। इसे फर्मों का एकीकरण कहते हैं। दो पृथक एकाकी व्यापारी मिलकर भी नई फर्म की स्थापना कर सकते हैं। इसका लेखा निम्नलिखित प्रकार से किया जायेगा :-

(i) प्रत्येक फर्म अपना पृथक पृथक वसूली खाता बनायेगी। इस खाते के शेष को प्रत्येक फर्म अपने साझेदारों में लाभ-विभाजन अनुपात में बाँट कर उनके पूंजी खातों में हस्तान्तरित कर देगी।

(ii) जो सम्पत्तियाँ नई फर्म नहीं ले रही है उन्हें प्रत्येक फर्म अपने साझेदारों के बीच पूंजी-अनुपात (कुछ लेखकों के अनुसार लाभ-विभाजन अनुपात) में बांट कर उनके पूंजी खातों में हस्तांतरित कर देगी। जो दायित्व नई फर्म नहीं ले रही है उनका भुगतान कर दिया जायेगा, यदि पर्याप्त रकम उपलब्ध हो अन्यथा दायित्व खाते के शेष को साझेदारों के पूंजी खातों में उनकी पूंजी के अनुपात में हस्तांतरित कर दिया जायेगा। दायित्व खातों में हस्तान्तरण के लिए भी कुछ लेखकों का यह मत है कि उन्हें लाभ-हानि अनुपात में बांट कर साझेदारों के पूंजी खातों में हस्तान्तरित किया जायेगा।

नोट :- छात्र जिस अनुपात का उपयोग करें उसे अपने उत्तर में स्पष्ट कर दें।

(iii) नई फर्म द्वारा लिये गये सम्पत्तियों तथा दायित्वों के वर्तमान मूल्यों से विक्रय प्रतिफल ज्ञात करके निम्नलिखित प्रविष्टि करेंगे -

टिप्पणी

New firm .... Dr. (Purchase Consideration)

To Realisation A/c

(Assets and Liabilities taken over by the new firm)

(iv) प्रत्येक फर्म अपनी बहियों में संचय, अवतरित लाभ या अपलिखित न की गई हानियां या अन्य काल्पनिक सम्पत्ति के शेषों को लाभ-विभाजन अनुपात में बांट कर साझेदारों के पूंजी खातों में हस्तान्तरित कर देगी।

(v) प्रत्येक फर्म अपने साझेदारों के पूंजी खातों के शेषों को नई फर्म में हस्तान्तरित कर देगी। इस प्रविष्टि के बाद प्रत्येक फर्म की बहियां बन्द हो जायेंगी -

Partners Capital A/c Dr.

To New firm A/c

यदि किसी साझेदार के पूंजी खाते में नाम का शेष हो तो पहले उससे रकम प्राप्त करने की प्रविष्टि करेंगे।

Cash A/c Dr.

To Patrner Capital A/c

नई फर्म की बहियों में निम्नलिखित प्रविष्टि करके बहियॉं प्रारम्भ की जायेंगी :-

Assets A/c ....…………….. Dr. (नये निर्धारित मूल्यों पर)

To Liabilities A/c

To All Partner's Capital A/c

उपर्युक्त प्रविष्टि, नई फर्म द्वारा ली गई सम्पत्तियों तथा दायित्वों के लिये ही करेंगे।

आवश्यक पूंजी के लिये नई फर्म की बहियों में साझेदारों के पूंजी खातों को समायोजित किया जायेगा। अन्तर की रकम निर्देशानुसार नकद लेनदेन द्वारा या चालू खातों में हस्तान्तरित करके लिखी जायेगी।

उदाहरण (Illustration) : १६

ए, बी तथा एक्स, वाई दो फर्मों के ३१.१२.२००८ को निम्नलिखित स्थिति-विवरण थे :- (The Balance Sheets of the two firms A, B and X, Y were as follows as on 31.12.2008).

	AB	XY		AB	XY
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
Sundry Creditors	4,000	2,000	Cash in Hand	3,000	1,600
Bills Payable	1,000	—	Investments (at cost)	2,000	1,600
Bank Overdraft	400	2,000			
A' Loan A/c	1,200	—	Rs.		

Capital A/c			Debtors	2,000		
A	7,000	—	Less : Prov.	200	1,800	1,600
B	4,400	—	Furniture		2,400	1,200
X	—	7,200	Building		6,000	—
Y	—	4,000	Land		—	10,000
General Reserve	1,600	600	Machinery		3,000	—
Investment Fluctuation			Goodwill		1,800	—
Reserve	400	200				
	20,000	16,000			20,000	16,000

दोनों फर्मों ने १ जनवरी, २००९ से अपने व्यवसायों का एकीकरण करने का निर्णय किया। यह तय किया गया कि नई फर्म दोनों का फर्नीचर नहीं लेगी तथा विनियोगों का १० प्रतिशत मूल्यह्रास पर, भूमि को १६,००० रु. में, भवन को 9,००० रु. में तथा मशीनरी को १,८०० रु. में लेगी। नई फर्म दोनों फर्मों के व्यापारिक लेनदार भी लेगी तथा प्रत्येक फर्म को ख्याति के २,४०० रु. देगी। एक्स, वाई फर्म में १६० रु. की सम्पत्तियॉं पुस्तकों में लिखी हुई नहीं थी। इन सम्पत्तियों को नई फर्म में नहीं लिया गया। फर्म ए, बी द्वारा अपना बैंक अधिविकर्ष ४०० रु. तथा ए का ऋण १,२०० रु. नकद चुकाने के बाद अवशिष्ट हस्तस्थ रोकड़ राशि १,४०० रु. ही नई फर्म को हस्तांतरित की गई। साझेदारों ने नई फर्म द्वारा न ली गई सम्पत्तियां व दायित्व समान अनुपात में बांटने का निष्चय किया। (The two firms decided to amalgamate their businesses on January 1, 2009. It was decided that the new firm shall not take over Furniture of both the firms and shall take over Investments at 10% depreciation, Land at Rs. 16,000, Building at Rs. 9,000 and Machinery at Rs. 1,800. New firm shall also take the trade creditors of both the firms and shall pay Rs. 2,400 for goodwill to each firm. Assets with the firm X Y worth Rs. 160 were unrecorded in the books. The new firm did not take over these assets. The firm A,B transferred only Rs. 1,400 to the new company as cash remaining after paying off Rs. 400 for bank overdraft and Rs. 1,200 for A's Loan. Partners decided to distribute those assets and liability not taken by new firm in equal proportions).

नई फर्म की पूंजी ४०,००० रु. तय की गई जो चारों साझेदारों में समान अनुपात में बंटी हुई होगी। नई व पुरानी फर्मों की पुस्तकों में रोजनामचा प्रविष्टियां कीजिये तथा नई फर्म का चिट्ठा बनाइये। (The capital of the new firm was agreed at Rs. 40,000 to be equally divided among the partners Give journal entries in the books of new and old firms and prepare Balance Sheet of the new firm).

टिप्पणी

हल (Solution) :

In the Books of Firm A B
JOURNAL

Date	Particulars		L.F.	Dr.	Cr.
2009				Rs.	Rs.
Jan.1	Realisation A/c	Dr.		14,800	
	To Investments A/c				2,000
	To Debtors A/c				2,000
	To Building A/c				6,000
	To Machinery A/c				3,000
	To Goodwill A/c				1,800
	(Being Book values of assets transferred)				
	A's Capital A/c	Dr.		1,200	
	B's Capital A/c	Dr.		1,200	
	To Furniture A/c				2,400
	(Being Furniture shared in profit sharing ratio)				
	Sundry Creditors A/c	Dr.		4,000	
	Bills Payable A/c	Dr.		1,000	
	To Realisation A/c				5,000
	(Being Liabilities transferred)				
	Bank Overdraft A/c	Dr.		400	
	A's Loan A/c	Dr.		1,200	
	To Cash A/c				1,600
	(Being Liabilities paid off)				

Date	Particulars		L.F.	Dr.	Cr.
2009				Rs.	Rs.
Jan.1	Provision for Doubtful Debts A/c	Dr.		200	
	Investment Fluctuation Reserve A/c	Dr.		400	
	To Realisation A/c				600
	(Being Balances transferred)				
	Realisation A/c	Dr.		1,400	
	To Cash A/c				1,400
	(Being Balance transferred)				
	General Reserve A/c	Dr.		1,600	

टिप्पणी

	To A's Capital A/c			800
	To B's Capital A/c			800
	(Being reserve transferred in profit sharing ratio)			
	New Firm A/c Dr.		13,200	
	To Realisation A/c			13,200
	(Being purchase consideration recorded)			
	Realisation A/c Dr.		2,600	
	To A's Capital A/c			1,300
	To B's Capital A/c			1,300
	(Being profit on realisation transferred)			
	A's Capital A/c Dr.		7,900	
	B's Capital A/c Dr.		5,300	
	To New Firm A/c			13,200
	(Being balance of Capital Accounts settled against consideration)			

Working Notes

1.	**Calculation of Purchase Consideration —**		**Rs.**
		Investments	1,800
		Building	9,000
		Machinery	1,800
		Debtors	1,800
		Goodwill	2,400
		Cash Balance	1,400
			18,200
		Less : Liabilities	5,000
			13,200

2. Realisation Account

	Rs.		Rs.
To Sundry Assets A/c	14,800	By Sundry Creditors A/c	4,000
To Cash A/c	1,400	By Bills Payable A/c	1,000
To Partners Capital A/c		By Provision for Doubtful Debts A/c	200
A's Capital A/c	1,300	By Investment Fluctuation Reserve A/c	400
B's Capital A/c	1,300	By New Firm A/C	13,200
	18,800		**18,800**

3. Partners Capital Account

	A	B		A	B
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
To Furniture A/c	1,200	1,200	By Balance b/d	7,000	4,400
To New Firm A/c	7,900	5,300	By General Reserve A/c	800	800
			By Realisation A/c	1,300	1,300
	9,100	6,500		9,100	6,500

In the Books of Firm XY

JOURNAL

2009				Rs.	Rs.
Jan.1	Realisation A/c	Dr.		14,800	
	To Cash A/c				1,600
	To Investments A/c				1,600
	To Debtors A/c				1,600
	To Land A/c				10,000
	(Being Assets accounts transferred)				
"	Sundry Creditors A/c	Dr.		2,000	
	Investment Fluctuation Reserve A/c	Dr.		200	
	To Realisation A/c				2,200
	(Being Liabilities transferred)				
"	X's Capital A/c	Dr.		600	
	Y's Capital A/c	Dr.		600	
	To Furniture A/c				1,200
	(Being Furniture taken in profit sharing ratio)				

"	X's Capital A/c	Dr.		80	
	Y's Capital A/c	Dr.		80	
	To Realisation A/c				160
	(Being Unrecorded assets shared in profit ratio)				

2009				Rs.	Rs.
Jan.1	Bank Over Draft A/c	Dr.		2,000	
	To X's Capital A/c				1,000
	To Y's Capital A/c				1,000
	(Being Liability shared in profit ratio)				
"	General Reserve A/c	Dr.		600	
	To X's Capital A/c				300
	To Y's Capital A/c				300
	(Being Reserve shared in profit ratio)				
"	New Firm A/c	Dr.		21,040	
	To Realisation A/c				21,040
	(Being Purchase consideration due)				
"	Realisation A/c	Dr.		8,600	
	To X's Capital A/c				4,300
	To Y's Capital A/c				4,300
	(Being Profit on realisation shared)				
"	X's Capital A/c	Dr.		12,120	
	Y's Capital A/c	Dr.		8,920	
	To New Firm A/c				21,040
	(Being Balances of Capital accounts settled against purchase consideration)				

Working Notes

(i) Calculation of Purchase Consideration —	Rs.
Cash	1,600
Investments	1,440
Debtors	1,600
Land	16,000
Goodwill	2,400

टिप्पणी

	23,040
Less : Creditors	2,000
	21,040

(ii) Realisation Account

	Rs.		**Rs.**
To Sundry Assets A/c	14,800	By Sundry Creditors A/c	2,000
To Partners Capital A/c		By Investment Fluctuation	200
X's Capital A/c		Reserve A/c	
Y's Capital A/c	4,300	By X's Capital A/c	80
	4,300	By Y's Capital A/c	80
		By New Firm A/c	21,040
	23,400		**23,400**

(iii) Partners Capital Account

	X	Y		X	Y
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
To Furniture A/c	600	600	By Balance b/d	7,200	4,000
To Realisation A/c	80	80	By Bank Overdraft A/c	1,000	1,000
To New Firm A/c	12,120	8,920	By General Reserve A/c	300	300
			By Realisation A/c	4,300	4,300
	12,800	**9,600**		**12,800**	**9,600**

In the Books of New Firm

JOURNAL

2009				**Rs.**	**Rs.**
Jan.1	Cash A/c	Dr.		1,400	
	Investments A/c	Dr.		1,800	
	Debtors A/c	Dr.		2,000	
	Building A/c	Dr.		9,000	
	Machinery A/c	Dr.		1,800	
	Goodwill A/c	Dr.		2,400	
	To Sundry Creditors A/c				4,000
	To Bills Payable A/c				1,000
	To Provision for Doubtful Debts A/c				200
	To A's Capital A/c				7,900
	To B's Capital A/c				5,300
	(Being Assets and liabilities of firm AB taken over on amalgamation at agreed values)				
Jan.1	Cash A/c	Dr.		1,600	
	Investments A/c	Dr.		1,440	
	Debtors A/c	Dr.		1,600	
	Land A/c	Dr.		16,000	
	Goodwill A/c	Dr.		2,400	
	To Sundry Creditors A/c				2,000
	To X's Capital A/c				12,120
	To Y's Capital A/c				8,920
	(Being Assets and liabilities of firm XY taken over on				

2009			Rs.	Rs.
	amalgamation at agreed values)			

2009			Rs.	Rs.
Jan.1	Cash A/c Dr.		7,880	
	To A's Capital A/c			2,100
	To B's Capital A/c			4,700
	To Y's Capital A/c			1,080
	(Being Additional capital introduced to make the equal contribution)			
"	X's Capital A/c Dr.		2,120	
	To Cash A/c			2,120
	(Being Excess capital withdrawn)			

Balance Sheet of the New Firm as on January 1, 2009

Liabilities		Rs.	Assets		Rs.
Sundry Creditors		6,000	Cash in Hand		8,760
Bills Payable		1,000	Investments	Rs.	3,240
Capital A/cs :	Rs.		Debotrs	3,600	
A	10,000		Less : Provision for D.D.	200	3,400
B	10,000		Machinery		1,800
X	10,000		Building		9,000
Y	10,000	40,000	Land		16,000
			Goodwill		4,800
		47,000			47,000

नोट :-

(i) Trade Liability में Trade Creditors तथा Bills Payable की रकमें ही शामिल की गई हैं।

(ii) नई फर्म के द्वारा नहीं लिये गये सम्पत्तियों तथा दायित्वों को लाभ–विभाजन अनुपात (जो सूचना के अभाव में समान माना गया है) में बांटा गया है।

पुरानी फर्म की बहियां चालू रखना :

टिप्पणी

इसका आशय यह है कि एक पुरानी फर्म ने दूसरी फर्म को अपने व्यवसाय में प्रवेश दिया है। इसे संविलियन (Absorption) कहा जा सकता है। ऐसी दशा में लेखा निम्नलिखित प्रकार से करेंगे :-

(i) जिस फर्म की बहियां चालू रखनी हैं उसमें –

(अ) स्वयं के सम्पत्तियों तथा दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन करने के लिए 'पुनर्मूल्यांकन खाता' बनायेंगे। इसकी विधि का वर्णन साझेदार के प्रवेश व अवकाश ग्रहण के अन्तर्गत किया जा चुका है।

(ब) इसमें फर्म की सम्पत्तियों तथा दायित्वों को निर्धारित मूल्यों पर लेने की प्रविष्टि की जायेगी।

(स) साझेदारों के पूंजी खातों में निर्देशानुसार समायोजन किया जायेगा।

(ii) जिस फर्म की बहियां बन्द की जानी उसमें 'वसूली खाता' बनायेंगे। इसकी विधि वही होगी जो किसी फर्म के समापन के समय बहियां बन्द करने के लिए बतलाई गई है।

उदाहरण (Illustration) : १७

उदाहरण १६ को यह मानते हुए हल कीजिये कि फर्म एक्स वाई की पुरानी बहियों को ही आगे भी खुला रखा गया है। नई फर्म की बहियॉं नहीं खोली गई हैं। (Solve the illustration 16 assuming that the old books of XY were kept. Books of the new firm were not opened).

हल (Solution) : **In the Books of Firm XY**

JOURNAL

2009				**Rs.**	**Rs.**
Jan.1	Unrecorded Assets A/c	Dr.		160	
	Land A/c	Dr.		6,000	
	Goodwill A/c	Dr.		2,400	
	To Revaluation A/c				8,560
	(Being assets revalued and recording of w/o assets)				
	Investment Fluctuation Reserve A/c	Dr.		160	
	To Investments A/c				160
	(Being value of investments decreased)				
	Revaluation A/c	Dr.		8,560	
	To X's Capital A/c				4,280
	To Y's Capital A/c				4,280
	(Being revaluation profit transferred)				
	Investment Fluctuation Reserve A/c	Dr.		40	
	General Reserve A/c	Dr.		600	

टिप्पणी

	To X's Capital A/c			320
	To Y's Capital A/c			320
	(Being balance of Reserve's Account transferred)			
	Bank Overdraft A/c Dr.		2,000	
	To X's Capital A/c			1,000
	To Y's Capital A/c			1,000
	(Being liability shared in profit sharing ratio)			
	Cash A/c Dr.		1,400	
	Investments A/c Dr.		1,800	
	Debtors A/c Dr.		2,000	
	Building A/c Dr.		9,000	
	Machinery A/c Dr.		1,800	
	Goodwill A/c Dr.		2,400	
	To Sundry Creditors A/c			4,000
	To Bills Payable A/c			1,000
	To Provision for Doubtful Debts A/c			200
	To A's Capital A/c			7,900
	To B's Capital A/c			5,300
	(Being Assets and Liabilities of the firm AB taken over at revalued prices)			

2009			Rs.	Rs.
Jan. 1	Cash A/c Dr.		7,880	
	To A's Capital Ac			2,100
	To B's Capital A/c			4,700
	To Ys Capital A/c			1,080
	(Being Additional Capital introduced to make Capital equal)			
	X's Capital A/c Dr.		2,120	
	To Cash A/c			2,120
	(Being Excess Capital withdrawan)			

In the Books of Firm AB

उदाहरण १६ में की गई प्रविष्टियों में नई फर्म के स्थान पर एक्स वाई फर्म लिख देंगे। अन्य कोई परिवर्तन नहीं होगा।

स्व मूल्यांकन मापदण्ड (Self Assesment Test) :

परीक्षा के प्रश्न (Examination Question) :

१. वसूली खाता किसे कहते हैं ? यह किस प्रकार तैयार किया जाता है ? यह पुनर्मूल्यांकन खाते से किस प्रकार भिन्न होता है ? (What is Realisation Account ? How is it prepared ? How does it differ from Revaluation A/c ?)

२. जब किसी फर्म को संयुक्त स्कंध वाली कम्पनी में परिवर्तित करते हैं तो कौनसी लेखांकन प्रविष्टियां की जाती हैं ? (What accounting entries have tobe passed when a firm is converted into a company.)

३. फर्म 'अ' तथा 'ब' का एकीकरण करके नई फर्म 'अ ब' स्थापित की जाय तो फर्म 'अ' तथा नई फर्म 'अ ब' की पुस्तकों में की जाने वाली रोजनामचा प्रविष्टियां दीजिये। (Give journal entries tobe passed in the books of firm `A' and the new firm `AB' when the firm `A' and `B' are amalgamated and a new firm `AB' is formed.)

४. एक्स, वाई तथा जेड़ साझेदार थे जो लाभ-हानि को क्रमशः ३:२:१ के अनुपात में बांटते थे। आपसी मतभेदों के कारण उन्होंने ३१ दिसम्बर, २००८ को साझेदारी समाप्त करना तय किया। उस तिथि को चिठ्ठा तैयार किया गया जो इस प्रकार से था। (X, Y and Z were partners sharing profit and losses in the ratio of 3:2:1 respectively. On account of differences amongst them, they agreed to dissolve the partnership on 31st December, 2008 on which date a Balance Sheet was prepared and it stood as under) :–

		Rs.		Rs.
Life Policy Fund		17,700	Cash	3,250
Bank Overdraft		40,430	Accrued Agency Commission	9,370
Sundry Creditors		37,800	Joint Life Policy	17,700
Loan from X's wife		10,000	Book Debts	35,600
Capital Accounts :–	Rs.		Stock	15,780
X	28,000		Furniture	4,310
Y	15,000		Plant and Machinery	40,500
Z	8,000	51,000	Goodwill	30,420
		1,56,930		**1,56,930**

टिप्पणी

जीवन बीमा पोलिसी १५,५०० रु. में समर्पित कर दी गई। समापन की तिथि तक आहरण पर ब्याज जो बहियों में नहीं लिखे गये थे, एक्स के ६०० रु.; वाई के ४०० रु. तथा जेड़ के २०० रु. थे। एक्स ने ख्याति तथा संयंत्र व मशीनरी ६०,००० रु. में ले लिये तथा अपनी पत्नी को देय ऋण व बैंक अधिविकर्ष का भुगतान करना स्वीकार किया। फर्नीचर तथा स्टॉक एक्स तथा वाई के बीच बराबर भाग में बॉट दिये गये जिनका मूल्य २४,००० रु. निर्धारित किया गया। पुस्तक-ऋणों का हस्तांकन फर्म के लेनदारों को उनके पूरे भुगतान में कर दिया गया। एजेन्सी कमीशन समय पर वसूल कर लिया गया। छूट पर भुनाया गया २,००० रु. का विपत्र ५० रु. का नोटिंग व्यय सहित वापस लौट आया तथा इससे कुछ भी वसूल नहीं हो सका। वसूली के व्यय १,२०० रु. एक्स ने चुकाये। जेड़ उपर्युक्त व्यवस्था के लिए इस आधार पर सहमत हुआ कि उसे फर्म में उसके अधिकार, हक व हित के पूर्ण भुगतान में १०,००० रु. दिये जायें। (The life policy was surrendered for Rs. 15,500. Interest on drawings to date of dissolution not accounted was X — Rs. 600, Y —Rs. 400, Z—Rs. 200. X took over Goodwill and Plant and Machinery for Rs. 60,000 and agreed to discharge his wife's loan and Bank Overdraft. Furniture and Stock were divided equally between X and Y at an agreed valuation of Rs. 24,000. The Book Debts were assigned to the creditors of the firm in full satisfaction of their claim. The agency commission was recovered in time. A bill of Rs. 2,000 under discount was returned dishonoured with noting charges of Rs. 50 and subsequently it proved valueless. The expenses of dissolution, viz. Rs. 1,200 were paid by X, Z, agreed to the above arrangement on payment to him of Rs. 10,000 in full satisfaction of his right, title, and interest in the firm).

आप समापन की कार्यवाही पूरी होने पर फर्म की पुस्तकों में वसूली खाता, रोकड़ खाता तथा साझेदारों के पूंजी खाते बनाइये। (You are required to prepare Realisation Account, Cash Account and Capital Accounts of the partners on completion of the dissolution proceedings).

(Ans. : Profit on realization Rs. 8,640 (taking policy accounts into Realization Account paid to X and Y Rs. 10,894 & Rs. 5,176.).

(Hints :— Rs. 760 paid to Z in excess of his dues from the firm will be borne by X and Y in their profit sharing ratio).

5. आनन्द, ब्रह्मानन्द तथा चिदानन्द एक फर्म में २:२:१ के अनुपात में लाभ-हानि बांटने वाले साझेदार थे। ३१ दिसम्बर, २००८ को उनका स्थिति-विवरण निम्नलिखित था जिस दिन उन्होंने फर्म का विघटन करके सम्पत्तियों की शनैः शनैः वसूली से प्राप्त रोकड़ को सम्बन्धित पक्षों में बांटने का निर्णय किया। विघटन पर क्रमिक वितरण अधिकतम हानि विधि से दर्शाइये। (Anand, Brahmanand and Chidanand were partners in a firm sharing its profits and losses in proportions of 2:2:1. Their balance sheet as on 31 December, 2008 was as follows, on which date, they decided to dissolve their firm and make a gradual distribution of cash realised from assets to the concerned parties. Show the piece-meal distribution of the realisation on maximum loss method).

	Rs.		Rs.
Creditors	50,000	Cash	2,000
Bank Overdraft	30,000	Stock	2,15,000
General Reserve	60,000	Debotrs	65,000
Capital A/cs :		Machinery	40,000
Anand	76,000	Furniture	8,000
Brahmanand	1,76,000	Land	2,50,000
Chidanand	1,88,000		
	5,80,000		**5,80,000**

वसूली व्ययों के लिये २,५०० रु. का प्रावधान करना है। वसूली इस प्रकार हुई। (Provide Rs. 2,500 for realisation expenses. The assets realised as follows) :–

प्रथम (First) Rs. 50,500; द्वितीय (Second) Rs. 75,000

तृतीय (Third) Rs. 2,50,000; चतुर्थ (Fourth) Rs. 1,00,000

वास्तव में वसूली व्यय २,००० रु. लगे। (Actual realisation expenses amounted to Rs. 2,000.)

(Ans. : II instalment Rs. 45,000 to C; Third instalment : Rs. 18,000 to A to B Rs. 1,18,000 and to C Rs. 1,14,000; Fourth instalment Rs. 1,00,500 to be given in profit sharing ratio).

टिप्पणी

टिप्पणियां लिखिये (Write Short Notes) –

१. वसूली खाता (Realisation Account)
२. गार्नर बनाम मर्रे का निर्णय (Decision in Garner Vs. Murray)
३. अधिकतम पूंजी विधि (Maximum Capital Method)
४. क्रय प्रतिफल (Purchase Consideration)
५. भुगतान का क्रम (Order of Payment)

आवंटन (Assignment) :

१. गार्नर बनाम मर्रे के निर्णय के विषय में आप क्या जानते हैं ? इस निर्णय से पूर्व अक्षम साझेदार की पूंजी की न्यूनता के सम्बन्ध में क्या परम्परा थी ? (What do you know about the decision in Garner Vs. Murray ? What was the tradition with regard to the deficiency of capital of the insolvent partners prior to this decision).

२. फर्म के सभी साझेदारों की अक्षमता की स्थिति में विभिन्न खाते किस प्रकार निपटाये जाते हैं ? उदाहरण देकर समझाइये। (How are the various accounts settled at the time of insolvency of all the partners in a firm ? Explain with the help of an illustration.)

३. फर्म के विघटन पर उसके खाते किस प्रकार निपटाये जाते हैं ? भारतीय साझेदारी अधिनियम में इनसे संबंधित प्रावधानों की व्याख्या कीजिये। (How are the accounts of a firm settled on its dissolution ? Explain the relevant provisions of the Indian Partnership Act.)

४. अ, ब तथा स साझेदारी में व्यापार करते हैं और लाभ-हानि को क्रमशः ४:३:१ के अनुपात में विभाजित करते हैं। ३१ मार्च २००८ को उन्होंने अपना व्यापार एक लिमिटेड कम्पनी को बेचना निश्चित किया। इस तिथि को उनकी स्थिति निम्नलिखित थी : (A, B and C carry on business in partnership sharing profits and losses in ratio of 4:3:1 respectively. On 31st March, 2008, they agreed to sell their business to a limited company. Their position on that date was as follows) :

	Rs.		Rs.
Capitals :		Freehold Property	18,000
A	20,000	Machinery	12,000
B	15,000	Book Debts	15,000
C	13,000	Stock	13,000
Loan on Mortgage	4,000	Cash	2,000
Sundry Creditors	8,000		
	60,000		**60,000**

कम्पनी ने निम्नलिखित सम्पत्तियां निम्नांकित मूल्यों पर लीं :- (The company took the following assets at the valuation shown below :

फ्रीहोल्ड सम्पत्ति २२,००० रु.; मशीनरी ११,००० रु.; पुस्तक ऋण १४,००० रु.; ख्याति ४,००० रु.; स्टॉक १२,००० रु.। (Freehold property Rs. 22,000; Machinery Rs. 11,000; Book Debts Rs. 14,000; Goodwill Rs. 4,000 and Stock Rs. 12,000).

कम्पनी ने लेनदारों को उनकी सहमति से ७,७०० रु. पर अपनी तरफ लेना तय किया। कम्पनी ने ३३,५०० रु. १० रु. वाले पूर्ण चुकता अंशों में और शेष नकदी में भुगतान किया। फर्म को 500 रु. व्ययों के लगे। (The company also agreed to take over the creditors who agreed at Rs. 7,700. The company paid Rs. 33,500 in fully paid shares of Rs. 10 each and the balance in cash. The expenses of the firm amounted to Rs. 500).

फर्म की पुस्तकों में खाते तैयार कीजिये। अंश, साझेदारों को अंतिम देय राशियों के अनुपात में दिये गये। (Prepare Ledger Accounts in the books of the firm. The shares were distributed to the partners in the propotion of the final balances due to them).

(Ans. : Purchase consideration Rs. 55,300; Profit on realisation Rs. 4,800. Paid to A Rs. 8,190, B Rs. 6,140, C Rs. 4,970).

५ चूहा एवं बिल्ली ने अपने व्यवसायों का १ जनवरी २००८ को एकीकरण करने का निर्णय किया उनके चिठ्ठे निम्नलिखित प्रकार से थे : (Rat and Cat amalgamated their business on January 1st 2008. Their Balance Sheet being as follows) :–

	Rat	**Cat**		**Rat**	**Cat**
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
Creditors	500	400	Cash	—	835
Bank Overdraft	250	—	Plant	5,000	500
Capital	7,250	1,935	Debtors	1,000	700
			Stock	2,000	300
	8,000	**2,335**		**8,000**	**2,335**

अ) निम्नलिखित समायोजनों को ध्यान में रखते हुए फर्म का प्रारम्भिक चिठ्ठा बनाइये :- चूहे को ३,००० रु. से ख्याति के लिए क्रेडिट कीजिये, बिल्ली को ५०० रु. की ख्याति से क्रेडिट करना हैं; चूहे के व्यापार के प्लान्ट को १० प्रतिशत से तथा स्टॉक को ५ प्रतिशत से अपलिखित कीजिये। दोनों फर्मों के देनदारों पर ५ प्रतिशत की दर से डूबत ऋण का आयोजन करना है। (Prepare opening Balance Sheet for the partnership

टिप्पणी

having regard to the following adjustments :– Rat to be credited with goodwill Rs. 3,000; Cat to be credited with goodwill Rs. 500, the value of Rat's plant to be reduced by 10% and his stock by 5%. A provision for bad debts of 5% on debtors is to be raised by both firms)

आ ३० जून २००८ की तिथि पर पूंजी खाते बनाइये। छः माह का लाभ ४,००० रु. था। ब्याज ५ प्रतिशत की दर से देना है तथा लाभ को अन्तिम पूंजियों के अनुपात में बांटना है। (Show their Capital A/cs at June 30, 2008 the net profit for the half year having been Rs. 4,000. Allow 5% interest on capitals and divide the profits in proportion to final Capital balances).

(Ans. : Total of Balance Sheet 17,150; Net Profit credited to Rat Rs. 2,720 and to Cat Rs. 680).